कन्नड अनुवाद सिद्दवनहळ्ळि कृष्णशर्मा

नागरी लिपि के. श्रीनिवासराव्

*

प्रकाशक :

अ. भा. सर्वसेवा संघ, गांधी नगर, बेंगलोर - 9

पहला संस्करण 1959 2,000 प्रतियाँ

मूल्य : दो रुपये

मुद्रक

प्रभा मुद्रणालय, बसवनगुडी, बेंगलोर - 4

KANNADA GITA PRAVACHAN *in NĀGARI SCRIPT*

Price RUPEES TWO

प्रस्तावना

कन्नड़ गीता प्रवचन नागरी लिपि में प्रकाशित हो रहा है, इससे मुझे बहुत खुशी होती है। इसके पीछे एक दृष्टि है। नागरी लिपि भारत की सब भाषाओं के लिए चल सकती है, और चले तो बहुत बडा काम होगा। फिर वह चीन, जपान तक पहुँच सकती है। इसमें आक्रमण की बात नहीं। वे लोग नई लिपि की तलाश में है। बीच में दो-एक महिने जपानी सीखने का मुझे मौका मिला तो ध्यान में आया कि जपानी भाषा की रचना हिन्दुस्तान की भाषा के साथ मिलती जुलती है। तो नागरी लिपि जपान में भी चलने लायक है। खैर, यह आगे की बात। पर हिन्दुस्तान की भाषाएँ सीखने में भिन्न लिपियों के कारण बडी रुकावट आती है। वह दूर करना हम सब के लिए बहुत लाभदायी है। इस में दूसरी लिपियों का निषेध नहीं। जैसे कन्नड़ भाषा है, वह कन्नड़ लिपि में भी चले और नागरी में भी चले।

आज नागरी लिपि संस्कृत, हिन्दी, मराठी और नेपाली भाषाओं के लिए चलती है। गुजराती याने शिरोरेखा विहीन नागरी ही है। पाली और मागधी का भी कुछ साहित्य नागरी में उपलब्ध है। बंगाली, उडिया, असमी और पंजाबी भी नागरी के ही प्रकार है। ऐसी हालत में दूसरी भाषाएँ भी नागरी लिपि का उपयोग करने लगजायँ तो सबको बडी सहूलियत होगी।

*

कन्नड़ में ह्रस्व 'अे' और ह्रस्व 'ओ' है जो नागरी लिपि में नहीं होते। उसके लिए एक नया चिह्न बनालिया है। वह चिह्न ऐसे नया नहीं है। काशी की नागरी प्रचारिणी सभा ने तुलसी-रामायण की जो आवृत्ति प्रकाशित की है, उसमें उस चिह्न का उपयोग किया गया है। तुलसीदासजी ने रामायण में ह्रस्व 'अे', ह्रस्व 'ओ' का जगह जगह उपयोग किया है। उसका एक नमूना यहाँ दे देता हूँ। उससे कल्पना आएगी।

"एतेहु पर करिहहिं ते असंका।
मोहिं तें अधिक जे जड मति रंका॥"

इस तरह का प्रयोग रामायण के हर पन्ने में आता है।

मैं आशा करता हूँ कन्नड़ गीता-प्रवचन की यह नागरी आवृत्ति सारे कर्नाटक में खूब चलेगी। भूदान-यज्ञ के प्रचारकों को इसका प्रचार एक मिशन (Mission) समझकर करना चाहिये। मैं यह भी आशा करता हूँ कि इसकी मदद से अन्य भाषा-भाषी जो कन्नड़ सीखना चाहें उन के लिए भी बडी सहूलियत होगी। इस आवृत्ति की थोडी ही प्रतियाँ निकाली हैं। लेकिन मुझे आशा है कि उत्तरोत्तर इसकी माँग बढेगी और अनेक आवृत्तियाँ निकालनी पडेगी।

काया (उदयपुर)
30-1-59.
राजस्थान

मुन्नुडि

(हिन्दी प्रस्तावनेय अनुवाद)

कन्नड़ गीता प्रवचन नागरी लिपियल्लि प्रकाशितवागुत्तिरुवुदु ननगे बहळ संतोष। इदर हिंदे ऒंदु दृष्टि इदे। नागरी लिपियन्नु भारतद ऎल्ल भाषेगळिगे बळसबहुदु, बळसिदरंतू बहळ दॊड्ड केलसवे आगुवुदु। हागादरे, अदु चीण-जपानुगळिगू व्यापिसुवुदु। इदरल्लि आक्रमणद मातेनू इल्ल। आ जन हॊस लिपियन्नु अरसुत्तिदारे। ई नडुवे ननगे ऒंदेरडु तिंगळु जपानी भाषेयन्नु कलियुव अवकाश सिक्कितु। आग जपानी भाषेय रचने हिन्दुस्तानद भाषेयन्नु होलुवुदेंब अंश नन्न गमनक्के बंदितु। अंदमेले नागरी लिपि जपानिनल्लि बळस-ल्पडुवुदक्कू योग्यवागिदे। इदु मुंदिन मातेंवुदेनो सरि। आदरे बेरे बेरे लिपिगळ कारणदिद हिंदुस्तानद भाषेगळन्नु कलियुवुदक्के बहळ अडचणे उंटागुत्तदे। अदन्नु दूरमाडुवुदु नम्मेल्लरिगू लाभदायक-वादुदु। इदरल्लि बेरे लिपिगळन्नु निषेधिसुव मातेनू इल्ल। कन्नड़ भाषे ईग इरुवंते कन्नड लिपियल्लू नडेदुकॊंडु बरलि, देवनागरियल्लू नडेदुकॊंडु बरलि।

इंदु नागरी लिपियन्नु सस्कृत, हिन्दी, मराठी हागू नेपाळी भाषेगळिगे बळसुत्तेवे। गुजरातियंतु तलेकट्टु इल्लद (शिरो रेखा विहीन) नागरिये। पालि हागू अर्ध मागधिय साहित्यवू स्वल्पमट्टिगे नागरि (लिपि) यल्लि उपलब्धविदे। बंगालि, उडिया, अस्सामी हागू पंजाबि लिपिगळू नागरी लिपिय प्रकारवे। इंथ स्थितियल्लि बेरे

भाषेगळू कूड नागरी लिपियन्ने उपयोगिसलु तोडगिदरे, अेल्लरिगू बहळ अनुकूलवागुवुदु ।

कन्नड़दल्लिरुव ह्रस्व 'अे' हागू 'ओ' इवु नागरी लिपियल्लि इल्ल । अदक्कागि होसदोंदु चिह्नेयन्नु माडलागिदे । हागे नोडिदरे, अदेनू होस चिह्नेयल्ल । काशिय नागरी प्रचारिणी सभेयवरु प्रकाशपडिसिरुव तुलसी रामायणद आवृत्तियल्लि आ चिह्नेयन्नु उपयोगिसलागिदे । तुलसीदासरु रामायणदल्लि ह्रस्व 'अे', ह्रस्व 'ओ'-इवन्नु अल्लल्लि उपयोगिसिद्दारे । अदरदोंदु नमूनेयन्नु इल्लि कोट्टुविड्डत्तेने । अदरिंद 'कल्पने' बरुवुदु :

"एतेहु पर करिहहिं ते असंका ।
मोहिं ते अधिक जे जडमति रंका ।।"

ई रीतिय प्रयोग रामायणद प्रतियोंदु पुटदल्लू कंडुबरुत्तदे ।

कन्नड गीता प्रवचनद ई नागरी आवृत्ति इडी कर्नाटकदल्लि ओळितागि प्रचलितवागुवुदेंदु नानु आशिसुवे । भूदानयज्ञद प्रचारकरु इदोंदु मिशन (Mission) अेंदु भाविसि, इदर प्रचार माडबेकु । इदर सहायदिंद कन्नडवन्नु कलिय बयसुव बेरे भाषेयवरिगू बहळ अनुकूलवागुवुदेंदू नानु आशिसुवे । ई आवृत्तिय केलवे प्रतिगळु होरबिद्दिवे । आदरे, उत्तरोत्तर इदक्के बेडिके हेच्चुवुदेंदू, अनेक आवृत्तिगळन्नु होरडिसबेकागुवुदेंदू नानु आशिसुत्तेने ।

—विनोबा

प्रकाशकों की ओर से दो बातें

पू० विनोबाजीने अपने औरंगाबाद के प्रवचन (18-7-58) में कहा था कि : "नागरी लिपि का एक बहुत बडा लाभ होनेवाला है। हम समझते है कि सभी जबानें चाहे वह कन्नड़ हो, तेलुगु हो, मराठी हो या तमिल, अगर नागरी लिपि में लिखी जायँ, तो बहुत बडा लाभ हो सकता है। इसके मानी यह नहीं है कि उन-उन जबानों के लिए जो लिपियाँ चलती है, वे न चलें। वे चलें, लेकिन उनके साथ ही नागरी लिपि भी चले। हमने उसका आरंभ "गीता-प्रवचन" से किया है। हिन्दुस्तान की बहुत सारी भाषाओं में उसका उस उस लिपि में तरजुमा हो चुका है। लेकिन अभी कुछ नये संस्करण निकले है, जिनमें उडिया, पंजाबी, तेलुगु और गुजराती गीता-प्रवचन नागरी लिपि में छप चुका है। कन्नड़ गीता-प्रवचन नागरी में छपने की तैयारी में है। यह मै इसलिए कर रहा हूँ कि हिन्दुस्तान में हमें एकता के लिए जितने साधन मिलें, उन सबका बहुत उपयोग है। यह एक बहुत बडा देश है और उसे एक बनाने में जो ताकतें मिल सकती है, उन सबका उपयोग करना चाहिये।"

कन्नड़-नागरी गीता-प्रवचन इस—पुस्तक की प्रस्तावना में भी पू० विनोबाजी ने इस नये प्रयत्न के बारे में विस्तार से कह दिया है।

काम नया है। इसलिए आरंभ में छपाई की दिक्कतें तो थीं ही। छः महीने के बाद यह पुस्तक पाठकों के हाथ में आज हम दे रहे है।

अन्य भाषा-भाषियों की सुविधा के लिये ये सूचनाएँ दी जाती है :—

(1) अकारान्तवाले शब्दों के अन्तिम अक्षरों का आधा उच्चारण करना हिन्दी भाषा की पद्धति है। पर कन्नड़ में संस्कृत की तरह पूर्ण उच्चारण करना चाहिए – जैसे : लोक् – लोक, कमल् – कमल।

(2) ह्रस्व ए कार = 'ऎ', और ह्रस्व ओकार = "ऒ" इस प्रकार सूचित किया गया है।

ह्रस्व – कॆलवु, हॊळॆ

दीर्घ – केशव, होगु

छपाई के इस कठिन कार्य को सुचारु रूपसे कार्यान्वित करनेवाले बेंगलोर के प्रभा मुद्रणालय के मालिक श्री डी. एस्. कृष्णाचार्, एम्.एस्सी., और उनके सहायक हमारे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

इस नये प्रयोग में हमें कई मित्रों की सहायता मिली है। उन सबके हम आभारी है।

ता: 30-1-1959
बेंगलोर

प्रकाशक

विषय क्रम

गीता प्रवचन

अध्याय 1.

1. मध्ये महाभारतम्

ओलविन तम्मंदिरे,

इवोत्तिनिंद नानु श्रीमद् भगवद् गीतेय विषय हेळुत्तेने। गीतेगू ननगू इरुव संबंध तर्कक्के मीरिद्दु। नन्न मै ताय हालिनिंद बेळेदिदे। अदक्किंत हेच्चागि नन्न मनस्सु गीतेय हालिनिंद बेळेदिदे। एल्लि जीवाळद संबंध इरुत्तदो अल्लि तर्कक्के एडेयिल्ल। तर्कवन्नुळिदु श्रद्धे-प्रयोग ई एरडु रेक्केगळन्नु कॆदरि गीतागगनदल्लि नानु यथाशक्ति विहरिसुत्तेने। बहुश. नानु गीतेय वातावरणदल्ले इदेने। गीतेयेंदरे नन्न प्राणतत्व। गीतेय बग्गे यारिगादरू नानु हेळिद्दरे आग गीता-समुद्रद मेले तेलाडुत्तिरुत्तेने। नानोब्बने इद्दरे आ अमृतद कडलिनल्लि आळवागि मुळुगि कुळितिरुत्तेने। इन्थ गीतामातेय चरित्रेयन्नु प्रति भानुवार नानु हेळबेकेंदु निर्धारवागिदॆ।

गीतेयन्नु महाभारतदल्लि योजिसिदारे। महाभारतद नट्ट नडुवे भारतद एल्लेडेगू बेळकु बीरुव एत्तरवाद दीपदंते इदे—गीते। ऒंदु कडे आरु पर्व, इन्नॊंदु कडे हन्नेरडु पर्व, इदर नडुवे ओदु कडे एळु अक्षोहिणी सेने, इन्नॊंदु कडे हन्नॊंदु अक्षोहिणी सेने—हीगे नट्ट नडुवे गीते उपदेशितवागुत्तदॆ।

महाभारत रामायणगळु नम्म राष्ट्रीयग्रंथगळु। अवुगळल्लि वर्णिसिद व्यक्तिगळु नम्म बाळिनल्लि ऐक्यवागिद्दारे। राम-सीते, धर्मराय-द्रौपदि, भीष्म-हनुमंतरे मोदलादवरु साविरारु वर्षगळिंद समस्त भारतीय जीवनद मन सेळेदिद्दारे। जगत्तिन इतर महाकाव्यगळ पात्रगळु यावुवू हीगे जनजीवनदल्लि बेरेतुहोदंते काणुवुदिल्ल। ई दृष्टियिंद महाभारत रामायणगळु निस्संदेहवागि अद्भुत ग्रंथगळु। रामायण मधुर नीतिकाव्य, महाभारत व्यापक समाजशास्त्र। व्यासरु ओंदु लक्ष संहितेयन्नु बरेदु, असंख्य चित्रगळन्नु चरितगळन्नु चारित्र्यगळन्नु बहु कौशलदिंद यथावत् रूपिसिदारे। लोकदल्लि केवल निर्दोषवादुदेंदरे देवरोब्बने। हागेये बरी दोषपूर्णवादुदू यावुदू इल्ल। इदन्नु महाभारत स्पष्टवागि तिळिसुत्तदे। भीष्म युधिष्ठिरंथवरल्लियू दोषगळन्नु तोरिसलागिदे। इदक्के प्रतियागि कर्ण दुर्योधनर गुणवन्नु प्रकटिसिदारे। मानवन बाळु करि बिळि दारगळिंद नेद वट्टे एंबुदन्नु महाभारत निच्चळमाडि तिळिसुत्तदे। तावु अलिप्तरागिद्दु भगवान् व्यासरु ई विराट्-प्रपंचद नेरळुबेळकिन चित्रवन्नु तोरिसिद्दारे। व्यासर ई अलिप्त उदात्त ग्रंथरचना कौशलदिंद महाभारत बंगारद गणियागिदे। सोसि तेगेदु तेक्केतुंबा बंगारवन्नु ओय्यबहुदु।

व्यासरु इन्थ महाभारतवन्नेनो बरेदरु, आदरे अवर संदेश एंदु हेळबेकादुदु अवरिगे एनू इरलिल्लवे? तम्मदु ई उपदेश एंदु एल्लादरू हेळिद्दारेये? व्यासरिगे एल्लि समाधि बंदिदे? बेरे बेरे कडे होरे होरेयागि तत्वज्ञान महाभारतदल्लेल्ला बंदिदे। आदरे ई

एल्ल तत्वज्ञानद उपदेशद सारसर्वस्ववन्नु ऎल्लादरू ऒत्तट्टिगे व्यासरु इट्टिल्लवे ? इट्टिदारे। समग्र भारतद नवनीतवन्नु व्यासरु भगवद्गीतेयल्लि कॊट्टिदारे। गीते व्यासर मुख्य उपदेश, अवर मननद सारसंग्रह। इदरिंदले 'मुनीनामपि अहं व्यासः' ऎंदु विभूतियोगदल्लि अर्थपूर्णवागि हेळिदे। प्राचीनकालदिंदलू गीतेगे उपनिषत्तु ऎंब गौरव सदिदे। गीते उपनिषत्तुगळ उपनिषत्तु। सर्व उपनिषत्तुगळन्नु हिंडि गीतारूपदल्लि आ हालन्नु भगवंत लोकक्के नीडिदाने। अर्जुन त्वरी निमित्तमात्र। बाळिन विकासक्के अगत्यवाद प्रतियॊंदु विचारवू बहुशः गीतेयल्लि बंदे इदे। आदुदरिंदले गीते धर्मज्ञानद कोश ऎंदु अनुभविगळु यथार्थवागि हेळिदारे। गीते चिक्कदु। आदरे हिन्दूधर्मद महाग्रंथ !

गीतेयन्नु हेळिदुदु श्रीकृष्ण। इदु ऎल्लरिगू गॊत्तिदे। ई महा उपदेश पडेद भक्त अर्जुन अदरल्लि बॆरॆतुहोद। अते अवनिगू कृष्ण ऎंब हॆसरु बंतु। भगवंत–भक्तर हृद्गतवन्नु प्रकटपडिसुवाग व्यासदेव पूरा करगिहोगिदाने। लोक आतनन्नू कृष्णनॆंदु करॆयप्टुमट्टिगे आगिदे। हेळुववनु कृष्ण, केळुववनु कृष्ण, कट्टुववनु कृष्ण—हीगे मूवरल्लू ऒंदे अद्वैत मूडितु। मूवरिगू समाधि हत्तितु। गीतेयन्नु अभ्यसिसुवाग इन्थ एकाग्रते बरबेकु।

2. अर्जुनन भूमिकेय संबंध

गीते ऎरडनेय अध्यायदिंद मॊदलागबेकित्तु ऎंदु ऒट्टो जनरिगे अनिसुत्तदे। ऎरडने अध्यायद हन्नॊंदने श्लोकदिंद प्रत्यक्ष उपदेश

प्रारंभवागुत्तदे। अल्लिंदले गीते प्रारंभ अंदरे एनु तप्पु? ननगोब्बरु हेळिदरु "अक्षरगळल्लि अ कारवे ईश्वरी विभूति एंदु देवरु हेळिदाने। 'अशोच्यानन्वशोचस्त्वं' एंब श्लोकद आदियल्लू अकार-विदे। आद्दरिंद अल्लिंदले गीते प्रारंभवागिदे"। ई तर्कवन्नु तळ्ळि-हाकिदरू इल्लि गीते आरंभ एंबुदु अनेक दृष्टिगळिंद गमनीयवागिदे। आदरे अदक्के हिंदिन प्रास्ताविक भागवू महत्वदे। अर्जुन याव मनोभावदल्लि इदाने, याव मातन्नु हेळलु गीते हुट्टितु, अदन्नु आ प्रस्तावने ओदददे सरियागि अरियुवुदु कष्ट।

अर्जुनन क्लैब्यवन्नु कळेदु, अवनन्नु युद्धप्रवृत्तनन्नागि माडलु गीते हेळल्पट्टितु एंदु केलवरु हेळुत्तारे। अवर अभिप्रायदल्लि गीते कर्मयोगवन्नु मात्र हेळुवंथदल्ल; युद्ध-योगवन्नु हेळुवंथदु। विचार माडिदरे ई मातिनल्लिरुव तप्पु काणबरुत्तदे। हदिनेंटु अक्षोहिणी सेने युद्धसन्नद्धवागिदे। आ सेनेगे अर्जुनन्नु योग्यनन्नागि माडितु गीते एंदे अभिप्राय? अर्जुन हेदरिद, आ सेने हेदरलिल्ल। इदरिंद अर्जुननिगिंत आ सेने हेच्चु योग्यवादुदु एन्नोणवे? ई कल्पनेये बारदु। अर्जुन युद्धमाडलु हिंजरिद। आदरे अंजि अल्ल। नूरारु युद्धमाडिद महावीर अवनु। उत्तर गोग्रहणदल्लि भीष्म, द्रोण, कर्णरन्नु ओब्बने सोलिसिद्द। सदा विजयवंत, नररल्लि निजवाद नर इवने एंब कीर्तियित्तु। अवन रोमरोमदल्लू वीरवृत्ति तुळुकुत्तित्तु। अर्जुनन्नु हीनैसलिकेंदु केणकलेंदु श्रीकृष्णने मोदमोदलु ई क्लैब्यद आरोपवन्नु होरिसिदवनु। आ बाण गुरिगे ताकलिल्लवेंदु बेरे दारि

तेगेदु ज्ञानविज्ञानद बग्गे अनेक व्याख्यान माडतोडगिद। अवन क्लैव्यवन्नु निरसन माडुवुदे गीतेय तात्पर्यवल्ल।

इन्नु केलवरु हेळुत्तारे अर्जुनन अहिंसावृत्तियन्नु कळेदु अवनन्नु युद्धप्रवृत्तनन्नागि माडलु गीते हेळल्पट्टितु। इदू सरियल्लवेंदु ननगनिसुत्तदे। इदन्नु तिळियलु अर्जुनन मनोधर्मवन्नु परिशीलिसबेकु। इदक्के गीतेय मोदलने अध्यायवू ऎरडनेयदरोळगे होक्किरुव आ भागवू अत्यंत प्रयोजनकारि।

अर्जुन रणागणदल्लि बदु निंताग कृतनिश्चयनागि कर्तव्यज्ञान-उळ्ळवनागि बंदु नित। अवन स्वभावदल्लिये इत्तु क्षात्रवृत्ति। युद्ध-वन्नु तडेयलु सर्व प्रयत्नमाडिदरू अदु तप्पलिल्ल। तीरा कडिमे बेडिके, कृष्णनंथवन मध्यस्थिके, ऎरडू व्यर्थवादुवु। अथ संदर्भदल्लि देश देशद राजरन्नु कलेहाकि, कृष्णनन्नु सारथियागि पडेदु तदु, रणागण-दल्लि नितु अर्जुन वीरवृत्तिय हुरुपिनिद कृष्णनिगे हेळुत्ताने: ‘ऎरडू सेनेय नडुवे नन्न रथवन्नु निल्लिसु। नन्नोडने युद्ध माडलु यारु यारु बंदु सेरिदारो अवर मोरेगळन्नादरू ऒम्मे नोडुत्तेने’। कृष्ण अवनु हेळिदंते माडुत्ताने। अर्जुन नाल्कू कडेगू कण्णु होरळिसि नोडुत्ताने। अल्लि अवनिगे कडदेनु? ऎरडू कडे तन्न अण्ण तम्मंदिर, बंधुबळगद प्रचंड समूह सेरिदे। तात, तंदे, मक्कळु, मोम्मक्कळु, हीगे नाल्कु तले-मारिन जन मरण-मारणद कोनेय निर्धारमाडि सेरिदंते अवनिगे काणु-त्तदे। अदक्के मोदलु अवनिगे ई चित्त होळेदिरलिल्लवेंदल्ल। आदरे कण्णारे कडाग अदर परिणामवे बेरे। ई स्वजन समूहवन्नु नोडि

अवन ऒेदे तळमळिसि होयितु। अवनिगे बहळ केट्टुकु ऒनिसितु। अंदिनवरेगे अवनु ऒष्टो युद्ध माडिद, ऒष्टो वीररन्नु कॊंदिद। आग, अवनिगे केडुकेनिसिरलिल्ल, अवन गांडीव जारिबीळलिल्ल, अवन मै नडुगलिल्ल, अवन कण्णु तेवगागलिल्ल। अंथदु ईगेनु बंतु? ईग हीगेके? अशोकनहागे इवनल्ल अहिंसेय उदयवायितॆ? इल्ल। इदेल्ल बरी स्वजनासक्ति। नन्निदिरिनल्लि इंद गळिगॆयल्लि गुरु-बंधु-बळग अल्लदे बेरे वैरिगळिद्दरे अवर तलेगळन्नु निश्शंकोचवागि अवनु चंडाडुत्तिद्द। आदरे आसक्तिजन्य मोह अवन कर्तव्यनिष्ठेयन्नु नुगितु। साल्दुदक्के तत्वज्ञानवन्नु बेरे जोडिसिद। मोहग्रस्तनादरू पूर्ण कर्तव्यभ्रष्टनागुवुदु कर्तव्यनिष्ठनादवन मनस्सिगे ऒग्गदु। अदक्के अवनु यावुदादरू ऒंदु सद्विचारद मुसुकु हाकुत्ताने। अर्जुननदू हीगे आयितु। युद्धवे पापकार्य ऒंदु अर्जुन सुळ्ळुवाद माडिद। युद्धदिंद कुलक्षयवादीतु, धर्म लोपिसीतु, स्वैराचार हरडीतु, व्यभिचार हब्बीतु, बरगाल कविदीतु, समाज संकटदल्लि मुळुगीतु—हीगे ऎनेनो हेळि श्रीकृष्णनन्नु ऒप्पिसलु प्रयत्निसिद।

इल्लि ननगॊब्ब न्यायाधीशन सगति नेनपागुत्तदे। ऒब्ब न्यायाधीश इद्द। नूरारु जन अपराधिगळिगे अवनु मरणशिक्षे कॊट्टिद्द। ऒंदु दिन अवन मगनन्ने कॊलेगडिक ऎंदु हिडिदु तंदु इवन इदिरिगे निल्लिसिदरु। अवनमेले अपराध सिद्धवागि, ताने अवनिगे शिक्षे कॊडबेकाद प्रसंग बंतु। आग आ न्यायाधीश हिंतुळिद। बुद्धिवाद हेळतॊडगिद. 'मरणशिक्षे केवल अमानुषवादुदु। इन्थ शिक्षे

कोडुवुदु मनुष्यनिगे भूषणवल्ल। अपराधि इन्दल्ल नाळे उत्तमनादानेंब आसेयन्नु इदु चिवुटिहाकुत्तदे। कोले माडिदवनु भावनावशनागि उद्रेकदल्लि कोले माडिद। आदरे अवन कण्णोळगिन कॆंपु इळिदमेले अवनन्नु गल्लिगे नेतुहाकि कोल्लुवुदु मानवत्वक्के कळंक, नाचिकेगेडु’। इत्यादियागि न्यायाधीश हेळतॊडगिद। मग इदिरिगे बारदिद्दरे आ न्यायाधीश सायुवतनक मरणशिक्षेयन्नु सतोषवागि कॊडुत्तले इद्द। मगन मेलिन मोहदिंद हागे हेळिद। आ मातु ऒळगिनिंद बंदुदल्ल। इवनु तन्न मग ऎंब आसक्तियिंद हुट्टिद मातु अदु।

अर्जुननदू ई न्यायाधीशन गतियायितु। अवनु माडिद तर्क तप्पल्ल। कळेद महायुद्धद तरुवाय लोक इदे परिणामवन्नु कंडितु। आदरे अर्जुन हेळिदुदु तत्वज्ञानवल्ल, प्रज्ञावाद। कृष्णनिगे इदु गॊत्तु। अदक्के अवनु ई तर्कक्के गमनवन्ने कॊडदे नेरागि अवन मोहनाशद उपायवन्नु हुडुकिद। अर्जुन निजवागियू अहिंसावादियागिद्दरे ज्ञान विज्ञानद बगॆगे यारु ऎष्टे हेळलि तन्न मूल प्रश्नेगे उत्तर सिगदे अवनु सुम्मनागुत्तिरलिल्ल। इडी गीतेयल्लि अर्जुनन ई प्रश्नेगे उत्तरविल्ल। अवनिगेनो शंका समाधानवायितु। इदेल्लदर अर्थ इष्टे—अर्जुन अहिंसावृत्तियवनल्ल; युद्धप्रवृत्तियवनु। युद्ध अवनिगे स्वभाव प्राप्त कार्य, अपरिहार्य कर्म। मोहदिंद अवनु तन्न कर्तव्यवन्नु बिट्टुकॊडलु नोडिद। ई मोहदमेलॆये गीतेय गदाघात।

3. गीतेय प्रयोजन: स्वधर्मविरोधि मोहद निरसन

अहिंसेये अल्ल, सन्यासद शब्दजालवन्नू अर्जुन बळस नोडगिद्द। ई नेत्तरु बळिद क्षात्रकिंत संन्यासवे लेसु अंद अर्जुन। आदरे अदु अर्जुनन स्वधर्मवे? अदु अवन वृत्तिये? सन्यासिय वेषवन्नेनो सुलभ-वागि धरिसबहुदु। आदरे सन्यासिय मनस्सु ऎल्लिंद बरबेकु? सन्यासि वेषदिंद अर्जुन अडवि सेरिदरू अल्लि चिगरिय बेटेयाडुत्तिद्द। भगवत स्पष्टवागिये हेळिद. 'अर्जुन, युद्ध बेडवेन्नुत्तीया। इदु बरिय भ्राति। इन्दिनवरेगे निनगे मैगूडिरुव स्वभाव निन्निंद युद्ध माडिसदे बिट्टीते?'

अर्जुननिगे स्वधर्म विगुणवागि कंडितु। आदरेनु? ऎष्टे विगुणवादरू स्वधर्मदिंदले मनुष्य तन्न विकासवन्नु साधिसबेकु। अदरिंदले अवनिगे विकास साध्य। इदरल्लि अभिमानद सोंकु इल्ल। इदु विकासद सूत्र। हिरिदेदु स्वधर्मवन्नु हिडियबेकागिल्ल; किरिदेंदु जरियबेकागिल्ल। निजवागि अदु हिरिदू अल्ल, किरिदू अल्ल। अदु ननगे ओप्पुवंथदु। 'श्रेयान् स्वधर्मो विगुण'। गीतेय ई श्लोकदल्लि बरुव धर्म शब्दद अर्थ हिन्दू धर्म, मुसल्मान धर्म, क्रिस्तान धर्म, हीगल्ल। प्रतियोब्बनिगू अवनवन धर्म बेरे बेरेयागि इदे। नन्निदिरि-गिरुव इन्नूरु जनरिगे इन्नूरु धर्म इवे। नन्न धर्मवे, हत्तु वर्षद हिंदे इद्दुदु ईगिल्ल। ईगिनदु हत्तु वर्षद तरुवाय इरलिक्किल्ल। चिंतने अनुभवगळिंद धर्म बदलागुत्तदे, हळतु कळेदु होसदु बरुत्तदे। हठ-दिंद एनू माडबेकादुदिल्ल।

हेरवर धर्म श्रेष्ठवे आगि कंडरू अदन्नु अवलंबिसिदरे ननगे कल्याणवल्ल। सूर्यन बेळकु ननगे प्रिय। आ प्रकाशदिंद नानु बेळेयुत्तेने। सूर्य ननगे वंदनीय। आदरे नानु नेलवन्नु बिट्टु सूर्यन बळिगे होदरे सुट्टु बूदियादेनु। भूमियमेले इरुवुदु विगुणवे इद्दीतु। सूर्यनमुंदे भूमि तुच्छवे इद्दीतु, अदक्के स्वयंप्रकाशविल्ल; आदरे सूर्यन बळि सारि आ बिसियन्नु तडेयुव बल ननगे इल्लदिरुव तनक भूमियमेले इद्दु नन्न विकास माडिकोळ्ळबेकु। 'नीरिगिंत हालु अमौल्य, हालिनल्लि इरु' एंदु मीनिगे यारादरू हेळिदरे मीनु अदन्नु ओप्पीते? मीनु नीरिनल्लि बदुकीतु, हालिनल्लि सत्तीतु'।

हेरवर धर्म सुलभवादरू सग्राह्यवल्ल। अनेकसल सुलभवेंदु काणुवुदु बरिय तोरिके। संसारदल्लि हेंडति मक्कळ पोषणे माडुव तापत्रय कष्टवादुदेंदु गृहस्थरु सन्यास तेगदुकोंडरे अदु बरी वेष, अदु भारवादीतु। अवकाश सिक्करे साकु अदर वासने उक्कुत्तदे, संसारद होरे भारवेंदु अडविगे होदवनु अल्लियू ओंदु गुडिसलु कट्टत्ताने। अदर रक्षणेगागि ओंदु बेलि हाकुत्ताने। हीगे माडु माडुत्ता संसारद एल्ल कीटलेयू अवन पालिगे बरुत्तदे। निजवागि वैराग्यवृत्तियिद्दवरिगे सन्यास कठिनवल्ल। सन्यास सुलभवादुदु एंदु स्मृति वचनवे इदे। मुख्यवाद अंश वृत्ति। अवनवन नैजवृत्तियंते अवनवन धर्म, श्रेष्ठ-कनिष्ठ, सुलभ-कष्ट अदरल्लिल्ल। निजवाद विकासवागबेकु, सत्यवाद परिणतियागबेकु।

केलवरु भावुकरु केळियारु–'युद्धक्किंतलू सन्यास हेच्चिन-

दागिद्दरे भगवंत अर्जुननन्नु सन्यासियागि एके माडलिल्ल ? अवनिगे अदु असाध्यवागित्ते ?' अवनिगे यावुदू असाध्यविरलिल्ल। आदरे अदरल्लि अर्जुननिगेनु पुरुषार्थ सिद्धि ? भगवंत अंदरे स्वातंत्र्य। प्रति-योब्बनू ताने प्रयत्निसबेकु। अदे सवि। चिक्क मक्कळिगे तावे चित्र गीचुवुदेंदरे आनन्द। अवन कै हिडिदु तिद्दिसिदरे अवनिगदु सेरदु। उपाध्यायने हुडुगनिगे लेक्क माडिकोट्टरे हुडुगन बुद्धि बेळेयुवुदु हेगे ? तंदे तायि गुरुगळु सूचने कोडलि। परमेश्वर ओळगिनिंदले सूचने कोडुत्ताने। इदक्किंत हेच्चु एनू माड। कुंबारनंते देवरे कुट्टि बडिदु अेळेदु प्रतियोब्बरन्नू मडके माडतोडगिदरे अदरल्लेनु स्वारस्य। नावु गडिगे-मडकेयल्ल; नावु चिन्मयरु।

इदेल्ल विवरणेयिंद ओंदु मातु निमगे मनदट्टागिरबेकु। स्वधर्मक्के अड्डिबरुव मोहवन्नु कळेयुवुदे गीतेय जन्मद उद्देश्य। अर्जुन धर्मसम्मूढनाद। स्वधर्मद बग्गे अवनु मोहपरवशनाद। कृष्ण कोट्ट मोदलने एटिगे अर्जुन ई मातन्नु ओप्पिकोंड। आ मोह, ममते, आसक्तियन्नु दूरमाडुवुदे गीतेय मुख्य कार्य। गीतेयन्नेल्ल हेळिदमेले कृष्ण केळुव प्रश्नेयेनु ? 'अर्जुन, मोह होयिते ?' अर्जुन हेळिद— 'देव, मोह नागवायितु। स्वधर्मद अरिवायितु।' गीते हीगे मोद-लागि मुगियुवुदरिंद मोह निराकरणेये अदर फल। गीतेयदे अल्ल, महाभारतद इदे उद्देश्य। व्यासरु भारतद प्रारंभदल्ले हेळिदारे— 'लोगर मनस्सिन मोहवन्नु दूरमाडलेंदे नानी इतिहास प्रदीपवन्नु हत्तिसुत्तिदेने।'

4. ऋजुबुद्धिय अधिकार

मुंदे बरुव समग्र गीतेयन्नु अर्थमाडिकोळ्ळलु अर्जुनन भूमिके नमगे उपकारियागिदे। इदक्कागि नावु अवनिगे कृतज्ञरागिरबेकु। इदल्लदे इन्नू इदे अवन उपकार। अर्जुनन ई मनोवृत्तियल्लि अत्यंत ऋजुते काणबरुत्तदे। अर्जुन अंदरेने ऋजु अथवा सरळ स्वभावि। अवन मनस्सिनल्लि हुट्टिद विकार विचार ऎल्लवन्नू बिच्चुमनदिंद अवनु कृष्णन इदिरिगे हेळिद। एनन्नू मुच्चिडलिल्ल। कडेगे श्रीकृष्ण-नन्नु शरणुहोद। निजवागि अर्जुन मोदले कृष्णशरण। कृष्णनन्नु सारथियागि माडिकोंडु तन्न कुदुरेगळ लगामन्नु अवन कैगे कोट्टागले तन्न मनस्सिन लगामन्नू अवन कैगे कोडलु सिद्धनाद। नावू हागे माडोण। अर्जुनन बळि कृष्ण इद्द। नावेल्लिंद तरोण कृष्णनन्नु अंदीरि? कृष्ण ऎंब व्यक्तियोब्ब इद्द ऎंब ऐतिहासिक भ्रातिगे सिग-बेडि। अंतर्यामिय रूपदिंद कृष्ण प्रतियोब्बर हृदयदल्लू विराजमान-नागिदाने। समीपातिसमीप अंदरे अवने। नम्म हृदयद ऎल्ल कळवळ-वन्नु अवनिदिरिगे तेरेदिट्टु 'देव, ना निनगे शरणु बंदे। नीनु ननगे अनन्य गुरु। ननगे दारि तोरु। नी तोरिद दारियल्लि ना नडेवे' ऎन्नोण। हीगे नडेदरे पार्थसारथि नम्म सारथ्यवन्नु माडियानु। तन्न श्रीमुखदिंद नमगे गीतेयन्नु केळिसियानु। नमगे गेलवु कोट्टानु।

(21-2-32)

अध्याय 2.

5. गीतेय परिभाषे

कळेद सल अर्जुनन विषादयोगवन्नु कण्डेवु । अर्जुननंथ ऋजु-स्वभाविगे, हरिशरणनिगे विषादवू योगवागुत्तदे । इदन्ने हृदय मंथन-वेन्नुत्तेवे । ई प्रसंगक्के अर्जुन-विषादयोग एन्नदे विषादयोग एंब साधारण हेसरन्नु कोट्टिदेने । गीतेयल्लि अर्जुन बरी निमित्त । पंढर-पुरदल्लि पुंडलीकनिगागि पाण्डुरंगन अवतारवागलिल्ल । पुंडलीकन नेपदिंद जडजीविगळाद नम्मन्नु उद्धरिसलु साविरारु वर्षदिंद पाण्डुरंग निंतिद्दाने । इदे रीति अर्जुनन नेपदिंद गीतादानवागिद्दरू अदु एल्लरिगू अन्वयिसुत्तदेंदु गीतेय मोदल अध्यायक्के सामान्य विषादयोग-वेंब हेसरे सरि । इल्लिंद गीतावृक्ष बेळेदु हेम्मरवागि कडेय अध्याय-दल्लि प्रसादयोगद फल सिक्कुत्तदे । देवर इच्छे इद्दरे नावु जैलिन अवधियॊळगागि अल्लियवरेगे तलपुत्तेवे ।

एरडने अध्यायदिंद गीतेय उपदेश प्रारंभ । आदियल्ले भगवंत बाळिन महासिद्धांतवन्नु हेळुत्ताने । बाळु याव तत्वदमेले नेले-निंतिदेयो आ बाळतत्व मोदलु गंटलल्लि इळिदरे मुंदिन दारि सुगम-वादीतु एंब दृष्टि इदु । गीतेय एरडने अध्यायदोळगिन सांख्य-बुद्धि ई शब्दद अर्थ जीवनद मूल सिद्धांत एन्नत्तेने । ई मूल सिद्धांतवन्नीग नावु नोडबेकु । आदरे अदक्के मोदलु सांख्य शब्दद ई संदर्भदल्लि गीतेय पारिभाषिक शब्दगळ अर्थद बग्गे स्वल्प विवरणे ओळितादीतु ।

गीतेयल्लि हळेय शास्त्रीय शब्दगळिगे होस अर्थ कोडुव रूढि

इदे। हळेय शब्दक्के होस अर्थ तोडिसुवुदु विचार क्रांतिय अहिंसक रीति। इदरल्लि व्यासरदु पळगिद कै। अदरिंद गीतेय शब्दगळिगे व्यापक सामर्थ्य दोरेतु गीते होच्च होसदागि कळकळिसितु। अनेक जन विचारिगळिगे तम्म तम्म अगत्य, अनुभवगळिगे तक्कंते बेरे बेरे अर्थ जोडिसिकोळ्ळलु अनुवायितु। इवेल्ल अर्थगळू आया मनोवृत्तिगे सरि। इदरल्लि यावुदन्नू विरोधिसुव अगत्यविल्लदेये नावु स्वतंत्रवागि अर्थ माडबहुदु।

ई बग्गे उपनिषत्तुगळल्लि ओंदु स्वारस्यवाद संगतियिदे। ओम्मे देव मानव दानवरेल्लरू प्रजापतिय बळिगे उपदेशक्कागि होदरु। प्रजापति ऎल्लरिगू 'द' ऎंब ओंदे अक्षरवन्नु हेळिद। देवतेगळेंदरु-- 'नावु देवतेगळु कामिगळु। भोगद चाळियुळ्ळवरु। 'द' ऎंबक्षर हेळि दमनमाडि ऎंदु प्रजापति नमगे बोधिसिद'। दानवरेंदरु-- 'नावु दानवरु क्रोधिगळु, दयेये इल्लदवरु। 'द' ऎंबक्षर हेळि दयावंतरागि ऎंदु प्रजापति नमगे उपदेशिसिद'। मानवरेंदरु-- 'मानवरु नावु लोभिगळु। संचयद बेन्नु हत्ति हुच्चरादवरु। 'द' ऎंबक्षर हेळि दानमाडि ऎंदु प्रजापति बोधिसिद नमगे।' प्रजापति ऎल्लर अर्थवन्नू सरि ऎंद। एकेंदरे, ऎल्लरू तम्म स्वानुभवदिंद आ अर्थ पडेदिद्दरु। गीतेय परिभाषेगे अर्थ माडुवाग उपनिषत्तिन ई कते नेनपिरलि।

6. जीवन सिद्धांत: देहद स्वधर्माचरणे

ऎरडने अध्यायदल्लि जीवनद मूरु महा सिद्धांतगळन्नु निर्देशिसलागिदे। ओंदु--आत्मद अमरते, अखंडते; ऎरडु--देहद क्षुद्रते,

मूरु-स्वधर्मद अबाधितते। ई मूररलि स्वधर्मद सिद्धात कर्तव्यरूप-वादुदु : उळिदेरडू ज्ञातव्य। स्वधर्मद बग्गे मोदले स्वल्प हेळिद्दे। इदु निसर्गप्राप्तवादुदु ; हुडुकिकोंडु होगबेकागिल्ल। नानु मुगिलिनिंद इळिबीळलिल्ल। मण्णिद ओडमूडलिल्ल। नावु हुट्टुव मोदलु समाज-वित्तु। तंदेतायि इद्दरु। नेरेहोरेयित्तु। इन्थ प्रवाहदलि नावु हुट्टुत्तेवे। नावु यार होट्टेयलि हुट्टुत्तेवो आ तायितंदेगळ सेवेमाडुव कर्तव्य हुट्टिनिंदले नम्मदु। नावु हुट्टिद समाजद सेवे आ ओघदिंदले नमगे बंदद्दु। नम्म हुट्टिन जोतेगे स्वधर्मवू हुट्टुत्तदे। हुट्टुव मोदले नम्म स्वधर्म रूपुगोंडु सिद्धवागिरुत्तदे अन्नबहुदु। एकेदरे, नम्म हुट्टिगे अदे कारण। अदन्नु पूर्णगोळिसलिक्के नम्म हुट्टु। स्वधर्म हेंडतियंते अंदु केलवरु होलिसुत्तारे। हेंडतिय संबंध अविच्छेद्यविद्दंते स्वधर्मवू अविच्छेद्यवेंदु हेळुत्तारे। ई उपमान गौणवेंदु ननगनिसुत्तदे। स्वधर्म तायियंते अंदेनु? ई जन्मदलि इन्थ तायिबेकु अंदु आरिसलुंटे ननगे? अदेल्लवू मोदले एर्पाडागिदे। आ एर्पाडु हेगे इरलि, नानदन्नु मुरिय-लारे। स्वधर्मद् इदे बगे। स्वधर्मविना बेराव आश्रयवू लोकदलि नमगिल्ल। स्वधर्मवन्नु तप्पिसुवुदेंदरे तन्नन्ने कळेदुकोंडंते, आत्मघातक-तन। स्वधर्मद आसरेयल्ले नावु मुंबरियलु साध्य। अदरिंदले अदन्नु यावागलू यारू बिडबारदु। इदु ओंदु जीवनद मूलसूत्र।

स्वधर्म अष्टु सहज प्राप्तवेंदरे, सहजवागिये मनुष्य अदन्नु नडेसुवंते इदे। आदरे अनेक बगेय मोहगळिंद हागे आगुवुदिल्ल ; बहळ कष्टवागुत्तदे। अदरलि विष बेरेतुकोंडु बिडुत्तदे। स्वधर्मद

हादियल्लि मुळ्ळु चेल्लुव मोहद रूप असंख्य। आ रूपराशियन्नेल्ल परिशीलिसिदरे मुख्यवाद ओंदु अंश कंडु बरुत्तदे। संकुचित देहबुद्धि; नानु नन्न बळग इष्ट नन्न लोक; उळिदवरेल्ल हगे अंब भेद बुद्धिगे इदु बीज। नानु नन्नदु अंबुवनु तन्न शरीरवन्नु मात्र नोडुत्ताने। देह, बुद्धि ई इब्बगेय पेच्चिगे सिकि परिपरिय कूपगळन्नु माडिकोळ्ळुत्तेवे। बहुशः अल्लरू इदन्ने माडुत्तिरुत्तारे। केलवरदु सण्ण कूप, केलवरदु दोड्डदु। अंतू कूप। ई मैय चर्मदष्टे अदर आळ। इष्टे। केलवरु कुटुंबाभिमानद कूप माडिकोंडरे केलवरु देशाभिमानद्। ब्राह्मण-ब्राह्मणेतर, हिन्दू-मुसल्मान, ओंदल्ल अरडल्ल कोनेयिल्लद विभेद। अत्त नोडिदरत्त अदुवे अदु। जैलिनल्लू राजकीय कैदि, इतर कैदि अंब विभाग। ई भेदगळिल्लदे बदुकुवुदे कष्ट। आदरे इदर परिणामवो? ओंदे: हीन विकारद प्राणि, स्वधर्मरूप आरोग्यद नाश।

7. जीवन सिद्धांत : देहातीत आत्मद भास

इन्थ प्रसंगदल्लि स्वधर्मनिष्ठेयोंदे सालदु। अदक्कागि उळिदेरडु सूत्रगळन्नू लक्ष्यदल्लिडबेकु। नानु ई सावुगुळि मैयल्ल, ई मै केवल मेलिन होदिके. इदु ओंदु सिद्धात। नानु अंदिगू सायद अखंड, व्यापक आत्म. इन्नोंदु। इवेरडू सेरि ओंदु पूर्ण तत्वज्ञान।

ई तत्वज्ञान गीतेगे अष्टु अगत्यवेनिसिदेयेंदरे, मोदलु ई तत्ववन्नु आवाहनेमाडि तरुवाय स्वधर्मद अवतारवन्नु माडिसुत्तदे। तत्वज्ञानद ई श्लोक मोदलिगे एके अन्नुत्तारे केलवरु। गीतेयल्लि स्थानपल्लट माडलारद श्लोक यावुदादरू इद्दरे ई श्लोकवे अनिसुत्तदे।

इष्टु तत्वज्ञान मनस्सिनल्लि नेलेयूरिदरे स्वधर्म स्वल्पवू कष्टवाग-
लिक्किल्ल। अष्टे अल्ल। स्वधर्मवन्नु बिट्टु बेरेनादरू माडलु कष्टवादीतु।
आत्मतत्वद अखंडते, देहद क्षुद्रतेगळन्नु अरियुवुदु कष्टवेनल्ल। एकेंदरे
इवेरडू सत्य। आदरे आ बगे विचार माडबेकु। बारि बारिगू अदन्नु
मनदल्लि मेलकु हाकबेकु। मैय महत्ववन्नु तग्गिसि आत्मद महत्ववन्नु
हेच्चिसुव ई कलेयन्नु नावु कलियबेकु। ई मै गळिगे गळिगेगे
बदलागुत्तलिदे। बाल्य, तारुण्य, वार्धिक्य, ई चक्र एल्लरिगू अनुभव-
वुंटु। आधुनिक शास्त्रद प्रकार एळु वर्षक्कोम्मे शरीर बदलागुत्तदे।
हळेय रक्त ओंदु तोट्टू इरदु। हन्नेरडु वर्षके हळेय मै सत्तुहोयितु
एंदु भाविसुत्तिद्दरु नम्म हिरियरु। अदक्के प्रायश्चित्त, तपश्चर्ये,
अध्ययनगळन्नु हन्नेरडु वर्ष पर्यंत विधिसुत्तिद्दरु। अनेक वर्षदनंतर
मगनन्ने तायि गुरुतिसलारदादळेंबुदन्नु नावु केळिदेवे। हीगे प्रति-
क्षणवू बदलिसुत्त प्रतिक्षणवू सायुत्त इरुव मैये निन्न रूपु? हगल
इरुळू यावुदरल्लि मलमूत्रगळ चरंडि हरियुत्तिदेयो, निन्नथ गट्टिग तोळे
तोळेदरू यावुदर अशुचि होगदिदेयो, अद नीने? अदु अस्वच्छ।
नीनु अदन्नु स्वच्छमाडुववनु। अदु रोगि, नीनु मद्दु कोडुववनु। अदु
मूरूवरे मोळदगल नेलदल्लि बिद्दिद्दरे नीनो त्रिभुवन विहारि। अदु
नित्य परिवर्तनशील। नीनु आ परिवर्तनेयन्नु नोडुववनु। अदु सायुव
सामग्रि, नीनु अदर साविन व्यवस्थापक। निनगू अदक्कू इरुव भेद
इष्टु स्पष्टवागिरलु नीनु संकुचित हेगादे? निनगू मैगू संबंध एंदरेनु?
मै सत्तरे अळुवुदेनु? भगवत केळुत्ताने 'देह नाशवादरे अळबेके?'

देह बट्टेयहागे इदे। हळेयदु हरिदरे होस बट्टे तेगेदुकोळ्ळु-त्तेवे। ओंदे ओदु देहक्के कडेतनक आत्म अंटिकोंडुबिट्टिद्दरे आत्मद बाळे सागुत्तिरलिल्ल। अेल्ला विकासवू निल्लुत्तित्तु। आनंदवे इल्ल-दागुत्तित्तु। ज्ञानद होळे बत्तिहोगुत्तित्तु। अंतले देहद नाश शोचनीयवल्ल। आत्मद नाशवागिद्दरे बहळ शोचनीयवागुत्तित्तु। आदरे नम्म पुण्य, आत्म अविनाशि। आत्म अखंडवागि हरियुत्तिरुव होळे। अदरल्लि अेष्टो मै तेलि बरुत्तवे, होगुत्तवे। अंतले मैय मलकु-कलकिनल्लि सिक्कि अळुवुदागलि, इदु नन्नदु अदु हेरवरदु अेंदु तुंडु माडिकोळ्ळुवुदागलि शुद्ध तप्पु। ब्रह्माड अंदवागि नेय्द सोगसाद बट्टेयंते। चिक्कमक्कळु कत्तरि हिडिदु बट्टेयन्नु कत्तरिसुवते मैयेब कत्तरि हिडिदु विश्वात्मवन्नु तुंडुतुंडागि कत्तरिसुवुदु अेंथ हुडुगतन? अेंथ हिंसे?

ब्रह्मविद्येगे जनुमकोट्ट भरतभूमियल्ले बरी हिरिदु-किरिदु बण्ण-जाति भेदगळ गुल्लु काणुत्तिदेयल्ल, अेंथ दुःखद संगति! साविगे इल्लिरुवष्टु अंजिके अेल्लू काणलिक्किल्ल। इदेल्ल बहु दीर्घकालद पराधीनतेय फल। निस्संदेहवागि। आदरे पराधीनतेगे इदू ओंदु कारणवेंबुदन्नु मरेयलागदु।

नमगे साविन हेसरु कूड सैरिसद हागे आगिदे। साविन हेसरु हेळिदरे अमंगल अेनिसिदे।

"अेलवो सावु अेन्नलंजुती, सत्तरे बिद्दु बिद्दु अळुती" अेंदु ज्ञानदेवरु दुःखदिंद बरेयबेकायितु। यारादरू सत्तरे अेष्टु अळु? अेष्टु

रंवाट ? अदेल्लवू कर्तव्य अंदु नावु तिळिदिदेवे । कूलिकोट्टु अल्ह्ल्च्चव-वरेगू होगिदेवे । सावु समीपिसिदरू रोगिगे नावु अदन्नु हेळुवुदिल्ल । वैद्यरु रोगि बदुकुवुदिल्ल अंदु हेळिदरू नावु मात्र रोगियन्नु भ्रांतियल्ले इडुत्तेवे । वैद्यरु इदन्नु स्पष्टवागि हेळरु ; कडेतनक मद्दु कोडुत्तले इरुवुदन्नु बिडरु । निज हेळि देवर स्मरणेय दारिगे रोगिय मनस्सन्नु तिरुगिसिदरे अेष्टु उपकारवादीतु ? आदरे इदरिंद धक्के तगलिदंतागि गडिगे मोदले ओडेदरे ? आमेले ओडेव गडिगे मोदले ओडेदीतु हेगे ? ओंदुवेळे गंटे अेरडु गंटेय तरुवाय ओडेयबेकाद गडिगे मोदले ओडेदरेताने एनु ? इदर अर्थ नावु कठोररू प्रेमशून्यरू आगबेकेंदल्ल । आदरे देहासक्ति प्रेमवल्ल । नोडिदरे, देहासक्ति अळियदे निजवाद प्रेम मूडुवुदे इल्ल ।

देहासक्ति होदरेने ई देहवु सेवेय साधन अेंबुदु अरिवागुत्तदे । आग देहक्के सरियाद प्रतिष्ठे सिक्कीतु । ईग देहपूजेये नमगे गुरियागिदे । स्वधर्मपालने नम्म गुरि अेंबुदन्नु मरेतिदेवे । स्वधर्माचरणेगागि मैयन्नु कापाडबेकु : अदक्के तिन्नलू कुडियलू कोडबेकु । आदरे नालिगेय चपलवन्नु तीरिसबेकागिल्ल । बडिसुव सौटिगे श्रीखंडवेनु चट्नियेनु ? अेरडू ओंदे । नालिगेगे हागे आगबेकु । नालिगेगे रसज्ञानविरलि, अदर सुख दुःख बेड । शरीरक्के अदर बाडिगेयन्नदक्के कोट्टरे साकु । राटेयिंद नूलु तेगेयबेकागिदे अेंदु अदक्के अेण्णे हाकबेकागुत्तदे । हागे मैयिंद केलस माडिसिकोळ्ळबेकागिदे अेंदु अदक्के उरवलु हाकबेकु । हीगे देहवन्नु बळसिदरे मूलतः अदु क्षुद्रविद्दरू अदक्के बेले बरुत्तदे ; अदक्के प्रतिष्ठे लभिसुत्तदे ।

देहवन्नु उपकरणवेंदु बळसदे नावु मैयन्नु दोड्डदु माडि अदरल्लि मुळुगि आत्मवन्नु कुगिसुत्तेवे। अदरिंद मोदले क्षुद्रवाद मै मत्तष्टु क्षुद्रवागुत्तदे। अंते संतरु निर्धरवागि हेळिदारे :

' देह देह संबंध निंद्य
श्वानसूकर इवु वंद्य '

मैगे संबंधिसिदुदन्नु मूरु होत्तू पूजिसलेके? उळिदुदन्नु गुरुतिसलु कलि। हीगे साधुगळु व्यापकवागुव बगेयन्नु हेळुत्तारे। नम्म आप्तेष्टर, बंधु मित्रर विना उळिदवर बळिगे नम्म आत्मवन्नु तेगेदुकोंडु होगुत्तेवेये? 'जीवदल्लि जीव बेरेसु, आत्मदोंदिगे आत्मव कलेसु' एंदु नावु नडेयुत्तेवेये? नम्म आत्महंसक्के ई पंजरद होरगण गाळियन्नु तोरिसुत्तेवेये? नानु नन्नदु एंब गेरे दाटि इवोत्तु होसदागि हत्तु जनर गुरुतु माडिकोंडे, नाळे हदिनैदु, नाडिद्दु ऐवत्तु। हीगे इडी विश्ववन्ने नन्नदागि माडिकोंडेनु एंब भावने बंदीतेनु नमगे? सेरेयल्लिद्दाग नम्म मनेयवरिगे कागद बरेयुत्तेवे। एनदरल्लि विशेष? सेरेयिंद बिडुगडेयाद राजकीय कैदिगळदे कळवुमाडिद कैदिगे पत्र बरेयुत्तेवेनु?

नम्म आत्म व्यापकवागलु सदा चडपडिसुत्तिरुत्तदे। अदक्के इडी जगत्तन्ने हब्बिकोळ्ळबेकेंब बयकेयिरुत्तदे। आदरे नावु अदन्नु कट्टि हाकुत्तेवे। सेरे हाकिदेवे, नमगे अदर नेनपे आगदु। मुंजाने-यिंद संजेयतनक देहसेवेये। ई मै एष्टु बलियितु, एष्टु सोरगितु एंबुदे नम्म चिंते, बेरावुदरल्लू आनंदविल्लवेंबंते। भोगद आनंद,

रुचिय आनद पशुविगे उंटु । त्यागदानंदवन्नु रुचियनिग्रहदानन्दवन्नु तिळियबेडवेनु ? नावु हसिविनिंद तळमळिसुत्तिद्दाग नम्म अेलेयन्नु हसिद परिगे नीडुवुदरल्लि एनु आनंदविदेयो अनुभविसि नोडु । अदर रुचि नोडबारदे ? मगुविगागि तायि तन्नन्नु तेदाग आकेगे ई रुचि स्वल्प अनुभववागुत्तदे । नन्नदु अेंदु मनुष्य गेरे हाकिकोंडागले आत्मविकासद रुचि सवियुव उद्देश्य अवनिगे तिळियदेये अदरल्लिये अडगिरुत्तदे । अवन मैयल्लि बंधितवाद आत्म स्वल्पमट्टिगे केलनु होत्तु होरगे हरियुत्तदे । होरगे हरियुवुदु अेंदरे हेगे ? सेरेमनेय कोणेयल्लिरुव कैदिगळु अंगळके बंदते । आदरे आत्मद केलस इष्टिगे मुगियदु । आत्मक्के मुक्तानंद बेकु ।

साराश : 1. अधर्म परधर्मगळु अडुदारि । अवन्नु बिट्टु साधकरु स्वधर्मद सहज, सरळमार्गवन्नु हिडियबेकु । स्वधर्मद सेरगन्नु अेंदू बिडबारदु । 2. देह क्षणभगुर । इदन्नु तिळिदु स्वधर्मक्कागि अदन्नु बळसबेकु । स्वधर्मक्कागि अदन्नु बिसुडलबेकु । 3. आत्म अखड, व्यापक । इदर अरिवन्नु सदा जागृतविट्टुकोंडु, मनस्सिनिंद स्व-पर भेदवन्नु कित्तोगेयबेकु । जीवनद ई मुख्य सिद्धांतवन्नु भगवंत हेळिदाने । इदन्नु आचरिसुव मनुष्य ओंदलोंदु दिन ' नरदेहदिंदले सच्चिदानद पदवि ' पडेदानु ।

8. अेरडन्नू मेळगूडिसुव युक्ति : फलत्याग

भगवंत हीगे सिद्धात हेळिदुदेनो निज । आदरे हेळिद मात्रक्के केलसवादंतायिते ? गीतेय ई सिद्धात हिंदेये उपनिपत्तु स्मृति-

गळलि वंदित्तु । अदन्ने गीते मत्ते हेळिदुदरल्लि अपूर्वतेयेनिल्ल । ई सिद्धातवन्नु आचरिसुवुदु हेगे अेंबुदन्नु हेळिदुदे गीतेय अपूर्वते । ई महा समस्येयन्नु बिडिसुवुदरल्ले गीतेय कुशलते !

वाळिन सिद्धातवन्नु आचरणेगे तरुव उपाय, कले--अदे योग । सांख्यवेंदरे सिद्धांत, शास्त्र, योग अेंदरे कले । 'योगि साधिसिद जीवन कले' अेंदु ज्ञानदेवरु हेळिदारे । सांख्य--योग, शास्त्र--कले अेरडरल्लू गीते परिपूर्ण । शास्त्र--कले अेरडू सेरिदरे जीवनसौंदर्य अरळुत्तदे । बरी शास्त्र गाळिगोपुर । संगीत शास्त्रवन्नु अभ्यास-माडिदरू कंठदिंद हाडुहेळुव कले बारदिद्दरे नादब्रह्मद सिद्धियागदु । अदक्के भगवत शास्त्रद जोतेगे अदर विनियोगवन्नु अरियुव कलेयन्नु तिळिसिदाने । इदावुदु ई महाकले ? देहवन्नु तुच्छवेंदु, आत्मवन्नु अमर--अखंडवेंदु तिळिदु स्वधर्मवन्नाचरिसुव कले--इदावुदु ?

कर्ममाडुववन वृत्ति द्विमुख । नावु कर्ममाडिद मेले अदर फलवन्नु नावे सवियबेकु ; अदु नम्म हक्कु अेंबुदु ओंदु । तद्विरुद्ध-वागि नमगे फल सिगदिद्दरे नावु कर्मवन्ने माडुवुदिल्ल--अेबुदु इन्नोंदु । गीते इवेरडन्नू बिट्टु मूरनेय वृत्तियन्नु हेळुत्तदे · कर्ममाडु, फलद हक्कन्नु बिडु ' अेन्नुत्तदे गीते । कर्म माडिदवनिगे फलद हक्कु इद्दे इदे । नीनदन्नु नीनागि बिट्टकोडु । रजोगुण हेळुत्तदे--' तेगेदुकोळ्ळु-वुदिद्दरे फल समेत तेगेदुकोळ्ळुत्तेने ।' तमोगुण हेळुत्तदे--' बिडुवुदे-इद्दरे कर्मसमेत बिट्टेनु '। अेरडू अण्ण तम्म । अेरडन्नू मीरि शुद्ध सत्वगुणियागु । कर्ममाडि फलवन्नु बिडु ; फलवन्नु बिट्टु कर्ममाडु । मोदलिगागलि, कडेगागलि अेल्लू फलाशे माडबेड ।

फलदासे विडँदुदर जोतेगे कर्म दक्ष, उत्कृष्ट आगबेकु अँदु गीते अप्पणे माडुत्तदे। सकामिय कर्मकिंत निष्कामिय कर्म हेच्चु ओळ्ळेयदागबेकु। ई आसे योग्यवादुदु। सकामिगे फलासक्तियिंद अदर कनसु कावुदरल्लि काल नष्ट, शक्ति नष्ट स्वल्पमट्टिगे आगुत्तदे। फलेच्छेयिल्लदवनिगे कर्ममाडलिक्के प्रतिक्षणवू सिगुत्तदे। होळेगे विडुवेल्लि[2] गाळिगे तेरवेल्लि[2] सूर्यनिगे सदा बेळगुवुदोदे गोत्तु। इदे रीति निष्कामकर्मिगे सदा सेवे माडुवुदोंदे गोत्तु। हीगे निरंतर कर्मशीलनादवन कर्मवल्लदे मत्ताव कर्म उत्कृष्टवादीतु[2] चित्तद समते दोड्ड कुशल गुण। निष्काम पुरुषनिगे अदु स्वंत सोत्तु। ओंदुवेळे अवनु केलवु होरगिन व्यवहारगळिगे कैहाकिदरू समचित्त, हस्त कौशलगळेरडू सेरि केलस हेच्चु अंदवादीतेंबुदु स्पष्ट। सकामि निष्कामिगळ कर्मदृष्टियल्लिरुव व्यत्यास निष्कामिगे हेच्चु अनुकूल। सकामि स्वार्थदृष्टियिंद कर्मवन्नु नोडुत्ताने। नन्न कर्म, नन्नदु फल अँबुदरिंद कर्मदल्लि स्वल्प असड्डेयादरू अवनिगे नैतिकदोष तिळियदु। बहळादरे व्यावहारिक दोष कंडीतु। निष्कामकर्मिगे तन्न कर्मदल्लि नैतिक कर्तव्य बुद्धियिरुवुदरिंद अदरल्लि किंचित्तू ऊनविरबारदेंदु जागरूकनागिरुत्ताने। अंतले अवन कर्म हेच्चु निर्दोषवागिद्दीतु। हेगे नोडिदरू फलत्याग अत्यंत यशस्वियाद कुशल तत्व अँबुदु सिद्धवागुत्तदे। अदरिंदले फलत्यागवन्नु योग अथवा जीवनकले अन्नुवुदु।

निष्कामकर्मद मातन्नु बदिगे सरिसिदरू प्रत्यक्षवागि कर्मदल्लि इरुव आनंद अदर फलदल्लि इल्ल। स्वकर्म माडुवागिरुव तन्मयते ओंदु

आनंदद वुगे । चित्रकारनिगे नीनु चित्र तेगेयबेड, सुम्मनिद्दरे बेकादष्टु हण कोडुत्तेवे ऎन्नि ; अवनु ओप्पलार । बेसायगारनिगे नीनु उळबेड, बित्तबेड, दन कायबेड, कपिले होडेयबेड, निनगे बेकादष्टु काळु कोडुत्तेवे ऎन्नि ; अवनु निजवाद ओक्कलिगनादरे अवनिगे अदु रुचिसलिक्किल्ल । ओक्कलिग बेळिग्गे ऎद्दु होलक्के होगुत्ताने । सूर्य-नारायण अवनन्नु स्वागतिसुत्ताने । हक्किगळु अवनिगागि हाडु हाडुत्तवे । दन करु अवनन्नु बळसि निल्लुत्तवे । अवनु कातरदिंद अवुगळ मै नीवुत्ताने । तानु नेट्ट गिडबळ्ळियन्नु नोडुत्ताने । इदेल्ल केलसदल्लि ऒंदुबगेय सात्विकानंदविदे । आ आनंदवे आ कर्मद मुख्य निजफल । हागे लेक्क हाकिदरे अदर बाह्यफल वहळ चिल्लरे, गौण ।

कर्मफलदिंद मनुष्यन कण्णन्नु बेरे सेळेदागले गीते ई युक्ति-यिंद कर्मदल्लिन तन्मयतेयन्नु शतगुणवागि माडुत्तदे । फलासक्ति-यिल्लदवन कर्मद तन्मयते समाधियमट्टद्दु । अदरिंद अदर आनंद उळिदुदक्किंत शतगुणवागुत्तदे । विचारिसिनोडिदरे निष्कामकर्मवे ऒंदु महाफल । 'मरक्के हण्णुंटु, हण्णिगेनु फलवुंटु' ऎंदु सरियागि केळिदारे ज्ञानदेवरु । ई देहवृक्षक्के निष्काम स्वधर्माचरणेयंथ चलो हण्णु दोरेतमेले इन्नेनुबेकु ? एके वयसबेकु ? ओक्कलिग होलदल्लि गोधि बेळेदु अदन्नु मारि जोळद रोट्टियन्नु एके तिंदानु ? बाळेयतोट बेळेसि बाळेहण्णु मारि मेणसिनकायि तिंदवरुंटे ? बाळेयहण्णन्ने तिन्नय्या, तिन्नु । आदरे लोकक्के इदु ओप्पिगेयिल्ल । बाळेयहण्णन्नु तिन्नुव भाग्यविद्दू लोक मेणसिनकायि तिन्नबयसुत्तदे । हागे माडनेडि ऎंदु

गीते हेळुत्तदे। कर्मवन्ने तिन्नु, कर्मवन्ने कुडि, कर्मवन्नु अरगिसिको। कर्ममाडुवुदरल्ले ऎल्लवू चंतु। हुडुग आटद आनंदक्कागि आडुत्ताने। अदरिंद व्यायामद फल अवनिगे सहजवागि सिक्कुत्तदे। अवनिगे आ फलद कडे गमनविल्ल। अवन आनंदवेल्ला आ आटदल्ले!

9 फलत्यागद ऎरडु उदाहरणे

साधुसंतरु तम्म बाळिनल्लि इदन्नु तोरिसिद्दारे। तुकारामर भक्तियन्नु कंडु शिवाजिगे अवरल्लि बहळ आदर हुट्टितु। ऒंदुसल अवर मनेगे पल्लक्कि मुंतादुदन्नु कळिसि स्वागतिसिद। ई समारंभवन्नु नोडि तुकारामरिगे बलु नोवायितु। तम्म मनस्सिनल्लि अवरु योचिसिदरु 'इदेये नन्न भक्तिगे फल? इदक्कागिये नानु देवरल्लि भक्तियिट्टद्दु?' मान मर्यादेय फलवन्नु कैयल्लिट्टु देवरु तन्नन्नु दूरक्के नूकुत्तिद्दानॆंदु अवरिगे अनिसितु।

'नू कुवेया अरितु अंतरंग
नीनॆंथ खोडि पांडुरंग।'

'देवरे, निन्नी चेल्लाट सरियल्ल। ई किरुकुळ कॊट्टु नन्नन्नु सरिसबयसुत्तीया? ई पीडेयू ऒम्मे कळॆदु होगलि ऎन्नुत्तीयेनो। नानेनु अपक्ववल्ल। निन्न कालन्नु बिगियागि हिडिदु कूतेनु नानु' ऎंदु अवरु गोळाडिदरु। भक्ति भक्तन स्वधर्म। भक्तियल्लि बेरे बेरे फलाभिलाषेयन्नु कोनरिसदिरुवुदे जीवनकले।

पुंडलीकन चरित्रे फलत्यागक्किंतलू हेच्चिन आळवन्नु तोरिसुत्तदे। पुंडलीक तंदे तायिगळ सेवे माडुत्तिद्द। आ सेवेगे मेच्चि

पाडुरग अवन बळिगे ओडिबंद। आदरे पाडुरंगन मोहक्के सिक्कि तानु माडुव सेवेयन्नु बिडलु अवनु ओप्पलिल्ल। तायि तंदेय सेवे अंदरे अवनिगे जीवाळद ईश्वर भक्ति। पररन्नु कोल्लेहोडेदु तदे तायियन्नु सुखपडिसियानु ओब्ब। अन्य देशक्के द्रोह बगेदु स्वदेशद एळिगे बयसियानु ओब्ब देशसेवक। अवरिब्बरिगू भक्तियिल्ल, आसक्ति। पुंडलीक अथ आसक्तनल्ल। इदिरिगे बंदु निंत मालक्के अवनेये परमेश्वर? आ रूपु काणुव मोदलु सृष्टि जीवहीनवागित्ते? पुडलीक हेळिद–'देवरे, नीनु नन्नन्नु काणलु बदुदु तिळियितु। नानु ऊ सिद्धातवादि। नीनु देवरु अंबुदन्नु नानोप्पे। नीनू देवरे, नन्न तायितंदेयू देवरे। इवर सेवेयल्लि नानिरुवाग निन्नकडे गमन कोडलारे। इदक्कागि नन्नन्नु मन्निसु'। हीगेंदु देवरु नितिरलिक्केंदु ओंदु इट्टिगे-यन्नु चाचिद। तन्न सेवाकार्यदल्लि तानु मुळुगिद। तुकारामरु कौतुकदिंदलू विनोददिंदलू हेळुत्तारे।

पुंडलीकनु माडिद ई उपाय फलत्यागसिद्धातद ओंदु अग। फलत्यागि पुरुषन कर्मसमाधि गहनवू अवन वृत्ति व्यापकवू उदारवू समवू आगिरुत्तदे। अदरिद अवनु नाना तत्वगळ गोंदलदल्लि सिग, तन्न तुत्व बिड। इदे 'नान्यदस्तीति वादिनः।' अदू इरलि इदू इरलि, ननगेनो इदे इरलि अंबुदु अवन विनय, निश्चय।

ओदुसल ओब्ब गृहस्थ ओब्ब साधुविन बळिगे होगि, मोक्ष-क्कागि मने बिडलेबेके अंदु केळिद। साधु हेळिद: 'यारु हेळिदरु? जनकनंथवनु अरमनेयल्लिद्दे मोक्ष गळिसिद। नीनेके मने बिडबेकु?'

इब्बोब्ब मेट्टियागि साधुवन्नु केळिद : 'मने बिडदिद्दरे मोक्ष सिगदे ?' 'यारु हेळिदरु ? मनेयोळगे कूतु सुखदल्लि मुळुगि मोक्ष पडेवुदादरे शुकनेनु हेड्डने मने बिडलिल्ले ?' ई इब्बरू गृहस्थरु ओंदेडे सेरिदरु। ओब्ब हेळिद, मने बिडलिल्ले हेळिदरु साधु'। इन्नोब्बनेंद-'मने बिडुव अगत्यविल्लेंदरु'। इब्बरू मत्ते साधुविन बळिगे बंदरु। आत हेळिद. 'एरडू सरि। अवरवर वृत्तियंते अवरवर दारि। अवरवर प्रश्नेयंते अवरवरिगे उत्तर। मने बिडबेकागिल्लवेंबुदू निज, बिडबेकेंबुदू निज'। इदर हेसरु ऊ सिद्धांत।

पुंडलीकन उदाहरणेयिंद फलत्याग याव मजलिगोय्युत्तदे एंबुदु तिळियुत्तदे। देवरु तुकारामनिगे तोरिद आसेगिंत पुंडलीकनिगे तोरिदुदु अत्यंत मोहक एन्नबेकु। आदरे अंथदक्कू अवनु मोस-होगलिल्ल। ओम्मे साधने निर्धारवादमेले कडेतनक साधने नडेयबेकु। साधने नडेयुत्तिरुवाग, कर्तव्य माडुत्तिरुवाग, देवरे इदिरिगे बंदरू साधने सडिलागबारदु। कर्तव्य बिडबारदु। मै इरुवुदु साधनेगागिये। देवर दर्शन नम्म कैयोळगिन मातु। अदेल्लि होदीतु ?

इदन्नू पूर्णगोळिसलेंदे ई जन्म। 'मा ते संगोस्त्वकर्मणि'- ई गीतावाक्यद अर्थ, निष्काम कर्म माडुववनिगे अकर्मद एंदरे अंतिम कर्ममुक्तिय अथवा मोक्षद आसे इरलागदु एन्नुववरेगू इदे। वासना-मुक्तिये मोक्ष। मत्ते मोक्षक्केके वासने ? फलत्यागदिंद ई मजलन्नु मुट्टिदरे जीवनकलेय पूर्णिमेयन्नु साधिसिदंते।

10. आदर्श गुरुमूर्ति

शास्त्र हेळुत्तदे, कले तिळिसुत्तदे ; आदरू संपूर्ण चित्र कण्ण मुंदे बारदु । शास्त्र निर्गुण, कले सगुण । सगुणवादुदु साकारवागदे व्यक्तवागदु । निर्गुण वरी गाळियल्लि इरुवंते निराकार सगुणवू साध्य । गुण यारल्लि मूर्तिमत्तागिदेयो आ गुणिय दर्शनवे इदर उपाय । अंतले अर्जुन हेळुत्ताने--' देव, बाळिन मुख्य सिद्धांतवन्नु हेळिदे । अदन्नु हेगे आचरिसवेको आ कलेयन्नु हेळिदे । आदरू ननगे निच्चळवागि होळेयलिल्ल । ननगे अदर स्वरूपवन्नु केळुव बयकेयागिदे । स्थिरबुद्धि-याद सांख्यनिष्ठन, फलत्यागयोग--सिद्धन लक्षणवेनो हेळुत्तीया ? फल-त्यागद पूर्ण गाढतेयुळ्ळ, कर्मसमाधि मग्ननाद, निर्धरद महामेरुवाद, स्थितप्रज्ञनेनिसिदवन नुडि हेगे, नडे हेगे, इरवु हेगे, ऎल्ला हेळु । अवन मूर्ति ऎथदु ? अवनन्नु गुरुतिसुवुदु हेगे ? '

इदक्कागि ऎरडने अध्यायद कोनेयल्लि हदिनेंटु श्लोकगळल्लि भगवंत स्थितप्रज्ञन गंभीरोदात्त चरित्रवन्नु वर्णिसिदाने । ई हदिनेंटु श्लोक गीतेय हदिनेंटु अध्यायगळ सार । स्थितप्रज्ञने गीतेय आदर्श-मूर्ति । आ शब्दवे गीतेय स्वतंत्र सृष्टि । मुंदे ऐदने अध्यायदल्लि जीवन्मुक्तन, हन्नेरडरल्लि भक्तन, हदिनाल्करल्लि गुणातीतन, हदिनेंट-रल्लि ज्ञाननिष्ठन वर्णने बंदिदे । इवेल्लदरल्लि स्थितप्रज्ञन वर्णनेये हेच्चु विवरवागि विस्तारवागि बंदिदे । अदरल्लि सिद्धलक्षणगळू, साधक-लक्षणगळू जोतेयल्ले इवे । साविरारु मंदि सत्याग्रहिगळु--गंडु हेण्णु--संजेय प्रार्थनेयल्लि ई लक्षणगळन्नु हेळुत्तारे । हळ्ळि हळ्ळिगू, मने-

मनेगू ई संदेश तलपिदरे ऎष्टु आनंदवादीतु ? मोदलु नम्म हृदयदल्लि अदु नेट्टरेताने होरगे अदु हरिदीतु । निनगू हेळुव विषय सरी यांत्रिक-वादरे मनस्सिनल्लि नेट्टदु हुसियादीतु । इदु नित्यपाठद्द दोष . मनन-विल्लदुदु । नित्यपाठद जोतेगे नित्य मनन, नित्य आत्मपरीक्षे अगत्य ।

स्थितप्रज्ञ ऎंदरे स्थिरबुद्धियुळ्ळवनु । आ हेसरे इदन्नु हेळुत्तदे । आदरे संयमविल्लदे बुद्धि स्थिरवादीतु हेगे ? अंते स्थितप्रज्ञ ऎंदरे संयमद मूर्ति ऎंदु वर्णिसिदे । आत्मदोळगे बुद्धि. ओळ होरगिन इन्द्रियगळु बुद्धियोळगे इदु संयमद अर्थ । सर्वेंद्रियगळिगू कडिवाण हाकि अवन्नु कर्मयोगदल्लि ओडिसुववनु स्थितप्रज्ञ । इन्द्रियगळॆंब ऎत्तुगळिंद अवनु स्वधर्माचरणेय होलवन्नु गेय्युत्ताने । तन्न उसिरन्नेल्ल परमार्थदल्लि कळेयुत्ताने ।

इन्द्रिय संयम सुलभवल्ल । इन्द्रियगळन्नु बळसदये इरुवुदु ऒंदु बगेयल्लि सुलभवादीतु । मौन, निराहारगळु अष्टु कठिनवल्ल । इन्द्रियगळन्नु बेकाबिट्टियागि बिडुवुदु ऎल्लरिगू सुलभ । आदरे अपाय कंडाग आमे तन्न अंगांगगळन्नेल्ल ऒळक्के सेळेदुकॊळ्ळुवंते, निरपाय-वादल्लि अवन्नु बळसुवंते, विषयोपभोगदल्लि इन्द्रियगळन्नु स्तंभिसुवुदु, परमार्थदल्लि अवन्नु उपयोगिसुवुदु संयम । इदक्के बहळ प्रयत्न, ज्ञान बेकु । इष्टु माडिदरू अदु सर्वदा साध्यवादीतॆंदु हेळुवतिल्ल । हागिदरे निराशरागबेके ? कूडदु । साधक ऎंदू निराशनागबारदु । साधक ऎल्ल उपायवन्नू माडि कडेयल्लि भक्तियन्नु जोडिसबेकु । इन्थ अमौल्य सूचनेयन्नु भगवत ई स्थितप्रज्ञन लक्षणदल्लि अडगिसि

इट्टिदाने। स्वल्प आरिसिद शब्दगळल्लि संग्रहवागिदे ई सूचने। होरे होरे व्याख्यानगळिगिंत अदर बेले हेच्चु। एकेदरे, अल्लि भक्ति नेमदंते बेकागुत्तदेयो अल्ले अदन्नु तंदु इडलागिदे। स्थितप्रज्ञन सविस्तर वर्णने इल्लि बेकागिल्ल। नम्म साधनावसरदल्लि भक्तिय स्थान-वन्नु मरेयबारदेंदु अत्त नम्म मनस्सन्नु सेळेदिदारे। निजवागि यारु ईग स्थितप्रज्ञरो श्रीहरिये बल्ल। सेवापरायण स्थितप्रज्ञ अंदु सदा पुडलीकन मूर्ति नन्न कण्णिदिरु बंदु निल्लुत्तदे। अदन्ने नानु हेळिदेने।

स्थितप्रज्ञन लक्षण मुगियितु। ऎरडने अध्याय मुगियितु।

साख्यबुद्धि (निर्गुण) + (सगुण) योगबुद्धि + (साकार) स्थितप्रज्ञ

इदर फल ब्रह्मनिर्वाण अथवा मोक्षवल्लदे बेरेनिदीतु?

(28-2-32)

अध्याय 3.

11. फलत्यागिगे अनंतफल

ऎरडने अध्यायदल्लि संपूर्ण जीवनशास्त्रवन्नु नोडिदेवु। मूरनेयदरल्लि अदरदे स्पष्टीकरणविदे। मोदलु तत्ववन्नु नोडिदेवु। ईगदर विवर। हिंदिन अध्यायदल्लि कर्मयोगद विवेचने बंदित्तु। कर्मयोगदल्लि महत्वद फलत्यागवुट्टु। आदरे फलसिद्धि इदेयो इल्लवो ? मूरने अध्याय इदक्के उत्तर कोडुत्तदे–फलत्यागियाद कर्मयोगिगे अनंतफल।

ननगे लक्ष्मिय संगति नेनपागुत्तदे। आकेय स्वयंवर नडे-दित्तु। देव दानवरेल्ल आसेयिंद बंदिद्दरु। लक्ष्मि पणवन्नु होरपडि-सिरलिल्ल। सभामंटपक्के बंदु 'यारिगे नन्नमेले इष्टविल्लवो अवरिगे माले हाकुत्तेने' ऎंदळु। ऎल्लरिगू लालसेये। लक्ष्मि तन्न आसे-यिल्लद वरनन्नु हुडुकिदळु। शेषनमेले शांतवागि मलगिद्द विष्णुविन मूर्ति आकेय कण्णिगे बित्तु। अवन कोरलिगे मालेहाकि अवन पद-तलदल्लि इन्नू कूतिदाळे। 'बेडदवगादाळु तोत्तु भाग्यलक्ष्मि।' इदे कौशल !

सामान्य मनुष्य तन्न फलद सुत्त बेलि कट्टुत्ताने। इदरिंद अनतवागि सिगुव फलवन्नु कळेदुकोळ्ळुत्ताने। सामान्य मनुष्य अपार कर्ममाडि अल्प फल गळिसुत्ताने। अदे कर्मयोगि स्वल्प कर्ममाडि अनंतफल गळिसुत्ताने। ई व्यत्यास ऒंदे ऒंदु भावनेयिंद आगुत्तदे। टाल्स्टाय् ऒंदेडे हेळिदाने "लोक क्रिस्तन त्यागवन्नु स्तुतिसुत्तदे।

आदरे संसारि जीव दिनवू अेप्टु नेत्तरु इंगिसुत्तदे, कष्ट-कष्ट सहिसु-त्तदे ! अेरडेरडु कत्तेय होरे होत्तु बदुकु नीगिसुव ई संसारि जीव क्रिस्तनिगिंत अेष्टु हेच्चु कष्ट, अेष्टु संकट अनुभविसुत्तदो, इदरल्लि अर्धदष्टन्नादरू देवरिगागि सैरिसिदरे क्रिस्तने आदीतु ई जीव ! ”

संसारिय तपस्सु दोड्डदु । आदरे अदु क्षुद्र फलक्कागि । वासनेयिंद्दते फल । नम्म पदार्थक्के नावु कोट्टष्टु बेलेयन्नु जन कोडरु । सुधाम देवर बळिगे अवलक्कि कोंडोय्द । आ हिडि अवलक्कियल्लि भक्ति तुंबित्तु । अदु मंत्रिसिद अवलक्कि । आ अवलक्कियल्लि कण कणदल्लू भावनेयित्तु । पदार्थ चिक्कदु । आदरू मंत्र अदन्नु दोड्डदु माडितु । नोटुगळ तूक अेप्टु ? सुट्टरे ओंदु हनि नीरु कायलिक्किल्ल । आदरे अदर मेले मुद्रे इदे । आ मुद्रेयिंद अदर बेले । कर्मयोगद जाण्मे इदे । कर्म नोटु इद्दंते । भावनेय मुद्रेगे बेलेयुंटु । बरी कर्मक्के बेलेयिल्ल । इदोंदु बगेयल्लि मूर्तिपूजेय रहस्य । मूर्तिपूजेय कल्पने अत्यंत सुंदरवादुदु । विग्रहवन्नु तुंडुमाडबल्लवरारु ? मोदलु तुंडु तुणकागिद्दुदे ताने ई विग्रह । नानदरल्लि जीव तुंबिदे । नन्न भावने तुंबितु । भावनेयन्नु तुंडुमाडलु साध्यवो ? कल्लु तुंडादीतु, भावनेयल्ल । विग्रहदिंद नन्न भावने मायवादरे अदु बरी कल्लागि तुंडागुत्तदे ।

कर्म अंदरे कल्लु, कागद । तायि सोट्टसोट्टनागि नाल्कु साल्लु कागददमेले बरेदु कळिसिदुरु अेन्नि । इन्नोब्बरु ऐवत्तु हाळे एनादरू बरेदु अर्ध सेरु तूकदष्टु कागद कळिसिदरे अदर तूक हेच्चायिते ? तायि गीचिद नाल्कु साल्लु भावनाभरित, पवित्र, अमौल्य । अदर बेले

उळिद् कागदक्के वंदीते ? कर्मक्के तंप् वेकु, भावनेयू वेकु । कूलियवनु केलस माडिदरे अदक्के वेले कट्टि, रोक्क तेगेदुकोंड्डु होगु अेन्नुत्तेवे । आदरे दक्षिणेय मातु हागल्ल । दक्षिणेयन्नु नेनेयिमि कोड्डुत्तेवे । अेष्टु दक्षिणे कोट्टिरि अेंब प्रश्नेयिल्ल । अदरल्लि तेव इद्देये अॅष्टु प्रश्ने । मनुस्मृतियल्लि ओंदु दोड्डु विनोदविदे । हन्नेरड्डु वरुष गुरुगृहदल्लि कल्तु, पशुवागिद्दवनु मनुष्यनाद शिष्य गुरुविगे एनु कोडवल्ल ? पूर्वकालदल्लि मोदले रुसु तेगेदुकोळ्ळुत्तिद्दिल्ल । हन्नेरड्डु वर्ष कलितमेले एनु कोड-वेकादीतो अदन्नु आमेले कोडवेकागुत्तित्तु । मनु हेळुत्ताने . 'कोड्डु गुरुविगे ओंदु हू, ओंदु बीसणिके, ओंदु जोते आविगे, ओंदु नीरु-तुंबिद तंबिगे ।' इदु चेष्टेयल्ल । कोडवेकादुदन्नु श्रद्धेय चिह्नेयेंदु कोडवेकु । हूविगे तूकविल्ल । अदरल्लि अडगिद भक्तिगे ब्रह्माडदष्टु तूकविदे ।

'हाकुतलि तुळसिय दळवन्ना
तूगिदळु रुकुमिणि गिरिधरना'

रुक्मिणि ओंदु तुलसीदळदिंद गिरिधरनन्नु तूगिदळु । सत्यभामेय मण-मणं ओडवेगळिंद केलसवागलिल्ल । भावभक्तिभरितवाद ओंदु तुलसीदळवन्नु रुक्मिणि तक्कडियल्लि हाकलु केलसवायितु । आ दळ मंत्रितवादुदु , वरी दळवागिरलिल्ल । कर्मयोगिगळ कर्मवू हीगेये ।

गंगेयल्लि इब्बरु स्नानक्के होगिदारे अेन्नि । ओव्न-गंगेयेंदरे एनु ? ओंदु भाग प्राणवायु, अेरडु भाग जलजनक, अेरडू सेरि नीरु अेंद । इन्नोव्न हेळिद—'इदु भगवान् विष्णुविन पदकमलदल्लि हुट्टिदुदु :

शंकरन जटाजूटदल्लि सेरिदुदु, इदर तीरदल्लि साविरारु ऋषिगळु तपस्सु माडिदारे, अष्टो पुण्यकृत्यगळ भाग्य इदक्किदे; इन्थ पवित्र गंगामाते!' ई भावनेयिंद तुंबि अवनु स्नानमाडिद। आक्सिजन् हैड्रोजन्‌वालानू स्नानमाडिद। इब्बरिगू मै तोळेयितु। देह शुद्धिय फलद योचनेये इल्लदवनिगू आ फल दोरेयितु। गंगेयल्लि अत्तू मै तोळेदावु। मनस्सिन होलसु होगबेकु हेगे? ओब्बनिगे मै तोळेव चिल्लरे फल सिक्कितु। इन्नोब्बनिगे इदर जोतेगे चित्तशुद्धिय अमौल्य फलवू सिक्कितु।

स्नानमाडि सूर्यनमस्कार हाकिदरे व्यायामद फलवंतू सिक्के-सिगुत्तदे। आरोग्यक्कागि नमस्कार माडुवुदिल्ल, उपासनेगागि। अदरिंद मैगे आगुव लाभवंतू इद्दे इदे, बुद्धिय प्रभेयू अरळुत्तदे। आरोग्यद जोतेगे प्रतिभेयू स्फूर्तियू सूर्यनिंद दोरेतीतु।

कर्मवेनो अदे। भावना भेददिंद बेले व्यत्यासवागुत्तदे। पारमार्थि मनुष्यन कर्म आत्म विकासवागुत्तदे, संसारिय कर्म आत्म-बधकवागुत्तदे। कर्मयोगि ओक्कलिगनादरे बेसायवन्नु स्वधर्मवेंदु माडु-त्ताने। अदरिंद अवन होट्टेगे हिट्टु सिगुत्तदे। आदरे हिट्टिगागि अवनु आ कर्मवन्नु माड। बेसाय माडलिक्के एंदु हिट्टु अवनिगे साधन-वादीतु। स्वधर्मवे गुरि, अन्न अदक्के दारि। उळिद बेसायगाररिगे हिट्टे गुरि; बेसायद स्वधर्मवे साधन। हीगे अवरु तिरुगमुरुग। एरडने अध्यायदल्लि स्थितप्रज्ञन लक्षणदल्लि इदन्नु स्वारस्यवागि हेळिदे, इतररु एच्चेत्ताग कर्मयोगिगे निद्दे, अवरु मलगिदाग इवनिगे

अेच्चर। होट्टेगे सिक्कीतो इल्लवो अँदु नावु जागरूकरादरे, कर्मयोगिगे तन्न कर्मदल्लि ओंदु गळिगेयू व्यर्थवागबारदु अँबुदरल्लि अेच्चर। विधि-यिल्लवेंदु अवनु तिन्नुत्ताने। ई गडिगेगे एनादरू तुंबलेबेकल्ल अँदु तुंबुत्ताने। संसारिगळिगे उण्णुवाग आनंदवागुत्तदे। योगिगे उण्णु-वाग कष्टवागुत्तदे। अते अवनु चप्परिसि लटिकेहाकि उण्णुवुदिल्ल। संयम काप्दुकोंडानु। ओब्बर इल्लु इन्नोब्बर हगलु; ओब्बर हगलु इन्नोब्बरिगे इरुळु। ओब्बर आनंद इन्नोब्बर दुःख, ओब्बर दुःख इन्नोब्बर आनंद। संसारि, कर्मयोगि इब्बर कर्मवू ओंदे बगे। कर्म-योगि फलासक्तियन्नु बिट्टु कर्मदल्ले रमिसुत्तानेंबुदे मुख्य। संसारियंते योगियू तिन्नुत्ताने, कुडियुत्ताने, मलगुत्ताने। आदरे अवन भावनेये बेरे। अंतले हदिनारु अध्यायगळु इद्दरू स्थितप्रज्ञन संयम मूर्तियन्नु इदिरिगे कडेदु निल्लिसिदे।

अदरिंदले संसारि-कर्मयोगिगळ कर्मदल्लि साम्य-वैषम्य काण-बरुत्तदे। कर्मयोगि गोरक्षणे माडुत्ताने अेन्नि। याव उद्देश्यदिंद माडुत्ताने? गोसेवेमाडि समाजक्के हेरळवागि हालु ओदगिसोण, मनुष्यनिगिंत केळगिन प्राणिवर्गदल्लि गोविगादरू प्रीति तोरिसोण, अँदु अवनु गोरक्षणे माडियानु; संबळक्कागि माडलार। संबळ सिक्कीतु। आदरे आनंद मात्र भावने नीडुव दान!

कर्मयोगिय कर्म विश्वदोडने तानु समरसवागुत्तदे। तुलसिगे नीरु हनिसिदरे ऊट मडबारदु अँदु केलवर नियम। वनस्पति सृष्टि-योडने प्रीतिय अेळ्गूडिसिद संबंध इदु। तुलसि हसिदिद्दु नानु

उण्णले? गोविनोडने एकरूप, गिडमरदोडने एकरूप। हीगे माडुत्त विश्वद एकरूप अनुभवक्के बरुत्तदे। भारत युद्धदल्लि संजेगे एल्लरू संध्यावंदने माडलु होगुत्तिद्दरु। आदरे श्रीकृष्णनो रथक्के कट्टिद कुदुरेगळन्नु बिच्चि नीरु कुडिसलु करेदोय्युत्तिद्द। अवुगळ मै तिक्कु-त्तिद्द। मैगे नेट्टिद्द बाणगळन्नु तेगेयुत्तिद्द। आ सेवेयल्लि भगवंतनिगे एष्टु आनंदवो! इदन्नु एष्टु वर्णिसिदरू कविगे तृप्तियिल्ल। पीतांबर-दल्लि हाकि कुदुरेगे हुरुळि तिनिसुत्तिद्द पार्थसारथि कण्णिदिरिगे बरबेकु, आग कर्मयोगद आनंदवन्नु अरियबेकु। प्रतियोंदु कर्मवू आध्यात्मिक कर्म, उच्चतर पारमार्थिक कर्म। खादी केलसवन्नु नोडि। हेगलमेले खादिहोत्तु अलेदाडुवुदु बेसरवल्लवे? इल्ल। एष्टो कोटि जन अरेहोट्टेय अण्ण-तम्मंदिरिदारे। अवरिगे ओंदु तुत्तु कोडबेकु एंब योचनेयल्लि अवनु मुळुगिरुत्ताने। ओंदु गज खादि मारुवुदू कूड अवनिगे दरिद्रनारायणन पूजे।

12. कर्मयोगद विविध प्रयोजन

निष्काम कर्मयोगदल्लि अद्भुत सामर्थ्यविदे। आ कर्मदिंद व्यक्तिगू समाजक्कू परम कल्याणवागुत्तदे। स्वधर्माचरणे माडुव कर्मयोगिय शरीरयात्रे नडेदे नडेयुत्तदे। शिस्तिनिंद उद्योग माडुवुद-रिंद मै निरोगियू स्वच्छवू आगिरुत्तदे। अवन कर्मदिंद अवन सुत्तलिन समाजद योगक्षेमवू चेन्नागि नडेयुत्तदे। हेच्चु हण दोरेतीतेदु कर्म-योगियाद ओक्कलिग अफीमन्नू होगेसप्पन्नू बेळेसियाने? अवन कर्म समाजद कल्याणक्कागि माडिद्दुदु। स्वधर्मरूपि कर्म यावागलू समाजक्के

लाभकारियॆ। नन्न व्यापार जनर हितक्कागि ऎंब व्यापारि परदेशि वट्टॆ मारलिक्किल्ल। अवन व्यापार समाजोपकारकवादीतु। तन्नन्नु मरॆतु नेरॆहोरॆय समाजदल्लि बेरॆतुहोगुव कर्मयोगि याव समाजदल्लिरुत्तानो अंथ समाजदल्लि सुव्यवस्थॆ, समृद्धि, सौमनस्य इरुत्तदॆ।

कर्मयोगिय कर्मदिंद अवन शरीरयात्रॆ नडॆदु देह, बुद्धि तेजोवंतवागिद्दीतु। समाजद कल्याणवू आदीतु। इवॆरडू फलगळल्लदॆ चित्तशुद्धिय फलवू अवनिगॆ सिगुत्तदॆ। 'कर्मणा शुद्धिः' ऎंदु गीतॆ हेळिदॆ। कर्म चित्तशुद्धिगॆ साधने। नम्म निम्म कर्मवल्ल। कर्मयोगि माडुव मंत्रवत्ताद कर्मदिंद अवनिगॆ चित्तशुद्धि लभिसुत्तदॆ। महाभारत-दल्लि तुलाधार वैश्यन कतॆयिदॆ। जाजलि ऎंब ब्राह्मण तुलाधारन बळिगॆ ज्ञानसंपादनॆगागि बरुत्तानॆ। तुलाधार अवनिगॆ हेळिद. 'अय्या, ई तक्कडिय दंडिगॆ सरळवागिरबेकु।' ई बाह्यकर्म माडुत्त तुलाधारन मनस्से सरळवायितु। अगडिगॆ दोड्डवरे बरलि, मक्कळे बरलि, दंडिगॆ ओंदे तेर; कॆळगॆ-मेलॆ इल्लवे इल्ल। उद्योगदिंद मनस्सिनमेलॆ परिणामवागुत्तदॆ। कर्मयोगिय कर्म ओंदुबगॆय जप। अदरिंद अवनिगॆ चित्तशुद्धि सिगुत्तदॆ। निर्मलचित्तदल्लि ज्ञानद प्रतिबिंब मूडुत्तदॆ। तन्न तन्न कर्मदल्ले कर्मयोगिगॆ कट्टकडॆगॆ ज्ञान लभिसुत्तदॆ। तक्कडिय दंडिगॆयिंद तुलाधारनिगॆ समवृत्ति सिक्कितु। सेना ऎंब नापित। परर तलॆय कॊळॆयन्नु तॆगॆयुत्ता सेनागॆ ज्ञान उदयि-सितु। 'नानु इतरर तलॆय कॊळॆ तॆगॆयुत्तिदेनॆ, नन्न तलॆय, नन्न बुद्धि-यल्लिरुव, कॊळॆयन्नु तॆगॆदिदेनॆये?' इन्थ आध्यात्मिक भाषॆ अवनिगॆ

आ कर्मदल्ले स्फुरिसितु । होलदल्लि यथेच्छवागि बेळेद कळेयन्नु तेगेयुत्त हृदयद वासनाविकारद कळेयन्नु कित्तेसेयुव बुद्धि कर्मयोगिगे बरुत्तदे । मण्णिनिंद सोगसाद गडिगे माडुत्तिद्द गोरा कुंबार तन्न वदुकन्ने ओंदु गडिगे माडबेकेंदु लेक्कहाकुत्ताने । कैयल्लि तट्टगोल्लु हिडिदु 'हसी गडिगेयो ओण गडिगेयो' एंदु शरणरन्नु परीक्षिसुव परीक्षकनागुत्ताने । कर्मयोगिगळिगे अवरवर उद्योगद भाषेयिंदले भव्यज्ञान सिक्कितु । अवर कर्मगळे अवर आध्यात्म शालेगळु । अवर कर्मगळु उपासनामयवू सेवामयवू आगुत्तवे । ई कर्म नोडलिक्के व्यवहारिक, ओळगोळगे आध्यात्मिक ।

कर्मयोगदिंद मत्तू ओंदु उत्तम फलवुंटु. समाजक्कोंदु आदर्श । समाजदल्लि मोदलु हुट्टिद्दु, आमेले हुट्टिद्दु एंब भेदविद्दे इदे । मोदलु हुट्टिदवरु आमेले हुट्टिदवरिगे दारिहाकि कोडुत्तारे । हिरियरु किरियरिगे, तायि तंदे मक्कळिगे, गुरुगळु शिष्यरिगे, नायकरु बेंबलिग-रिगे कृतियिंद मेल्पंक्ति हाकबेकु । अंथ मेल्पंक्तियन्नु कर्मयोगियल्लदे मत्तारु हाकबल्लरु ?

कर्मयोगिगे कर्मदल्ले आनंद एंतले अवनु सदा कर्मनिरतना-गिरुत्ताने । अदरिंद समाजदल्लि दंभाचार बेळेयदु । कर्मयोगि आत्मतृप्तनादरू कर्म माडदे इरलार । तुकारामरु हेळुत्तारे . 'भजनेयिंद देवरु सिक्किदनेंदु भजनेयन्नु बिट्टबिडले ? भजने नम्म सहज धर्म । '

'मोदलिगाय्तु संतसंग । तुका आद पाडुरंग ।
अवन भजने बिडलदेके ? मूलगुणव तोडेयलेके ?'

कर्मद मेट्टलेरि शिखर मुट्टिदुदायितु। कर्मयोगि शिखरवेरिदरू एणियन्नु बिड। अवनिगे अदन्नु बिडलु साध्यवे इल्ल। अवन इंद्रियगळु सहजवागिये तम्म कर्मदल्लि तोडगिकोळ्ळुत्तवे। स्वधर्म--कर्मद एणिय महत्व समाजक्के रुचिसुत्तदे।

समाजदल्लि दंभाचार नशिसुवुदु बहळ दोड्ड केलस। दंभदिंद समाज मुळुगुत्तदे। ज्ञानिये सुम्मने इद्दरे उळिदवरू सुम्मनिद्दारु। ज्ञानि नित्य तृप्त, अंतस्सुखमग्न। आदरिंद सुम्मने इरबल्ल। उळिदवरु मनस्सिनोळगे अळुत्त कर्मशून्यरादारु। ओब्ब अंतस्तृप्तनागि सुम्मनिद्दाने; इन्नोब्ब मनस्सिनल्लि तळमळिसुत्त सुम्मनिरुववनंते नटिसुत्ताने, अंदरे दंभाचारियागुत्ताने। अंतले अल्ल साधुशरणरू गोपुरवन्नु हत्तिदमेल साधनेयन्नु कैबिडलिल्ल, तीव्रवागिये साधनानिरतरागिद्दरु। साधुवतनक स्वधर्माचरणेयल्लि निरतरागिद्दरु। मक्कळ गोंबेयाटदल्लि तायि सविगोळ्ळुत्ताळे। इदेल्ल हुसियेंदु अरितू आके मक्कळाटदल्लि सवि हुट्टिसुत्ताळे। तायि आटदल्लि सेरदे मक्कळिगे सवियिल्ल। कर्मयोगि तृप्तनागि कर्म बिट्टरे उळिदवरु अतृप्तरागिये कर्म बिट्टारु। मनस्सिनल्लि आनंदरहितरू निराहारिगळू आगिद्दारु।

अंते कर्मयोगि अल्लरंते तानू कर्म माडुत्तिरुत्ताने। तानु ओब्ब हेच्चुगार अंदु अवनिगे अनिसदु। इतररिगिंत हेच्चागिये दुडियुत्ताने। इदु पारमार्थिक कर्म अंदु मुद्रेहोत्त कर्म यावुदू इल्ल। कर्मक्के याव प्रकटणेयू बेड। उत्तम ब्रह्मचारियादरे, इतररिगिंत निन्न कृतियल्लि नूरुपाळु हेच्चु उत्साह काणबरलि। आहार कडमे सिक्करू

केलस मुप्पट्टागलि। समाजसेवे हेच्चु आगलि निन्निंद। निन्न ब्रह्मचर्य कृतियल्लि काणलि। गंधद सुगंध होरगे होरडलि।

फलत्यागमाडिदरे कर्मयोगिगे अनंत फल सिगुत्तदे। अवन शरीरयात्रे नडेदीतु; मै मनस्सु सतेजवागिद्दावु; अवनिरुव समाज सुखियादीतु; अवनिगे चित्तशुद्धि दोरेतु ज्ञानवू लभिसीतु। समाजद दंभाचार नशिसि जीवनद पवित्र आदर्श दोरेतीतु। इदु कर्मयोगद अनुभवसिद्ध महिमे।

13. कर्मयोग–व्रतदल्लि अंतराय

उळिदवरिगिंत कर्मयोगिय कर्म उत्कृष्टवागिरुत्तदे। कर्मवे उपासने; कर्मवे पूजे। नानु देवरपूजे माडिदे, नैवेद्यवन्नू प्रसादवन्नू तेगेदुकोंडे। आ नैवेद्यवे पूजेय फलवे? नैवेद्यक्कागिये पूजेमाडुववनिगे ओडनेये प्रसादद चूरु सिगुत्तदे। कर्मयोगि ता माडिद पूजेगे परमेश्वर दर्शनवन्ने फलवागि बेडुत्ताने। तिन्नलिक्के प्रसाद बेकु अंब क्षुद्र लाभद माते अवनिगे होळेयदु। तन्न कर्मद बेलेयन्नु तग्गिसलु अवनु सिद्धनल्ल। स्थूलप्रमाणदिंद तन्न कर्मवन्नु अळेय। स्थूल दृष्टियवरिगे स्थूल फल। हळ्ळिगरल्लि ओंदु गादे यिदे–आळवागि बित्तु, तेवदल्लि बित्तु। तेवविल्लदल्लि ऎष्टु आळ बित्तिदरेनु? आळवू बेकु, तेववू बेकु। ऎरडू इद्दरे तेने मुंगैयदप्पवादीतु। कर्म आळवागबेकु अंदरे उत्कृष्टवागबेकु। अदक्के ईश्वर भक्ति, ईश्वरार्पणेय तेववू बेकु। कर्मयोगि आळवाद कर्ममाडि अदन्नेल्ल ईश्वरार्पणे माडुत्ताने।

नम्मल्लि परमार्थद बग्गे हुच्चुभावने हरडिवे। परमार्थसाधक कै कालु आडिसबारदु, एनू केलसमाडबारदु अँदु लोक तिळियुत्तदे। नूलु तेगेववनु, बट्टे नेयुववनु, होल उळुववनु, अँथ परमार्थि अँदु केळुत्तदे। ऊट माडुववनु हेगे परमार्थि अँदु मात्र यावागलू केळदु। कर्मयोगिय देवरेनो मैं तिक्कुत्त निंतिदाने। राजसूय यागदल्लि कैयल्लि सगणि हिडिदु अेजलु बळिदिदाने। काडिनल्लि दनगळन्नु मेयिसुत्ताने। द्वारकेय दोरेयादरू गोकुलक्के होदरे कोळलन्नू दुत्त दनगळन्नु मेयिसुत्ताने। हीगे कुदुरे तिक्कुव, दन कायुव, रथ होडेव, सगणि बळिव, कर्मयोगि परमेश्वरनन्नु शरणरु तंदु निल्लिसिदारे। शरणरू अष्टे-ओब्ब तक्कडि हिडिद, ओब्ब क्षौर माडिद-हीगे मुक्तरागिदारे।

इंथ दिव्य कर्मयोगदिंद अेरडु कारणगळिगे मनुष्य हिंजरियुत्ताने। इन्द्रियगळ विशिष्ट स्वभाव लक्ष्यदल्लिरबेकु। इदु बेकु अदु बेड अँब द्वंद्व इन्द्रियगळन्नु सुत्तुवरिदिदे। यावुदु बेको अदरल्लि राग अथवा प्रीति, यावुदु बेडवो अदरल्लि द्वेष अथवा असह्य। ई राग-द्वेष मनुष्यनन्नु हरिदु तिन्नुत्तदे। कर्मयोग अेष्टु सुंदर, अेष्टु रमणीय, अेष्टु अनंतफलप्रदायि! आदरे ई काम क्रोध नम्मन्नु 'इदु हिडि, अदु बिडु' अँब गोंदलदल्ले सिक्किसि हगलिरुळू बेन्नु हत्तुत्तदे। इदर सहवासवन्ने बिडु अँदु भगवंत ई अध्यायद कोनेयल्लि अेच्चरिके कोडुत्ताने। स्थितप्रज्ञनु संयममूर्ति हेगो हागे कर्मयोगियू आगबेकु।

(13-3-32)

अध्याय 4

14. कर्मक्के विकर्म जोतेयागबेकु

हिंदिन अध्यायदल्लि निष्कामकर्मद विवेचने माडिदेवु। स्वधर्मवन्नु बिट्टु अवांतर धर्मवन्नु हिडिदरे निष्काम फल साध्यवल्ल। स्वदेशी वस्तुगळन्नु मारुवुदु व्यापारद स्वधर्म। ई स्वदेशी वस्तुगळन्नु बिट्टु एळुसाविर मैलु दूरद विदेशी सामानन्नु मारुवाग हेच्चु लाभ बरुत्तदेंब मातु मनस्सिनल्लिरुत्तदे। अदरल्लि निष्काम हेगे बंदीतु? नावु माडुव कर्म निष्कामवागलु स्वधर्मद आचरणे अगत्य। स्वधर्माचरणे सकामवू आगबल्लदु। अहिंसेयन्ने नोडि। अहिंसोपासकनिगे हिंसे वर्ज्यवेताने। आदरे होरगडे अहिंसकनागिद्दरू वास्तववागि हिंसामयनागिरबल्ल। हिंसे मनस्सिन गुण। होरगे हिंसा कर्म माडद मात्रक्के मनस्सु अहिंसकवागदु। कत्ति हिडिदरे हिंसावृत्ति स्पष्टवागि काणुत्तदे। कत्तिबिट्टरे अदु अहिंसेयेन्नलागदु। स्वधर्माचरणेय गुट्टु इदे। निष्कामक्कागि परधर्मवन्नु बिडलेबेकु। बिट्टरे निष्कामक्के गणेशायनमः आदंते। अदरिंदले गुरि मुट्टिदंतागलिल्ल।

निष्कामते मनस्सिन धर्म। ई गुण मनस्सिनल्लि अरळलु बरी स्वधर्माचरणे सालदु। उळिद साधनेगळन्नू माडबेकादीतु। बरी ॲण्णे हाकिदमात्रक्के दीप उरियुत्तदेये? बत्तियू बेकु, बेळकू बेकु, बेळकु इद्दरेने कत्तलु अळिदीतु। स्वधर्माचरणेय ॲण्णेगू बेळकु बेकु। हेगे होत्तिसबेकु ई बेळकन्नु? इदक्के मानसिक संशोधनेबेकु। आत्मपरीक्षे माडि चित्तक्के हत्तिद होलसन्नु तोळेयबेकु। मूरनेय अध्यायद

कोनेयल्लि इदे मुख्य सूचनेयन्नु कोट्टिदाने देवरु। आ सूचनेयिंद हुट्टिद्दु नाल्कनेय अध्याय।

कर्म अंदरे गीतेयल्लि स्वधर्म अंदर्थ। नावु तिन्नुत्तेवे, कुडियुत्तेवे, मलगुत्तेवे ; इदेल्लवू कर्मवे। आदरे इदन्नु गीतेयल्लि कर्मवेंदिल्ल। स्वधर्माचरणेये कर्म। अदन्नु माडि मडिलल्लि निष्काम तुंबिकोळ्ळबेकादरे इन्नोंदु हिरिय नेरवु बेकु, काम क्रोधगळन्नु गेल्लबुदु। गंगा प्रवाहदंते चित्तवु शातवू निर्मलवू आगदे निष्कामविल्ल। चित्तसंशोधनेगागि माडबेकाद कर्मक्के गीते विकर्म अंदु हेसरु कोट्टिदे। कर्म, विकर्म, अकर्म—ई मूरु शब्दगळु नाल्कनेय अध्यायदल्लि बहळ मुख्यवादुवु। कर्मवेंदरे स्वधर्माचरणेय होरगिन स्थूलक्रिये; ई होरगिन कर्मदल्लि मनस्सन्नु तुंबुवुदु विकर्म। होरगिनिंद नावु नमस्कार माडुत्तेवे। होरगे तलेबागिदुदक्के जोतेयागि ओळगे मनस्सु बागदिद्दरे आ क्रिये व्यर्थवादंते। क्रिये अरडु बगे। अंतर्-बाह्य कर्मवागबेकु। होरगे नानु शिवलिंगदमेले सतत धारे अरेदु अभिषेक माडुत्तेने। इदर जोतेगे मनस्सिनल्लि शिवचिंतनेय अखंडधारे हरियदिद्दरे ई अभिषेकक्के एनु बेले? इदिरिन लिंगवू कल्लु, नानू कल्लु। कल्लिनिदिरिगे कल्लु कूतंते। होरगिन कर्मक्के चित्तशुद्धिय कर्म जोतेयादागले निष्काम कर्मयोग।

'निष्कामकर्म' शब्दप्रयोगदल्लि कर्मक्कितल निष्काम शब्दक्के हेच्चु महत्व। 'अहिंसात्मक असहकार'दल्लि असहकारक्कित अहिंसात्मक अंबुदे मुख्य। अदरल्लि अहिंसात्मक अंबुदन्नु कळेदु

वरी असहकारवन्नु हिडिदरे अदु भयानकवादीतु। हीगेये स्वधर्माचरणेय कर्म माडुवाग मनस्सिनल्लि विकर्मविरदिद्दरे अदु मोस।

इंदु सार्वजनिक सेवे माडुववरु स्वधर्मवन्ने आचरिसुत्तिद्दारे। जन बडवरू दुःखिगळू आगिरुवाग अवर सेवेमाडि अवरिगे सुख तरुवुदु ओघप्राप्त धर्म। हागेंदरे सार्वजनिक सेवकरेल्ल कर्मयोगिगळेन्नलागदु। लोकसेवे माडुववन मनस्सिनल्लि शुद्ध भावने इल्लदिद्दरे आ सेवे भयानकवादीतु। नम्म कुटुंब सेवे माडुवाग नावु ऎष्टु गर्व, ऎष्टु द्वेष मत्सर, ऎष्टु स्वार्थ कट्टिकोळ्ळुत्तेवो लोकसेवेयल्लू अष्टे इदे। इवोत्तु लोकसेवकर गुंपिनल्लि इदे काणुत्तदे।

15. उभय संयोगदिंद अकर्मस्फोट

कर्मक्के मनस्सन्नु जोतेमाडबेकु। ई मनस्सिन मेळनवन्नु गीते विकर्मवेन्नुत्तदे। होरगे सादा कर्म। ऒळगे ई विशेष कर्म। अवरवर मनस्सिन अगत्यदते ई विशेष कर्म बेरे बेरे इरुत्तदे। विकर्मद इंथ नानाप्रकारगळन्नु उदाहरणेगागि नाल्कने अध्यायदल्लि हेळिदे। आरने अध्यायदल्लि इदन्ने विस्तरिसलागिदे। ई विशेष कर्मवन्नु, ई मनस्सिन अनुसंधानवन्नु जोडिसिदाग निष्कामद कुडि बेळगुत्तदे। कर्म विकर्मगळु कूडिदरे मेल्लमेल्लने निष्कामवृत्ति ऒळगे मूडुत्तदे। मै मनस्सु बेरे बेरे वस्तुगळागिद्दरे अवुगळ साधनक्रम बेरे बेरे आगुत्तित्तु। ऎरडू ऒट्टुगूडिदरे गुरि कैगूडुत्तदे। मन ऒत्तट्टिगे, मै बेरेकडे आग बारदेंदे शास्त्रकाररु द्विमुख मार्गवन्नु सूचिसिदारे। भक्तियोगदल्लि होरगे तपस्सन्नु हेळिदरे ऒळगे जपवन्नु सूचिसिदारे। होरगे उपवासादि

तपस्सु नडेदाग ओळगे जपादि क्रिये नडेयदिद्दरे अेल्लवू व्यर्थवागुत्तदे। तपस्सन्नु प्रेरिसिद भावने ओळगेल्ल तुंबिकोंडिरबेकु। उपवासवेंदरेने देवर इदिरिगे कूडुवुदु। परमेश्वरनल्लि चित्तविरलि अेंदु होरगण भोगद बागिलन्नु मुच्चबेकु। होरगण भोगवन्नु निल्लिसि ओळगे मनस्सिनल्लि दैवचिंतनविल्लदिद्दरे ई होरगण उपवासक्के एनु बेले? ईश्वरचितने माडदे मनस्सिनल्लि तिंडिय चिंते नडेसिदरे भारि संतर्पणेये आदंते। मनस्सिनोळगे नडेद ई ऊटक्कित, ई विषय चिंतनेगिंत भयंकर वस्तु मत्तोंदिल्ल। तंत्रदोडने मंत्रवू बेकु। बरी होरगण तंत्रक्के बेलेयिल्ल। केवल कर्महीन मंत्रक्कू बेलेयिल्ल। क्रियेयल्लू सेवे, हृदय-दल्लू सेवे बेकु। आगले क्रियेयल्लि निजवाद सेवेयादीतु।

हृदयदोळगिन स्फूर्तिरस बाह्याचरणेयल्लि हरिदु बारदिद्दरे स्वधर्माचरणे शुष्कवादीतु। अदु निष्कामद हण्णु हू बिडलिक्किल्ल। नावु रोगिगळ आरैके माडबहुदु। अदरल्लि मेदुवाद कनिकर भाव-विरदिद्दरे आ आरैके नीरसवू बेसरद्दू आगुत्तदे। अदोंदु भारवे आगुत्तदे। रोगिगू आ सेवे भारवादीतु। शुश्रूषेयल्लि मनस्सिन सहकारविरदिद्दरे अदरिंद अहंकार हुट्टीतु। इवोत्तु नानु अवनिगे आगिद्देने। नाळे ननगे अवनु आगलि, अवनु नन्न स्तुति माडलि अेंब योजने हुट्टियावु। इष्टु सेवे माडिदरू ई रोगि सिडिमिडि-गोळ्ळुत्तानेंदु नमगे त्रासवादीतु। रोगिगे सहजवागिये सिडिमिडि। मनस्सिनल्लि सेवाभावने इल्लदवनिगे आ सिडिमिडि बेसरवादीतु।

कर्मक्के अंतरंग मेळविसिदरे आ कर्म विशिष्टवागुत्तदे। अेण्णे

बत्तिगळ जोतेगे ज्योति सेरिदरे बेळकादीतु । कर्मक्के विकर्म जोते-यादरे निष्काम बरुत्तदे । सिडिमद्दिगे बेकियिट्टरे अदु स्फोटवागुत्तदे । अदरल्लि शक्ति निर्माणवागुत्तदे । कर्म बंदूकिन सिडिमद्दिनंते । अदक्के विकर्मद बेंकि हत्तितो केलसवागुत्तदे । विकर्म जोतेगूडदिरुवतनक कर्म बरी जड, अदरल्लि चेतनविल्ल । ओम्मे विकर्मद किडि अदरल्लि बिद्दरे आ कर्मदल्लि हुट्टिबरुव सामर्थ्य अवर्णनीय । हिडिमद्दु किसेयल्लि-द्दीतु, आडलु बंदीतु । कोंच बेंकि तगुलितो शरीर छिद्र-छिद्रवादीतु ।

स्वधर्माचरणेयल्लि अनत सामर्थ्य गुसवागिरुत्तदे । अदक्के विकर्मवन्नु जोडिसि नोडु । अेथ क्रातियागुत्तदो ! अहंकार काम-क्रोधगळन्नु ई स्फोटन निर्नाम माडुत्तदे परमज्ञानद निष्पत्तियागुत्तदे ।

कर्म ज्ञानक्के उरवलिद्दंते । सुम्मने ओंदु कट्टिगे बिद्दिरुत्तदे । अदन्नु होत्तिसि, अदु धग धग उरियुत्तदे । आ कट्टिगे, ई बेंकि-- अेष्टु भेद ! आ कट्टिगेयदेताने ई बेंकि । कर्मदल्लि विकर्मवन्नु तुंबिदरे आ कर्म दिव्यवागि काणुत्तदे । तायि मगन बेन्नन्नु सवरुत्ताळे । ओंदु कै ओंदु बेन्नु सवरिदरे अदरल्लेनिदे ? आदरे ई सामान्य कर्म-दिंद आ तायि मक्कळ मनस्सिनल्लेद्द भावनेयन्नु वर्णिसबल्लवरारु ? इष्टु अङ्गुलद बेन्निनमेले इष्टु भारद नुणुपु कै आडिसिदरे आनंद-वागुत्तदे अेंदु यारादरू समीकरण माडिदरे नगेगीडादीतु । कैयाडि-सुव ई क्रिये तीरा क्षुद्र । आदरे आ क्रियेयल्लि तायिय हृदय तुंबि तुळुकिदे । अल्लि विकर्म तुंबिदे । अदरिंद अपूर्व आनंद सिगुत्तदे । तुलसी रामायणदल्लि ओंदु संगति इदे । राक्षसरोडने युद्धमाडि बरु-

त्तारे वानररु। अवरिगे गायगळागिवे, मैयल्लि नेत्तरु सुरियुत्तिदे। प्रभु रामचन्द्र अवर कडे ओम्मे प्रेमदृष्टि बीरिदनो इल्लवो अवर नोवु मायवायितु । आग रामचंद्र हेगे कण्णु अरळिसिद्दनो अदेरीति याारादरू नकलुमाडि कण्णु अरळिसिद्दरे अदे परिणामवागुत्तित्ते ? आ प्रयत्न हास्यास्पद ।

कर्मक्के विकर्म जोतेयादरे अदरल्लि शक्ति स्फोटनवागुत्तदे, अकर्म निर्माणवागुत्तदे। सुट्टरे कट्टिगे बूदियागुत्तदे। भारि कोरडेल्ल ओंदु हिडि निरुपद्रवि बूदियागुत्तदे। अदन्नु कैयल्लि तेगेदुकोंडु मैगे बळिदुकोळ्ळबहुदु। कर्मदल्लि विकर्मद ज्योति हत्तिसिदरे अकर्मवागुत्तदे। मरवेल्लि, बूदियेल्लि ? क. केन संबंध ? इवुगळ गुण धर्मगळल्लि एनू साम्यविल्ल। आदरू आ बूदि आ मरद्दे, अदरल्लि संशयविल्ल।

कर्मदल्लि विकर्म बेरेतरे अकर्मवादीतु ऎदरेनर्थ ? कर्म माडिदंतेये ऎनिसदु ऎदर्थ। आ कर्मद भार काणदु। माडियू माडदवनंते इरुत्ताने। गीते हेळुत्तदे कोंदरू नीनु कोंदहागल्ल। तायि मगुवन्नु होडेयुत्ताळेंदु नीनु होडेदरे ? अदन्नु मगु सैरिसलिक्किल्ल। तायि होडेदरू आकेय मडिलल्ले मोरे मुच्चिकोंडीतु। तायिय बाह्य-कर्मदल्लि चित्तशुद्धि इदे। आकेय आ होडेत निष्कामद्दु। अदरल्लि आकेगेनू स्वार्थविल्ल। विकर्मदिंद, मनश्शुद्धियिंद कर्मद कर्मते हारिहोगुत्तदे। रामन आ नोट ओळगिन विकर्मदिंद केवल प्रेमसुधासागरवायितु। रामनिगे आ कर्मदल्लि श्रमवेनू इल्ल। चित्तशुद्धियिंद माडिद कर्म निर्लेपवागिरुत्तदे। अदक्के पाप-पुण्य यावुदू अंटदु।

इल्लदिद्दरे कर्मद भार नम्म बुद्धियमेले, हृदयदमेले अेष्टु बिद्दीतो। नाळे राजकीय कैदिगळन्नु बिडुत्तारेंब सुद्दि हरडिदरे अेरडु गंटेय होत्तिगे जनर नेरवि हेगे नेरेदिदेयो नोडि। अेल्लाकडे गडि-बिडि। कर्मद ओळितु-केडुकिनिंद नावु अेष्टु व्यग्ररागुत्तेवे। कर्म नम्मन्नु अेल्ला कडेगळिंदलू सुत्तुगट्टुत्तदे। कर्म नम्म कत्तिनमेले कूतु सवारि माडुत्तदे। कडल नीरु उक्किबंदु नेलवन्नु कोच्चि आखात माडुवंते, कर्म चित्तदोळगे नुग्गि, अल्लि क्षोभेयुंटुमाडुत्तदे। अदरिंद सुख दुःखद द्वंद्व हुट्टुत्तदे, शांतियेल्ल नष्टवागुत्तदे। कर्म मुगिदुहोदरू अदर वेग-विन्नू उळिदे इरुत्तदे। कर्म चित्तवन्नु स्वाधीनपडिसिकोळ्ळुत्तदे। आमेले अदक्के निद्देये इल्ल।

इंथ कर्मदल्ल विकर्म बेरेतरे साकु, अेष्टु कर्ममाडिदरू भार श्रम अेनिसदु। मनस्सु ध्रुवदंते शांत, स्थिर, तेजोमय आगिरुत्तदे। कर्मदल्लि विकर्म तुंबिदरे अदु अकर्मवागुत्तदे। कर्ममाडि अळिसि-हाकिदंते आगुत्तदे।

16. कर्मद कले—संतरिंद कलि

कर्म अकर्मवादीतु हेगे? ई कलेयन्नु यारल्लि काणबहुदु? शरणरल्लि। ई अध्यायद कोनेगे देवरु हेळुत्ताने : शरणर बळिगे होगि कंडु अवरिंद पाठ कलि। कर्म हेगे अकर्मवागुत्तदे अेंबुदन्नु हेळुवाग भाषे बयलागुत्तदे। अदन्नु अरिसलु शरणर पादवे गति। परमेश्वरन वर्णनेयिदेयल्ल :

'शांताकारं भुजगशयनं'

परमेश्वर साविर हेडेय शेपनमेले मलगिय् शांतनागिदाने। शरणरु साविरवगेय कर्ममाडिदरू मानस सरोवरदल्लि क्षोभतरंगक्के अवकाश कोडरु। इंथ कौशलवन्नु शरणर बळिगे होगदे अरियलु साध्यविल्ल।

ईग पुस्तकगळिगे बेले बहळ कडिमे। आणे अेरडाणेगे गीतेय प्रति सिगुत्तदे। गुरुगळंतु बेकादष्टु जन इदारे। शिक्षणवू उदार, स्वतंत्र आगिदे। विद्यापीठगळल्लि ज्ञानप्रसादगळन्नु हंचुत्तिदारे। आदरे ज्ञानामृत भोजनद तेगु मात्र केळि बरुत्तिल्ल। पुस्तकद राशि राशिगळन्नु नोडि दिने दिने ननगे शरणर सेवेय अगत्य हेच्चु अनिसुत्तदे। पुस्तकद मक्कसवाद बट्टेय बैडिनोळगिंद होरगे बारदु ज्ञान। तुकारामर अभंगवोंदु इंथ संदर्भदल्लि ननगे सहजवागि नेनपागुत्तदे।

'काम क्रोध गुड्ड
अनंतकिदु अड्ड'

'कामक्रोधगळ पर्वतद आ कडे इदाने नारायण'। हागे ई पुस्तकराशिय् हिंदे अडगि कुळितिदाने ज्ञानराज। ग्रंथालय पुस्तकालयगळु अेल्लेल्लू बेळगुत्तिद्दरू इन्नू अेल्लेडेयल्लियू मनुष्य ज्ञानहीन संस्कारहीन आगि कोतियंते काणुत्तिदाने। बडोदेयल्लि दोड्ड ग्रंथालयविदे। ओम्मे ओब्ब गृहस्थ ओंदु बहळ दोड्ड पुस्तकवन्नोय्युत्तिद्द। आ पुस्तकदल्लि चित्र इद्दवु। इंग्लीषिन पुस्तक अेंदु तिळिदु अदन्नु आत ओय्युत्तिद्द। हेगिदे पुस्तक अेंदु नानु केळिदे। अवनु तोरिसिद। 'इदेनु फ्रेंच् इद्दहागिदेयल्ल' अेंदे। फ्रेंच् अंतेनो अेंद

आत । परम पवित्र इंग्लिष् लिपि, अंदवाद चित्र, सोगसाद बैङ्, इन्नु ज्ञानक्केनु कोरते ? इंग्लिषिनल्लि प्रतिवर्ष हत्तुसाविर होस पुस्तक बरुत्तवे । उळिदवुगळल्लू अदे रीति । इष्टु ज्ञानप्रसारवागिद्दरू लोकदल्लि मनुष्यन तले बरी बुरुडेयागिदेयेके ? स्मरणशक्ति कडिमेयायितु येन्नुत्तारे केलवरु । एकाग्रते साध्यविल्ल अेन्नुत्तारे केलवरु । ओदिद्देल्ला सरि अनिसुत्तदे अेन्नुत्तारे । केलवरु विचारमाडलु विरामविल्लवेन्नुत्तारे । श्री कृष्ण हेळुत्ताने · अर्जुन, केळि केळि गोंदलदल्लि बिद्द निन्न बुद्धि स्थिरवागदे निनगे योग लभ्यवागदु । श्रवण पठनगळन्नु मुगिसि इन्नु शरणरन्नु शरणु होगु । अवरु जीवन-ग्रंथवन्नु ओदिसियारु । अवर मुखदिंद मौन-व्याख्यान केळि नीनु छिन्न-संशयनादीये । अेल्ला सेवा-कर्मवन्नु माडियू, हेगे अत्यंत शांतवागिरबेकु, होरगण कर्मद गडि-बिडियल्लिद्दरू हृदयदल्लि अखंड संगीतद सितारन्नु मीटुवुदु हेगे अेंबुदु अवरल्लि होदरे तिळिदीतु ।

(13-3-32)

अध्याय 5.

17. बाह्यकर्म मनद कन्नडि

ससार बहळ भयानक वस्तु। अनेकसल अदक्के समुद्रद होलिके कोडुवुदुंटु। समुद्रदल्लि एत्त नोडिदरू नीरे नीरु। संसारदल्लू हीगे। संसार एल्लेडेयल्लू तुंबिकोंडिदे। मनेमारु बिट्टु यारादरू सार्वजनिक कार्यदल्लिये संपूर्णवागि मुळुगिदरे अदे आतन संसारवागुत्तदे। लोकवन्ने बिट्टु गुहांतर्वासियागि कूतरू चोट्टुद्द लंगोटिगे अंटिकोंडे अवन संसार। अवन आ लंगोटिये अवन ममतेय सार सर्वस्ववागिबिडुत्तदे। चिक्क नोटिनल्लि साविरारु रूपायि हुदुगिरुवंते आ चिक्क लंगोटियल्लि अपार आसक्ति अडगिदे। मनेमारु बिट्टरे, जंजड तग्गिसिदरे, इष्टरिंद संसार कडिमेयागलारदु। $\frac{10}{25}$ अथवा $\frac{2}{5}$ एंदरे ओंदे। बेरेयल्ल। मनेयल्लिरु वनदल्लिरु, आसक्ति निन्न बळियल्ले इदे। संसार लेशमात्रवू कडमेयागदु। इब्बरु योगिगळु हिमालयद गुहेयल्लि होगि कुळितारु। अल्लिकूड अवरिगे परस्पर कीर्तियन्नु केळि होट्टे उरियुत्तदे। सार्वजनिक सेवेयल्लू इंथ प्रसंग बरुत्तवे।

संसार हीगे नम्म बेन्नंटिये बंदिरुवुदरिंद नावु एष्टे स्वधर्माचरणेय नियमगळन्नु हाकिकोंडरू संसारवेनु नम्मन्नु बिडदु। हलवारु परदाट बिट्टु उळिद व्यापगळन्नेल्ल तग्गिसि तन्न संसारवन्नु किरिदु माडिदरू अष्टरल्ले एल्ल ममतेयू तुंबिरुत्तदे। राक्षस चिक्कवनू आगुत्ताने, दोड्डवनू आगुत्ताने। संसारवू हागे। चिक्कवनेनु दोड्डवनेनु राक्षस राक्षसने! दोड्ड बंगलेयेनु चिक्क गुडिसलेनु [2] एरडू दुर्निवार्य।

स्वधर्माचरणेयिंद कट्टि बिगिदु संसारवन्नु अेष्टे प्रमाणबद्धवागिसिदरू इदरल्लि हलवु कीटले तप्पिदल्ल। संसार बेडवप्प अेनिसीतु। अदरल्लिये अनेक संस्थेगळ, अनेक व्यक्तिगळ संबंध बंदु नीनु अळदक्कियादीये। साकु साकादीतु। आगले निन्न मनस्सिन परीक्षे। स्वधर्माचरणे माडिद मात्रक्के अलिप्तते बारदु। कर्मद व्याप्ति कुगिसिदरे अदु अलिप्ततेयल्ल।

हागादरे अलिप्तते हेगे सिक्कीतु? अदक्के मनोमय प्रयत्न बेकु। मनस्सिन सहकारविल्लदे यावुदू सिद्धवागदु। तंदे तायि ओंदु संस्थेयल्लि मगनन्नु बिट्टरु। अल्लि आ हुडुग नसुकिनल्लि एळुत्ताने। सूर्यनमस्कार हाकुत्ताने। काफी कुडिय। मनेगे बंदाग अेरडे दिनदल्लि अदन्नेल्ल बिट्टुबिडुत्ताने। इदु अनुभव। मनुष्य अेंदरे मण्णिन मुद्देयल्ल। याव आकारवन्नु अवन मनस्सिगे कोडबेकेन्नुत्तेवो अदन्नु अवन मनस्सु ग्रहिसबेकल्ल! आ आकारदल्लि मनस्सु कूडदिद्दरे अेल्ल प्रयत्नवू व्यर्थवेन्नबेकु। अंते साधनेयल्लि मनस्सिन सहकार बहळ अगत्य।

साधनवागि बाह्यदल्लि स्वधर्माचरणे, अंतरंगदल्लि मनस्सिन विकर्म अेरडू बेकु। बाह्यकर्म अत्यगत्य। कर्म माडदे मनस्सिन परीक्षे आगदु। मुजानेय प्रशांत कालदल्लि नम्म मनस्सू शांतवागिद्दंते अनिसुत्तदे। आदरे मगु स्वल्प अळलि, आ मनश्शांति अेल्लि मायवागुत्तदेयो! बाह्यकर्मवन्नु तडेदु प्रयोजनविल्ल। बाह्यकर्मदिंद मनस्सिन स्वरूप प्रकटवागुत्तदे। मेले नोडिदरे नीरु निर्मल। ओंदु कल्लेसेदु नोडि। ओळगिन होलसु मेले बरुत्तदे। नम्म मनस्सिनदू

हागे। मनस्सिन अतस्सरोवरदल्लि रागि राशि होल्सु कूडिरुत्तदे। बाह्यवस्तुविन संबंध बंदोडने आ होल्सु काणुत्तदे। अदन्नु नावु राग अन्नुत्तेवे। रागवेनु होरगिनिंद बंते? अदु मोदले ओळगे इत्तु। मनस्सिनोळगे इरदिद्दरे होरगे बारदल्ल।

बिळिय खादि बेड, अदु होलसागुत्तदे, उळिद खादि होलसागदु अन्नुत्तारे जन। अदू होलसागुत्तदे। आदरे कण्णिगे काणिसदु। बिळी खादि होलसादरे काणुत्तदे। नानु होलसागिदेने, नन्नन्नु ओगे अन्नुत्तदे अदु। हीगे हेळुव खादि मनुष्यनिगे रुचिसदु। नम्म कर्मवू इदेरीति हेळुत्तदे। नीनु सिट्टुकनो स्वार्थियो अंबुदन्नु कर्म तिळिसुत्तदे। कर्म निन्न स्वरूपवन्नु तोरिसुव कन्नडि। इदक्कागिये कर्मवन्नु वदिसबेकु। मोरेगे हत्तिद होलसन्नु तोरिसितेदु कन्नडियन्ने ओडेदुबिडोणवे? इल्ल। अदर बदलु कन्नडियन्नु बंदिसि, मुख तोळेदु-कोंडु मत्ते कन्नडि नोडु। कर्मदिंद निन्न मनस्सिनोळगण होल्सु बयलिगे बीळुत्तदेदु कर्मवन्ने बिट्टुबिडुवुदे। कर्म बिट्टरे मनस्सु निर्मल-वादीते? कर्म माडबेकु। निर्मलनागुव प्रयत्न माडबेकु।

ओब्ब गुहेयल्लि होगि कूडुत्ताने। अल्लि यार संबंधवू इल्ल। अवनिगे तानु सपूर्ण शांतमतियादे अनिसुत्तदे। अवनु गुहेयन्नु बिट्टु ओंदु मनेयमुंदे भिक्षेगे होगलि। अल्लि आटवाडुव मगु ओंदु मने-बागिल चिलुकवन्नु सप्पळमाडिद। आ बालब्रह्म आ नादब्रह्मदल्लि तल्लीननागिदाने। आ योगिगे आ निष्पाप मगु माडिद सप्पळ सहनवागदु। एनु हाळुसद्दु अन्नुत्ताने। गुहेयल्लिद्द अवन मनस्सु

इष्टुमट्टिन आघातवन्नु सैरिसदंतागिदे। चिलुक वारिसिदरे साकु, अवन शाति बाल मुदुरितु । इथ दुर्बल मन.स्थिति ओळितल्ल ।

इदर अर्थ – नम्म मनस्सिन स्वरूपवन्नरियलु कर्म बहळ उपयोगि । दोष कंडरे अदन्नु निवारिसलुबहुदु । दोषवे काणदिद्दरे प्रगति कुंदुत्तदे, विकास निल्लुत्तदे। कर्म माडुत्तिद्दरे दोष काणुत्तदे। अदन्नु निवारिसलु विकर्मद योजने माडबेकु। हीगे ओळगे विकर्मद प्रयत्न हगल इरुळू नडेदरे कालानुकालदल्लि स्वधर्मवन्नु आचरिसुत्त हेगे अलिप्तनागिरबहुदो, काम क्रोधातीतनागि लोभमोहरहितनागि हेगे इरबहुदो, तिळिदुबरुत्तदे । कर्मवन्नु निर्मलगोळिसुव प्रयत्न निरंतर नडेदरे निर्मल कर्मवे सहजवादीतु। निर्विकार कर्म पदे पदे सहजवागि बिट्टरे, कर्म यावाग नडेयितेंबुदु कूड तिळियदंते आगुत्तदे। कर्म सहजवादरे अदु अकर्मवागुत्तदे। सहज कर्मवे अकर्म। नाल्कनेय अध्यायदल्लि नाविदन्नु नोडिदेवे । कर्म हेगे अकर्मवागुत्तदो अदन्नु शरणर पाददिंद कलियबेकु अंदु नाल्कनेय अध्यायद कोनेयल्लि भगवत हेळिदाने। ई अकर्मस्थितियन्नु वर्णिसलु मातिगे अळवल्ल ।

18. अकर्मदशेय स्वरूप

कर्मद सहजतेयन्नु अरियलु परिचयद दृष्टांतवन्नु तेगेदुकोळ्ळोण। चिक्कमक्कळु मोदलु नडेयुवुदन्नु कलियुत्तवे। आग अदक्के अेष्टु कष्टवागुत्तदे। अदु नडेयुवुदन्नु नोडि नावु अेष्टु कौतुक तोरिसुत्तेवे। मगु नडेयतोडगितु अेन्नुत्तेवे। मुंदे आ नडिगे सहजवे आगुत्तदे। नडेनडेयुत्त हरटे होडेयुत्तदे। नडेयुवुदर कडे अदर

गमनवे इरुवुदिल्ल। तिन्नुवुदर विषयवू हीगे। चिक्कमक्कळिगे तिन्निसुवुदू ओंदु दोड्ड केलस। अवक्के अन्नप्राशन माडिसुत्तेवे। मुंदे तिन्नुवुदु अवक्के सहजवागुत्तदे। मनुष्यनिगे ईजु कलिवाग मोदलु अेष्टु कष्ट। क्रमेण अदु सहजवागुत्तदे। मोदलु उसिरु कट्टुत्तदे। आदरे मुवरिदु नोडोणवेंदु होदरे ईजिनल्लि वळलिके काणिसदु। मै तन्नष्टक्के ताने तेलाडुत्तदे। श्रमपडुवुदु मनस्सिन धर्म। मनस्सु आया कर्मदल्लि मग्नवादरे श्रम हुट्टुत्तदे। आदरे कर्म सहजवागिबिट्टरे अदर भार तिळियुवुदिल्ल। कर्म अकर्मवागुत्तदे, आनंदमयवागुत्तदे।

कर्म अकर्मवागबेकु—इदे नम्म गुरि। इदक्कागि स्वधर्माचरण-रूप कर्मवन्नु माडबेकु; माडुत्तिरुवाग दोष कंडुबंदावु। अदन्नु निवारिसलु विकर्मद वीरगच्छे कट्टबेकु। अभ्यास माडुत्तबंदरे कर्म-दिंद किंचित्तू कष्टवागद मनःस्थिति प्राप्तवागुत्तदे। साविर कैगळिंद कर्म माडुत्तिद्दरू मनस्सु निर्मलवू शांतवू आगिरुत्तदे। आकाशवन्नु केळु 'बिसिलिन झळक्के नीनु सीदुहोगुत्तीयल्लवे? मळेगे पूरा नेनेदुहोगुत्तीयल्लवे? छळिगे नडुगुत्तीयल्लवे?' अेंत। आकाश एनु हेळीतु। 'ननगे एनेनु आगुत्तदेयो नीने निर्धरिसिबिडु, ननगंतू ओंदू गोत्तिल्ल' अेंदीतु।

'बरिमैयो बट्टेयो हुच्चने बल्ल?
अरियबेकु ताबे नोडिदवरेल्ल।'

हुच्च बेत्तलेयिदानो बट्टे उट्टिदानो जनरु हेळबेकु। अवनिगदोंदू तिळियदु।

भावार्थ इष्टु विकर्मद सहायदिंद स्वधर्माचरणेय कर्म निर्विकारवागुव दारि हिडिदु स्वाभाविकवागुत्तदे। दोड्ड दोड्ड प्रसंग-गळू आग कठिणवेनिसवु। कर्मयोगद अंथ बीगद कै इदु। बीगद कै इरदिद्दरे बीगवन्नु ओडेदोडेदु कैयेल्ल बोब्बेयादावु। बीगद कै सिक्करे ओंदेगळिगेयल्लि मुगियितु केलस। कर्मयोगद ई बीगद कैयिंद अेल्ल कर्मवू निरुपद्रवियागुत्तदे। मनोजयदिंद ई बीगद कै सिगुत्तदे। मनोजयक्कागि अविरत प्रयत्न नडेयबेकु। कर्म माडुवाग काणुव मनोमलवन्नु तोडेदुहाकुव प्रयत्न नडेयबेकु। आग बाह्यकर्मद किरुकुळविरदु। कर्मद अहंकारवे इल्लदंतागुत्तदे। कामक्रोधद वेग कडिमेयागुत्तदे। क्लेशद परिवेये इल्लदागुत्तदे। कर्मद परिवेये उळियदु।

ओम्मे ओब्ब दोड्ड मनुष्य ननगोंदु पत्र बरेद। 'हदिमूरु कोटि रामनाम जप माडबेकु, नीनू अदरल्लि भागवहिसु, दिनवू अेष्टु जप माडुत्ती तिळिसु' अेंत। आ मनुष्य तन्न बुद्धिगे तक्कंते खटिपिटि माडिद। अदन्नु नानु दोषवेन्नलारे। आदरे रामनाम हीगे अळेयुव वस्तु-वल्ल। तायि मगुविन सेवे माडुत्ताळे। आके अदर वरदि प्रकटिसुत्ताळेये? वरदि प्रकटिसिदरे 'थ्याक् यु' अेंदु हेळि आ सालवन्नु बगेहरिसलु बदीतु। आदरे तायि वरदि कोडळु। नानेनु माडिदे, एनू माडलिल्ल-वल्ल अेंदाळु आके। विकर्मद सहायदिंद मनस्सन्नु अळेदु हृदयवन्नु सुरिदु मनुष्य कर्म माडिदरे आ कर्म कर्मवागि उळियदु, अदु अकर्म-वागुत्तदे। अदरल्लि क्लेश, कष्ट, अड्ड तिड्ड एनू इल्ल।

ई स्थितियन्नु वर्णिसलु बारदु । अदर मसकु कल्पनेयॊंदन्नु सूचिसबहुदु । सूर्य हुट्टुत्तानल्ल । हक्किगळन्नु हारगोट्टनु, लोकवन्नु कर्मप्रवृत्तवागि माडेनु–ऎंदु सूर्यन मनस्सिनल्लिरुत्तदेये ? हुट्टुत्ताने, हागे निल्लुत्ताने । अवन इरवे विश्वक्के चालने कॊडुत्तदे । आदरे सूर्यनिगे अदर परिवेये इल्ल । सूर्यनिगे कै मुगिदु, कत्तलेयन्नु कळेद महाराया ऎंदरे एनु हेळियानु सूर्य–'कत्तले ऎंदरेनो स्वल्प ऒंदु चिटिकेयष्टु तोरिसि, आमेले अदन्नु दूरमाडियेनु ।' आग नन्न कर्तृत्व कत्तलेयन्नु सूर्यन कडेगे ऒय्यलु बंदीते ? सूर्यन इरविनिंद कत्तलु हरिदीतु । अवन बेळकिनल्लि केलवरु सद्ग्रंथवन्नु ओदियारु, केलवरु असद्ग्रथवन्नु ओदियारु । ऒब्ब बेंकि हत्तिसिदरे ऒब्ब परोपकार माडियानु । आदरे ई पाप पुण्यद हॊणेगार सूर्यनल्ल । 'बेळकु नन्न सहज गुण । नन्नल्लि बेळकिल्लदिद्दरे मत्तेनिद्दीतु ? नानु बेळगु-त्तिदेनॆंबुदु ननगे गॊत्तिल्ल । नानु इरुवुदॆंदरेने बेळकु । बेळकु बीरुव केलसद कष्ट ननगिल्ल । इदॊंदु केलस ऎनिसुवुदे इल्ल ननगे' ऎंदानु सूर्य ।

सूर्यनिगे बेळगुवुदु हेगे स्वभाववो साधु शरणरद्दू हागे इरुविकेये बेळगुविके । नीनु सत्यवादि ऎंदु ज्ञानिगे हेळि । सत्यवन्नु अनुसरिसदिद्दरे मत्तेनुमाडलि ऎंदानु । इदरल्लि विशेषवेनु ऎंदानु । ज्ञानिगळिद्दल्लि असत्य संभवनीयवे अल्ल ।

इदु अकर्मद भूमिके । साधने नैसर्गिकवू स्वाभाविकवू आगि-बिडुत्तदे ; बंदद्दु होदद्दु तिळियुवुदे इल्ल । इंद्रियगळिगो रूढियागुत्तदे ।

सहजवाद माते हितोपदेशवागुत्तदे। अंथ स्थिति प्राप्तवादाग कर्म अकर्मवागुत्तदे। ज्ञानिगळ कैयिंद सत्कर्म सहजवागिये आगुत्तदे। तायिय नेनपु आगुवुदु मगुविगे सहज धर्म। इदेरीति देवर नेनपागुवुदु शरणर सहज धर्म। मुंजाने को को को अंदु कूगुवुदु कोळिय धर्म। स्वरलक्षणवन्नु तिळिसलु पाणिनि कोळिय उदाहरणे कोट्टिदारे। पाणिनिय कालदिंद इंदिनवरेगू कोळि बेळग्गे कूगुत्तले इदे, हागेंदु याराद्रू अदक्के मानपत्र कोट्टिदारेये? अदु अदर सहज धर्म। हागेये सत्य हेळुवुदु, भूतमात्रदल्लि दये, परर दोष गमनिसदिरुवुदु, परर शुश्रूषे माडुवुदु इत्यादि शरणर कर्म सहजवागि नडेदिरुत्तवे। अवन्नु माडदे अवरु बदुकलाररु। ऊट माडिदरु अंदु नावु यारिगादरू मन्नणे माडुत्तेवेये? ऊट निद्दे संसारिगनिगे सहज कर्म, शरणरिगे सेवा कर्म सहज कर्म। उपकार माडुवुदु अवर स्वभाव। नानु उपकार माडे अंदरू अवरिगदु साध्यविल्ल। अथ ज्ञानिय कर्म अकर्मद मेट्टलन्नु मुट्टिदते। ई स्थितिगे सन्यासवेंब पवित्र पदवि कोट्टिदारे। संन्यासवेंदरे ई परम धन्य अकर्म दशे। इदन्नु कर्मयोगवेंदे अन्नबेकु। कर्म माडुत्तेवादुदरिंद अदु योग, माडिदरू माडिदंते अनिसदु अंत अदु संन्यास। माडिदरू अदर लेप अंटदथ युक्तियिंद अदु योग, एनू माडदंतेये अनिसुवुदरिंद अदु सन्यास।

19. अकर्मद ओदु नोट : योग

सन्यासद कल्पनेयादरू एनु? केलवु कर्म माडुवुदु, केलवन्नु बिडुवुदु—हीगिदेये? हागल्ल। सर्व कर्मवन्नू बिडुवुदे संन्यास अंदु

व्याख्ये इदे। सर्व कर्मदिंदलू मुक्तनागुवुदु, किंचित्तू कर्म माडदिरुवुदु संन्यास। कर्म माडुवुदिल्लवेंदरे एनु? कर्म वहळ चमत्कारवादुदु। सर्व कर्म सन्यास हेगागबेकु? हिंदेयू मुंदेयू सर्वत्र कर्म हब्बिकोंडिदे। किक्किरि तुंबिदे। कूतरू अदु कर्म। कूडुवुदु अेंबुदु क्रियापद। वरी व्याकरणदल्लल्ल, सृष्टि शास्त्रदल्लू कूडुवुदु क्रियेये, कूतु कूतु कालु नोय्युत्तवे। कूडुवुदू श्रमवे, माडदिरुवुदू कर्मवे अेंवलि कर्मसंन्यास-वेंदरेनु? भगवंत अर्जुननिगे विश्वरूप तोरिसिद। सर्वत्र व्यापियाद विश्वरूपवन्नु नोडि अर्जुन वेदरि कण्णु मुच्चिद। कण्णु मुच्चि नोडिदाग अदु ओळगे काणिसतोडगितु। कण्णु मुच्चिदरू कावुदन्नु तोलगिसु-वुदु हेगे? माडदिद्दरू आगुवुदन्नु हेगे तप्पिसुवुदु? ओंदु स्वारस्य-वाद कथेयिदे। ओब्बन बळि हेरळवाद ओडवेगळिद्दवु। दोड्ड पेट्टिगेयोंदरलि बीग हाकि इट्टिद्द। आलुगळु दोड्ड कब्बिणद पेट्टिगे-योंदन्नु माडिसि तंदरु। 'अंत मूर्खरो नीवु! रसिकतनवे इल्लवल्ल। सुन्दरवाद आभरणगळन्नु कब्बिणद पेट्टिगेयल्लिडुवुदे? ओळ्ळे वंगारद पेट्टिगे माडिसि तरिसि' अंद। अवरु वंगारद पेट्टिगे तरिसिदरु। अदक्के चिन्नद चिलुक बीगगळन्ने तरिसिद। अदरोळगे ओडवेगळन्निट्टु चिन्नवन्नु बच्चिट्ट। बच्चिट्टनो बिच्चिट्टनो? कळ्ळरिगे ओडवे हुडुकुव अगत्यवे इल्ल। आ पेट्टिगे होत्तरे आयितु। कर्म माडदिद्दरू माडिदंथ प्रकारगळिवे। इष्टु व्यापकवाद कर्मगळन्नु सन्यसिसुवुदु हेगे? यच्च यावत् कर्म माडुत्तले इद्दरू अदु उदुरिहोयितु अेंबुदु इंथ कर्मवन्नु संन्यसिसुव मार्ग। हागादागले संन्यास। निजवागि संन्यासद कल्पने

अति रमणीय। कर्म माडिदरू अेल्लवू उदुरिहोगुवुदु अेंथदु इदु ? सूर्यन हागे। हगलू इरुळू सूर्य कर्मवन्नु माडुत्ताने। इरुळिनल्लू माडुत्ताने। अवन बेळकु उळिद अर्ध गोलदमेले बीळुत्तले इदे। इष्टु कर्म माडुत्तिद्दरू अवनु कर्मवन्ने माडुत्तिल्ल अेन्नुत्तारे। अंतले नाल्कनेय अध्यायदल्लि भगवंत मोदलु नानीयोगवन्नु सूर्यनिगे हेळिदे अेन्नुत्ताने। सूर्यनिंद विचारशीलनू मननशीलनू आद मनु कलित। इप्पत्तुनाल्कु गंटे कर्म माडियू सूर्य लेशमात्रवू कर्म माडनु। ई स्थिति अद्भुत रम्यवागिदे। इदरल्लि संदेहविल्ल।

20. अकर्मद इन्नोंदुनोट : संन्यास

इदु सन्यासद ओंदु बगे मात्र। कर्म माडियू माडनु अेंबुदु ओंदु भागवादरे इन्नोंदू इदे। अवनु ओंदू कर्म माडुत्तिल्ल, इडी लोकवन्ने कर्म माडलु तोडगिसुत्ताने। अवनल्लि अपरपार प्रेरक शक्तियिदे। अकर्मद कौशल इदुवे। कूरि तुंबिद कर्म, अदुमि तुंबिद कर्म-अकर्म। ई अकर्मदल्लि अनंत कार्यके अनुकूलिसुव शक्तियिदे। आवियल्लि आ शक्तियिल्लवे ? आवियन्नु तुविविट्टरे प्रचंड केलस माडुत्तदे। तुंबिट्ट आवियल्लि अपरपार शक्ति हुट्टुत्तदे। अदु भारि गाडिगळन्नेल्ल सहजवागि अेळेयुत्तदे। सूर्यनदू हागेये। अवनु लेशमात्रवू कर्म माड। आदरे इप्पत्तुनाल्कु गंटेयू ओंदेसमने केलस माडुत्ताने। अवनन्नु केळिदरे 'नानु एनू माडेनल्ल' अेदानु। सूर्यनंते हगलिरुळू केलस माडियू माडदिरुवुदु ओंदु बगे, हगलिरुळू अनंत कर्म माडुवुदु मत्तोंदु बगे। संन्यास ई अेरडू बगेयल्लि नडेदिदे। अेरडू

असामान्यवे। ओंदरल्लि कर्म प्रकट, अकर्मावस्थे गुप्त। इन्नोंदरल्लि अकर्म प्रकट। अनत कर्म आ योगदिंद आगुत्तवे। ई अवस्थेयल्लि कर्म तुरुकि तुंबिरुत्तदेयागि प्रचंड कर्मवागुत्तदे। इंथवनिगू सोमारिगू महदंतर। सोमारि बळलियानु, बेसत्तानु। अकर्मि संन्यासि, कर्म शक्तियन्नू तुंबिबिडुत्ताने, लेशमात्रवू कर्म माड। कैकालु आडिस। आदरू एनू माडदेये अनत कर्म माडुत्ताने।

ओब्बनिगे सिट्टु बरुत्तदे। नम्मदु तप्पिद्दाग अवनु सिट्टादरू अवन बळिगे होगुत्तेवे। अवनु आग मातांडलोल्ल। आ कर्म त्यागद परिणाम एष्टु? इन्नोब्ब वडबड एनादरू हेळियानु। इब्बरिगू सिट्टे। ओब्ब मूक, ओब्ब माताळि। एरडू सिट्टिन रीतिये। मातांडदिरुवुदू सिट्टिन रीतिये। अदरिंदलू केलसवागुत्तदे। तायि तंदे मगुविनोडने मातांडदिद्दरे एष्टु प्रचंड परिणामवागुत्तदे! मातांडुव कर्मवन्नु माड दुदरिंद आगुवष्टु प्रचंड कर्म प्रत्यक्षवागि आ कर्म माडिद्दरू आगुत्तिरलिल्ल। आडदेये आद परिणाम आडिद्दरे आगुत्तिरलिल्ल। ज्ञानिय विषयवे हीगे। अवन अकर्म, अवन स्वस्थ तिष्ठे प्रचंड कर्म माडुत्तदे। प्रचंड सामर्थ्य उत्पत्तिमाडुत्तदे। अकर्मियागिद्दू अवनु माडुव इष्टेल्ल कर्म क्रियेयल्लि प्रकटवागले आगदु। हीगे इदु सन्यासद एरडने बगे।

हीगे सन्यासद सर्व खटिपिटियू ओंदु आसनदल्लि पर्यवसानवागुत्तदे।

तुकाराम हेळुत्ताने 'नानीग तेरवागिदेने। मूलेयागि चिद्दिदेने। एल्ला उद्योगवू मुगिदितु।' तुकाराम बरिदागिदाने।

आदरे आ बरी चीलदल्लि प्रचंड प्रेरक शक्तियिदे। सूर्य स्वतः कै बीसि करेय। आदरू अवनु कंडुबंदरे, साकु--हक्कि हारुत्तवे ; कुरिमरि कुणियुत्तवे, दन मेयलिक्के होरडुत्तवे, वर्तकरु अंगडि तेगेयुत्तारे, ओक्कलिगरु होलक्के होगुत्तारे, लोकदल्लि नाना व्यवहार प्रारंभवागु-त्तवे। सूर्य इद्दरे साकु, अनंत कर्म मोदलागुत्तवे। ई अकर्मावस्थेयल्लि अनंत कर्मद प्रेरणे तुंबि तुळुकुत्तिरुत्तदे, सामर्थ्यवू तुंबि तुळुकिरुत्तदे। इदु सन्यासद ओरडनेय अद्भुत बगे।

21. ओरडर होलिके -- शब्दातीत

ऐदनेय अध्यायदल्लि सन्यासद ओरडु बगेयन्नु हेळिदारे। ओब्ब इप्पत्तुनाल्कु गंटे केलस माडियू एनू माड ; इन्नोब्ब क्षणमात्रवू केलस माडदेये ओल्लवन्नू माडुत्ताने। माताडियू आडदते ओदु ; माताडदेये आडिदंते इन्नोंदु। हीगे ई ओरडन्नू होलिसिदारे। इदन्नु विचार माडिदरे, मनन माडिदरे, अदे अपूर्व आनंद।

ई विषयवे अपूर्व उदात्त! सन्यासद कल्पनेये निजवागि पवित्र भव्य। ई कल्पनेयन्नु मोदलु शोधिसि तेगेदवनिगे ओष्टु धन्यवाद अर्पिसोण। इदु उज्वल कल्पने।

मानवीय बुद्धि, मानवीय विचार मेलेरिदाग, ओल्लकिंत हेच्चु मेलेरिदाग संन्यासदवरेगे मुट्टितु। अदन्नु दाटि इन्नू यारू होगिल्ल। मेलेरुवुदु नडेदे इदे। आदरे विचार अनुभव इष्टु मेले एरिदुदन्नु मत्तेल्लू नानु अरियें। ई ओरडु बगेय युक्त सन्यासद कल्पने यावुदे कण्णेदिरिगे बंदरू अपूर्व आनंदवागुत्तदे। आदरे भाषेय, व्यवहारद

ई जगत्तिनल्लि वदोडने आनद कुग्गुत्तदे। एनो केळगे उरुळिदंते अनिसुत्तदे। गेळेयरोदिगे यावागल नानिदन्नु हेळुत्तिरुत्तेने। अेष्टो वर्षगळिंद नानी दिव्य विचारगळ मनन माडुत्तिदेने। इल्लि भाषे अरेबरेयागुत्तदे। शब्दक्के इदु अेटुकदु।

'एनू माडदेये अेल्लवन्नू माडिदंते, अेल्ला माडियू एनू माडदंते' अेबुदु अेथ उदात्त, रसमय, काव्यमय कल्पने! काव्यवेंदरे मत्तेनु? काव्य प्रपंचवेल्ल ई काव्यद मुंदे नीरस। ई कल्पनेयल्लि इरुव आनद, उत्साह, स्फूर्ति, दिव्यते मत्ताव काव्यदल्लू इल्ल। हीगे ऐदनेय अध्यायवन्नु उन्नतोन्नत पीठदल्लि कूडिसिदारे। नाल्कनेय अध्यायद वरेगे कर्म-विकर्मवन्नु हेळि इल्लि एकाएकि मेलेरिदारे। इल्लि अकर्म देशेय अेरडु प्रकारगळन्नु होलिसिदारे। इल्लि भाषे तडवरिसुत्तदे। कर्मयोगि श्रेष्ठनो कर्मसंन्यासि श्रेष्ठनो? यारु हेच्चु कर्म माडुत्तारे? हेळलु बारदु। संन्यासद ई द्विमुख कल्पने बहळ भव्य। अेल्ला माडि एनू माडदुदु एनू माडदे अेल्ला माडिदुदु—अेरडू संन्यासवे, अेरडू योगवे। होलिसलिक्केंदु ओंदन्नु सन्यास अेदरु, इन्नोदन्दु योग अेदरु।

22. भूमिति–मीमांसेगळ दृष्टांत

इन्नु इदर तुलने हेगे? यावुदादरू उदाहरणे कोट्टु माडबेकु। उदाहरणे कोडहोदरे केळगुरुळिदंते आगुत्तदे। आदरे केळगे इळियलेबेकु। निजवागि नोडिदरे, पूर्ण कर्मसंन्यास पूर्ण कर्मयोगद कल्पने ई देहदल्लि हिडिसलारदु। आ कल्पने ई देहवन्नु सीळिहाकीतु। आदरे ई कल्पनेयन्नु समीपिसिद महापुरुषर उदाहरणेयन्नु ग्रहिसि

मुंवरियवेकु । उदाहरणे अेदरे अदु अपूर्णवे । अदन्ने पूर्णवेदु ओंदु
गळिगे तिळियवेकु ।

रेखागणितदल्लि स, रे, ग इदु त्रिकोणवेन्नि अेन्नरे ? Let
ABC be a triangle ई Let एनु ? अन्नुवुदेको ? ई त्रिकोण
रेखे यथार्थ रेखेयल्ल । रेखेय लक्षण हीगे, उद्द इदे, अगल
इल्ल । अगलवे इल्लदे उद्दवन्नु हेगे तोरवेकु ? उद्द अेंदरे
अगलवू जोतेयल्ले वंतु, गेरे अेळेदरे स्वल्पवादरू अगल इद्दे
इरवेकु । अंते रेखागणितदल्लि रेखे 'अेन्न'दिद्दरे सागदु । भक्ति-
शास्त्रदल्लू हीगे ताने ? आ चिक्क सालिग्रामदल्लि सर्व ब्रह्माडद धणिये
इदाने अेंदुकोळ्ळि अेन्नुत्ताने भक्त । इवनेल्लो हुच्च अेंदारु यारादरू ।
ई रेखागणितद हुच्चु एनु अेंदु केळि । स्पष्टवागि निखरवागि काणु-
त्तिरुव गेरेगे अगल इल्ल अेन्नु अेंदरे इदेथ हुच्चु ? भूत कन्नडियल्लि
नोडिदरे आ गेरे अर्ध अंगुल दप्पवागि कंडीतु । नीनु आ रेखाशास्त्रद
मातन्नु ओप्पुवंते, सालिग्रामदल्लि परमेश्वर अेंदु तिळिदुको अेन्नुत्तदे
भक्तिशास्त्र । परमेश्वर ओडेयलार, हरियलार , ई सालिग्राम ओडेयु-
त्तदल्ल अेंदरे अदु विचारद रीतियल्ल । रेखाशास्त्रदल्लि 'तिळिदुको'
आगवहुदु , भक्ति शास्त्रदल्लेके वेड ? विंदु अेन्नुत्तीये, हलगेयमेले
विंदुवन्नु वरेयुत्तीये । विंदुवेनु वंतु ? अदु ओंदु ओळ्ळेय वर्तुल ।
विंदुविन व्याख्ये परब्रह्मन व्याख्येयिद्दंते । विंदुविगे उद्द अगल दप्प
यावुदू इल्ल । लक्षणवेनो इदु । आदरे हलगेयमेले विंदुवन्नु वरेयु-
त्तीये । विंदु वरी हेसरु, वरी अस्तित्व । अदक्के मूरू परिणाम इल्ल ।

अँदरे निजवाद बिंदु, निजवाद त्रिकोण वरी हेसरु, वरी व्याख्ये। आदरू नावु अदन्नु ओप्पि नडेयबेकु। भक्ति शास्त्रदल्लि, अच्छेद्यनाद सर्वव्यापि देवरु सालिग्रामदल्लि इद्दानेंदु तिळिदु नडेयबेकु। नावू हीगेये काल्पनिक दृष्टांतदिंद होलिसोण।

मीमांसकरु ओंदु भारि विनोद माडिदारे। देवरु ऎल्लिद्दाने ऎंदु चर्चिसुत्ता अवरु सोगसाद विवरणे कोट्टिदारे। वेददल्लि इन्द्र वरुण अग्नि इत्यादि देवतेगळिद्दारे, इवर लक्षणवन्नु चर्चिसुवाग मीमांसकरल्लि ओंदु प्रश्ने बरुत्तदे: इन्द्र हेगिद्दाने? अवन रूपवेनु? ऎल्लिरुत्ताने? मीमांसकरु हेळुत्तारे: इन्द्र शब्दवे इन्द्रन रूप, अदरल्ले अवनु इरुत्ताने। इ, आमेले अनुस्वार, मुंदे द्र—इदे इन्द्रन स्वरूप। इदे अवन मूर्ति। इदे प्रमाण। वरुण देवते हेगे? हीगे—मोदलु व। आमेले रु-ण। इदे अवन रूप। हीगे उळिद ऎल्ल देवतेगळू अक्षर-रूपधारिगळु। देवरेल्ल अक्षरमूर्तिगळॆंब कल्पनेये मधुर। देवरॆंब कल्पने, आ वस्तु आकारदल्लि अडकवागुवंतिल्ल। आ कल्पनेयन्नु सूचिसलु अक्षरद गुरुतु साकु। ईश्वर हेगिद्दाने? हीगे। मोदलु ई, आमेले श्व, आमेले र। ओंकार चमत्कार माडितु। ओ ऎंब ओंदु अक्षरवे ईश्वर। ईश्वरनन्नु ओंदु संज्ञेयागि माडितु। अथा सज्ञेगळन्नु निर्मिसबेकागुत्तदे। मूर्तियल्लि, आकारदल्लि ई विशाल कल्पनेयन्नु हुदुगिसलल्लवल्ल। आदरे मनुष्यन बयके बहळ दोड्डदु। ई कल्पने-यन्नु मूर्तियोळगे अडगिसलु यत्निसुत्ताने।

23. संन्यासि - योगि इब्बरू ओंदे : शुक-जनकरंते

संन्यास, योगगळेरडू अत्युच्च कल्पने। पूर्ण संन्यास, पूर्ण योगगळ कल्पने ई देहदल्लि अडगलारदु । देहदल्लि ई ध्येय अडग-दिद्दरू विचारदल्लि अडगुत्तदे । पूर्ण योगि पूर्ण संन्यासिगळु कल्पनेयल्ले इद्दारु, आदर्शवागि अप्राप्यवागि इद्दारु । आदरे उदाहरणेगागि आ कल्पनेगे तीर समीप होदवरन्नु हेसरुगोळ्ळबेकु । रेखागणितदंते हेळ-बेकु--इवनु पूर्णयोगि, अवनु पूर्णसंन्यासि एंदुकोळ्ळि। संन्यासक्के शुक याज्ञवल्क्यर उदाहरणे कोडुत्तारे । जनक, श्री कृष्णरु कर्मयोगि-गळेंदु गीते हेळिदे। लोकमान्यरु 'गीतारहस्य'दल्लि ओंदु पट्टि माडि-दारे : जनक, श्री कृष्णरु ई दारियल्लि होदरु ; शुक, याज्ञवल्क्यरु ई हादियल्लि होदरु--एंदु। आदरे ई पट्टियन्नु ओंदे बेरळिनिंद बरेद अक्षरदंते अळिसबहुदु । याज्ञवल्क्यरु संन्यासि, जनक कर्मयोगि । संन्यासि याज्ञवल्क्यनिगे कर्मयोगि जनक शिष्य । जनकन शिष्य शुक संन्यासि । संन्यासि-कर्मयोगि-संन्यासि हीगिदे ई सर । योग संन्यास एरडू ओंदे परंपरे ।

शुकाचार्यनिगे व्यासरु हेळिदरु : "शुक, नीनु ज्ञानि । आदरे गुरुमुद्रे निनगे बिद्दिल्ल। नीनु जनकन बळिगे होगु ।" शुकाचार्य-- होरट। जनक मूरने अंतस्तिनल्लि दिवानखानेयल्लिद्द । शुकाचार्य अडवियल्लिद्दवनु। नगरवन्नु नोडुत्त होरट । जनक अवनन्नु केळिद--'एके बंदे ?' शुक हेळिद : 'ज्ञानार्थियागि ।' 'यारु कळिसिदरु ?' 'व्यासरु ।' 'एल्लिंद बंदे ?' 'आश्रमदिंद ।'

'आश्रमदिंद बरुवाग बीदियल्लि एनु नोडिदे?' 'ऎल्लिनोडिदरू सक्करे मिठायि काणिसितु।' 'मत्तेनु?' 'ओडाड्डुव माताड्डुव सक्करे गोंबे-गळु।' 'आमेले?' 'इल्लिगे बरुवाग सक्करेय कल्लोंदु कालिगे तगलितु।' 'आमेले?' 'ऎल्लव सक्करेय चित्र।' 'ईगेनु नोड्डु-त्तिदीये?' 'ओंदु सक्करे गोंबे इन्नोंदु सक्करे गोंबेयोडने माताड्डुत्तिदे।' जनक हेळिद—'होगु, निनगे सर्वज्ञानवू लभिसिदे।' जनकनिंद बेकागिद्द प्रशंसापत्र सिक्कितु। विषय इदु: कर्मयोगि जनक संन्यासि शुकाचार्यरन्नु शिष्यनेंदु ऒप्पिद। शुकाचार्य संन्यासिये। आदरे प्रसंगद विलक्षणतेयन्नु नोडि। परीक्षतनिगे शाप दॊरेयितु—एळु दिनदल्लि नीनु सायुत्तीये। इन्नु सायुव सिद्धते माडबेकु। हेगे साय-बेकु ऎंबुदन्नु कलिसुव गुरु अवनिगे बेकित्तु। अवनु शुकनन्नु बेडिद। शुकाचार्य बंदु कूत। 24 × 7 = 168 गंटे पद्मासनस्थनागि भागवतवन्नु उपदेशमाडिद। कूतवनु एळले इल्ल। उपदेश माडुत्तले इद्द। इदरल्लेनु विशेष? एळु दिन ऒंदे समने दुडिदरू अवनिगेनू अनिसले इल्ल। इदे विशेष। इष्टु कर्ममाडिदरू अवनु कर्मवन्ने माडलिल्ल। श्रमद भावनेये इरलिल्ल। अंते ई कर्मयोग-संन्यासगळल्लि भेदविल्ल।

भगवंत हेळिल्लवे—'एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति।' सांख्य-योग, संन्यास-योग, एरडू ऒंदे ऎंदु तिळिदवनिगे गुट्टु तिळिदंते। ओळ्ळे माडदे माडुववनु, इन्नोळ्ळे माडि माडदवनु। सदा समाधिस्थनाद निर्विकार संन्यासियोब्ब नम्मोडने नाल्केंटु दिन-

विरलि-ऎन्टु वेळकु, स्फूर्ति कोट्टानु । बहु कालदिंद आगदिद्द केलसवेल्ल अवन दर्शनमात्रदिंद आगिहोगुत्तवे । भावचित्र नोडिदरे, सत्तवर चित्र नोडिदरे, मनस्सिनल्लि पवित्रते, भक्ति हुट्टुवुदादरे जीवंत संन्यासियन्नु नोडिदरे ऎन्टु प्रेरणे आगबेड । सन्यासि – योगि इब्बरू लोकसंग्रह माडुत्तारे । होरगे कर्मत्यागदंते कंडरे केलवु सल आ त्याग-दल्लि कर्म तुंबिरुत्तदे । अदरल्लि अनंतस्फूर्ति तुंबिदे । ज्ञानि–संन्यासि, ज्ञानि–कर्मयोगि इब्बरू ऒंदे सिंहासनदल्लि कूडुववरु । संज्ञे बेरे बेरे-यादरू अर्थ ऒंदे । ऒंदे तत्वद ऎरडु मुख, अति वेगवागि तिरुगु-वाग यंत्र स्थिरवागि काणुत्तदे, तिरुगुत्तिल्ल ऎनिसुत्तदे । संन्यासियू हीगे । अवन शांति स्थिरतेगळिंद अनंत प्रेरणे होरहोम्मुत्तदे । भगवान् बुद्ध, महावीररु अथ व्यक्तिगळु । सन्यासद सर्वकार्यवू ऒंदे ऒंदु आसनदल्लि निष्ठवागिद्दरू अदु प्रचंड कर्म माडुत्तदे । सारांश-सन्यासि ऎंदरू ऒंदे, योगि ऎंदरू ऒंदे । शब्द बेरे, अर्थ ऒंदु । कल्लु ऎंदरू बंडे, बंडे ऎंदरू कल्लु । हागेये कर्मयोगि ऎंदरे संन्यासि, संन्यासि ऎंदरे कर्मयोगि ।

24. संन्यासकिंत योग विशेष

आदरू ऒंदु कोडु मेल्लिट्टिदाने भगवंत । सन्यासकिंत कर्म-योग श्रेष्ठ ऎंदिदाने । ऎरडू ऒंदे आदरे हीगेके हेळबेकु ? इदेनु विचित्र मत्ते ? इदु साधकन दृष्टियिंद हेळिद मातु । एनू कर्म माडदे ऎल्लवन्नू माडुवुदु केवल सिद्धरिगे साध्य ; साधकरिगे साध्यविल्ल । आदरे ऎल्लवन्नू माडुत्ता एनन्नू माडदिरुवुदन्नु स्वल्पवादरू अनुकरिस-

वहुदागिदे। ओदु साधकनिगल्ल; सिद्धनिगे साध्य, अेरडनेयदु साधकनिगू केलमट्टिगे साध्य। कर्मवन्ने माडदे अेल्लवन्नू माडिदंतिरुवुदु गूढवागि साधकनिगे तिळियदादीतु। साधकनिगे कर्मयोग दारि; नेल्लेयू हौदु। संन्यास दारियल्ल, नेले। कर्मयोग अेरडू हौदु। अंते साधकनिगे अदक्कित इदु श्रेष्ठ।

मुंदे हन्नेरडने अध्यायदल्लि निर्गुणक्कित सगुणवन्ने भगवंत श्रेष्ठ-वेंदिदाने। सगुण अेल्ल इंद्रियगळिगू केलस कोडुत्तदे। निर्गुण हागल्ल। निर्गुणदल्लि कै व्यर्थ, कालु व्यर्थ, कण्णु व्यर्थ। कण्णु, किवि अेल्ल इंद्रियगळू कर्म शून्यवागुत्तवे। साधकनिगे अदु साध्यवागदु। सगुण-दल्लि हागल्ल। कण्णु रूपु नोडुत्तदे, किवि कीर्तने केळुत्तदे, कालु यात्रे माडुत्तदे, कै पूजे माडुत्तदे, जनर सेवे माडुत्तदे। हीगे अेल्ला इंद्रियगळिगू केलस कोट्टु मेल्ल मेल्लने अदन्नु हरिमयमाडबहुदु। निर्गुण-दल्लि अेल्लवू कट्टु। नालगे कट्टु, किवि मुच्चु, कै कालु कट्टु। ई अेल्ला कट्टुगळ रीतियन्नु कंडु साधक गाबरियागबेकादुदे! अवन चित्तदल्लि निर्गुण नाटीतु हेगे? सुम्मने कूतरू अवन मनस्सिनल्लि अड्ड तिड्ड विचार आडतोडगियावु। इन्द्रियगळ स्वभाववे हागे। जाहिरातु हीगे अल्लवे? 'ओदवेडि' अेंदु मेले बरेयुत्तारे। 'इदेनप्प ओदबारदुदु, मोदलु ओदि नोडोण' अेन्नुत्ताने ओदुग। आ 'ओदवेडि' अेंदरे ओदि अेंत। मनुष्य अदन्नु तप्पदे ओदुत्ताने। निर्गुणदल्लि मनस्सु सुत्ताडुत्तिद्दीतु। सगुणदल्लि हागल्ल। अदरल्लि आरतियिंदे, पूजे-यिंदे, सेवेयिंदे, भूतदये इदे। इंद्रियगळिगे केलसविदे। अेल्ल इंद्रिय-

गळिंगू केलस होंदिसिकोट्ट मनस्सिगे ऒल्लिगे बेको अल्लिगे होगेदु हेळु । आग मनस्सु होगलारदु । अल्ले विहरिसीतु । तनगे तिळियदेये एकाग्रवादीतु । ऒंदेकडे कूडेदु हेळिदरे मात्र ओडिये होदीतु । ऒंदोंदु इंद्रियक्कू चलो केलस कोट्ट 'मनस्सिगे बंदल्लि होगु' ऎंदरे होगदु । होगलु अदक्के स्वातंत्र्य कोट्टरे 'नानु इल्ले कूते' ऎन्नुत्तदे । सुम्मने कूडु ऎंदरे 'होगुत्तेने' ऎन्नुत्तदे ।

देहधारियादवनिगे सुलभतेयल्लि निर्गुणक्किंत सगुणवे श्रेष्ठ । कर्म माडुत्तलिद्दु अदन्नु नीगिकोळ्ळुव दारि कर्म माडदेये माडिदंतेस-गुव दारिगिंत श्रेष्ठ, इदु सुलभ । कर्मयोगदल्लि प्रयत्न, अभ्यास-गळिगे स्थानविदे । सर्व इंद्रियगळन्नू निग्रहिसि मेल्ल मेल्लने ऎल्ल उद्योगदिंदलू मनस्सन्नु होरसेळेदुकोळ्ळलु कर्मयोगदल्लि अवकाशविदे । इवॊत्तु ई उपाय साध्यवल्लदिद्दरू नाळे साध्यवागबल्लदु । बायेबिडदे माताडुवुदु कठिण । कर्मयोग अनुकरणक्के सुलभ । इदे संन्यासक्किंत इदर हेच्चुगारिके । अदू पूर्णावस्थेयल्लि ऎरडू ऒंदे, पूर्ण कर्मयोग पूर्ण सन्यास ऎरडू ऒंदे । हेसरु ऎरडु ; नोडलिक्के भिन्न । आदरू ऎरडू ओदे । ऒंदुकडे कर्मद भूत होरगडे निंतु कुणियुत्तिद्दरू ऒळगे शांति । इन्नॊंदरल्लि कण्णुकूड मिटुकिसदेये मूरु लोकगळन्नु अल्लाडिसुव शक्ति । मेले कडंते ऒळगे इल्लदिरुवुदे इवॆरडर लक्षण । पूर्ण कर्मयोगवे संन्यास ; पूर्ण संन्यासवे कर्मयोग । एनू भेद-विल्ल । आदरे साधकनिगे कर्मयोग सुलभ । पूर्णावस्थेयल्लि ऎरडू ऒंदे ।

चागदेव ज्ञानदेवनिगे ऒंदु पत्र कळिसिद, वरी कोरा कागद। चागदेवनिगिंत ज्ञानदेव चिक्कवनु; आदरे ज्ञानदल्लि हिरिय। तीर्थरूप अेंदोरे-वयस्सिनल्लि चिक्कवनु; चिरंजीव अेंदारे,-ज्ञानवृद्ध! अते चागदेव वरी कागदवन्नु कळिसिद। अदु मोदलु निवृत्तिनाथन कैगे वित्तु। अदन्नु ओदि अवनु ज्ञानेश्वरनिगे कोट्ट। आत मुक्तावायिगे अदन्नु ओदलु कोट्ट। मुक्तावायि अदन्नु ओदि हीगेदळु चाग्या, इष्टु दोड्डवनादरू इन्नू वरिदेने? निवृत्तिनाथ आ पत्रदल्लि ओदिकोंड अर्थवे वेरे। चागदेव शुद्ध, निर्मल उपदेशक्के अर्ह अेंदु अदक्के उत्तर वरेयलु हेळिद। ज्ञानदेव अरवत्तैदु ओलेगळ पत्र कळिसिद। अदन्नु चागदेवन अरवत्तैदु अेन्नुत्तारे। हीगिदे ई पत्रद विचित्र कथे! वरेदुदन्नु ओदुवुदु सुलभ। वरेयदुदन्नु ओदुवुदु कष्ट। अदन्नु अेष्टु ओदिदरू मुगियदु। हीगे संन्यासि तेरवागि वरिदागि कडरू अवनल्लि अपरंपार कर्म तुंबिकोंडिदे।

संन्यास कर्मयोगगळिगे पूर्ण रूपदल्लि ऒंदे बेले। कर्मयोगक्के व्यावहारिक बेले मात्र। नोट्टू इदे, नाण्यवू इदे। सरकार स्थिरवागिरुवतनक अेरडक्कू बेले ऒंदे। सरकार बदलादरे नोटिगे कुरुडु कासिन बेलेयू इल्ल। बगारद नाण्यद बेलेमात्र स्वल्पवादरू इद्दे इरुत्तदे। अदरल्लि बंगारविदेयल्ल। पूर्णावस्थेयल्लि कर्मत्याग कर्मयोगगळेरडू ऒंदे। एकेंदरे अेरडूकडे ज्ञानविदे। ज्ञानक्के बेलेयिदे। अनंतक्के अनंतवन्नु सेरिसिदरे फल अनंतवे। इदु गणितद सिद्धांत। कर्मत्याग कर्मयोगगळु परिपूर्णज्ञानदल्लि सेरिदाग अेरडर बेलेयू ऒंदे।

अेरड्ड् कडेयिंद ज्ञानवन्नु तेगेदिट्टरे मात्र साधकनिगे कर्मत्यागक्कित कर्मयोगवे श्रेष्ठवादीतु। शुद्ध ज्ञानवन्नु अेरड्डकडे हाकिदरे आग वेले ओंदे। गुरि मुट्टिदाग ज्ञान + कर्म = ज्ञान + कर्माभाव। आदरे ज्ञानवन्नु अेरड्डकडेयिंद तेगेदुहाकि। आग कर्माभावक्किंत कर्मवे श्रेष्ठवेनिसदे? माडदेये माड्डुवुदु साधकनिगे अर्थवे आगदु। माडि माडदंतिरुवुदु अवनिगे अर्थवागुत्तदे। कर्मयोग ई दारियल्लि, ई गुरियल्ल इदे। संन्यास गुरियल्लिदे, दरियल्लिल्ल। इदन्ने शास्त्रीय भाषेयल्लि हेळिदारे--कर्मयोग साधनेयू हौदु, निष्ठेयू हौदु। आदरे संन्यास बरी निष्ठे। निष्ठे अेंदरे अंतिम अवस्थे।

(20-3-32)

अध्याय 6.

25. आत्मोद्धारद आकांक्षे

मनुष्यन मेल्लगेत ऒळियतनक होदीतो ऐदनेय अध्यायदल्लि नोडिदेवे । कर्म-विकर्म-अकर्म ऎल्लवू सेरि सर्वसाधने पूर्णवागुत्तदे । कर्म स्थूलवस्तु । नावु माडुव स्वधर्म–कर्मदल्लि नम्म मनस्सु सहकरिसबेकु । ई मानसिक शिक्षणद कर्ममाडुवुदु विकर्म, विशेषकर्म अथवा सूक्ष्म कर्म ऎनिसुत्तदे । कर्म–विकर्म ऎरडू बेकु । इवॆरडन्नू प्रयोग माडु-माडुत्त, अकर्मद भूमिके सिद्धवागुत्तदे । ई भूमिकेयल्लि कर्म-सन्यास ऎरडू ऒंदे आगुत्तवेबुदन्नु हिंदिन अध्याय तिळिसिदे । आरनेय अध्यायद प्रारंभदल्लि मत्ते अदन्ने हेळिदे । कर्मयोग-संन्यासगळ भूमिकेगळु बेरे बेरे कंडरू अक्षरश अवु ऒंदे रूपु । नम्म दृष्टियल्लि ई भेदविदे । ऐदनेय अध्यायदल्लि वर्णिसिद अवस्थेय साधनेये आरनेयदर मुख्य विषय ।

परमार्थ, गीते, इवेल्ल केवल साधुगळिगे मात्र ऎंब भ्राति जनरल्लिदे । नानेनु साधुवल्ल ऎंब ऒब्ब गृहस्थ । साधुवॆंब प्राणि ऒंदु इदॆ, अदु नानल्ल ऎंदहागे । कुदुरे हुलि सिंहगळ हागे साधु-प्राणि ऒंदु इदे । परमार्थद कल्पने आ प्राणिगे मात्र । व्यवहारदल्लि तॊडगिद जनरु बेरे । अवर आचार बेरे, विचार बेरे । इदरल्लि साधुगरणरू लोकद जनरू बेरे बेरे ऎंदंतागुत्तदे । 'गीता रहस्य'दल्लि टिळकरु ई विषयद कडे गमन सेळेदिद्दारे । गीते सर्वसामान्य व्याव-हारिकरिगागि हेळिद ग्रंथ ऎन्नुत्तारे टिळकरु । अक्षरश. निज

अन्नुत्तेने नानु। भगवद्गीते इडी जगत्तिगागि इदे। परमार्थद सर्व साधनवू प्रतियोब्ब व्यावहारिकनिगू इदे। तन्न व्यवहारवन्नु शुद्ध-वागि नडेसि, अदरल्लि शांति हेगे दोरेतीतेंबुदन्नु कलिसुवुदे परमार्थ। व्यवहारवन्नु हेगे शुद्ध गोळिसबेकेंबुदन्नु कलिसलु गीते हुट्टिदे। एल्लि व्यवहारविदेयो अल्लि गीते बरुत्तदे। आदरे अदु यारन्नू इद्द-गोडदु। मुंदिन मजलिगे कै हिडिदेळेदु ओय्युत्तदे। प्रसिद्ध गादे-यिल्लवे--बेट्ट महम्मदन बळिगे बारदिद्दरे महम्मदने बेट्टदबळिगे होदानु। जड पर्वतक्कू तन्न संदेश सिक्कलि एंब चिंते महम्मदनिगे। पर्वत जडवादुदरिंद अदर बरविगागि महम्मद् कादु कूतिरुवंतिल्ल। गीतेयू हीगे। बडव, निर्बल, तुंट इवरिद्दल्लि गीते बरुत्तदे। अवरन्नु अल्ले इडलिक्किल्ल, अवरन्नु कै हिडिदु मुंदक्के एळेयलु, मेलक्के एत्तलु। मनुष्य तन्न व्यवहारवन्नु शुद्धमाडिकोळ्ळलि, अवनिगे परमोच्चस्थिति सिक्कलि -- इदे गीतेय इच्छे। इदक्कागिये गीते हुट्टितु।

आद्दरिंद 'नानु व्यावहारिक, सांसारिक जीव' एंदु हेळि-कोंडु निम्म सुत्तमुत्त बेलि हाकिकोळ्ळबेडि। 'नन्न कैयिंदेनादीतु ? ई मूरूवरे मोळदगलद देहदल्ले नन्न सारसर्वस्व उंटेंदु हेळबेडि। ई बंधनद कोटेयन्नु, सेरेमनेयन्नु, निम्म सुत्तल निर्मिसिकोंडु पशुगळु वर्तिसुवहागे वर्तिसबेडि। मुंदे नडेयुव, मेले एरुव, धैर्यविरलि। 'उद्धरेदात्मना-त्मानं नात्मानमवसादयेत्'-- खंडितवागि मेलकेरुत्तेने एंब धैर्यविरलि। क्षुद्र सांसारिक जीव नानु एंदुकोंडु मनस्सिन शक्तियन्नु नाशगोळिस-बेडि। कल्पनेय रेक्केगळन्नु मुरियबेडि। कल्पने विशालवागलि,

हक्कियदु हीगे अल्लवे ? बेळग्गे सूर्यनन्नु नोडि अदु हेळुत्तदे – मेले-हारि अवनन्नु मुट्टुत्तेने। नावू हागिरबेकु । हक्कि तन्न दुर्बल रेक्के-गळिंद एष्टु दूर हारिदरू सूर्यनन्नु मुट्टलारदु। आदरू कल्पनाशक्ति-यिंद अदु सूर्यनन्नु मुट्टबल्लदु । नम्म वर्तने इदक्के व्यतिरिक्त। नम्मिंद साध्यवागुवष्टु मेले कूड एरलारदे, नम्म कल्पनेगू भावनेगू कट्टिहाकिकोळ्ळुत्तेवे। नम्मल्लिरुव शक्तियन्नु हीनभावनेयिंद कोंदु-बिडुत्तेवे। कल्पनेय कालुगळन्ने मुरिदुबिट्ट बळिक केळक्के बीळदिन्नेनु ? कल्पनेय जोलि यावागलू मेलक्के इरबेकु। कल्पनेय नेरविनिंद मनुष्य मुंबरियुत्तने। आदुदरिंद कल्पनेयन्नु संकुचितगोळिसकोळ्ळबेडि ।

"गट्टि जाड बिडलु बेड
अड्ड हादि हिडियबेड, अत्त इत्त सुळियबेड।"

हीगे अळुबुरुकरागि कूतिरबेडि। आत्मद अवमान माडिकोळ्ळबेडि। साधकनल्लि विशाल कल्पने, आत्मविश्वास इद्दरे अवनिगे नेले। अंथवनिगे उद्धार। आदरे धर्मवेल्ल साधुगळदु; अवर बळि होगुवु-दादरू 'नीवु वर्तिसुवुदु निम्म परिस्थितिगे योग्यवादुदे' एंब प्रशस्ति पत्रवन्नु अवरिंद पडेयुवुदक्कागि – एंब कल्पनेयन्नु त्यजिसि। इंथ भेदात्मक कल्पनेगळिंद निम्मन्नु नीवु कट्टिहाकिकोळ्ळदिरि। उच्च आकांक्षेगळन्निट्टुकोळ्ळदिद्दरे हेज्जे एंदू मुंदे होगलारदु।

ई दृष्टि, ई आकांक्षे, ई महत्तर भावनेयिद्दरे मात्र इतर साधने-गळ विचार अगत्यवादीतु। इल्लवादरे कर्तेये मुगिंदते। बाह्यकर्म-गळिगे जोतेयागि मानसिक साधने विकर्म एंदु हेळलायितु। कर्मद

नेरविगे विकर्म सदा अगत्य । ई एरडर सहायदिंद प्राप्तवागुव अकर्मद दिव्यस्थितियन्नू अदर रातिगळन्नू ऐदने अध्यायदल्लि विवरिसलायितु । ईग ई आरने अध्यायदल्लि विकर्मद रीतिगळन्नु विवरिसिदे । मानसिक साधनेयन्नू हेळिदे । ई मानसिक साधनेगळन्नरितु विवरिसुवुदक्के मोदलु "एले जीव, नीनू देवतेयागबल्ले । ई दिव्य आकांक्षे यावागलू निन्नल्लिरलि । मनस्सन्नु मुक्तवागिरिसि रेक्केगळन्नु सज्जुगोळिसिरु" एंदु गीते हेळुत्तदे । साधनेय रीति, विकर्मद रीति बेरे बेरे । भक्तियोग, ध्यान, ज्ञान, विज्ञान, गुण विकास, आत्मानात्म विवेक, हीगे एष्टो प्रकारगळुंटु । ध्यानयोग साधनेयन्नु कुरितु आरने अध्यायदल्लि हेळिदे ।

26. चित्तद एकाग्रते

ध्यानयोगदल्लि मुख्य विषय मूरु । (1) चित्तद एकाग्रते । (2) चित्तद एकाग्रतेगे उपयुक्तवाद बाळिन परिमितत्तन, (3) साम्यदर्शि अथवा समदृष्टि । ई मूरु वस्तुगळिल्लदे निजवाद साधनेयागलारदु । चित्तद एकाग्रतेयेंदरे चित्तद चंचलतेगे अंकुश । जीवनद परिमितत्तनवेंदरे एल्ल क्रियेयन्नू तूकमाडि नडेसुवुदु । समदृष्टियेंदरे विश्वद कडेगे उदारदृष्टि । ई मूरु वस्तुगळिंद ध्यानयोग सिद्धिसुत्तदे । ई मूरु साधनेगळिगू साधनगळुंटु अभ्यास मत्तु वैराग्य । ई ऐदु विषयगळन्नु स्वल्प विवेचिसोण ।

मोदलु मनस्सिन एकाग्रते । प्रतियोंदु केलसक्कू इदु अगत्य । व्यावहारिक विषयगळिगू इदु बेकेबेकु । व्यवहारक्के बेकाद गुण बेरे,

परमार्थक्के बेरे गुण इल्ल। व्यवहारवन्नु शुद्धगोळिसुवुदेंदरेने परमार्थ। व्यवहार यावुदिद्दरू अदर सोलु गेलवु निम्म एकाग्रतेयन्नवलंबिसिदे। व्यापार, व्यवहार, शास्त्रशोधने, राजकीय मुत्सद्दितन–यावुदे इद्दरू अदरल्लि यशस्सु सिक्कबेकादरे आयाया पुरुषन मनस्सिन एकाग्रतेये कारण। नेपोलियन् बग्गे ओंदु कतेयिदे। युद्धद एर्पाट्टु माडिकोट्टु तरुवाय आत समररंगदल्लि गणितद सिद्धांतगळन्नु बिडिसुत्तिद्दनंते। डेरेयमेले गुंडु हारलि, सैनिकरु सायुत्तिरलि, नेपोलियन्निन चित्त गणितदल्ले। अवन एकाग्रते बहळ गाढवादुदेंदु नानन्नुवुदिल्ल। अदक्कू हेच्चिन एकाग्रतेय दृष्टांतवन्नु तोरिसबहुदु। आदरू अदु अवन हत्तिर एष्टित्तु एंबुदन्नु नोडि। खलीफ उमरन बग्गेयू इंथदे ओंदु कतेयुंटु। काळग नडेदिद्दाग प्रार्थनेय समयवादल्लि (मुसल्मानी धर्मदल्लि ऐदुसल प्रार्थने हेळिदे) तत्क्षण मनस्सन्नु एकाग्रगोळिसि, मोणकालूरि रणरंगदल्ले आत प्रार्थनेगारंभिसुत्तिद्द। आ एकाग्रतेयल्लि यारन्नु यारु कोल्लुत्तिरुवरेंबुदर अरिवू अवनिगुळियुत्तिरलिल्ल। मोदमोदलिन मुसल्मानर ई परमेश्वर निष्ठेयिंद, ई एकाग्रतेयिंद, इस्लाम् धर्म प्रसारवायितु।

मत्तोंदु कते केळिदे। ओब्ब मुसल्मान साधु इद्द। अवन शरीरदल्लोंदु बाण सेरितु। अदरिंद तुंबा नोवागुत्तित्तु। बाणवन्नु कीळलु होदरे, कै हेच्चुत्तल नोवु इन्नू हेच्चुत्तित्तु। अदरिंदागि अदन्नु तेगेयुवुदू असाध्यवायितु। ईगिन क्लोरोफार्मिनंथ अमलिन औषधवू आग इरलिल्ल। सरि, दोड्ड समस्येये। आ साधुवन्नु बल्ल

केलवरु मुंदे बंदु " बाण तेगेयुवुदु सद्य हागिरलि । मोदलु ईत प्रार्थनेगे तोडगलि । अनंतर अदन्नु तेगेदरायितु " एंदरु । सायंकालद प्रार्थनेय समयवायितु । साधु प्रार्थनेगे तोडगिद । ओंदु क्षणदल्लिये आत चित्तवन्नेकाग्रगोळिसि प्रार्थनेयल्लि तल्लीननाद । आग अवन शरीरदिंद बाणवन्नु कित्तरू अदर अरिवु अवनिगिरलिल्ल । इदु एंथ एकाग्रते !

साराश – व्यवहारविरलि, परमार्थविरलि, चित्तद एकाग्रतेयिल्लदे अदरल्लि यशस्सु सिक्कुवुदु कठिन । चित्त एकाग्रवादरे एंदिगू सामर्थ्य कडमेयागलारदु । निमगे अरवत्तु वर्ष वयस्सागिद्दरू कूड निम्मल्लि यौवनद उत्साह, शक्ति काणिसीतु । वयस्साद हागेल्ल मनुष्यन मनस्सु गट्टियागुत्तहोगबेकु । हण्णन्नु नोडि । अदु कसुकागिरुत्तदे, पक्ववागुत्तदे, कोळेयुत्तदे, नाशहोंदुत्तदे । आदरू अदरोळगिन बीज-मात्र गट्टियागे उळियुत्तदे । होरगिन शरीर ओणगीतु, बिद्दीतु । आदरे अदे कायिय सार सर्वस्ववल्ल, अदर आत्मवेंदरे बीज । शरीरद विषयवू हीगे । शरीर वृद्धवादरू स्मरणशक्ति हेच्चुत्तिरबेकु । बुद्धि तेजस्वियागिरबेकु । आदरे हागागदु । मनुष्य हेळुत्ताने – 'ईचेगे एनू नेनपागुवुदिल्ल ।' एके ? 'वयस्सायितु ।' निन्न ज्ञान, विद्ये, स्मरणे, – इवु निन्न बीज । मुप्पेरिदंतेल्ल शरीर सडिलुबीळुवहागे ओळगिन आत्म बलशालियागबेकु । अदक्कागि एकाग्रते बेकु ।

27. एकाग्रते साधिसुवुदु हेगे

एकाग्रते बेके ? सरिये । अदन्नु साधिसुवुदु हेगे ? अदक्के माडबेकादुदेनु ? भगवंत हेळुत्ताने, आत्मदल्लि मनस्सु निल्लिसु--

"न किंचिदपि चिंतयेत"– बेरेनू योचिसबेड । सरि । आदर-दन्नु हेगे साधिसुवुदु ? मनस्सन्नु नियतगोळिसुवुदु बहळ महत्वद्द । विचार चक्रगळन्नु बलवागि निल्लिसदे एकाग्रते एल्लियदु ? होरगिन चक्रगळन्नु हेगादरू निल्लिसबहुदु । ओळगिन चक्र मात्र तिरुगुत्तले इरुत्तदे । चित्तद एकाग्रतेगे बाह्यसाधनगळन्नु माडिदंतेल्ल ई ओळगिन चक्र हेच्चु-हेच्चु वेगदिंद तिरुगलारभिसुत्तदे । नीवु नेट्टगे कुळितु-कोळ्ळि, कण्णु स्थिरवागिरिसि, आसन हाकि । इवुगळिंद मनस्सन्नु एकाग्रगोळिसलागुवुदिल्ल । मनस्सिनोळगिन चक्रवन्नु निल्लिसलु साधिस-बेकु । अदु मुख्य विचार ।

होरगिन अपरपार संसार मनस्सिनल्लि तुंबिरुत्तदे । अदन्नु निल्लिसदहोरतु एकाग्रते असाध्य । नम्म आत्मद अपार ज्ञान शक्ति-यन्नु होरगिन क्षुद्रवस्तुगळिगागि नावु हाळुमाडुत्तेवे । अदु सल्लदु । यारन्नू लूटि माडदे स्वत प्रयत्नदिंद श्रीमतनाद मनुष्य हेगे अतिव्यय माडलारनो हागे नावू नम्म आत्मद ज्ञानशक्तियन्नु क्षुद्र वस्तुगळ चिंतनेयल्लि हाळुमाडकूडदु । नम्म अमूल्यनिधि ई ज्ञानशक्ति । अंथ-दन्नु स्थूलविषयगळल्लि नावु हाळुमाडुत्तेवे । ई पल्य चेन्नागिल्ल, इदक्के उप्पु सालदु । एष्टु गुजियय्या कडमेयादद्दु ? अर्ध हरळु उप्पु कडमेयादरे आ महाविचारक्कागि नम्म ज्ञान हाळु । शालेय नाल्कु गोडेगळोळगे मक्कळिगे पाठ हेळुत्तारे । गिडद केळगे कूडि-सिदरे गुब्बि कागेगळन्नु कंडु अवर मनस्सु एकाग्रवागलारदंते ! चिक्क मक्कळु -अवरु । गुब्बि कागे काणिसदिद्दरे सरि, आयितु अवर

एकाग्रते । नावो दोड्ड दड्डरु । नमगे कोंबु बेळेदिवे । एळेळु गोडे-गळोळगडे नम्मन्निट्टरू एकाग्रते बरलिक्किल्ल । एकेंदरे लोकदल्लिन तीर क्षुल्लक विषयगळन्नु चर्चिसुववरु नावु । परमात्मनन्नु काणवल्ल ज्ञान-वन्नु पल्यद रुचिय चर्चेगळिगागि हाळुमाडुववरु । अदरल्ले कृतकृत्य-रागुववरु !

इन्थ ई भयानक संसार हगलिरळू नम्म सुत्त होरगू ओळगू तिरुगुत्तिदे । प्रार्थने भजनेगळल्लू सह नम्म उद्देश्य होरगिनदे । परमात्मनोंदिगे तन्मयवागि ओंदु क्षणवादरू संसारवन्नु मरेयोण अंब भावने शून्य । प्रार्थनेयू ओंदु प्रदर्शन अन्नुवंतागिदे नम्म मनस्सिन स्थिति । इन्थलि आसन हाकिदरेनु, कण्णु मुच्चिकोंडरेनु [2] अल्लवू व्यर्थ । नम्म मनस्सिन ओट सदा होरगे हरियुत्तिद्दरे नम्म सामर्थ्य-वेल्लवू नष्टवागुत्तदे । याव बगेय व्यवस्थेयू नियंत्रण शक्तियू उळियुवु-दिल्ल । ई विषय ईग नम्म देशदल्लि पदे पदे अनुभववागुत्तिदे ।

वास्तववागि भारतवर्ष परमार्थद भूमि । इल्लिन जन ईगलू मेल्मट्टदल्लिद्दारु अंदु तिळियुत्तारे । इंथ देशदल्लि नम्म निम्म स्थिति हेगिदे ! तीर सणणपुट्ट विषयगळल्लि नावु तोरिसुव आसक्तियन्नु नोडिदरे विषादवागुत्तदे । नम्म चित्त क्षुद्रविषयगळल्लि तोडगिकोंडिदे ।

" केळलु कथे पुराण सवि-निद्दे
मलगिदरे मनवु चिंतेय मुद्दे
गहन कर्मगति एकलुतिद्दे ? "

कते, पुराण केळलु होदरे निद्दे बंदु बिडुत्तदे । निद्दे माडबेकेंदु

मलगिदरे चिंते, विचारचक्र प्रारंभवागुत्तवे। शून्याग्रते ऒंदुकडे अनेकाग्रते इन्नोंदुकडे। इष्टुमट्टिगे मनुष्य इंद्रियगळ गुलामनागिदाने ओम्मे ओब्ब 'कण्णु अर्धोन्मीलितवागिरबेकेंदु एके हेळिदारे?' एंदु नन्नन्नु केळिद। अदक्के नानु 'सुलभवागिये हेळुत्तेने। पूर्तियागि कण्णु मुच्चिदरे निद्रे बरुत्तदे। पूर्ति तेरेदिट्टरे नाल्कु कडेगू दृष्टि होगुवुदरिंद एकाग्रते उंटागुवुदिल्ल। मुच्चिदरे निद्रे – अदु तमोगुण तेरेदिट्टरे एल्ल कडेगू दृष्टि हेरियुत्तदे – अदु रजोगुण। अदक्कागि मध्यद स्थितियन्नु हेळिदे' एंदे। अर्थविष्टे, मनस्सिन निलुवन्नु बदलायिसदे एकाग्रते बरलारदु। अदक्कागि मनद निलुवु शुद्धवागिरबेकु। बरी आसन हाकिदरे अदु आगदु। व्यवहारवेल्लवू शुद्धवागिरबेकादुदु अगत्य। व्यवहार शुद्धवागिरबेकादरे अदर उद्देश्य बलवागबेकु। वैयक्तिक लाभ, वासनातृप्ति, इन्थ बाह्य विषयगळिगागि व्यवहार माडबारदु।

दिनवेल्ल नावु व्यवहार माडुत्तेवे। इदेल्ल पटाटोपद उद्देश्यवेनु?

"इनितेके सकल अट्टहास?
इनिदागलेन्न कडेय निमिष।"

एल्ल अट्टहास, एल्ल आर्भट, नम्म कोनेय गळिगे मधुरवागलेंदल्लवे? अदुकिनुद्दक्कू कहि विषवन्नुणबेकु। एके?.... आ कोनेय गळिगे, आ सावु, पवित्रवागलि एंदु। नित्यद कोनेय क्षण बरुवुदु सजेयल्लि। नित्य कर्मगळन्नेल्ला पवित्र भावनेयिंद नडेसिद्दरे रात्रिय प्रार्थने मधुरवादीतु। आ कोनेय क्षण मधुरवादरे अंदिन कर्मगळेल्ल सफलवादंते। आग नन्न मनस्सिन एकाग्रते साध्य।

एकाग्रतेगागि इंथ जीवनशुद्धि अगत्य। बाह्य वस्तुगळ योचने निल्लबेकु। मानवन आयुस्सु हेच्चेनू इल्ल। आदरू ई अल्प आयुस्सिनल्ल सह परमेश्वर-सुखवन्ननुभविसुव सामर्थ्यवुंटु। इब्बरु मनुष्यरु ओंदे रूपदवरु। इब्बरिगू एरडु कण्णु, अवुगळ नडुवे ओंदु मूगु, अदक्के एरडु होळ्ळेगळु। एल्लवू ओंदे तरदागिद्दरू ओब्ब देवत्वक्के एरलु अर्ह, इन्नोब्ब पशु समान। हीगेकागबेकु? ओब्बने ओब्ब देवर मक्कळु एल्लरू। हागिद्दरू ई अंतरवेके? ई इब्बरू मनुष्यर जाति ओंदे इद्दीतेंदु अनिसुवुदिल्ल। नरनिंद नारायण ओब्ब, नरनिंद वानर ओब्ब!

मनुष्य एंथ उच्चस्थितिगेरबल्ल एंबुदर दृष्टांतवागि हिंदे अनेक महापुरुषरु बाळिदरु। ईगलू अंथवरनेकरु नम्मल्लि बदुकिदारे। इदु अनुभवद मातु। ई नरदेहद शक्तियेनु एंबुदन्नु तोरिसुव शरणरु आगिहोदरु। ईगलू इद्दारे। ई देह धरिसिकोंडे मनुष्य इन्थ अद्भुत कृतिगळन्नु माडबल्लनादरे नानेके माडलारे? नन्न कल्पनेगे नानेके तडे हाकबेकु? याव नरदेहदल्लिद्दुकोंडे इतररु नरवीररादरो, आ नरदेहदल्ले नानू इद्देने। आदरू नानेके हीगिरुवुदु? नन्नल्लि एनो तप्पिरबेकु। नन्न ई चित्त सर्वदा होरक्के धाविसुत्तदे। इतरर गुणदोषगळन्नु नोडुवुदरल्ले नन्न शक्ति हाळागुत्तिदे। बेरेयवर दोषगळन्नु नानेके नोडबेकु?

"ओणिसले हेरर गुणदोष।
एनगेनु कोरे लोपदोष?"

नन्नल्लि कडमे तप्पु इवेये ? यावागलू इतरर सण्ण पुट्ट विषयगळन्ने नोडुत्तिद्दरे चित्तद एकाग्रतेयन्नु ना साधिसबल्लेने ? हीगे माडिदरे ननगे एरडे स्थिति प्राप्तवागुत्तवे । शून्यावस्थे अंदरे निद्रे – अथवा अनेकाग्रते । तमोगुण, रजोगुणगळल्लि नन्न तोळलाटवादीतु ।

हीगे कूतिरु, हीगे कण्णिडु, हीगे आसन हाकु – इत्यादियागि परमात्म सूचने कोट्टिल्लवेंदल्ल । आदरे चित्तद एकाग्रते इवक्कित हिरिदु । अदन्नु तिळिदरे मात्रवे इवुगळ उपयोग । चित्तद एकाग्रते अवश्यवेंबुदु ओम्मे मनवरिकेयादरे मनुष्य साधनेगळन्नु ताने हुडुकि-कॉंडानु ।

28. बाळिनल्लि परिमिततन

ई चित्तद एकाग्रतेगे नेरवागुव एरडनेय विषय बाळिनल्लि परिमिततन । जीवन मितियल्लिरबेकु । गणितशास्त्रद रहस्यवन्नु एल्ल क्रियेगळल्लू तरबेकु । मात्रेगळन्नु सरियागि एणिसिकोळ्ळुवहागे आहार निद्रेगळन्नु एणिसिकोळ्ळबेकु । एल्लेल्लू एणिके, अळते । प्रतियोंदु इंद्रियदमेलू कावलु – रक्षे इडबेकु । मितिमीरि तिन्नुत्तिल्लवष्टे, अति निद्रे माडुत्तिल्लवष्टे, विपरीत दृष्टिसुत्तिल्लवष्टे एंदु यावागलू सूक्ष्मवागि परीक्षिसुत्तिरबेकु ।

ओब्ब गृहस्थनन्नु कुरितु, ‘आत ओंदु कोणेयल्लि प्रवेशिसिद-नेंदरे ओंदु निमिषदल्लि अल्लि एनेनिदेयेंबुदन्नेल्ल नोडि हेळबल्ल’ एंदोब्बरु ननगे हेळिदरु । ‘देवरे, इंथ महिमे ननगे प्राप्तवागदिरलि’ एंदु नानु मनस्सिनल्ले हेळिकोंडे । ऐवत्तु अरवत्तु वस्तुगळन्नेल्ल

मनस्सिनल्लि बरेदिट्टुकोळ्ळलु नानेनु परमात्मन कार्यदर्शिये ? नानेनु कळवु माडबेके ? अल्लि साबूनु, इल्लि गडियार – सरिये ? अदरिंद ननगेनु उपयोग ? ननगेके आ ज्ञान ? कण्णिन ई पटिंगतनवन्नु ना त्यजिसबेकु । किवियदू हागे । अदरमेले कावलिडि । नायिगे इरुव किवि नमगिद्दरे ऎष्टु चेन्नागिरुत्तित्तु । अरे क्षणदल्ले याव दिक्किगादरू होरळिसबहुदागित्तु । मानवन किवियल्लि देवरु उळिसिद कोरते इदु ऎंदु केलवरिगादरू अनिसुत्तिरबेकु । किविय ई अधिकप्रसंग सल्लदु । हागे ई मनस्सु, बहळ जंबद्दु ! कोंच किरुकुळवादरू अत्त लक्ष्य होयितु ! बाळिनल्लि परिमिततनवन्नु पालिसि । केट्टवस्तु नोडबेडि । केट्ट पुस्तक ओदलेबेडि । निंदे स्तुतिगळिगे किविगोडबेडि । दोषपूर्ण वस्तु बेडवेबेड । दोषरहित वस्तुगळन्नु सह अतियागि सेविसबेडि । उच्छृंखलवृत्तिबेड । सारायि, भजि बेडवे बेड । बाळेयहण्णु मोसंबिगळू अतियागि बेड । फलाहारवेंदरे शुद्ध आहार । अदू अळतेगेडबारदु । नालगेय स्वच्छंदवृत्तियन्नु ओळगिन ओडेय सहिसकूडदु । तप्पुदारि तुळिदरे ओळगिन स्वामि शिक्षिसुवनेंदु इंद्रियगळिगे भयविरबेकु । बाळिनल्लि परिमिततनवेंदरे नियमित आचरणे ।

29. मंगळ दृष्टि

इन्नु समदृष्टि । समदृष्टि ऎंदरे शुभदृष्टि । शुभदृष्टि बारदे एकाग्रते असाध्यवे सरि । ऎंथ भारि वनराज सिंह ! नाल्कु हेज्जे नडेयुत्ताने । हिंदे होरळुत्ताने । हिंसक सिंहके एकाग्रते बंदीते ? हुलि, कागे, बेक्कुगळ कण्णु सदा तिरुगुत्तिरुत्तवे । अवुगळदु अंजिकेय

अड्डुतिड्डु दृष्टि! हिन्न प्राणिगळ स्थिति हीगे। साम्यदृष्टि बरबेकु। सृष्टियेल्लवू मंगळवागि तोरबेकु। नन्न बगो ननगे नंबिकेयिद्दंतेये सृष्टिय बगेगेल्ल इरबेकु। इल्लि भीतिगे स्थळवेल्लि? अेल्लवू पवित्र। अेल्लवू शुभ।

"विश्वं तद् भद्रं यदवति देवा"

मंगल विश्व इदु। परमात्म अदन्नु कायुत्तिदाने। आंग्ल कवि ब्रौनिंग कूड इदे मातन्ने हेळिदाने 'देवरु मेले मुगिलिनल्लि विराजिसुत्तिदाने। लोकवेल्लवू क्षेमवागिदे। लोकदल्लि यावुदू केट्टिल्ल। केट्टिरुवुदादरू इद्दरे अदु नन्न दृष्टि। नन्न दृष्टियिरुवंते सृष्टि! केंपु बण्णद गाजिन कन्नडकवन्नु ना हाकिकोंडरे सृष्टि केंपगे काणिसीतु, उरियुत्तिरुवंते काणिसीतु।

रामदासरु रामायण बरेदु शिष्यरिगे ओदि हेळुत्तिद्दरु। अदन्नु केळलु मारुतियू बरुत्तिद्द। 'मारुति अशोकवनक्के होद। अल्लि बिळी हूगळन्नु आत कंड' अेंदु समर्थरु बरेदरु। अदन्नु केळिदोडने मारुति प्रकटवाद। 'बिळिय हू ना नोडले इल्ल। नानु नोडिद हू केंपगिद्दवु। नीवु बरेदुदु तप्पु। अदन्नु तिद्दिकोळ्ळि' अेंद। नानु बरेदुदु सरियागिदे। नीनु बिळिय हूवन्ने नोडिद्दे' अेंदरु समर्थरु। मारुति 'स्वत नाने अल्लिगे होदुदु। नानु सुळ्ळु हेळुत्तेनेये?' अेंद। कडेगे दूरु श्रीरामन हत्तिर होयितु। रामचन्द्र 'हूगळेनो बिळियवे। मारुतिय कण्णु मात्र आग कोपदिंद केंपागिद्दवु। अदरिंदागि आ बिळी हू आतनिगे केंपगे कंडवु' अेंदरु। ई सुंदर कथेय अर्थविष्टे नावु याव दृष्टियिंद नोडुत्तेवो हागे लोक नमगे काणिसुत्तदे।

ई सृष्टि शुभवादुदेंदु मनस्सिगे नंबिकेयागदिद्दरे चित्तद एकाग्रतेयागलारदु। सृष्टि केट्टिदेयेंदु ननगनिसुववरेगू नानु नाल्कू कडेगू संशयदिंदले नोडुत्तेने। हक्किगळ स्वातंत्र्यद हाडु कट्टिदारे कविगळु। हक्किकागि नोडि, अंदरे स्वातंत्र्यद बेले तिळिदीतु। हक्किय कत्तु यावागलू हिंदे मुंदे होरळुत्तिरुत्तदे। यावागलू इतरर भीति। गुब्बिगे आसन हाकलु हेळि! अदक्के एकाग्रते बंदीते? नावु स्वल्प हत्तिर होदरे साकु, अदु हारिहोदीतु। इन्नु तलेयमेले इवरु कल्लु हाकुत्तारेनो एंदु अदक्के दिगिलु। जगत्तेल्लवू भक्षक, संहारक एंब भीकर कल्पनेयुळ्ळवरिगेल्लिय शाति? ननगे रक्षक नानोब्बने। इन्नुळि-दवरेल्ल नन्न भक्षकरु एंब कल्पने अळियदे एकाग्रते दोरेयदु। सम-दृष्टिय भावनेये इदक्के उत्तमवाद दारि। एल्लेल्लू मंगलवन्ने नोडि। आग चित्त तानागिये शातवादीतु।

दुःखित व्यक्तियोब्बनिदाने। जुळु जुळु हरियुव नदी तीरक्के आतनन्नु करेदुकोंडु होगि। आ स्वच्छ, शात नीरिनिद अवन तळमळ कडमेयादीतु। दुःख मरेयादीतु। इथ शक्ति एल्लिद बंतु आ झरि-यल्लि? अदु परमात्मन शुभ शक्ति। अल्लि प्रकटवागिदे, वेदगळल्लि झरियबग्गे सुंदर वर्णनेयिदे।

"अतिष्ठंतीना अनिवेशनाना"

अंथ झरि अवु। अखंडवागि हरियुवंथवु। अवुगळिगे तम्म-देन्नुव मनेयिल्ल-मारिल्ल। संन्यासिगळु अवु। इंथ पवित्र झरि अरे-क्षणदल्लि नम्म मनस्सन्नु शातगोळिसुत्तदे। आ सुदर झरियन्नु कंडु नम्म मनस्सिनल्लि प्रीतिय, ज्ञानद झरियन्नु नावेके हुट्टिसबारदु?

होरगिन ई जड नीरु नन्न मनस्सन्नु शांतगोळिसबल्लदादरे, नन्न मानसदरियल्लि भक्ति-ज्ञानद चिन्मय झरि हरियतोडगिदाग ननगे अेष्टु शागि सिकीतु! हिंदे नन्न गेळेयनोव्व हिमालयदल्लि, काश्मीर-दल्लि सुत्तुत्तिद्द। अल्लिन पवित्र पर्वत, सुंदर प्रवाहगळन्नु वर्णिसि ननगे कागद बरेयुत्तिद्द। नानु अवनिगे उत्तर बरेदे। "अल्लि निनगे अनुपम आनदवन्नुटुमाडुव आ झरि, आ पर्वत, आ तारे, आ शुभ गाळिगन्नु नानु नन्न हृदयदल्ले अनुभविसबल्ले। ई रमणीय दृश्य-वन्नेल्ल नित्यवू नानु अतरगद सृष्टियल्लि नोडुत्तिदेने। नन्न हृदयदल्लिन ई भव्य दिव्य हिमालयवन्नु बिट्टु नीनु करेदरू नानु अल्लिगे बरलारे।"

"स्थावराणां हिमालय."

स्थिरते पडेयलु उपासने माडबेकाद स्थिरतेय मूर्ति – हिमालद वर्णने केळि नन्न कर्तव्य त्यजिसिदरे एनु बंतु?

सारांश, मनस्सन्नु स्वल्प शांतगोळिसि। मगलतेयिद सृष्टियकडे नोडि। आग हृदयदल्लि अनंत झरिगळु हरियतोडगुत्तवे। कल्पनेय दिव्यतार हृदयाकाशदल्लि बेळगतोडगुत्तवे। कल्लु मण्णिन शुभ वस्तु-गळन्नु कंडु शातवागुव चित्त, अंत सृष्टियल्लिन दृश्यवन्नु कंडु शात-वागलारदे? हिंदे ओंदुसल नानु वैकोम्गे होगिद्दे। ओंदु दिन संजे समुद्रतीरदल्लि कुळितिद्दे। आ अपार सागर! धो धो अेन्नुव आ गर्जने, सजेय प्रशात समय! नानु स्तब्धनागि कुळितिद्दे। समुद्रतीरद उपहारकेंद्रु नन्न गेळेय हण्णु तेगेदुकोंडु अल्लिगे बंद। आ सात्विक आहारवू आग ननगे विषदंते तोरितु। समुद्रद आ ओं ओं गर्जने

'मामनुस्मर युध्यच' अेंब गीतावचनद नेनपु तरुत्तित्तु। समुद्र अेड-बिडदे नेनपुमाडिकोळ्ळुत्तित्तु, कर्म माडुत्तित्तु। ओंदु तेरे बंतु। होयितु। इन्नोंदु बंतु। क्षणवू विरामविल्ल। आ दृश्यवन्नु कंडु नन्न हसिवु नीरडिकेगळेल्ल अडगि होगिद्दवु। आ समुद्रदल्लि इद्दुदादरू एनु? आ उप्पु नीरिन तेरे एळुवुदु बीळुवुदन्नु कंडु नन्न हृदय तुंबि बद्रे, ज्ञान -- प्रीतिय अपारसागर हृदयदल्लि उक्किदरे नानेष्टु नर्तिस-बहुदु! वेदगळल्लिन ऋषिगळ हृदयदल्लि इंथ समुद्र तुळुकुत्तित्तु।

" अंत.समुद्रे हृदि अंतरायुषि
घृतस्य धारा अभिचाकषीमि
समुद्रादूर्मिर्मधुमानुदारत् "

ई दिव्य भाषेयन्नु कुरितु भाष्य बरेयुवाग भाष्यकाररेल्ल तोळलाडि-दरु। यावुदी घृतद धारे? यावुदी मधुधारे? उप्पुनीरिन अले अेद्दवेनु नन्न अंत.समुद्रदल्लि? इल्ल। नन्न हृदयदल्लिल हालुतुप्पद मधुविन अलेगळेद्दिवे।

30. बालक -- गुरु

हृदयदल्लिन ई सागरवन्नु काणलु कलियिरि। होरगिन निरभ्र निर्मल आकाशवन्नु कंडु चित्तवन्नु निरभ्रगोळिसि, निर्मल-गोळिसि। वास्तववागि चित्तद एकाग्रते ओंदु आट, तीर सुलभ। चित्तद व्यग्रतेयें अस्वाभाविक, अनैसर्गिक। नेट्ट दृष्टियिंद चिक्कमक्कळ कण्णन्नु नोडि। चिक्क मगु यावागलू नेट्ट दृष्टियिंदले नोडुत्तदे। नीवु अेट्टु हत्तुसल रेप्पे होडेयुत्तीरि। मगुविन मनस्सु तट्टने एकाग्रवागु-

त्तदे। नाल्कैदु तिंगळु तुंबिद मगुविगे होरगिन हसिरु मृष्टियन्नु तोरिसि। अदु ओदे समने नोडुत्तले इरुत्तदे। होरगिन हसिरु वण्णवन्नु नोडि मगुविन मलवू हसिरागुत्तदे अंदु हेगसरु तिळिदिदारे। अेल्ल इन्द्रियगळन्नू कण्णिगे सेरिसि नोडिदहागे, चिक्क मगुविन मनस्सिनमेले याव विषयद्द् आगलि वहळ परिणाम आगुत्तदे। मोदलिन अेरडु मूरु वर्षगळल्लि दोरेयुव शिक्षणवे निजवाद शिक्षणवेंदु शिक्षण शास्त्रज्ञर हेळिके। विद्यापीठ, शाले, संघ, संस्थेगळेष्टु इद्दरू सरिये। मोदलिगे दोरेतथ शिक्षण अनंतर दोरेयलारदु। शिक्षणक्कू ननगू संबंधविदे। ई बाह्यशिक्षणद परिणाम शून्य अंदु दिन दिनवू ननगे निश्चयवागुत्तिदे। मोदलिन संस्कार वज्रलेपविद्दंते। मुंदिन शिक्षण होरगिन वण्ण, मेलिन होळपु। सावूनु हच्चि तोळेदरे मेलिन कले मायवागुत्तदे। चर्मद कप्पु वण्ण मायवादीते? हीगे मूल सस्कार अळियुवुदु वहळ कठिण।

ई मोदलिन संस्कार बलवत्तरवेके? मुंदिनवु दुर्वलवेके? कारणविष्टे, बाल्यदल्लि चित्तद एकाग्रते नैसर्गिक। एकाग्रतेयिरुवुद-रिंद आग तलेतोरिद सस्कार अळिसि होगुवुदिल्ल। इन्थ महिमे ई एकाग्रतेयदु। अदन्नु साधिसिदवनिगे यावुदु असाध्य?

इन्दु नम्म वाळेल्लव् कृत्रिमवागिदे। वालवृत्ति सत्तुहोगिदे। वदुकिनल्लि निजवाद स्वारस्यविल्ल। बाळु शुष्कवागिदे। वक्र वक्र-वागि हेगो एनो वदुकुत्तिदेवे। मानवन पूर्वज मंग अँव सिद्धातवन्नु डार्विन् माडदिद्दरे — नम्म कृतियिंद नावु अदन्नु माडुत्तिदेवे।

चिक्क मक्कळल्लि नंबिकेयिरुत्तदे। तायि हेळिदुदे प्रमाण। ईसोपन नीतिय कते अवरिगे असत्यवेनिसदु। ई मंगल वृत्तियिंद मक्कळिगे बलुबेग एकाग्रते बंदुबिडुत्तदे।

31. अभ्यास, वैराग्य, श्रद्धे

साराश – ध्यानयोगक्के चित्तद एकाग्रते, बाळिन परिमितत्न, साम्यदृष्टि इवु मूरू अगत्य। इन्नू एरडु साधनेगळुंटु. वैराग्य – अभ्यास। ओंदु विध्वंसक, इन्नोंदु विधायक। होलदल्लिरुव हुल्लु कुय्दु बिसुडुवुदु विध्वंसक केलस। अदक्के वैराग्य एन्नुवुदु। बित्तु-वुदु विधायक केलस। मनस्सिनल्लि सद्विचारगळन्नु कुरितु मत्ते मत्ते योचिसुवुदु अभ्यास। वैराग्य विध्वंसक क्रिये, अभ्यास विधायक क्रिये। वैराग्य मोळेयुवुदु हेगे? माविन हण्णु रुचि एन्नुत्तेवे। रुचि-यिरुवुदु केवल आ हण्णिनल्लेनु? अल्ल। नम्म आत्मदल्लिन रुचियन्नु, सवियन्नु नावु आ वस्तुविनल्लि बेरेसुत्तेवे। अनंतर आ वस्तु सविया-गुत्तदे। आदुदरिंद ओळगिन सवियन्नु अनुभविसलु कलियिरि। केवल बाह्यवस्तुगळल्लि सवियिल्ल। माधुर्यसागरवाद आ 'रसाना रसतम."– आत्म नन्न हत्तिर इदेयेंब भावने बेळेदंतेल्ल वैराग्य मोळेयु-त्तदे। मारुतिगे सीतादेवि मुत्तिन हार कोट्टळु। आत मुत्तुगळन्नु कच्चिनोडि बिसुटुबिट्ट। मुत्तुगळल्लि मारुतिगे राम काणिसलिल्ल। राम अवन हृदयदल्लिद्द। आ मुत्तुगळिगे मूर्खरु लक्ष रूपायि कोडुत्तिद्दरु।

ई ध्यानयोगद मातन्नु हेळुवाग भगवंत अत्यंत महत्वद अंग-

ओंदन्नु मोदलिगे हेळिद्दाने : “ नानु नन्नन्नु उद्धरिसिकोळ्ळबेकागिदे । मुंदे होगबेकु । मेलक्के नेगेयबेकु । ई नरदेहदल्लि हीगे बिद्दिरलारे । परमात्मन हत्तिर होगलु धैर्यदिंद प्रयत्नपडुत्तेने ” ऎंब दृढसंकल्प बेकु ।

इदन्नेल्ल केळुत्तिद्दहागे अर्जुननिगे संशय बंतु । ‘ देवा, ईग वयस्सागिदे । इन्नेरडु दिनक्के सत्तुहोदेनु । ई साधनेयिंद उपयोगवेनु ? ’ ऎंदु केळिद । अदक्के भगवंत ‘ मरण ऎंदरे महानिद्रे । नित्यवू उद्योगद अनंतर नावु एंटु गंटे निद्दे होगुत्तेवे । आ निद्रेय बग्गे भीतियागुत्तदेये ? इल्ल । तत्–प्रतियागि निद्दे बारदेहोदरे चिंते उंटागुत्तदे । निद्रे अगत्य । हागे मरणवू अगत्य । निद्रेयन्नु मुगिसि ऎद्दवळिक मत्ते नम्म केलसक्के तोडगुवहागे सत्तनंतरवू मोदलिन साधने-गळेल्ल नमगे दोरेयुत्तवे ’ ऎंदु समाधान हेळिद ।

ज्ञानदेवरु ‘ ज्ञानेश्वरि ’यल्लि ई प्रसंगद बग्गे बरेद मातु अवर आत्मचरितेय हागिदे ।

“ बाल्यदल्ले बंदितल्ल ज्ञान
शास्त्रवेल्ल होम्मि मुखदि ताने । ”

इदरल्लि अदे काणुत्तदे । पूर्वजन्मद अभ्यास निन्नन्नु सेळेयुत्तदे । केलवर चित्त विषयगळकडे होरळुवुदे इल्ल । अवरिगे मोहवेंदरे गोत्ते इल्ल । अवरु पूर्वजन्मदल्लि साधने माडिद्दरु । भगवंत आश्वासन कोट्टिदाने :

“ नहि कल्याणकृत् कश्चित् दुर्गतिं तात गच्छति ॥ ”

कल्याण मार्गदल्लि नडेदुहोगुववन श्रम ऎळ्ळष्टू व्यर्थवागलारदु ।

अध्याय 7.

32. भक्तिय भव्यदर्शन

तम्मंदिरे, धर्मद प्रसंग ऎदुरिगे बंदाग अर्जुननिगे स्वकीय परकीय ऎंब मोह हुट्टि आत स्वधर्माचरणेयन्नु तप्पिसुवुदरल्लिद्द। ई वृथा मोहद विचार मॊदलनेय अध्यायदल्लि बंदिदॆ। ई मोहनिवारणेय उपायक्कागि ऎरडनेय अध्याय मॊदलागिदॆ। अमर आत्म ऎल्लॆल्लू इदॆ; शरीर नश्वर, स्वधर्मवन्नॆंदू त्यजिसकूडदु -- ऎंब मूरु सिद्धात अल्लिवॆ। आ सिद्धातगळ प्रयोगवन्नु कलिसुव कर्म फलत्यागद उपाय-वन्नु हेळिदॆ। ई कर्मयोगद विवरणॆयिंद कर्म-विकर्म-अकर्मगळ उत्पत्ति यायितु। ई कर्म-विकर्मगळ संगमदिंद हुट्टुव ऎरडु बगॆय अकर्म ऐदनेय अध्यायदल्लिदॆ। भिन्न भिन्न विकर्मगळन्नु मुदे तिळिसिदारॆ। साधनॆगॆ बेकागुव एकाग्रतॆय विचार आरने अध्यायदल्लिदॆ।

इदु एळनेय अध्याय। इल्लि विकर्मद हॊस द्वारवॊंदु तॆरॆदिदॆ। सृष्टि देविय मंदिरदल्लि, विशालवाद वनदल्लि, बगॆ बगॆय मनोहर दृश्य कण्णिगॆ बीळुवंतॆये गीताग्रंथद विचार सह। आरने अध्यायदल्लि एकाग्रतॆय विवरणॆयित्तु। ईग हॊस बागिलल्लि अडियिडोण।

ई बागिलु तॆरॆव मॊदलॆ ई मोहकारि जगद् रचनॆय रहस्य तिळिसिदॆ। ऒंदे बगॆय कागददमेलॆ, ऒंदे बण्णदिंद, ऒंदे कुंचदिंद चित्रकार बगॆ बगॆय चित्र रचिसुत्ताने। सितारु नुडिसुव वाद्यकार एळॆलु स्वरगळल्लि अनेक रागगळन्नु हॊरडिसुत्ताने। केवल ऐवत्तॆरडु अक्षरगळिंद नावु साहित्यदल्लि बगॆ बगॆय भाव विचारगळन्नु व्यक्त-

गोळ्ळिसुत्तेवे। ई सृष्टियदू हीगे। इल्लि अनंत वस्तु, अनंत वृत्ति। आदरे ई अंतर्बाह्य सृष्टियेल्ल हुट्टिदुदु ओंदे ओंदु अखंड आत्म, ओंदे अष्टधा प्रकृतियिंद। इवुगळ मिश्रणदिंद। कोपिष्ठन कोप, प्रेमिय प्रीति, दुःखिय अळु, आनंदितन आनंद, सोमारिय निद्रामोह, उद्योगिय कर्मस्फूर्ति – एल्लवू ओंदे चैतन्य शक्तिय आट। ई परस्पर विरुद्ध भावगळ मूलदल्लि ओंदे ओंदु चैतन्य तुंबिदे। ओळगिन चैतन्य ओंदे। अदे रीति होरगण आकारद स्वरूपवू ओंदे। चैतन्यमय आत्म, जडप्रकृति, इवेरडर बेरकेयिंद सर्व सृष्टिय जननवायितेंदु भगवंत प्रारंभदल्ले हेळिदाने।

आत्म हागू देह, परा हागू अपरा प्रकृति एल्लेल्लू ओंदे। हीगिद्दरू ई मानवनिगे मोहवेके? भेदवेके काणुत्तदे? इष्टवाद मनुष्यन मुख सवि। बेरेयवरदु बेसर। ओब्बनन्नु काणबेकु, इन्नोब्ब-नन्नु तप्पिसबेकु एनिसलेके? ओंदे लेखनि, ओंदे कागद, ओब्बने चित्रकार; आदरे बेरे बेरे चित्रगळिंद बेरे बेरे भाव हुट्टुत्तदे। इदरल्ले चित्रकारन कौशल। चित्रकारन, सितारु नुडिसुववन बेरळुगळ कौशल अंथदु अवरु नम्मन्नु अळिसल्लू बल्लरु, नगिसल्लू बल्लरु। ई एल्ल कौशलद गुट्टु इरुवुदु अवर बेरळुगळल्लि।

ईत हत्तिर इरबेकु, आत इरबारदु, ईत नम्मवनु, आत बेरे-यवनु -- मोदलाद विचार मनस्सिनल्लि बरुवुदक्कू, अदरिंद मनुष्य तन्न कर्तव्यवन्नु त्यजिसलु सिद्धनागुवुदक्कू कारण मोह। ई मोहदिंद पारागबेकिद्दरे सृष्टिकर्तन करागुळिय कौशलवन्नु अरियबेकु। बृहदा-

रण्यक उपनिषत्तिनल्लि नगारिय दृष्टांत कोट्टिदारे। नगारि ओंदे; अदरिंद होरडुव नाद नूरारु। केलवु नम्मन्नु हेदरिसुत्तवे। केलवु कुणिसुत्तवे। ई अल्ल भावगळन्नू गेद्दुकोळ्ळबेकिद्दरे नगारि बारिसुववनन्नु वशपडिसिकोंडरे सरि। अवनन्नु हिडिद्दरे आयितु — अल्ल नादवन्नू हिडिदंतेये। अदक्के भगवंत ओंदे वाक्यदल्लि हेळिरुवुदु: "मायेयन्नु दाटलिच्छिसुववरु ननगे शरणागबेकु।"

वंदेयो ननगे शरण। लीलेयिंदिल्लि तरण।
इत्ताण दडके दिटवु। वत्तीतु माये जलवु॥

ई माये अंदरेनु? परमात्मन शक्ति, अवन कले, अवन कौशलवे माये। प्रकृति — आत्म, इल्लवे जैनरु हेळुव हागे जीव-अजीवगळ मिश्रणदिंद ई अनंत वर्णगळ सृष्टियन्नु रचिसिदातन आ शक्तिये, आ कलेये माये। सेरेमनेयल्लि दोरेयुव रोट्टि, सर्वरसद तोव्वे, अल्ला ओंदे बगेयदु। हागे ओंदे अखंड आत्म, ओंदे अष्टधा शरीर। इवुगळिंद परमात्म अनेक वस्तुगळन्नु रचिसिदाने। अवन्नु कंडु बगेबगेय परस्पर विरोधवाद ओळितु — केट्ट भावगळेष्टो नमगे उंटागुत्तवे। अवुगळाचे नेगेदु नैजशांतियन्नु अनुभविसबेकिद्दरे आ वस्तुगळन्नु निर्मिसुववनन्नु हिडिदुकोळ्ळबेकु। अवन गुरुतु माडिकोळ्ळबेकु। आ गुरुतु आदरे ई भेदजनक असक्तिजनक मोहवन्नु तोडेदुहाकलु साध्यवादीतु।

आ परमात्मनन्नु अरितुकोळ्ळुव महासाधनेयोंदन्नु, महा विकर्मवोंदन्नु विवरिसुवुदकागि ई अध्यायदल्लि भक्तिय भव्यवाद

वागिलन्नु तेरेदिदे। चित्तशुद्धिगागि यज्ञ-दान, जप-तप, ध्यान-धारणे मुंताद विकर्मगळन्नु सूचिसलागिदे। ई साधनेगळेंदरे सोड, सवुळु, साबून्नु इद्दहागे अन्नुत्तेने। आदरे भक्तियेंदरे नीरु। सोड, सवुळु, साबून्नु शुचिमाडुत्तदे। निज। आदरे नीरे इल्लदिद्दरे अवुगळ आट एनु नडेदीतु? सोड, सवुळु, साबून्नु इल्लदिद्दरू बरी नीरु स्वच्छते कोडबल्लदु। नीरिन जोतेगे अवु बेरेतल्लि 'अधिकस्य अधिकं फलं' आदीतु। हालिगे सक्करे सेरिदहागे। यज्ञ, याग, ध्यान तपस्सुगळल्लि हार्दिकते इल्लवादरे चित्तशुद्धियागुव बगे हेगे? हार्दिकतेयेंदरेने भक्ति।

एल्ल उपायगळिगू अगत्यवादुदु भक्ति। अदु सार्वभौम उपाय। सेवाशास्त्र कलितवनु, उपचारद तिळिवळिकेयुळ्ळवनु रोगिय शुश्रूषेगे होगबेकु। आदरे आतन मनस्सिनल्लि कळकळि इल्लदिद्दरे निजवाद सेवे अदीते? एन्तेनो गट्टिमुट्ट। आदरे अदक्के बंडि एळेव मनस्से इल्लदेहोदरे नेल हिडिदु कूतीतु; बंडियन्नु तग्गिनल्लि नूकि-बिट्टीतु। मनस्सिल्लदे माडुव कर्मदिंद तुष्टि-पुष्टि यावुदू इल्ल।

33. भक्तियिंद विशुद्ध आनंदद लाभ

इंथ भक्तियिद्दरे आ महा चित्रकारन कले कंडीतु। अवन कैयल्लिन आ कुंचवू काणिसीतु। आ उगमद झरियन्नु, अदर अपूर्व सवियन्नु, ओम्मे रुचि नोडिदरे साकु — अदर मुंदे इन्नुळिद एल्ला रसगळू तुच्छवागियू नीरसवागियू कंडावु। निजवाद बाळेय हण्णु तिंदवनु बण्णद कट्टिगे बाळेयन्नु अरेक्षण कैगेत्तिकोंडु, अंदवागिदेयेंदु हेळि केळगिडुत्ताने। निजवाद बाळेहण्णु तिंदिरुवुदरिंद अवनिगे

आनंद । कण्णु इल्लदे होगिद्दल्लि जगत्तिनल्लि नाल्के इंद्रियगळ आनंदविदेयेंदु आत भाविसिकोळ्ळुत्तिद्द । आरु इन्द्रियगळ मनुष्य-नोब्ब मंगळग्रहदिंद नाळे इळिदुबंदरे, ई पंच ज्ञानेंद्रियदव खिन्ननागि 'आतन एदुरिगे नानेष्टु दुर्बल' एंदु अत्तानु ।

सृष्टिय पूर्ण अर्थ पंच ज्ञानेंद्रियगळिगे तिळियुवुदु हेगे ? ई ऐदु विषयगळल्ले आरिसिकोंडु ई हुच्च रमिसुत्ताने । कत्तेय कूगु किविगे बिद्दरे अशुभ एन्नुत्ताने । ई मनुष्यन दर्शनदिंद आ कत्तेगू अशुभवल्लवे ? निनगे मात्र केड्डकु : बेरेयवनिगे निन्निंद केड्डकिल्लवो ? कत्तेय कूगु अशुभ एंदु तिळिदु कूड्डत्ताने ।

नानु बरोडाद कालेजिनल्लिद्दाग ओम्मे ऐरोप्य गायकरु बंदरु । अवरु चेन्नागि हाड्डत्तिद्दरु । चेन्नागि हाडलु प्रयत्निसुत्तिद्दरु । आदरे यावाग अल्लिंद काल्लु कित्तेनो एनिसुत्तित्तु ननगे । अंथ हाड्ड केळुव अभ्यास ननगिरलिल्ल । चेन्नागिल्ल एंदुकोंडे । नम्म संगीतगार अल्लिगे होदरे अवनिगू अष्टे आदीतु । संगीतदिंद ओब्बनिगे आनंदवादीतु । इन्नोब्बनिगे आगदिद्दीतु । अदु निजवाद आनंदवल्ल, सुळ्ळु आनंद । निजवाद आनंदद दर्शनवागुवतनक ई आसक आनंदवे नम्मन्नु कुणिसीतु । निजवाद हालु सिगुववरेगू नीरिनल्लि कलेसिद हिट्टन्ने अश्वत्थाम हालेंदु कुडियुत्तिद्द । हागे निज स्वरूप निनगे तिळिदाग अदर आनंदद रुचि गोत्तादाग इन्नेल्लवू नीरस एनिसीतु ।

अंथ आनंदवन्नु हुड्डकि तेगेयलु भक्ति उत्कृष्ट दारि । ई दारि-गुंट होरटाग परमात्मन कुशलते कंड्डबंदीतु । आ दिव्य कल्पने बंदाग

इन्नुळिदवेल्ला तावागिये मसुळिसि होदावु। आग क्षुद्र आकर्षणे उळियदु। आमेले जगत्तिनल्लि ओंदे आनंद तुंबिदेयेंदु कंडीतु। मिठायिय अंगडिगळेनो साविरारु इद्दरू मिठायिय बगे मात्र ओंदे। निजवाद वस्तु दोरेयुववरेगू चंचलवाद गुब्बच्चियंते इल्लि ओंदु कण, अल्लि ओंदु कण तिन्नुवुदु। बेळग्गे नानु तुळसी रामायण ओदुत्तिद्दे। दीपद बळि हुळु सेरिद्दवु। आग हल्लियोंदु बंतु। नन्न रामायणद गोडवेयेनु अदक्के? हुळुगळन्नु कंडु अदक्केष्टु आनंद! इन्नु हुळु-गळन्नु अदु हिडियबेकु। अष्टरल्लि नानु कोंच कै अल्लाडिसिदे। हल्लि ओडिहोयितु। आदरू अदर लक्ष्यवेल्ला आ हुळुगळ कडेगे इत्तु। अवन्नु नोडि अदर नालगेयल्लि नीरूरितु। नन्न नालगेयल्लि लालारस हुट्टलिल्ल। ननगे दोरेत आनंदरसद सुळिवु आ हल्लिगे तिळियुव बगे हेगे? रामायणद रसवन्नु अदु सवियल्लारदु। आ हल्लिय हागिदे नम्म स्थिति। एष्टो रसगळल्लि तल्लीनरागिदेवे। निज-वाद रस दोरेतल्लि एष्टु चेन्नादीतु! आ निजवाद रसद सवियन्नुणलु भगवंत भक्तिय साधनवन्नु तोरिसुत्तिदाने।

34. सकाम भक्तियल्लू बेलेयुंटु

भक्तरल्लि मूरु बगे एदिदाने भगवंत। (1) सकाम भक्ति-युळ्ळव (2) निष्कामवादरू एकागियाद भक्तियुळ्ळव (3) ज्ञानि-अथवा संपूर्ण भक्तियुळ्ळव। निष्कामवादरू एकागि भक्तियुळ्ळवरल्ले मूरु भेद। (1) आर्त (2) जिज्ञासु (3) अर्थार्थि। हीगे भक्ति-वृक्षद बेरे बेरे शाखे इवु।

कट्टिगेय हण्णिनबग्गे अष्टु उत्साह इरदु। हागे मूल अरिय सवि बल्लवनु होरगण कोब्बरि बेल्लवन्नु चप्परिसलार।

'नगरदल्लि इवोत्तु मारि दीपोत्सववन्ते, बन्नि' ऎंदु ओब्ब तत्वज्ञानिगे जन हेळिदरु। आत 'दीपोत्सव ऎंदरेनु? ऒंदु दीप, अदर मुंदे इन्नोंदु, अदर मुंदे मूरनेयदु। हीगे लक्ष, हत्तु लक्ष, कोटि, ऎष्टादरू दीप इवे अन्नि। अदेताने दीपोत्सव?' ऎंद। गणितदल्लि 1+2+3 हीगे अनंतदवरेगू इदे लेक्क। संख्येगळल्लिरुव अंतर तिळिद-मेले ऎल्ला संख्येगळन्नू मंडिसुव अगत्यविल्ल। हागे आ दीपगळन्नु ऒंदरमुंदे इन्नोंदु इट्टिदे। अदरल्लि अरियुवथ वैशिष्ट्य एनु बंतु? आदरे इथ आनंदगळेंदरे मनुष्यनिगे प्रीति। निंबेय हण्णु तंदु, सक्करे तंदु, नीरिनल्लि बेरेसि 'ऎष्टु चेन्नागिदे पानक!' ऎन्नुत्ताने। रुचि नोडुवुदर होरतु बेरे केलसविल्ल नालगेगे। अदरल्लि इदन्नु कलेसु, इदरल्लि अदन्नु कलेसु। इंथ कलसुमेलोगर तिन्नुवुदरल्ले ऎल्ला सुख। ऒंदुसल चिक्कंदिनल्लि ना सिनिमा नोडलु होगिद्दे। जोतेगे ऒंदु तट्टे तेगेदुकोंडिद्दे। निद्दे बंदरे अदरमेले मलगिदरायितु ऎंदु। परदेय मेलिन आ कण्णु कुक्किसुव उरियन्नु नोडतोडगिदे। ऎरडु मूरु निमिषगळल्लिये कण्णु दणिदुहोयितु। नानु तट्टिनमेले ओरगिकोंडु चित्र मुगिदाग ऎब्बिसि ऎंदे। रात्रिय होत्तु होरगडे बयलोळगे गगनदल्लिन चंद्र तारेगळन्नु नोडुवुदु बिट्टु, शांत सृष्टियल्लिन आ पवित्र आनंदवन्नु बिट्टु, आ इक्कट्टाद चित्रमंदिरदल्लि बेंकिय गोंबे कुणियुवाग चप्पाळे तट्टुत्तारे। इदोंदू ननगर्थवागलिल्ल।

मनुष्य इष्टेके निरानंद? आ निर्जीव बोंबेगळन्नु नोडि कोनेगे ओंदु क्षण ई बडपायि आनंदपडबेकु! बाळिनल्लि आनदविल्लदागले ई कृत्रिम आनंदद शोधने। नम्म नेरेयल्लि ओम्मे वाद्यकारंभवायितु। 'वाद्य एके?' अेंदु ना केळिदरे 'गंडु मगु हुट्टितु' अेंदु उत्तर बंतु। जगत्तिनल्लेल्ला निनगोब्बनिगे मग हुट्टिदने? टं टं बारिसुत्ता मग हुट्टिद, मग हुट्टिद अेंदु जगत्तिगेल्ल सारुत्तीयल्ल। मग हुट्टिद अेंदु जिगियुत्ती कुणियुत्ती हाडुत्ती–अेथ मक्कळाट इदु! एनो आनंदद बरगाल बदिदे। बरगालदल्लि अन्न काणिसिदरे नेगेदाडुव जनरहागे मग हुट्टिद, सर्कस् बंतु, सिनिमा बंतु अेन्नुत्तलू आनंदक्कागि हसिद इवरिगे नेगेतवो नेगेत।

इदेये निजवाद आनद? गान किवियल्लि सेरि, अदर लहरि मेदुळिगे एट्टु हाकुत्तदे। कण्णिगे रूप काणिसि मेदुळिगे एट्टु बीळु-त्तदे। ई एट्टुगळिंदले आनंद ई बडपायिगळिगे! होगेसोप्पन्नु तीडि मूगिगे एरिसुववनोब्ब, सुत्ति बीडियागि सेदुववनोब्ब। नस्य बीडिगळ घाट्टु बंदाग अवरिगे आनंदद भंडारवे सिक्कंतागुवुदेनो। बीडिय तुंडु सिक्किदरू साकु, अवर आनदक्के मितिये इल्ल। 'आ बीडिय मत्तिनल्लि आ मनुष्य सहजवागिये यारन्नादरू कोंदुबिट्टानु' अेन्नुत्ताने टाल्-स्टाय्। अदू ओंदु बगेय अमले।

मनुष्य इन्थ आनंददल्लि तल्लीननागुवुदेके? निजवाद आनंदद सुळिवु तिळियदिरुवुदे इदक्के कारण। नेरळन्नु नंबि मनुष्य मोसहोगिदाने। इन्दु आत उपभोगिसुत्तिरुवुदु बरी पंच ज्ञानेंद्रियगळ

सकाम भक्त अंदरेनु ? यावुदो अपेक्षेगळनिट्टुकोंडु देवनेडेगे धाविसुवात। ई भक्ति निकृष्टवादुदेंदु नानु अदन्नु निंदिसुवुदिल्ल। मान मर्यादे दोरेयबेकेंदु अनेकरु सार्वजनिक सेवेयल्लि तोडगुवुदुंटु। अदरल्लेनु तप्पु ? अवरिगे मर्यादे माडि; चेन्नागिये माडि। अदरिंद एनू केडुकिल्ल। हीगे मर्यादे सिक्कुत्त बंदरे मुंदे अवरु सार्वजनिक कार्यगळल्लि स्थिरवादारु। आमेले आ कार्यगळल्लिये अवरिगे आनंद-वुंटादीतु। मर्यादे बेकेनिसुवुदक्के अर्थवेनु ? नावु माडुत्तिरुव केलस ओळ्ळेयदु अेन्नुव नबिके बरुवुदु मर्यादे दोरेताग। तन्न सेवे सरियो तप्पो तिळियलु मनुष्यनल्लि आतरिक साधनवेनू इल्ल। ई बाह्य साधन-गळन्नु अवलंबिसुत्ताने। तायियिंद शाबास् अेनिसिकोंड हुडुगनिगे आके हेळिद केलसवन्नु इन्नष्टु माडोणवेनिसुत्तदे। सकाम भक्तियदू हीगे। नेरवागि देवर कडे होगि 'कोडु' अेन्नुववन सकाम भक्त। देवर हत्तिर होगि अेल्लवन्नू केळुवुदेनू सामान्य विचारवल्ल। अदोंदु असामान्य वस्तु। 'यात्रेगे बरुत्तीया ?' अेंदु नामदेवनन्नु ज्ञानदेवरु केळिदरु। 'याके एतक्के ?' अेंद नामदेव। 'साधु शरणर भेटि गीटि आदीतु' अेंदु हेळिद ज्ञानदेव। 'देवरन्नु केळि बरुत्तेने' अेंदु नामदेव गुडियोळगे होगि देवरेदुरिगे निंत। आतन कण्णिनिंद नीरु सुरियतोडगितु। आतन दृष्टियेल्ला देवर चरणगळ कडेगित्तु। कोनेगे अळुत्त अळुत्त 'देवरे, नानु होगलेनय्य ?' अेंद। हत्तिरवे इद्द ज्ञानदेव। ई नामदेवनन्नु नीवु हुच्चनेंदीरा ? हेंडति मनेयल्लिल्ल-वेंदु अळुववरु बहळ मंदि। आदरे देवर इदिरिगे अळुव भक्त सकाम-

नादरू असामान्य। निजवागि बेडबेकाद वस्तुवन्नात बेडदिरुवुदु आतन अज्ञानवेंबुदेनो निज। आदरे अदरिंद आतन सकाम भक्ति त्याज्यवागदु।

बेळगे एद्दु हेंगसरु एष्टो व्रत माडुत्तारे, पंचारति बेळगुत्तारे, तुळसिय प्रदक्षिणे माडुत्तारे। सततवळिक देवरु कृपे माडलेंबुदे इदक्केल्ल कारण। अवर तिळिवळिके हागिद्दितु। अदक्कागि आ व्रतवैकल्य, उपवास। इंथ व्रतशील कुटुंबगळल्लिये महापुरुषरु हुट्टुवुदु। तुलसीदासर मनेतनदल्लि रामतीर्थरु हुट्टिदरु। पार्शि भाषेयल्लि अवरिगे पूरा पाडित्य। 'तुलसीदासर मनेतनदवरागि निमगे संस्कृत बारदे?' एंदु यारो केळिदरु। अदरिंद रामतीर्थर मनस्सिनमेले तुंबा परिणामवायितु। मनेतनद नेनपिन शक्ति अथदु। आ स्फूर्तिय बलदिंद रामतीर्थरु वेदोपनिषत्तुगळन्नु आळवागि अभ्यसिसिदरु। हेंगसर भक्तियन्नु कंडु चेष्टे माडबारदु। भक्तिय कणकणवन्नु हीगे संचयमाडिदकडे तेजस्वि संतान हुट्टुत्तदे। अंतले भगवत हेळुवुदु – "नन्न भक्त सकामनागिद्दरू सह नानु अवन भक्तियन्नु दृढगोळिसुत्तेने। अवन मनस्सिनल्लि गोंदलवुंटुमाडलारे। 'नन्न रोगवन्नु गुणपडिसु देवा' एंदु आत कळकळियिंद केळिकोंडरे अवन आरोग्यद दृष्टियिंद आ रोगवन्नु दूर माडियेनु। नन्न हत्तिर बरुवुदरल्लि आतन निमित्त एनिद्दरू सरि। नानु आतन बेन्निनमेले कै आडिसियेनु।" ध्रुवन कथेयन्नु तेगेदुकोळ्ळि। तदेय तोडेयमेले स्थळ दोरेयलिल्ल। देवरन्नु केळेंदु तायि हेळिदळु। आत उपासनेगे तोडगिद। देवरु अचलस्थानवन्ने कोट्ट!

मनस्सु निष्कामवागिल्लदिद्दरू एनंते? मनुष्य होगुवुदु यार बळिगे, बेडुवुदु यारल्लि—अन्नुवुदे महत्वद्दु। जगत्तिनेदुरिगे बायि तेरेयदे देवनन्नु याचिसुव वृत्ति महत्वद्दु।

याव निमित्तवादरेनु, भक्तिय मंदिरदल्लि काल्लिट्टरे सरि। मोदलु कामनेयिंद बंदिद्दरू मुंदे निष्कामरागुविरि। प्रदर्शन तेरेदिरुत्तदे। संचालकनेन्नुत्ताने. 'बंदादरू नोडि ओम्मे। ऎंथ चेंद खादि! नोडि बेरे बेरे मादरि।' मनुष्य होगुत्ताने। अवन मनस्सिन मेले परिणामवागुत्तदे। भक्तियदू हागे। भक्तिय मंदिरदल्लि ओम्मे प्रवेशिसिदरे अल्लिन सौंदर्य, सामर्थ्य तिळिदीतु। धर्मराजन जोतेगे स्वर्गक्के होगुवाग कोनेगे उळिदुदु नायियोंदे। भीम अर्जुनरेल्ल दारियल्लि बिद्दबिट्टरु। स्वर्गद बागिलिगे बंदाग 'निनगे प्रवेशवुंटु, नायिगिल्ल' एंदु धर्मराजनिगे हेळिदरु। 'नन्न नायिगे प्रवेशविल्लवादरे ननगू बेड' एंद धर्मराज। अनन्य सेवेमाडुवुदु नायियादरेनंते। नानु नानु ऎंब मिक्कवरिगेल्लरिगू अदु हेच्चिनदु। भीमार्जुनरिगिंत अदु श्रेष्ठवायितु। परमात्मन कडे होगदिरुव महा महा व्यक्तिगळिगिंत आतन कडे होगुव कीटवे हेच्चिनदु। देवालयदल्लि मूर्तिय मुंदे बसव निल्लुत्तदे। आ नंदिगे एल्लरू नमस्करिसुत्तारे। सामान्य बसवनल्ल अदु। देवरेदुरिगे इरुव बसव, देवर बसव ऎंबुदन्नु मरेवुदुंटे? बेरे बुद्धिवंतरिगिंत अदु श्रेष्ठ। देवरन्नु स्मरिसुव सकल जीववू विश्ववंद्य।

ओंदु सल रैलिनल्लि होरटिद्दे। गाडि यमुनेय सेतुवेय मेले बंतु। हत्तिर इद्द मनुष्यनोब्ब पुलकित हृदयदिंद नदियोळगे कास-

न्नेसेद । पक्कदल्लि इन्नोब्ब विमर्शक वृत्तियव इद्द । 'मोदले दरिद्र देश । आदरू जन हीगे व्यर्थवागि हण हाळुमाडुत्तारे' अंद । नानु 'नीवु आतन उद्देशवन्नु अरितुकोळ्ळलिल्ल । याव भावने-यिंद आत अेरडु कासन्नु नदिगे अेसेदनो, आ भावद बेले अेरडु मूरु दुड्डु आगलारदे ? अदे दुड्डन्नु याव सत्कार्यक्के कोट्टिद्दरू इन्नू ओळ्ळेय दानवागुत्तित्तु अेंबुदिरलि । आदरे ई नदि अेंदरे हरियुत्तिरुव देवर करुणे अेंब भावने आ हळ्ळिगन मनस्सिनल्लि हुट्टि आत ईरीति त्यागमाडिद । निम्म अर्थशास्त्रदल्लि आ भावनेगे स्थान-विदेये ? देशदल्लिन होळेयोंदन्नु कंडु अवन अंतःकरण करगितु । ई भावने निमगे अर्थवादल्लि नानु निम्म देशभक्तियन्नु मेच्चिकोंडेनु' अेंदे । देशभक्ति अेंदरेनु रोट्टिये ? देशदल्लिन महानदियोंदन्नु कंडोडने सर्वसंपत्तन्नू अदरल्लि मुळुगिसोण, अदर चरणदल्लि अर्पिसोण अेंदु मनस्सिनल्लि बरुवुदु अेंथ देशभक्ति ! आ अेल्ल हण, आ बिळि हळदि कंदु कल्लु, हुळुगळ होलसिनिंदाद मुत्तु, इद्दलिन रत्न, इवुगळ योग्यतेयू अष्टे । नीरिनल्लि मुळुगुवष्टे । परमेश्वरन पादगळेदुरिगे ई अेल्ल धूळि तुच्छ । होळेगू परमेश्वरन पादक्कू याव संबंध अेंदीरि । निम्म सृष्टियल्लि देवर संबंध अेल्लादरू इदेये ? होळे अेंदरे आक्सिजन् मत्तु हैड्रोजन् । सूर्य अेंदरे ग्यास् लैटिन भारि प्रकाश । दोड्डदोंदु बेंकिपोट्टण सूर्य । अवनिगेके नमस्कार ? हौदु । निम्म रोट्टिगे मात्रवे नमस्कार ! आ रोट्टियल्लादरू इरुवुदेनु ? अदू ओंदु बिळिय मण्णे । अदन्नु कंडु आनंदवेके ?

सूर्यनुदयिसिद। सुंदर नदि काणिसितु। आग परमात्मन अनुभव-वागदिद्दरे इन्नावाग आगबेकु? आग्ल कवि वर्ड्स्वर्त् अळुत्ता हेळुत्ताने "हिंदे कामनबिल्लन्नु कंडाग ना नेगेयुत्तिद्दे, कुणियुत्तिद्दे। अदे तुंबिरुत्तित्तु। इंदेके हागागुत्तिल्ल? हिंदण बाळ सवियन्नु कळेदुकोंड्डु कळादेनेनो नानु।"

साराशविष्टे. सकाम भक्तिगू अज्ञानिय भावनेगू तुंबा महत्व-वुंट्टु। अवुगळ सामर्थ्यवू दोड्डदु। जीव यावुदे इरलि, अंथदे इरलि, ओम्मे परमात्मन दरबारिनल्लि बदुबिट्टरे अदु मान्य। बेंकिगे अंथ कट्टिगे हाकिदरू अदु उरियुत्तदे। परमात्मन भक्ति ओंदु अपूर्व-साधने। सकाम भक्तियन्नु कंड्डु परमेश्वर अभिमानपडुत्ताने। मुंदे आ भक्ति निष्कामवागि पूर्णतेय कडे नडेदीतु।

35. निष्काम भक्तिय प्रकारगळु -- पूर्णत्व

सकाम भक्त ओंदु रीतियवनु। निष्काम भक्तरन्नु इन्नु नोडोण। अदरल्लि एरड्डु वर्ग· एकांगि, पूर्ण। एकांगि भक्तरु मूरु वर्ग। मोदलु आर्त भक्तरदु। आर्त एंदरे देवरिगागि अळुवव, हंबलिसुवव, नामदेवनंते। देवर प्रीति एंदिगे सिक्कीतु, आत नन्ननेंदु अप्पिकोंडानु, एंदु अवन कालिगे ना बिद्देनु, हीगे तळमळिसुववन। ई भक्त प्रतियोंदु कार्यवन्नू हार्दिकतेयुंटो इल्लवो, प्रीतियुंटो इल्लवो एंब भावनेयिंद नोडुत्ताने। जिज्ञासुगळदु एरडनेय वर्ग। ईग नम्म देशदल्लि इवरु विरल। गौरीशंकरवन्नु यारो मत्ते मत्ते हत्तियारु, सत्तु-होदारु। इन्नु यारो उत्तर ध्रुववन्नु शोधिसुत्ता होरड्डु, तम्म शोधद

विचारवन्नु कागददल्लि गुरुतिसि, सीसेयल्लि हाकि, अदन्नु नीरिनल्लि बिट्टु सत्तुहोदारु। इन्नु केलवरु ज्वालामुखियोळगू प्रवेशिसियारु। हिंदुस्तानद जनरिगे सावु अॆंदरे अंजिके। मदुवेयागुवुदु, मक्कळागुवुदु – इदन्नु बिट्टरे अवरिगे बेरे पुरुषार्थवे उळिदिल्ल। जिज्ञासु भक्तनिगे अदम्यवाद जिज्ञासे। प्रतियॊंदु वस्तुविन गुणधर्मवन्नू आत शोधिसुत्ताने। नदिय मुखदिंद मनुष्य समुद्रक्के सेरुत्ताने। हागे ई जिज्ञासुवू कॊनेगे परमात्मनन्नु सेरुत्ताने। इन्नु अर्थार्थियदु मूरनेय बगे। प्रतियॊंदु विषयदल्लि अर्थ काणुवव अर्थार्थी। अर्थवॆंदरे हणवल्ल, हित – कल्याण। याव विषयवन्नु परीक्षेमाडिदरू अदरिंद समाजक्के एनु कल्याणवादीतु अॆंब ओरेगे हच्चियानु। तन्न लेखन भाषण, सर्व कर्मवू जगत्तिन मंगलक्कागि इदेयो इल्लवो अॆंदु आत नोडियानु। निरुपयोगि, अहितकारि क्रिये अवनिगे ऒप्पिगेयिल्ल। जगद हितचिंतने माडुव ई महात्मनॆंथव! जगत्तिन कल्याणवे अवन आनंद। अॆल्ल क्रियेगळन्नु प्रेमदृष्टियिंद नोडुववनु आर्त। ज्ञानदृष्टियिंद नोडुववने जिज्ञासु। सर्व कल्याणदृष्टियुळ्ळवनु अर्थार्थि।

ई मूवरु भक्तरू निष्कामरे। आदरू एकांगिगळु। कर्मदद्वारा ओब्ब, हृदयद्वारा इन्नोब्ब, बुद्धिद्वारा मत्तोब्ब, देवर कडे धाविसुत्तारे। इन्नुळिदात पूर्ण भक्त, ज्ञानि – भक्त अॆन्नुवुदु इवनन्ने। कण्णिगे काणुवुदेल्लवू इवनिगे दैवस्वरूप। कुरूपि-सुरूपि, श्रीमंत-दरिद्र, स्त्री-पुरुष, पशु-पक्षि, अॆल्लेल्लू परमात्मन पावन दर्शन।

"नरनारि बालरेल्ल नारायण।
अरिवंते नीनॆसगे मनवनेल्ल॥"

नागपूजे, आनेसोंडिलिन देवरपूजे, गिडद पूजेये मोदलाद हुच्चुतनद मादरिगळु हिंदू धर्मदल्लिवेयल्ल। अवेल्लक्किंतल ज्ञानि-भक्तन स्थिति हुच्चुतनद्। अवनिगे एने भेट्टियागलि, हुळु हुप्पडिगळिंद चंद्र सूर्यरवरेगे, ऎल्लेल्ल परमात्म ओब्बने काणिसुत्ताने। अवन हृदय उक्किवरुत्तदे।

"कडे कोनेयी सुखकिल्ल, कडलुक्कि तुळुक्कितल्ल।"

इंथ ई दिव्य भव्य दर्शनवन्नु नीवु भ्रांति ऎंदु करेदरू चिंतेयिल्ल। आ भ्रातिये सौख्यद राशि, आनंदद सारसंग्रह। गंभीर-सागरदल्लि आतनिगे देवर विलास काणुत्तदे। हसुविनल्लि देवर वात्सल्य, पृथ्वियल्लि आतन क्षमते, निरभ्र आकाशदल्लि आतन निर्मलते, रवि चंद्र तारेगळल्लि आतन तेजस्सु, भव्यते-काणुत्तदे। हूविनल्लि आतन कोमलते-सुगंध काणुत्तदे। दुर्जनरल्लि तन्न परीक्षे-माडुव परमेश्वर काणुत्ताने। ई रीतियल्लि ऎल्लेल्ल ओब्बने देवरु नटिसुत्तिरुवुदन्नु नोडुव अभ्यासवन्नु ज्ञानि-भक्त मुंबरिसुत्ताने। कोनेगे ओंदु दिन ईश्वरनल्लि लीननागुत्ताने।

(3-4-32)

अध्याय 8.

36. शुभ संस्कारगळ संचय

मनुष्यन बाळु अनेक संस्कारगळिंद कूडिदुदु, नम्मिंद नडेयुव क्रियॆ अगणित। अवुगळ लेक्कक्कॆ तॊडगिदरॆ कॊनॆयॆ इल्लवादीतु। इप्पत्तु नाल्कु गंटॆगळल्लि नडॆव क्रियॆगळन्नॆ स्थूलवागि नोडिदरॆ काणुत्तदॆ। नूरारु – उण्णुवुदु, तिन्नुवुदु, कुडियुवुदु, कूतिरुवुदु, निद्दॆमाडुवुदु, नडॆयुवुदु, तिरुगुवुदु, कॆलसमाडुवुदु, बरॆयुवुदु, मातनाडुवुदु, ओदुवुदु। अल्लदॆ बगॆ बगॆय कनसु, रागद्वेष, मानापमान, सुखदुःख, हीगॆ ऎष्टो प्रकार कंडुबरुत्तवॆ। इवुगळिंद नम्म मनस्सिनमेलॆ संस्कारवागुत्तदॆ। आदुदरिंद बाळु ऎंदरेनॆंदु यारादरू केळिदल्लि – संस्कार संचयवॆ बाळु ऎंदु नानु व्याख्यॆ कॊट्टेनु।

ऒळ्ळॆय सस्कार, हागॆ कॆट्ट संस्कार; मनुष्यन बाळिनमेलॆ इवॆरडरिंदलू परिणामवागुत्तदॆ। बाल्यद क्रियॆगळंतू नॆनपिनल्लि उळियुवुदॆ इल्ल। हलगॆयमेलॆ बरॆदुदन्नळिसिदहागॆ अवु अळिसिहोगिरुत्तवॆ। पूर्वजन्मद संस्कारगळंतू पूर्णवागि अळिसिहोदंतिरुत्तवॆ। पूर्व जन्म इत्तो इल्लवो ऎंदु संशय बरुवष्टु मट्टिगॆ। ई जन्मदल्लिन बाल्यकालद स्मरणॆयॆ इल्ल, पूर्वजन्मद मातादरू एकॆ? अदर विचार इरलि। ई जन्मद बगॆगॆ योचिसोण। नम्म गमनदल्लिरुवष्टॆ क्रियॆ नडॆदवॆंदल्ल। नडॆद क्रियॆ नूरारु। उंटाद ज्ञान अपार। कॊनॆगॆ ई क्रियॆ, ज्ञान ऎल्ला नाशवागि कॆलवु संस्कार मात्र उळियुत्तवॆ। हगलु नडॆद क्रियॆगळन्नॆल्ल रात्रि मलगुवाग ज्ञापिसिकॊळ्ळतॊडगिदरॆ ऎल्लवू नॆनपिगॆ बरुवुदिल्ल। नॆनपागु-

वंथवु यावुदु ' हेच्चु स्पष्टवागिरुवंथवु ताने। तुंबा जगळ नडेदिद्दरे अदे नेनपागुत्तदे। अदे आ दिनद मुख्य कृति। स्पष्ट विषयगळ संस्कार मनस्सिन मेल स्फुटवागियॆ मूडुत्तदे। मुख्य क्रियॆ नेनपागुत्तदे। इन्नुळिदवु बाडुत्तवे। नावु दिनचरि बरेदरे उल्लेखिसुवुदु ऎरडु मूरु महत्वद घटने मात्र। नित्यद इंथ संस्कारगळन्नु ऎत्तिकोंडु वारद संचयक्के तोडगिदरे, इवुगळल्लि हलवु अळिसिहोगि ऎल्लो केलवु उळिदुकोळ्ळबहुदु। अनतर ऒंदु तिंगळिनल्लि नडेदुदेनॆंदु योचिसुत्त होरटरे केवल केलवु महत्वद क्रियेगळु मात्र नेनपिगे बंदावु। हीगे आरु तिंगळु, ऒंदु वर्ष, ऐदु वर्षगळिगॊम्मॆ वारि योचिसिदरे केवल केलवु घटनेगळु मात्र मनस्सिन मेले मूडिरुवुदु गोत्तादीतु। इंथ घटनेगळिंदले संस्कारवागुवुदु। असंख्य क्रियॆ, अनत ज्ञान। मनस्सिनल्लि उळिदुदु मात्र तीर कोच। आ कर्म, आ ज्ञान बंदवु। तम्म केलस तीरिसि सत्तुहोदवु। आ ऎल्ल कर्मगळ परिणामवागि ऎट्टु हत्तु दृढ-संस्कार उळियुत्तवे। अवे नमगे बंडवाळ। बाळिन व्यापारदल्लि दोरेव संपत्तेंदरे संस्कार, नित्यद, तिंगळिन, वर्षद जमाखर्चु तेगेदु इष्टु लाभ, इष्टु हानि ऎंदु व्यापारि लेक्क हाकुत्ताने। बाळिनल्लू हागे। अनेक संस्कारगळन्नु कूडिसि कळेद बळिक अत्यंत स्पष्ट हागू व्यवस्थितवाद हलवु विषय उळियुत्तवे। बाळिन कोनेगालदल्लि मनुष्य ई उळिकेयन्नु नेनसुत्ताने। जन्मदल्लेल्ल माडिदुदेनॆंदु योचिसिदाग अवनिगे ऎरडु मूरु विषयगळल्लि तानु माडिदुदु होळेयुत्तदे। बेरे कर्म, ज्ञानगळेल्ल व्यर्थवादवॆंदु इदरर्थवल्ल। अवु तम्म केलस माडि होगिरु-

त्तवे । साविरारु व्यवहार माडिदरू कोनेगे व्यापारियल्लि उळियुवुदु ऐदु साविरद साल – इल्लवे हत्तुसाविरद लाभ । सालवादरे अेदेगुदि, लाभवादरे संतोष ।

नम्मदू हीगे । मरणकालदल्लि तिंडियमेले मनस्सादरे बदुकिद्दा-गेल्ल अन्नद रुचि नोडिदुदु सिद्धवागुत्तदे । अन्नद वासने आ बाळिन संपादने । तायिगे सायुवाग मगन नेनपादरे आ पुत्रविषयक संस्कारवे बलवादुदायितु । इन्नुळिद असंख्य कर्म हारिहोदंते । अंकगणित-दल्लि अपूर्णांकद उदाहरणे इदे । आ अंकगळु ऐष्टु दोड्डवु । आदरे संक्षेपगळन्नु कोडुवाग कोनेगे, ओंदु इल्लवे शून्य उत्तर बरुत्तदे । हागे बाळिन अनेक संस्कार अळिदुहोगि कोनेगे बलशालियाद संस्कारवोंदु साररूपवागि उळियुत्तदे । बाळिन उदाहरणेगे उत्तर अदु । अंत्य कालद स्मरणे अखंड जीवनद फल ।

बाळिन ई कोनेय सार मधुरवागबेकु । कोनेय ई गळिगे सवियागबेकु अेंदु बाळिन अवधियल्लेल्ल प्रयत्निसबेकु । कोने चेन्नादरे अेल्लवू चेन्नु । आ कोनेय उत्तरद कडे गमनविट्टु बाळिन गणित माडबेकु । बाळिन योजनेय ध्येय कण्णेदुरिगे इरबेकु । उदाहरणे केळिदाग विशिष्ट प्रश्नेगळन्नेल्ल योचिसि उत्तर बरेयबेकागुत्तदे । मरण-कालदल्लि इंथ संस्कार बेकु अेंदरे अदन्ननुसरिसि बाळिन ओघवन्नु होरळिसबेकु । आ कडे हगलिरुळू गमनविरबेकु ।

37. साविन स्मरणेयिरलि

मरणकालदल्लि स्पष्टवागि उळियुव विचारवे मुंदिन जन्मदल्लि

वलवत्तरवागुवुदेंब सिद्धातवन्नु ई अेटने अध्यायदल्लि मंडिसिदे। आ संस्कारद वुत्ति कैट्टिकोंडु जीव मुदिन यात्रेगे होरडुत्तदे। इंदिन सपादनेयिंद नावु नाळेय दिनवन्नारंभिसुत्तेवे। हागे ई वाळिन वुत्ति कट्टिकोंडु मरणद महानिद्रेयनंतर मत्ते नम्म यात्रे मोदलागुत्तदे। ई जन्मद कोने, मुंदिन जन्मद आदि। अंतले मरणद नेनपिरवेकु यावागलू।

साविन भीकरतेगे अेदुरागलु सिद्धते माडिकोळ्ळलु सह मरणद स्मरणे अत्यगत्य। एकनाथरदोंदु कते हीगिदे। अवरन्नु ओब्ब गृहस्थ -- महाराज, निम्म बाळु अेष्टु सादा, अेष्टु निष्पाप! नम्मदेके हागिल्ल? नीवेंदू सिट्टु माडिकोळ्ळुवुदिल्ल। यारोंदिगू जगळविल्ल, तंटेयिल्ल। अेष्टु शांत, पवित्र, प्रेमल व्यक्ति नीवु! अंद। अदक्के नाथरु 'नन्न मातु हागिरलि। निन्न बग्गे ननगोंदु विचार तिळिदिदे। इन्नु एळु दिनगळ अनंतर नीनु सायुत्ती' अेदरु। नाथरु हेळिद मातन्नु सुळ्ळु अेन्नलागुत्तदेये? एळु दिनगळ अनंतर सावु। इन्नुळि-दुदु बरी 168 गंटे। अेलेला! आ मनुष्य गडिबिडिगोंडु मनेगे होद। एनू होळेयलोल्लदु। हेगो मातु। हेगो वर्तने। सरि। कायिलेयायितु। हासिगे हिडिदुदू आयितु। आरु दिन कळेदवु। एळनेयदिन नाथरु अवन बळिगे बदरु। आत नमस्करिसिद। 'एनु समाचार' अंदरु नाथरु। आत 'होरटे नानु' अंद। 'ई आरु दिनगळल्लि अेष्टु पाप-कृत्य नडेदवु? पापद विचार अेष्टु होळेदवु?' अेदु नाथरु केळि-दरु। आ आसन्न मरणद मनुष्य 'नाथरे, पापद विचार माडलु बिडुवे

सिक्कलिल्ल। कण्णिदिरु यावागलू सावे कट्टिदंतित्तु' अंद। आग नाथरु 'नम्म बाळु एके निष्पाप अेंबुदक्के ईग निनगे उत्तर दोरेयितु। नोडु। साविन हुलिराय सर्वदा इदिरिगे निंताग पापद विचारवादरू बंदीते? पाप माडलू सह निश्चिततॆ बेकु। पापदिंद पारागलु साविन नेनपन्नु सदा इट्टुकोंडिरुवुदे श्रेष्ठ उपाय।' सावु इदिरिगे इद्दाग याव धैर्यदिंद मनुष्य पाप माडियानु?

आदरे मनुष्य साविन स्मरणेयन्नु दूर तळ्ळुत्तिरुत्ताने। प्यास्कल् ओब्ब फ्रेंच् तत्वज्ञानि। आत 'पासे' अेंब पुस्तक बरेदि-दाने। 'पासे' अेंदरे विचार। अदरल्लि अनेक विचार इवे। ओंदु-कडे 'मृत्यु सदा बेन्न हिंदेये इदे। आ मृत्युवन्नु हेगे मरेयबेकेंदु मनुष्य यावागलू प्रयत्निसुत्तिदाने। सावन्नु नेनपिनल्लिट्टुकोंडु वर्तिसुवुदु हेगेंबुदन्नु आत योचिसुवुदिल्ल' अेंदु आत हेळिदाने। मरणवेंब शब्दवू मनुष्यनिगे रुचिसदु। ऊट नडेदाग मरण शब्दवन्नु उच्चरिसि-दरे 'अेंथ अशुभ मातु आडुत्तीये' अेन्नुत्तारे। आदरे हेज्जेयेनो सदा साविन कडेगे। बोंबायि तिकीटु तेगेदुकोंडु रैलिनल्लि कुळितुकोंडरे, डब्बियल्लि कुळिते इद्दरू गाडि निम्मन्नु बोंबायिगे तंदुहाकुत्तदे। हुट्टिदागले नावु साविन तिकीटु तेगेदुकोंडिरुत्तेवे। कुळितुकोंडिद्दरू सरि। ओडाडुत्तिद्दरू सरि, कोनेगे सावु कट्टिट्टद्दे। साविन विचार निम-गिद्दरू सरि, इल्लदिद्दरू सरि। अदेनो तप्पदु। मरण निश्चित। उळिदुदु अनिश्चितविद्दीतु। सूर्य मुळुगुवाग आयुष्यद ओंदु तुणुकु तिंदुहोगु-त्ताने। बाळिन ओंदु तुणुकु मायवागुत्तदे। बाळु चिक्कदागुत्तदे।

आदरे मनुष्यनिगे आ विचारविल्ल। 'कौतुक दिसतसे' ऎन्नुत्तारे ज्ञानदेव। मनुष्यनिगे ऎल्लिद बरुत्तदे ईथ निश्चिंतते – ऎंदु ज्ञानदेवरिगे आश्चर्य। साविन योचनेयू कूड सहनवागदष्टु अदर भीति मनुष्यनिगे। आ योचनेयन्ने आत बरगोड। कण्णिनमेले परदे ऎळेदुकोंडु कूडुत्ताने। युद्धक्के होरट सैनिकरु साविन विचार मरेसलु आडुत्तारे, कुणियुत्तारे, हाडुत्तारे, सिगरेट्टु सेदुत्तारे। 'प्रत्यक्ष मृत्युवे काणुत्तिद्दाग सह ई टामि, ई सैनिक, अदन्नु मरेयलिक्कागि तिंदु कुडिदु मजा माडुत्ता कूतानु' ऎन्नुत्ताने प्यास्कल्।

नावेल्ल इरुवुदू ई टामिय हागे। मुख दुंडगे हास्ययुक्तवागिरबेकु। ओणगिद्दल्लि ऎण्णे, पोमेड् हच्चबेकु। कूदलु नरेतिद्दल्लि बण्ण हच्चबेकु ऎंदु मनुष्य प्रयत्निसुत्ताने। ऎदेय मेले साविन नर्तन नडेदागलू सह नावेल्ल टामिगळंते अदन्नु मरेयलु यत्निसुत्तेवे। एनु बेकादरू मातनाडबहुदु। साविन विचर मात्र तेगेयुवतिल्ल। मेट्रिक् आद हुडुगनन्नु 'मुंदेनु माडत्तीये?' ऎंदु केळिदरे आत 'सद्य केळबेडि। ईग फस्ट् इयर् नल्लिदेने' ऎन्नुत्ताने। मुंदिन वर्ष मत्ते अवनन्ने अदे प्रश्ने केळिदरे 'मोदलु इंटर् आदरू आगलप्प! मुदे योचिसोण' ऎन्नुत्ताने। हीगे मुंदिनदन्नु मोदले नोडिकोंडिरबेडवे। मुदिन हेज्जेय सिद्धते मोदले इरबेकु। इल्लवादरे अदु तग्गिगे बिद्दीतु। आदरे विद्यार्थिगे अदेल्ल रुचिसदु। पाप अवन शिक्षणवे अंधकारमय। अदराचेय भविष्य अवनिगे अगोचर। आदुदरिंद मुंदेनु माडबेकेंब विचारवन्ने आत बिडुत्ताने। मुंदे बरी कत्तले। आदरे मुंदे बरुवुदेनो तप्पदु। हठात्तागि अदु इदुरिगे बरुत्तदे।

कालेजिनल्लि प्रोफेसररु तर्कशास्त्र कलिसुत्तारे । ' मनुष्य मर्त्य । साक्रेटीस् मनुष्य । अर्थात् आत सायुत्ताने ।' साक्रेटीसन दृष्टांतवन्ने एके कोडबेकु अवरु ? तम्म उदाहरणेयन्नेके कोडुवुदिल्ल ? प्रोफेसररू मर्त्यरे । 'अेल्ल मनुष्यरू मर्त्यरे । आदुदरिंद प्रोफेसराद नानू मर्त्यने । शिष्यराद नीवू मर्त्यरे ' अेंदु अवरु हेळलाररु । मरणवन्नवरु साक्रेटीसनमेले तळ्ळिबिडुत्तारे । कारणविष्टे । साक्रेटीस् सत्तेहोगिदाने । दूरु अेत्तलु आत इल्लि इल्ल । साक्रेटीसनिगे सावन्नर्पिसि गुरु शिष्यरु तम्म मट्टिगे तावु बहळ सुरक्षितवेंदु कलिपसिकोळ्ळुत्तारे ।

सावन्नु मरेतुबिडुव ई प्रयत्न अेल्लेल्लू हगलिरुळू नडेदिदे । आदरू सावु तप्पदु । नाळे तायि सत्ताग मृत्यु अेदुरिगे निल्लुत्तदे । निर्भयवागि मरणद विचारमाडि अदन्नेदुरिसुव धैर्य मनुष्यनिगिल्ल । हरिणिय बेन्न हिंदे हुलि धाविसुत्तदे । हरिणियेनो अति चुरुकु । आदरे शक्ति कडमे । कोनेगे दणिदु होगुत्तदे । बेन्न हिंदेये हुलि—सावु । आग हरिणिय स्थिति एनु ? हुलिय कडे अदु नोडलारदु । मुख, कोंबुगळन्नु मण्णिनल्लि सेरिसि कण्णु मुच्चि निंतुकोळ्ळुत्तदे । 'बा अप्प, होडेदुबिडु' अेंदु निराधारवागि हेळुवंतिरुत्तदे । नावु सावन्नु अेदुरिसलारेवु । अदन्नु तप्पिसबेकेंदु अेष्टु उपाय हूडिदरू अदर शक्ति बलवादुदरिंद कोनेगू अदु बंदे बरुत्तदे ।

सावु बंदाग मनुष्य बाळिनल्लि गळिसुदुदेनेंदु योचिसुत्ताने । परीक्षेगे कट्टिद विद्यार्थि मसि कुडिकेयल्लि लेक्कणिके हाकुत्ताने । मेल-क्केत्तुत्ताने । बिळिय कागदद मेले कप्पु गीट्टु अेळेदरे आणे ! कोंच-

वादरू बरेयबेको बेडवो? एनु सरस्वति बंदु बरेयबेके? मूरु तासु मुगियुत्तवे। बरिय कागद कोडुत्ताने। इल्लवे कोनेगे एनो गीचुत्ताने। प्रश्ने बिडिसुव, उत्तर बरेयुव विचारविल्ल। अत्त इत्त नोडुत्ताने। नम्मदू हीगे। बाळिन मुळ्ळु साविन कडे नडेदिदेयेंबुदन्नु गमनदल्लिट्टु-कोंडु आ कोनेय क्षण हेगे पुण्यमय, पावन, सविकट्टु आदीतो अदन्नु अभ्यसिसुत्तिरबेकु। मनस्सिन मेले अत्युत्कृष्ट संस्कार हेगादीतेंब विचार मोदलिनिंदलू इरबेकु। आदरे ओळ्ळेय संस्कारगळ विचार यारिगिदे? केट्ट विषयगळ विचार, अभ्यासवे यावागलू। नालगे, कण्णु, किविगळिगे स्वच्छंदतेय शिक्षण कोडुत्तेवे। कूडदु। मनस्सिगे बेरे चट कलिसबेकु। ओळ्ळेयतनद कडे चित्त होरळबेकु। अल्लिये रमिसबेकु । नम्म तप्पु नमगे तिळिदोडनेये सुधारणेगे मोदलागबेकु। तप्पु तिळिदरू सह मत्ते मत्ते तप्पु माडबेके? तप्पु तिळिदागले पुनर्जन्म। अदे निन्न नवीन बाल्य, अदे निन्न बाळिन होस बेळगु अेंदु तिळि। निजक्कू ईग अेच्चेत्तुकोडिद्दे। इन्नु हगलिरुळू बाळिन परीक्षे माडु, जपिसु। इल्लवादरे मत्ते काल्जारि बीळुत्ती। मत्ते केडुकिगे सिक्किकोळ्ळुत्ती।

केलवु वर्षद हिंदे नम्म अज्जियन्नु काणलु होगिद्दे। 'विन्या, इत्तीचेगे यावुदू नेनपिनल्ले उळियुवुदिल्लप्पा, तुप्पदपात्रे तरलु होगु-त्तेने। मरेतुबिट्टु हागे बरुत्तेने' अेंदु आके हेळुत्तिद्दळु। आदरे अदक्के ऐवत्तु वर्ष हिंदे नडेद आभरणद कतेयोंदन्नु आके चेन्नागिये विवरिसुत्तिद्दळु। ऐदु निमिषक्के मोदलिनदर नेनपिल्ल। ऐवत्तु वर्षक्के

हिंदिन बलवाद संस्कार मात्र कोनेयवरेगू इत्तु । कारणवेनु ? अदु-वरेगू आके आ आभरणद कतेयन्ने प्रतियोब्बर हत्तिरवू हेळिरबहुदु । आ विषयद उच्चार सततवागि नडेयितु । आकेय बाळिगे अदु अंटु-कोंडितु । बाळिनोंदिगे एकरूप तळेयितु । 'देवर दयेयिंद अज्जिगे मरणकालदल्लादरू ई आभरणगळ नेनपागदिद्दरे साकु' एंदु नानु नन्नष्टक्के हेळिकोंडे ।

38. सदा अदरल्ले रमिसि

हगलिरुळू अभ्यास माडिद विषय अंटिकोळ्ळदिद्दीते ? आ अजामिळन कते ओदि भ्रातरागबेडि । आत नोडलु पापियागिद्द । आदरे बाळिन ओळगडे पुण्यद प्रवाह हरियुत्तित्तु । कोनेय क्षणदल्लि अदु मैदोरितु । यावागलू पापदल्लि निरतरागिद्दरू कोनेगे रामनाम बायल्लि बंदे तीरुवुदेंदु भ्रमिसबेडि । चिक्कंदिनिंदलू सतत अभ्यास नडेसि । ओंदोंदागि ओळ्ळेय संस्कार हुट्टवंते यत्निसि । अदरिंदेना-दीतु, इदरिंदेनादीतु एन्नबेडि । नाल्कु गंटेगे एके एळबेकु ? एळु गंटेगेद्दरे एनु केट्टु ? – एंदरे नडेयदु । हीगे मनस्सन्नु सडिल बिट्टरे कोनेगे मोसहोदीरि । संस्कारगळ मुद्रे बीळलिक्किल्ल । लक्ष्मियन्नु कण-कणवागि दोरकिसबेकागुत्तदे । ओंदु क्षणवन्नू व्यर्थवागि कळेयदे विद्यार्जने माडबेकागुत्तदे । प्रति क्षणवू नडेयुव संस्कार ओळ्ळेयदे ताने एंबुदर योचनेयिरलि । केट्टमातु बंतु – आयितु केट्ट संस्कार । ओंदोंदु कृतियू बाळिन बंडेगे ओंदु उळियेट्टु हाकुत्तदे । हगलेल्ल ओळ्ळेय-दागिद्दरू कनसिनल्लि केट्ट कल्पने बरुवुदुंटु । ऐदारु दिनगळ विचारवे

क्नसिनल्लि काणिसुवुदेंदेनू इल्ल। अनेक कुसंस्कारगळु उळिदु होगिरु-त्तवे। अवु यावाग अेद्दु कुळितावेंब नियमविल्ल। अंतले सण्ण पुट्ट विषयगळल्लि अेच्चरिकेयिंदिरबेकु। मुळुगुववनिगे कड्डियू ओंदु आधार। नावु संसार सागरदल्लि मुळुगुत्तिदेवे। ओंदु ओळ्ळेय मातु आडिदरे अदे आधार। नीवु माडिद उत्तम कृति व्यर्थवागदु। अदु निम्म-न्नुळिसीतु। लेशमात्रवू कुसंस्कार बेड। कण्णु पवित्रवागिरलि, निंदेगे किवि जोलदिरलि। ओळ्ळेय मातन्ने नालगे नुडियुत्तिरलि। इंथ दक्षतेयिद्दरे कोनेय क्षणक्के जयशीलरागुविरि। बाळिगू साविगू ओडेय-रादीरि।

पवित्र संस्कारगळागबेकादरे मनदल्लि उदात्त विचार बरबेकु। कै पवित्र केलसगळल्लि तोडगिरबेकु। ओळगडे देवर स्मरणे, होरगडे स्वधर्माचरणे। कैयिंद सेवाकर्म, मनदल्लि विकर्म। हीगे दिन दिनवू नडेयबेकु। महात्मरन्नु नोडि। दिनवू नूलुत्तारे। प्रति दिनवू नूलले-बेकेंदु हेळुत्तारे। दिनवू एके नूलबेकु? बट्टेगळिगे सालुवष्टु यावाग-लादरू नूतुबिट्टरे सालदे? हीगे माडिदरे अदु व्यवहारवायितु। दिनवू नूलुवुदु आध्यात्मिकते। अदु देशक्कागि नावु माडबेकाद चिंतने। दारिद्र नारायणन सेवे। कोनेगे आ संस्कार दृढवागुत्तदे।

औषध कोट्ट डाक्टरु नित्यवू ओंदु डोसु तेगेदुकोळ्ळि अेंदु हेळुत्तारे। अेल्लवन्नू ओंदेसल कुडिदुबिट्टरे? अदेनो चमत्कारवादीतु। अष्टे। औषधद उद्देश्य सफलवागलिकिल्ल। प्रतिनित्यवू औषधद संस्कारवागि रोग दूरवागबेकु। बाळिनदू हीगे। शंकरन मूर्तियमेले

मेल्लमेल्लने अभिषेक माडबेकु। नन्न मेच्चिन दृष्टांत इदु। बाल्यदल्लि ई क्रियेयन्नु नित्यवू नोडुत्तिद्दे। इप्पत्नाल्कु गंटेगळ काल सुरिद आ नीरु ऎरडु कॊडदष्टु आदीतु। आ ऎरडु कॊडवन्नू ऒंदेसल मूर्तिय-मेले सुरिदरे? ई प्रश्नेगे बाल्यदल्ले ननगे उत्तर दॊरॆयितु। नीरन्नु ऒम्मेले सुरिदुबिट्टरे कर्म सफलवागदु। हनि हनियागि सतत धारे सुरियुत्तिद्दरे मात्र उपासनेयादीतु। समान संस्कारगळ धारे सततवागि नडेदिरबेकु। बॆळगिन संस्कारवे मध्याह्नक्के। अदे संजॆगॆ। हगलिनदु रात्रिगे। निन्नेयदु इदु। इंदिनदु नाळॆगॆ। ई वर्षद्दु मुंदिन वर्षक्के। ई जन्मद्दु मुंदिन जन्मक्के। बदुकिद्दागिनदु सायुवाग। हीगे ऒंदॊंदु ऒळ्ळॆ संस्कारद दिव्य धारे बाळिनल्लेल्ल हरियुत्तिरबेकु। ई प्रवाह अखंडवागिद्दरे मात्र नमगे गॆल्लु। संस्कारद प्रवाह ऒंदे दिक्किगे हरियुत्तिरबेकु। बॆट्टद मेले बिद्द नीरु हत्तॆरडु दिक्किगे हरिदरे हॊळॆ-यागलारदु। ऎल्लवू ऒंदे दिक्किगे हरिदरे प्रवाहवादीतु। प्रवाह हॊळॆयादीतु। हॊळॆ गंगेयादीतु। सागरदल्लि बेरॆतीतु। ऒंदे दिक्किगे हरिद नीरु सागर सेरितु। ऎल्ल कडॆगू हरिदुदु बत्तिहोयितु। संस्कार गळ्दू हीगे। अवु बंद हागे होगिबिट्टरे प्रयोजनवेनु? अवुगळ पवित्र प्रवाह बाळिनुद्दक्कू हरियुत्तिद्दरे मात्र सावु महदानंदद निधानवादीतु। दारियल्लेल्ल नितुकॊळ्ळदे, मोहगळन्नु दूरगॊळिसि कष्टदिंद अडि-यिडुत्त शिखरक्के तलपि, मेले होगि ऎदॆय मेलिन बंधनगळन्नॆल्ल कित्तॊगॆदु, अल्लिन स्वच्छंद हवॆय अनुभव पडॆद प्रवासिय आनंदद कल्पने बेरॆयवरिगॆ बरलारदु। नडुदारियल्ले निंत प्रवासिय सूर्यनेनू निल्ल।

39. हगलिरुळू युद्ध प्रसंग

साराग . होरगिनिंद सतत स्वधर्माचरणे, ओळगिनिंद चित्त-शुद्धिय हरिस्मरणेय क्रिये ; हीगे अतर्बाह्य कर्म विकर्मगळ प्रवाह हरियुत्तिद्दाग मरणवू आनंदमयवागुत्तदे । अंतले भगवंत हेळुवुदु

“ तस्मात् सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च ”

यावागलू अेडविडदे नन्नन्नु स्मरिसुत्तिरु, होराडुत्तिरु, “ सदा मद्भावमागत. । ” यावागलू नन्नन्नु कूडिरु । ईश्वरी प्रेमदिंद ओळगू होरगू तुंबिदाग, आ राग वाळिनमेलेल्ल पसरिसिदाग, पवित्र विषय-गळलेल्ल आनदवुंटादीतु । आमेले केट्टवृत्ति अेदुरिगे बरलारदु । मनस्सिनल्लि सुंदर मनोरथगळ बीज मोळेतावु । सहजवागिये ओळ्ळेय क्रिये नडेदावु ।

ईश्वर स्मरणेयिंद ओळ्ळेय क्रिये सहजवागि नडेयुववेंबुदु निज । आदरे होराडुत्तिरबेकेंदु भगवंतन आज्ञे । तुकाराम महाराजरु हेळुत्तारे ·

“ हगलिरुळू नमगे युद्ध प्रसंग
मनदोडने अंतर्बाह्य जगरंग । ”

ओळगे होरगे अनंत सृष्टि । ई सृष्टियोंदिगे सदा मनस्सिन होराट । इदरल्लि प्रति क्षणवू गेलुवागुत्तदेंदल्ल । कोनेगे साधिसिदुदे निज । कट्टकडेय तीर्पु निज । अेष्टोसल यशापयश बदावु । सोलु बदाग निराशरागबेकागिल्ल । कल्लिन मेले हत्तोंवत्तुसल एट्टु हाकिदरू

ओडेयलिल्लवेन्नि। इप्पत्तनेय एटिगे ओडेयबहुदु। अष्टु मात्रक्के मोदलिन एट्टु व्यर्थवादवेनु? आ इप्पत्तनेय एटिन गेलुविन सिद्धते माडिदुदु मोदलिन हत्तोंबत्तु एट्टुगळे।

निराशरागुवुदेंदरे नास्तिकरादंते। परमेश्वर बेन्निन हिंदेये इदाने। नंबिके इडि। मगुविगे धैर्य बरबेकेंदु तायि अदन्नु अत्त इत्त होगलु बिडुत्ताळे। अदु बिद्दरे मात्र एत्तिकोळ्ळुत्ताळे। ईश्वरनू निम्मकडे नोडुत्तिदाने। निम्म बाळिन गाळीपटद दार अवन कैय्यल्लिदे। ओम्मोम्मे आ दारवन्नु बिगियागि हिडियुत्ताने। ओम्मोम्मे सडिल बिडुत्ताने। सूत्र मात्र यावागलू अवन कैयल्ले इरुत्तदे। गंगातीरदल्लि ईजु कलिसुत्तारे। तीरद मेलिन गिडक्के सरपळि यिरुत्तदे। अदन्नु सोंटक्के कट्टि ईजलु बिडुत्तारे। शिक्षकरु नदियल्ले इरुत्तारे। आ होसब मोदलु नाल्कैदुसल नीरु कुडिदरू कोनेगे आ कलेयन्नु कलितु-कोळ्ळुत्ताने। हीगे परमात्म नमगे जीवन कले कलिसुवुदु।

40. शुक्ल – कृष्ण गति

परमेश्वरनमेले श्रद्धेयिट्टु काया वाचा मनस्सुगळिंद होराडु-त्तिद्दरे अंत्यकालद गळिगे अतिशय ओळ्ळेयदादीतु। आग एल्ल देवतेगळू ओलिदारु। ई अध्यायद कोनेयल्लि इदन्नु ओंदु रूपकद मूलक हेळिदे। अदन्नु तिळिदुकोळ्ळि। यावन मरणकालदल्लि अग्नि उरियुत्तदो, सूर्य बेळगुवनो, शुक्लपक्षद चन्द्र प्रकाशिसुत्तिरुवनो, उत्त-रायणदल्लिन निरभ्र – सुंदर आकाश हरडिदेयो, अवनु ब्रह्मदल्लि विलीन-वागुत्ताने। यावन मरणकालदल्लि होगे मुसुकिरुवुदो, ओळगे होरगे

कत्तले मुत्तिरुवुदो, कृष्णपक्षद चन्द्र अत्यंत क्षीणनागिरुवनो, दक्षिणायनदल्लि अभ्राच्छादित मलिन आकाश हरडिदेयो, अवनु हुट्टु-साविन परंपरेगे मत्ते सिक्किबीळुत्ताने।

ई रूपकदिंद ऎष्टो जन गोंदलक्के सिक्किबीळुत्तारे। पुण्यमरण बरबेकेंब इष्टविद्दरे अग्नि, सूर्य, चन्द्र, आकाश इत्यादि देवतेगळ कृपे अगत्य। कर्मद चिह्ने अग्नि। अदु यज्ञद कुरुहु। कोनेय गळिगेयल्लि यज्ञद ज्वाले उरियुत्तिरबेकु। "सततवागि कर्तव्य माडुवाग मरण बंदरे धन्य। एनन्नो ओदुत्तिद्दाग, कर्म माडुत्तिद्दाग ननगे सावु बंदरे साकु" ऎंदु न्यायमूर्ति रानडे हेळुत्तिद्दरु। उरियुव अग्निय अर्थ इदु। मरणकालदल्लि कर्मनिरतनागिरुवुदे अग्निय कृपे। कडेतनक बुद्धिय प्रभे बेळबेळगुत्तिरुवुदु सूर्यन कृपे। मरणकालदल्लि पवित्र भाव वलवत्तरवागुवुदु चन्द्रकृपे। मनद, भावनेय देवते चन्द्र। शुक्लपक्षद चन्द्रनंते मनस्सिनल्लिन प्रेम, भक्ति, उत्साह, परोपकार, दये इत्यादि शुद्ध भावनेगळु पूर्णविकास होंदबेकु। हृदयाकाशदल्लि आसक्तिय मोडगळ अभावविरुवुदु आकाशद कृपे। ऒंदुसल महात्मरु हेळिदरु "चरख, चरख ऎंदु यावागलू हेळुत्त बंदे। अदु अत्यंत पवित्रवेंदे। आदरे अंत्यकालदल्लि अदर वासनेयू बेड। यारु ननगे चरखवन्नु सूचिसिदनो, आत अदर चिंते वहिसलु समर्थ। ईग चरख ऎष्टो जन दोड्ड दोड्ड मनुष्यर कैगे होगिदे। अदर चिंते बिट्टु परमात्मनन्नु भेटि माडलु नानु सिद्धनागिरबेकु"। तात्पर्यविष्टे। हृदयदल्लि आसक्तिय मोडगळिल्लदिरुवुदे उत्तरायणविद्द हागे।

कोनेय श्वासोछ्वासदवरेगू सेवे सलिसि, भावनेगळ बेळुदिंगळलि मिंदु, हृदयाकाशदलि कोंचवू आसक्ति उळिसिकोळ्ळदे, बुद्धि सतेजवागिद्दु, साविन घट्टक्के बंदु सेरिदवनु परमात्मनलि लीनवागुत्ताने। इंथ परम मंगलवाद कोने बरबेकादरे हगलिरुळू दक्षतेयिद होराडबेकु। ओंदु क्षणवू सह अशुद्ध संस्कार मनस्सिन मेले मूडकूडदु। शक्ति दोरेयलेंदु परमेश्वरन प्रार्थने माडुत्तिरबेकु। नामस्मरणे, तत्वस्मरणे यावागलू मत्ते मत्ते नडेदिरबेकु।

(10-4-32)

अध्याय 9

41. प्रत्यक्ष अनुभवद विद्ये

नन्न कंठ नोयुत्तिदे। इंदु नन्न ध्वनि केळिसीतो इल्लवो कोंच संदेहवे। ई संदर्भदल्लि साधुचरितराद हिरिय माधवराव पेश्वेयवर अंत्यकालद कते नेनपागुत्तदे। आ महापुरुष मरण शय्येय मेलिद्द। विपरीतवागि कफद बाधे। कफवु अतिसारदल्लि कोनेगाणुवुदुंटु। माधवरायरु वैद्यनन्नु कुरितु "नन्न कफवन्नु होगलाडिसि अतिसार-वागुवंते माडि। रामनामवन्नुच्चरिसलु बायादरू बरुवंतादीतु" अंदरु। इन्दु नानु परमेश्वरन प्रार्थने माडुत्तिद्दे। 'ध्वनि बंदहागे मातनाडु' अंदु अप्पणे कोट्ट। इल्लि नानु गीते हेळुत्तिरुवुदु यारिगादरू उपदेश माडबेकेंब उद्देशदिंदल्ल। लाभ माडिकोळ्ळबयसुववरिगे इदरिंद निज-वागि लाभवादीतु। आदरे ना गीते हेळुत्तिरुवुदु, अदु रामनाम अंदु। गीते हेळुवाग ननगे हरिनामद भाव इरुत्तदे।

ईग नानु हेळिदुदक्कू ओंबत्तने अध्यायक्कू संबंधवुंटु। ई अध्यायदल्लिरुवुदु हरिनामद अपूर्व महात्म्ये। ई अध्यायविरुवुदु गीतेय मध्यदल्लि। इडी महाभारतद मध्ये गीते, गीतेय मध्ये ओंबत्त-नेय अध्याय। अनेक कारणगळिंद ई अध्यायक्के पावनते बंदिदे। ज्ञानेश्वररु समाधि होगुवाग ई अध्यायवन्नु जपिसुत्त प्राणबिट्टरंते। ई अध्यायद स्मरण मात्रदिंदले नन्न हृदय तुंबि बरुत्तदे। कण्णिनल्लि नीरूरुत्तदे। व्यासरु माडिदुदु अंथ उपकार! केवल भरत खंडक्के मात्रवल्ल -- इडी मानवजातिगे इदोंदु महोपकार। भगवत अर्जुननिगे

हेळिद अपूर्व वस्तुवन्नु शब्दगळिंद वर्णिसलु असाध्यवागित्तु। आदरे दयाप्रेरितरागि व्यासरु आ वस्तुवन्नु संस्कृतदल्लि प्रकटगोळिसिदरु। गुह्यवस्तुविगे वाणिय रूप कोट्टरु। ई अध्यायद आरंभदल्ले भगवंत हेळिद्दाने।

"राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमं"

अपूर्व राजविद्ये इदु। इदु अनुभविसबेकादुदु। भगवंत अदक्के 'प्रत्यक्षावगमं' एंदिदाने। शब्दगळिगे सिलुकद, प्रत्यक्ष अनुभवक्के मात्र सिक्कुव विषयवन्नु ई अध्यायदल्लि हेळिदे। आदुदरिंद अदक्कोंदु अपूर्व सौदर्य बंदिदे।

'सत्तनंतर दोरयुव स्वर्ग, अदर कते इल्लेतक्के? स्वर्गक्के होगुवरारु, यमपुरक्के होगुवरारु, यारु हेळबल्लरु? नाल्कु दिन इल्लिरबेकागिदे। रामन गुलामनागिरुवुदरल्लिये ननगे आनंद'–एंदु तुलसीदासरु हेळुत्तारे। रामन गुलामनागिरुवल्लि दोरेयुव आनंदवे ई अध्यायदल्लि इदे। इदे देहदल्लि इदे कण्णिनिंद अनुभविसुवंथ फल, जीविसिरुवागले अनुभवक्के बरुव विषय, ई अध्यायदल्लि इदे। बेल्ल तिन्नुवाग अदर सवि तिळियुत्तदे। हागे रामन गुलामनागिरुवुदर सवि इल्लिदे। मर्त्य लोकद बाळिनोळगण सवियन्नु प्रत्यक्ष अनुभवक्के तदुकोडुव राजविद्ये ई अध्यायदल्लिदे। ई राजविद्ये रहस्यवादुदु। आदरू भगवंत एल्लरिगागि अदन्नु बिडिसि हेळिदाने।

42. सुलभ मार्ग

गीते याव धर्मद सारवागिदेयो, आ धर्मक्के वैदिक धर्मवेन्नु-

त्तारे। वेदगळिंद हुट्टिद धर्म वैदिक धर्म। जगत्तिन अति प्राचीन साहित्यदल्लि वेदगळु अति प्राचीनवेंदु ओप्पुत्तारे। अेतले भावुकरु अदन्नु अनादियेन्नुत्तारे। अंते पूज्यवेंदु तिळियुत्तारे। इतिहासद दृष्टियिंदलू वेद नम्म समाजद प्राचीन भावनेगळ अति हळेय चिह्ने। ताम्रपट, शिलालिपि, नाण्य, पात्रे, प्राणिगळ अवशेषगळिगिंत ई लिखित साधन अति महत्वद्दु। मोदलने ऐतिहासिक आधारवेंदरे वेद। ई वेददल्लि बीजरूपदल्लिद्द धर्म, गिडवागि बेळेदु कोनेगे गीतेय मधुर फल कोट्टितु। हण्णन्नु बिट्टरे नावु गिडदल्लि तिन्नुवुदिन्नेनु? गिडक्के हण्णुबिट्टाग मात्र अदु तिन्नलु दोरकीतु। वेदधर्मद सारद सार अेंदरेने गीते।

प्राचीनकालदिंद रूढवागिद्द ई वेद धर्मदल्लि अनेक यज्ञयाग, क्रियाकलाप, तपश्चर्ये, नाना साधनेगळन्नु कुरितु हेळिदे। ई अेल्ल कर्मकाण्ड निरुपयुक्तवागिरदिद्दरू अवुगळिगे अधिकारद अगत्यवित्तु। अेल्लर कैगू अवु अेट्टुकुवंतिरलिल्ल। अेत्तरवाद गिडद मेलिरुव तेंगिन कायियन्नु हत्ति तेगेयुववरारु? अदर सिप्पे सुलियुववरारु? ओडेयु-ववरारु? नमगेनो विशेष हसिवु। आदरू आ गिडद मेलिन कायि हेगे सिक्कीतु? केळगिनिंद नानु तेंगिनकायियकडे नोडुत्तेने। मेलिनिंद अदु नन्नन्नु नोडुत्तदे। इष्टरिंद होट्टेयल्लिन उरि शांतवागुवुदुंटे? आ तेंगिनकायिगू नन्गू प्रत्यक्ष भेटियागुवतनक अेल्ला व्यर्थ। ई वेद-गळल्लिन नाना क्रियेगळल्लि अत्यंत सूक्ष्म विचारगळिरबहुदु। सामान्य जनक्के अवु तिळियुवुदु हेगे? वेद मार्गवन्नु बिट्टरे मोक्षविल्ल। आदरे

वेदक्के तक्क अधिकारविल्ल। मुंदेनु? अंतले दयाळु शरणरु मुंदे बंदु 'ई वेदगळन्नु कडेदु रस तेगेयोण। स्वल्पदरल्लि अवुगळ सारवन्नु तेगेदु जगत्तिगे हंचोण' अंदरु। तुकाराम महाराजरु हेळुत्तारे

"वेद अनंत हेळितु। अर्थ इष्टे होळेयितु" याव अर्थ अदु? हरिनाम। इदे वेदगळ सार। रामनामदिंद मोक्ष। हेंगसरु, मक्कळु, शूद्ररु, अज्ञानिगळु, दुर्बलरु, रोगिगळु, अंगहीनरु - एल्लरिगू मोक्ष साध्यवादीतु। वेदगळल्लि अडगिद मोक्षवन्नु भगवंत राजमार्गद मेले तदिरिसिद। मोक्षक्के सादा सुलभोपाय। सादा बदुकु, स्वधर्म कर्म, सेवाकर्मगळन्ने यज्ञमय माडलागदे? बेरे यज्ञयागगळेके? नित्यद सेवाकर्मवे यज्ञरूपवागलि। अदे राजमार्ग।

"यानस्थाय नरो राजन् न प्रमाद्येत कर्हिचित्।
धावन्निमील्य वा नेत्रे न स्खलेन्न पतेदिह॥"

ई दारिगुंट कण्णु मुच्चि होरटरू बीळलार। एरडने दारि 'क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया' एंदिदे। कत्तिय धारेयंते वैदिक-मार्ग विकट्टादुदु। रामन सेवकनागिरुवुदु सुलभ। मेल्ल मेल्लने एत्तर-वन्नेरिसुत्त रस्तेयन्नु मेलक्कोय्दु, इंजिनियरु नम्मन्नु शिखरक्के तलपिसु-त्ताने। नावु अष्टोंदु एत्तरक्केरुत्तिदेवेंबुदू तिळिदुबरुवुदिल्ल। आ इंजिनियरन आ कौशलद हागे ई राजमार्गद विचार। ई दारियमूलक साधारण कर्मदिंदले परमात्मनन्नोलिसिकोळ्ळबहुदु।

एल्लियादरू अवितुकोंडिदानेये ई परमेश्वर? गिरिकंदरदल्लि, नदियल्लि, इल्लवे स्वर्गदल्लि - एल्लादरू अडगि कुळितिदानेये? वज्र, रत्न

वेळ्ळि वंगार पृथ्विय गर्भदल्लि अडगिरुत्तवे। मुत्तु हवळ समुद्रदल्लि अवितिरुत्तवे। हीगे ई परमेश्वररूपद रत्न एल्लादरू अडगिदेये? एल्लादरू अगेदु परमेश्वरनन्नु तेगेयवेकागिदेये? इदिरिनल्ले इद्दाने देवरु! एल्लेल्लू निंतिद्दाने। ई अखिल जगत्तेल्ल देवरदे मूर्ति। ई एल्ला जनरू देवर मूर्तिये। भगवंत हेळुत्ताने–'ई मानव रूपदिंद प्रकटवाद हरिमूर्तिय अवमान माडवेडवो!' ई चराचरदल्लेल्ला ईश्वरने प्रकटवागिदाने। आतनन्नु शोधिसलु कृत्रिम उपायवेके? तीर सुलभोपायवोंदिदे। नीवु माडुव सेवेगे रामनन्नु जोडिसिदरे साकु। रामन सेवकरागि। आ कठिण वेदमार्ग, आ यज्ञ, आ स्वाहा, आ स्वधा, आ श्राद्ध, आ तर्पण–एल्लवू मोक्षक्के सागिसिकोडोय्दीतु। अधिकारि, अनधिकारि एंव गोंदल मात्र इद्दद्दे। निमगदु वेडवे वेड। नीवु माडुवुदेल्ल परमेश्वरनिगर्पितवागलि। निम्म प्रतियोंदु कृतिगू अवन संवंधविरलि। ओंवत्तने अध्यायद हेळिके इदु। एंतले अदु भक्तरिगे तुंवा प्रिय।

43. अधिकार भेदद गोंदलविल्ल

कृष्णन वाळिनल्लेल्ल अत्यंत मधुर अवन वाल्य। विशेष उपासने वालकृष्णनदे। दनगाहिगळोंदिगे आत दन कायलु होगु-त्तिद्द। अवरोंदिगे ऊट माडुत्तिद्द। नगुत्तिद्द, नलियुत्तिद्द। गोवळरु इंद्रन पूजेगे होरटाग आत 'इंद्रनन्नु नोडिदीरा यारादरू? अवनदेनु वंतु उपकार? एदुरिगे काणुत्तिरुव ई गोवर्धन पर्वतदल्लि आकळु मेयुत्तवे। अल्लिंदले होळे हरियुत्तदे। अदन्नु पूजिसि' एंदु वोधि-

मुत्तिद्द। जोतेगे आडिद गोपालकरिगे, मातनाडिद गोपियरिगे, आत मोक्षद दारि तेगेदु तोरिसिद। कृष्णपरमात्म अनुभवदिंद तोरिसिद सरळ मार्ग इदु। बाल्यदल्लि अवनिगे हसुगळ सहवास। प्रौढ-वयस्सिनल्लि कुदुरेगळ संबंध। मुरलीनाद केळिसुत्तल हसुगळु मै मरेयुत्तिद्दवु। तम्म बेन्नमेले कृष्णन कै बीळुत्तल कुदुरेगळिगे स्फूर्ति। आ हसु, आ कुदुरे ऎल्लवू कृष्णमयवागुत्तिद्दवु। 'पापयोनि' ऎन्नुव आ पशुगळिगू मोक्ष बरुत्तित्तु। मनुष्यनिगे मात्रवल्ल; पशुगळिगू मोक्षद अधिकारविदेयेंबुदन्नु श्रीकृष्ण स्पष्टगोळिसिदाने। तन्न बाळि-नल्लि आत अदन्ननुभविसिद।

भगवंतन अनुभव हेगो हागे व्यासरदू। इब्बरदू एकरूप। इब्बर बाळिन सारवू ऒंदे। विद्वत्तु, कर्म कलाप, इवन्नवलंबिसिल्ल मोक्ष। अदक्के सादा, सरळ भक्ति साकु। मुग्ध भाविक स्त्रीयरु ना ता ऎन्नुव ज्ञानिगळन्नु मीरिसि मुंदे होगिदारे। पवित्र मनस्सु, मुग्ध शुद्धभाव, इष्टादरे मोक्ष एनू कष्टवल्ल। महाभारतदल्लि जनक सुलभा संवाद ऎंब प्रकरणविदे। ज्ञानक्कागि जनकराज ओब्ब स्त्रीय बळि होद प्रसंगवन्नु व्यासरु चित्रिसिदारे। स्त्रीयरिगे वेदगळ अधिकार उंटो इल्लवो ऎंदु नीवु चर्चिसुत्त कूतिरि। महाभारतदल्लिन सुलभा प्रत्यक्षवागि जनकनिगे ब्रह्मविद्ये हेळि कोडुत्तिदाळे। साधारण स्त्री आके। जनकनो सम्राट, विद्या संपन्न। आदरू महाज्ञानि। जनकन बळि मोक्षविल्ल। अदक्कागि आतनन्नु सुलभेय काल्बहिडियल्लु हच्चि-दारे व्यासरु। आ तुलाधार वैश्यनू हागे। जाजलि ब्राह्मण आतन

कंडरे 'एनय्या, इष्टु धांडिगनागि भिक्षे वेडलु निनगेनु केडु? होगु' अन्नुत्तेवे। आत भिक्षे वेडुवुदु योग्यवादुदो हेगे अंदु योचिसुत्तेवे। आ बडपायि नाचिकेयिंद होरटुहोगुत्ताने। नम्मल्लि सहानुभूतिगे पूर्ण अभाव। आ भिक्षुकन योग्यते नमगेनु तिळिदीतु? चिक्कवनागिद्दाग तायिय बळि इंथ शंकेयन्ने नानु तोरिसिद्दे। आकेय उत्तरविन्नू नन्न किवियल्लि दुमुदुमिसुत्तिदे। "ई भिकारि नोडलु गट्टिमुट्टागिदाने। ईतनिगे भिक्षे नीडिदरे अवन चट, सोमारितन हेच्चीतु" अंदु ना हेळिद्दे। गीतेयल्लिन 'देशे कालेच पात्रेच' अंब श्लोकवन्नु अंदु तोरिसिद्दे। अदक्के तायि "ईग भिक्षेगे बंदवनु परमात्म। इन्नु पात्रा-पात्रतेय विचार माडु। भगवंतनु अपात्रने? पात्रापात्रतेय विचार-माडलु निनगागलि ननगागलि एनु अधिकार? हेच्चु विचार माडुव अगत्यवे ननगिल्ल। ननगे आतने भगवंत" अंदरु। आकेय आ उत्तरकिंत सरियाद उत्तर ननगिन्नू दोरेतिल्ल।

इन्नोब्बनिगे ऊट हाकुवाग आतन पात्रापात्रतेय विचार बरुत्तदे। नन्न गंटलल्लि अन्न तुरुकिकोळ्ळुवाग ननगादरू अधिकारवुटे अंब विचार एके बरुवुदिल्ल? नम्म बागिलिगे बंदात अभद्र भिकारि अंदु तिळियुवुदेके? नावु यारिगे कोडुत्तेवो आतनन्नु देवरेंदे तिळिय-बेकु। "निन्न कर्मद फलवन्नु यारादरू उण्णलेबेकल्लवे? मोदले अदन्नु देवरिगे अर्पिसिबिडु" अंदु हेळुवुदु राजयोग। अदु ओळ्ळेय स्थळ तोरिसुत्तदे। फलवन्नु त्यजिसुव निषेधात्मक कर्मवू इल्लि इल्ल। भगवंतनिगे अर्पणेयागुवुदरिंद पात्रापात्रतेय प्रश्नेयू इल्ल।

भगवंतनिगे कोट्ट दान सर्वदा शुद्धवे। निन्न कर्मदल्लि दोषविद्दरू सह अदु आतन कैगे होगुत्तले पवित्रवागुत्तदे। दोषवन्नु दूरगोळिसलु नावु ऎष्टे प्रयत्निसलि अदु उळियुत्तदे। आदरू साध्यविद्दमट्टिगू शुद्धवागि कर्म माडबेकु। बुद्धि परमात्म कोट्ट बळुवळि। अदन्नु साध्यविद्दमट्टिगू शुद्धवागि उपयोगिसुवुदु नम्म कर्तव्य। अदक्के तप्पि नडेदरे अपराधवादीतु। अंते पात्रापात्र विवेक अगत्य। भगवत्स्वरूप ऎंदरे आ विवेक सुलभवादीतु।

फलद विनियोग चित्तशुद्धिगे दारियागबेकु। याव कार्य हेगे आगुत्तदो हागे अदन्नु भगवंतनिगे नीडु। प्रत्यक्ष क्रिये नडेयुत्तिद्द-हागे अदन्नु देवरिगर्पिसि मनस्सिन पुष्टि दोरकिसबेकु। फलवन्नु त्यजिसबेकागिल्ल, देवरिगर्पिसबेकु। आदुदरिंद मनस्सिनल्लि हुट्टुव कामक्रोधगळन्नु देवरिगे अर्पिसि मुक्तरागबेकु।

"काम क्रोधवेन्न।
वहिपे नडिगे निन्न॥"

सयमाग्नियल्लि हाकि सुडबेकादुदेनू इल्ल। ओडनेये चट्टने अर्पिसबेकु। अदक्कागि कुस्ति बेकागिल्ल।

"हालु सक्करेगे गुण।
बेविन्नेके ओण?॥"

इंद्रियगळू साधनेगळे। अवन्नू ईश्वरनिगर्पिसु। किवि स्वाधीन-दल्लिरुवुदु कष्ट। हागेंदु केळुवुदन्ने बिडुवुदुंटे? केळिदरू हरिकथेयन्ने केळि। केळदिरुवुदु कष्ट। केळुव विषय हरिकथेयादरे किविय

हत्तिर ज्ञानक्कागि बरुत्ताने। 'दंडिगेयन्नु सरळवागिड्डुवुदरल्ले नन्न ज्ञानवेल्ला' एन्नुत्ताने तुलाधार। आ बेडन कतेयू हीगे। आत कटुक। पशुगळन्नु कडिदु समाजसेवे माडुत्तिद्द। अहंकारियाद तपस्वियोब्बनन्नु अवन गुरु ई बेडन कडे कळुहिसिद। कटुकनेनु ज्ञान कोट्टानु? ब्राह्मणनिगे आश्चर्य। आत बेडनबळि बंद। बेडनेनु माडुत्तिद्द? मासवन्नु कत्तरिसुत्तिद्द, तोळेयुत्तिद्द, ओरसि माराटक्किडुत्तिद्द। 'नन्न ई कर्मवन्नु साध्यविद्दमट्टिगू धर्ममयमाडलु यत्निसुत्तेने। साध्यवादमट्टिगू नन्न आत्मवन्नु ई कर्मदल्लि तोडगिसि तंदे तायिगळ सेवे माडुत्तेने' एंदु आ बेड ब्राह्मणनिगे हेळिद। बेडन रूपदल्लि व्यासरु आदर्शमूर्तियोंदन्नु निल्लिसिदारे।

एल्लरिगू मोक्ष तेरेदिदेयेंबुदु स्पष्टवागलेंदे महाभारतदल्लि ई स्त्रीयर, वैश्यर, शूद्रर कते बंदिरुवुदु। आ कतेय तत्ववन्नु ई ओंबत्तने अध्यायदल्लि हेळिदे। अदरमेले मुद्रे बिद्दिदे इल्लि। रामन सेवकनागिरुवल्लि इरुव आनंदवे आ बेडन बाळिनल्लि इदे। तुकाराम महाराजरु अहिंसकरु। आदरू कटुक सजन कटुकन केलस माडियू मोक्ष संपादिसिदुदन्नु अवरु तुंबा कौतुकदिंद वर्णिसिदारे। 'पशुगळ कोले माडुववरिगे एनु गति?' एंबुदन्नु अवरे बेरेकडे हेळिदारे। आदरू –

"सजन कटुक मारिद मास।"

एंब चरण बरेदु सजन-कटुक भगवंतनिगे नेरवागुवनेंदु वर्णिसिदारे। नरसी मेहतान हुडि नडसिकोडुव, नाथरिगे कावडि होत्तु तरुत्तिद्द, दामाजिगागि होलेयवनागुव, महाराष्ट्रद मेच्चिन जनाबायिगे बीसुवुद-

रल्लि कुट्टुवुदरल्लि नेरवागुव भगवंत, सजन कट्टुकनिगू सह अंथ प्रेम-दिंदले सहाय माडुत्तिद्दनेंदु तुकारामरु हेळिदारे। सारांशविष्टे ' अल्ल कृत्यगळिगू परमेश्वरन संबंधवन्नु जोडिसबेकु। स्वच्छवू पवित्रवू सेवा-मयवू आगिद्दरे आयितु। आ कर्म यज्ञरूपिये।

44. कर्मफल देवरिगे नैवेद्य

ऒंबत्तने अध्यायदल्लि इदे विशेष विचारविदे। कर्मयोग, भक्तियोगगळ मधुर मिलन। कर्म माडियू फलद त्याग माडुवुदु कर्म-योग। फलद वासनेयिल्लदंते कौशलदिंद कर्म माडबेकु। इदु अखरोड् गिड नेट्टंते। इप्पत्तैदु वर्षद मेले अदु हण्णु बिडुत्तदे। नम्म जीवन-दल्लि आ हण्णु सिगदेये होदीतु। आदरू गिड नेडु – अक्करेयिंद नीरेरे, गिड नेडु, हण्णिनासे बिडु -- इदु कर्मयोग। भक्तियोगवेंदरेनु? भावपूर्वक ईश्वरनॊंदिगे ऒंदुगूडुवुदु भक्ति। कर्मयोग, भक्तियोगगळु ऒंदेडे सेरुवुदु राजयोगदल्लि। ई राजयोगक्के अनेकरु अनेक रीति व्याख्ये माडिदारे। कर्मयोग, भक्तियोगगळ मधुर मिश्रणवे राजयोग। इदु नन्न व्याख्ये।

कर्म माडिदरे बंद फलवन्नु ऎसेयुवंतिल्ल। अदन्नु देवरिगर्पि-सुवुदु। फलवन्नु ऎसेदुबिडि ऎंदरे अदन्नु निषेधिसिदंतायितु। अर्पणदल्लि हागागदु। ई व्यवस्थे अति सुंदरवादुदु। अदरल्लिन सॊगसु अपूर्ववादुदु। फलवन्नु त्यजिसबेकु ऎंदरे अदन्नु तॆगॆदुकॊळ्ळु-ववरारू इल्ल ऎंदु अर्थवल्ल। यारादरू अदन्नु तॆगॆदुकॊळ्ळतक्कवरे। अंतवरु योग्यरो, अयोग्यरो ऎंब प्रश्ने बरबहुदु। यारो भिक्षुकनन्नु

उपयोग हेच्चु सुलभ, मधुर, हितकारि। रामनिगे निम्म किवि कोडि। नालिगेयिंद रामनाम हेळि। इन्द्रियगळेनू शत्रुगळल्ल, ओळ्ळेयवे। अवुगळ शक्तियू दोड्डदु। प्रतियोंदु इन्द्रियवन्नू ईश्वरार्पण बुद्धियिंद उपयोगिसुवुदु राजमार्ग। इदे राजयोग।

45. विशिष्ट क्रियेगागि आग्रह बेड

केलवोंदु क्रियेगळन्नु मात्र देवरिगे अर्पिसबेकेंदेनू इल्ल। अेल्ल कर्मजातिगळन्नू अवनिगर्पिसि। शबरिय आ बोरेहण्णु! राम अवुगळन्ने स्वीकरिसिद। परमेश्वर पूजेगागि गविगे होगबेकागिल्ल। अेल्लि याव कर्म माडुत्तिदीरो अदन्ने देवरिगर्पिसिबिडि। तायि मगुविन आरैके माडुत्ताळे। देवर आरैकेयन्ने आके माडिदहागे। मगुविगे स्नानवादरे देवरिगे अभिषेकवादंते। मगु अेंदरे परमात्मन प्रीतिय काणिकेयेंब भावनेयिंद अदन्नु बेळेसबेकु। रामचन्द्रनन्नु कौसल्ये, कृष्णनन्नु यशोदे, अेष्टुप्रीतियिंद सलहुत्तिद्दरु! अदर वर्णने माडुवाग शुक, वाल्मीकि, तुलसीदासरु तावु धन्यरेंदु भाविसिदरु। आ क्रियेय बगे अवरिगाद आनंद अपार। तायिय आ सेवा क्रिये बहळ दोड्डदु। आ बालक, परमात्मन आ मूर्ति, अदर सेवेगिंत हेच्चिन भाग्यविन्नेनु? नावु नम्म नम्म सेवेयल्लि ई भावनेयन्नु उपयोगिसिदरे नम्म कर्मदल्लि अेंथ परिवर्तनेयादीतु? याव सेवे दोरेतरू अदु देवर सेवे अेंदु भाविसबेकु।

अेत्तिन सेवे माडुत्ताने रैत। अदेनु तुच्छवे? अल्ल। शक्तिरूपदिंद विश्ववन्नु तुविद्द अेत्तन्नु वामदेव वेददल्लि वर्णिसिदाने।

रैतन अत्तू अदे शक्तिये।

" चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादा
द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति
महो देवो मर्त्यां आविवेश॥ "

नाल्कु कोंबु, मूरु कालु, अरडु तले, एळु कैयुळ्ळ, मूरु कडे कट्टल्पट्टिरुव, महा तेजस्वियागिद्दु मर्त्य वस्तुगळल्लेल्ल तुंबिकोंडिरुव, गर्जने माडुव, ई विश्वव्यापियाद वृषभवन्ने रैत पूजिसुत्तिदाने। ई ओंदु ऋचेगे सायणाचार्यरु बेरे बेरे एळु अर्थ कोट्टिद्दारे। महा विचित्र अत्तु इदु! आकाशदल्लि गर्जिसुत्त मळे सुरिसुव अत्तु, मलमूत्र सुरिसि बेळे बेळेयुव रैतन अत्तु, अरडू ओंदे। ई दिव्य भावनेयिंद रैत अत्तिन सेवे माडिदरे परमात्मनिगे मुट्टीतु।

मनेयल्लिन गृहलक्ष्मि अडिगेय मनेयन्नु शुचियागिडुत्ताळे। ओलेयमेले शुचियाद सात्विकवाद होळिगे सिद्धवागिदे। मनेयवरेल्लरिगू आ ऊट पुष्टिदायकवू तुष्टिदायकवू आगलेदु अवळ आसे। गृहलक्ष्मिय ई कर्मवू यज्ञरूपिये। आ तायि नडसिरुवुदू ओंदु सण्ण यज्ञवे। परमेश्वरनन्नु तृप्तिगोळिसवेकेंब भावनेयिंद माडिद अडिगे अष्टु स्वच्छवू पवित्रवू आदीतेंबुदन्नु कल्पिसिकोळ्ळि। आ गृहलक्ष्मिय मनस्सिनल्लि इन्थ महा भावनेयिद्दरे भागवतदल्लिन ऋषिपत्नियवरिगे आके समनादाळु। तम्म सेवेयमूलक इन्थ तायंदिरेष्टो जन मोक्ष पडेदिद्दारु। ना ता अंदुकोळ्ळुव ज्ञानिगळू पंडितरू मूलेयल्लि बिद्दिद्दारु।

46. इडी बाळु हरिमयवागबल्लदु

नम्म नित्यद निमिष निमिषद बाळु साधारणवागि कंडरू निजवागि अदु हागिल्ल। अदरल्लि महा अर्थवुंटु। अखंडवागि बाळे ओंदु महायज्ञ कर्म। निद्देयू ओंदु समाधिये। ऎल्ल भोगगळन्नू ईश्वरनिगर्पिसि नावु अनुभविसुव निद्दे समाधियल्लदिन्नेनु? स्नानमाडुवाग पुरुषसूक्त हेळुव संप्रदाय नम्मल्लिदे। स्नानक्कू अदक्कू एनु संबंध? कोंच दृष्टिसि नोडिदरे कंडीतु। साविर कै, साविर कण्णुळ्ळ आ विराट् पुरुषनिगू निम्म स्नानक्कू एनु संबंध? संबंधविदे। नीवु सुरिदुकोळ्ळुव नीरिनल्लि साविरारु हनियिवे। आ हनि निम्म तले तोळदु निम्म पाप कळेयुत्तवे। निम्म मस्तकदमेले ईश्वरन आशीर्वाद अदु। परमेश्वरन सहस्र हस्तगळल्लि सहस्र धारे निम्म मेले सुरियुत्तिदे। हनिय रूपदल्लि स्वत. परमेश्वरने निम्म तलेय कोळेयन्नु तोळेयुत्तिदाने। आ स्नानदल्लि इन्थ दिव्य भावने बरलि। आग अदोंदु अद्वितीय स्नानवादीतु। अदरल्लि अनंत शक्ति बंदीतु।

याव कर्मवन्ने आगलि, परमेश्वरनदेंब भावनेयिंद माडिदरे अदु पवित्रवागुत्तदे। इदु अनुभवद मातु। नम्म मनेगे बंदवरु ईश्वररूपिगळेंब भावने बरबेकु। यावनादरोब्ब दोड्ड मनुष्य बंदाग नावेष्टु स्वच्छतेयिंद इरुत्तेवे, ऎष्टु चेंदाद अडिगे माडिसुत्तेवे! बंदवनु परमेश्वरने ऎंब भावनेयिंद आ क्रियेयल्लि ऎंथ परिवर्तनेयादीतु! कबीर बट्टेगळन्नु नेयुत्तिद्द। अदरल्लि तल्लीननागि

"झीनी झीनी झीनी झीनी, बीनी चदरिया।"

अंदु हाडुत्ता नलियुत्तिद्द । परमेश्वरनिगे होदिसुवुदक्कागि बट्टे नेयुत्तिद्दहागित्तु । ऋग्वेददल्लिन ऋषि हेळुत्ताने –

" वस्त्रेव भद्रा सुकृता सुपाणी "

सुंदरवाद कैगळिंद नेय्द बट्टेयहागे नानु नन्न ई स्तोत्रवन्नु ईश्वरनिगे होदिसुत्तिदेने। कविय स्तोत्र देवरिगागि। नेकारन बट्टेयू देवरिगागिये। इन्थ हृदयंगम कल्पने! हृदय उक्किसुव विचार! ई भावने बंदरे बाळु अष्टु निर्मलवादीतु! कत्तलेयल्लि मिंचु होळेदरे ओम्मेले बेळकागुत्तदे। मेल्ल मेल्लने बेळकागुवुदे? इल्ल। ओंदे ओंदु क्षणदल्लिये अेल्ल अंतर्बाह्य परिवर्तने। अदेमेरेगे प्रतियोंदु क्रियेयन्नू ईश्वरनोंदिगे कूडिसिदल्लि बाळिनल्लि ओम्मेले अद्भुत शक्ति हुट्टुत्तदे। अनंतर प्रतियोंदु क्रियेयू विशुद्धवागुत्तदे। बाळिनल्लि उत्साह हुट्टुत्तदे। इंदु नम्म बाळिनल्लि अेल्लिदे उत्साह? सायुवंतिल्लवेंदु नावु बदुकिदेवे, अष्टे। अेल्लेल्लू उत्साहक्के बर। अळुबुरुक, कलाहीन बदुकु। अेल्ल क्रियेगळन्नू ईश्वरनोंदिगे कूडिसबेकेंब भाव बरलि। अनंतर निम्म बदुकु रमणीयवू नमनीयवू अदीतु।

परमेश्वरन ओंदु हेसरिनिंद ओम्मेले परिवर्तनेयागुवल्लि संदेहविल्ल। रामनाम हेळुवुदरिद एनु प्रयोजन अन्नबेडि। हेळियादरू नोडि। सायंकाल रैत होलदिंद मरळुत्तिदाने अन्नि। दारियल्लोब्ब भेटियागुत्ताने।

'दारिकार बंधु, नारायणा, निल्लु, रात्रियागुत्त बंतु। नडे, नम्म मनेगे होगोण' रैतन मुखदिंद इन्थ मातु बंदरे आ दारिकारन

रूप बदलादीतो इल्लवो [2] अवनु दारिकारनादरू पवित्रनादानु। इन्थ बदलावणेयुंटागुत्तुदु भावदिंद। अल्लदॆ इरुत्तुदु ई भावनेयल्ले। जीवनवे भावनामय। इप्पत्तु वर्षद परकीयनोब्ब मनेगे बरुत्ताने। वधुविन तंदे आतनिगे कन्यादान माडुत्ताने। आ हुडुग इप्पत्तु वर्षदवनागिद्दरू सह ऐवत्तु वर्षद आ तंदे, हुडुगन कालिगे बीळुत्ताने। इदु हीगेके [2] कन्येयन्नर्पिसुव आ कर्मवे अष्टु पवित्र। अदन्नु स्वीकरिसुवात देवरंदे तोरुत्ताने। अळियदेवर बगॆ भाव तळेयुव ई भावनेयन्ने इन्नू मुंबरिसि, हेच्चिसि।

इन्थ सुळ्ळु कल्पनेगळल्लि एनु अर्थ अदु यारादरू केळबहुदु। मोदलिगे सुळ्ळु–सत्य अन्नुवुदु बेड। मोदलु अभ्यासमाडि। अनुभव पडेदुकोळ्ळि। सुळ्ळु–सत्य आमेले तिळिदीतु। अळियदेवरु परमात्मनेब आ कल्पने केवल शाब्दिकवागिरदे निजवादुदागिरलि। आग परिवर्तनेयेनेंबुदु तिळिदीतु। ई पवित्र भावनेयिंद वस्तुगळ पूर्वरूप–उत्तररूपगळल्लि भूम्याकाशगळ अंतर काणिसुत्तदे। कुपात्र सुपात्रवादीतु। दुष्ट शिष्टवादीतु। वाल्या कोळियदु हीगे आगलिल्लवे [2] वीणेयमेले बेरळु नर्तिसुत्तिदे। मुखदिंद नारायण नाम होरडुत्तदे। कोल्ललु बंदरू शांतिगेडदे, प्रतियागि तन्नन्ने प्रेमपूर्ण कण्णिनिंद नोडुत्तिदाने। इन्थ दृश्यवन्नु हिंदॆंदू आत नोडिरलिल्ल। तन्न कोडलियन्नु कंडु ओडिहोगुव इल्लवे तन्नमेले एरि बरुव अरडे वगॆय प्राणिगळन्नु आत अदुवरेगे नोडिद्द। नारदरादरो ओडिहोगल्ल इल्ल, प्रति दाळियन्नू माडलिल्ल। शांतवागि निंतिद्दरु। वाल्यान

कोडलि स्तब्धवायितु। नारदर हुब्बु वदलिसलिल्ल। नडदे इत्तु मधुर भजने। 'कोडलियेके नितुहोयितु ?' अंदु नारदरु केळिदरु। 'नीवु शातवागि इरुवुदन्नु कंडु' अंद वाल्या। नारदरु अवनन्नु रूपांतर माडिबिट्टरु। आ रूपातर निजवो सुळ्ळो ?

निजवागियू दुष्टरेन्नुववरिदारेये ? निर्णयिसुववरादरू यारु ? निजवाद दुष्ट इद्दुरिगे नितिद्दागलू सह आत परमात्म अंब भावने बरलि। दुष्टनागिद्दरू सह आत शरणनादानु। सुळ्ळु कल्पने माडबेके अंदीरि। आत दुष्टने अंबुदन्नारु बल्लवरु ? तावु ओळ्ळेयवरागिरुवुदरिंद सज्जनरिगे अेल्लवू ओळ्ळेयदागि तोरुत्तदे। निजवागि हागे यारू इरुवुदिल्ल अंदु केलवरेन्नुत्तारे। निनगे कंडुदन्ने निज अन्नोणवे ? अंदरे दुष्टर कैयल्लि मात्र सृष्टिय सम्यक् ज्ञानद साधनेयिद्दतायितु! सृष्टि ओळ्ळेयदे। दुष्टरिगे मात्र दुष्टवागि काणुवुदॆंदेके हेळबारदु ? अण्णा, सृष्टि कन्नडि। नीविद्दहागे ई इदिरिन कन्नडियल्लि निम्म प्रतिबिंब। निम्म दृष्टियंते सृष्टिय रूप। अंतले सृष्टि ओळ्ळेयदु, पवित्रवादुदु अंदु कल्पिसिकोळ्ळि। साधारण क्रियेयल्लि ई भाव तुंबि। अनतर नडेयुव चमत्कारवन्नु नोडि। भगवंत हेळबेकागिरुवुदू इदन्ने—'एनेनन्नु माडुत्तीयो, अदन्नेल्ल इद्दुदिद्दंतेये भगवंतनिगर्पिसु।'

'यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौंतेय तत् कुरुष्व मदर्पणं ॥'

नावु चिक्कवरागिद्दाग नम्म तायि ओंदु कते हेळुत्तिद्दरु। तुंब

स्वारस्यवाद कते। आदरे अदर रहस्य मात्र बहळ वेळेयुळ्ळुदु। ओब्ब हेण्णु मगळु। माडिदुदन्नेल्ल कृष्णार्पण माडुवुदेंदु आके निर्धरिसिद्दळु। गोमे हच्चि, होरकेसेदु कृष्णार्पण अन्नुवळु। तत् क्षण आ सगणि अल्लिंद अद्दु मंदिरदल्लिन मूर्तिय मुखदमेले कूडुत्तित्तु। मूर्तियन्नु तोळे तोळेदु पूजारि सोतुहोद। आदरे माडुवुदेनु? कोनेगे ई महिमेयेल्ल आ हेंगसिनदेंबुदु तिळियितु। आके बदुकिरुववरेगू मूर्ति स्वच्छवागिरुवंतिल्ल। ओंदु दिन आके हासिगे हिडिदळु। साविन कोनेय गळिगे समीपिसितु। मरणवू कृष्णार्पण अंदळाके। तत् क्षणवे देवालयदल्लिन मूर्ति ओडेदुहोयितु। आ हेंगसन्नु करेदोय्यलु मेलिनिंद विमान बंतु। अवळु अदन्नू कृष्णार्पण माडिदळु। तत्क्षण गुडियमेले बित्तु विमान। तुंडु तुंडायितु। श्रीकृष्णन ध्यानद मुंदे स्वर्गवेल्लि बंतु?

साराशविष्टे. नावु माडुव सुकर्म कुकर्मगळन्नेल्ल ईश्वरार्पण माडुवुदरिंद बेरोंदु बगेय सामर्थ्य हुट्टुत्तदे। जोळद काळु हळदि गेंपु। अदन्नु हुरिदरे अष्टु अंदवाद अरळागुत्तदे! अच्च बेळ्ळगे अष्टकोनद अच्चुकट्टाद आ अंदद अरळन्नु आ जोळद काळिन पक्कदल्लिट्टु नोडि। अष्टु अंतर! आदरे आ अरळु आ जोळदे। अदरल्लि संशयविल्ल। ई व्यत्यास अग्नियोदरिंद आयितु। अदे रीति ई गट्टि जोळद काळन्नु बीसुकल्लिनल्लि हाकि बीसि। मेत्तनेय हिट्टागुत्तदे। बेंकिय संपर्कदिंद अरळायितु, बीसुव कल्लिनल्लि हाकिदरे मेत्तनेय हिट्टायितु। हीगेये निम्म चिक्क क्रियेगळमेले हरिस्मरणेय संस्कार हाकिदरे अदु अपूर्ववागुत्तदे। भावनेयिंद बेले बेळेयुत्तदे। आ हू,

आ बिल्वपत्र, आ तुलसीदल – तुच्छवल्ल ।

" विठलन्न बेरेस – तुका हेळुत्तानॆ
नोडदर खुरस । "

प्रतियॊंदरल्लियू परमात्मनन्नु बेरेसि, अनंतर अनुभविसि । ई विठ्ठलन मसालॆगिंत हॆच्चिन बेरॆ मसालॆयुंटे ? ई दिव्यवाद मसालॆय मुंदॆ इन्नावुदन्नु तंदीरि ? ईश्वरन मसालॆयन्नु प्रतियॊंदु क्रियॆयल्लियू बेरेसि । ऎल्लवू सुंदरवादीतु, रुचिकरवादीतु ।

रात्रि ऎंटु गंटॆगॆ देवालयदल्लि आरति नडॆदिद्दाग – गंध धूप इडुत्तिद्दाग, दीविगॆ उरियुत्तिद्दाग, आरति बॆळगुत्तिद्दाग, निजवागियू परमात्मनन्नु नोडुत्तिरुवंतॆ नमगॆ भासवागुत्तदॆ । हगलॆल्ल ऎच्चरवागिद्द देवरु इन्नु निद्दॆ होगुत्तानॆ ।

' मलगु मलगय्य गोपाला '

ऎन्नुतारॆ भक्तरु । ' देवरु ऎल्लादरू मलगुत्तानॆयॆ ? ' ऎंदु संदेह पडुववनु केळुत्तानॆ । ऎलो, देवरु एनु माडलार ? देवरे ऎच्चरवागिरदिद्दरॆ, मलगिकॊळ्ळदिद्दरॆ इन्नेनु कल्लु ऎच्चरवागिरबेकॆ, मलगिकॊळ्ळबेकॆ ? देवरे ऎच्चरवागिरुत्तानॆ, देवरे मलगिकॊळ्ळुत्तानॆ । देवरे एळुत्तानॆ । बॆळगिन जावदल्लि तुलसीदासरु देवरन्नु ऎच्चरिसुत्तिदारॆ, बिन्नविसिकॊळ्ळुत्तिदारॆ –

" जागियॆ रघुनाथ कुवर पंछी बन बोलॆ "

नम्म बंधु भगिनियरु, नर नारियरु श्रीरामचंद्रन स्वरूपगळॆंदु तिळिदु अवरॆन्नुत्तारॆ – नन्न रामरायरगाळिरा, ऎद्देळि । ऎंथ सुंदर विचार !

हास्टेलिनल्लि हुडुगरन्नेब्बिसबेकादरे 'एळुत्तीरो इल्लवो' अंदु गदरिसु-त्तारे। प्रात:कालद मंगल समय। आग शोभिसीते आ कठोरवाणि? विश्वामित्रन आश्रमदल्लि मलगिदाने रामचन्द्र। अवनन्नु विश्वामित्र ऎब्बिसुत्तिदाने। वाल्मीकि रामायणदल्लि वर्णनेयिदे :

"रामेति मधुरा वाणीं विश्वामित्रोऽभ्यभाषत।
उत्तिष्ठ नरशार्दूल पूर्वा संध्या प्रवर्तते॥"

'राम, वत्सा एळु' अंदु सविदनियल्लि विश्वामित्र करेयुत्तिदाने। अंथ सुंदर कर्म इदु। हास्टेलिनल्लि ऎब्बिसुवुदु ऎष्टु कर्कश! एळेळु जन्मगळ वैरि यावनो ऎब्बिसलु बंदिरबेकेंदु आ हुडुगनिगनिसुत्तदे। मेल्लमेल्लने करेयिरि। अनंतर गट्टियागि। कर्कशते, कठोरते बेड। आग एळदिद्दरे इन्नु हत्तु निमिष बिट्टुकोंडु ऎब्बिसि। इंदु एळदिद्दरे नाळेयादरू ऎद्दानु अंदु आसेयिट्टुकोळ्ळि। आत एळबेकेंदु सुंदरवाद हाडु, स्तोत्र, श्लोक हेळि। ऎब्बिसुवुदु ई सादा क्रिये। अदन्नु सह काव्यमयवागि, सहृदयवागि, सुंदरवागि माडबहुदु। देवरन्ने ऎब्बिसुव हागे, परमेश्वरन मूर्तियन्ने–मेल्लने ऎच्चरिसुव हागे इदु। निद्देयिंद ऎब्बिसुवुदू ओंदु शास्त्र!

ऎल्ल व्यवहारदल्लू ई कल्पने बरबेकु। शिक्षण शास्त्रदल्लंतू कल्पनेगे बहळ महत्ववुंटु। मक्कळेंदरे देवर मूर्तिगळु। ई देवर सेवे सल्लिसुत्तिदेने अंब भाव गुरुविगिरबेकु। आग आत "नडे, मनेगे होगु, ओंदु गंटे निंतुकोंडिरु, कै मुंदे माडु, अगि ऎष्टु होलसु, मूगिगे सिंबळ ऎष्टु" अंदु गदरिसलार। अदक्के प्रतियागि आत

मगुविन मूगन्नु मेल्लने शुचिगोळिसियानु, हरिदुदन्नु होलिदानु। शिक्षक हीगे वर्तिसिदरे अदर परिणाम हेगादीतु। होडेय्वुदरिंद एल्लादरू परिणामवादीते? मक्कळू सह इंथ दिव्य भावनेयिंद गुरुविन कडे नोडबेकु। गुरुवे हरिमूर्तियेंदु हुडुगरु, हुडुगरे हरिमूर्तियेंदु गुरुगळु, परस्पर भाविसिकोंडु वर्तिसिदल्लि विद्ये ओष्टो तेजस्वियादीतु। मक्कळू देवरु। गुरुवू देवरु। गुरुवे शंकरन मूर्ति। अवरिंद नावु बोधामृत पडेयुत्तिदेवे, आतन सेवेमाडि ज्ञान दोरकिसुत्तिदेवे ऎंब कल्पने मक्कळिगे बंदरे अवरु हेगे वर्तिसबहुदु।

47. पापद भयविल्ल

ऎल्लेल्लू हरिभावने उंटादरे परस्पर हेगे नडेदुकोळ्ळबेकेंबुदर नीतिशास्त्रवेल्ल अंतःकरणदल्लि सहजवागि हुट्टीतु। अदर अगत्यवू इरदु। अनंतर दोष दूरवादावु, पाप ओडिहोदावु, पापद कत्तले कळेदीतु।

तुकारां हेळिदारे –

“नीनादे नडे मुक्त, हरिनाम नुडि नित्य।
निनगिल्ल ताप लव, वळिसारे नुडियुत्त॥”

नडे, पापमाडल्लु नीनु मुक्त। पाप माडुवाग नीनु दणियुत्तीयो, इल्लवे पापवन्नु सुडुवाग हरिनाम दणियुत्तदेयो नोडोण। हरिनामदिदिरु तडेदु निल्लुवंथ गट्टि पाप ऎल्लिदे? “करी तुजसी करवति।” ऎष्टु साध्यवो अष्टु पाप माडु। निन्न पापक्कू हरिनामक्कू ऒंदु सल काळग नडेदेबिडलि। ई जन्मद पापगळन्नु मात्रवल्ल – अनंत जन्मद पापगळन्नेल्ल ऒंदे क्षणदल्लि सुट्टु बूदिमाडबल्ल सामर्थ्यवुंटु ई नामदल्लि।

गवियल्लि अनंत युगगळ कत्तलेयिद्दरू सह ओंदे ओंदु कड्डि गीचिदरे बेळकागुत्तदे । कत्तले होगि प्रकाशवागुत्तदे । पाप हळेयदागिद्दष्टू बेग सायुत्तदे । सावन्ने अदु इदिरुनोड्डुत्तिरुत्तदे । हळेय कट्टिगे बेग बूदियागुवुदिल्लवे ?

रामनामद बळि पाप इरलारदु । 'राम एन्नुत्तलू देव्व ओडि होगुत्तदे' एंदु मक्कळु हेळुवुदिल्लवे । चिक्कवनागि इद्दाग नानु रात्रि स्मशानक्के होगि बरुत्तिद्दे । स्मशानक्के होगि ओंदु गूट नेट्टु बरुव पंथ नडेयुत्तित्तु । हावु, कप्पे, मुळ्ळु बेकादष्टु । अंथ कत्तलेयल्लू ननगेनू अनिसुत्तिरलिल्ल । ओंदु सलवू भूत काणिसलिल्ल । कल्पनेय भूत काणिसुवुदादरू हेगे ? हत्तु वर्षद एळेय हुडुग । रात्रि स्मशानक्के होगिबरुव धैर्य अवनिगे बंदुदु यावुदरिंद ? रामनामदिंद । अदु सत्य-रूपि परमात्मन सामर्थ्य । परमेश्वर हत्तिर इरुवुनेंब भावनेयिद्दरे सरि । जगत्तेल्ल तिरुगिबिद्दरू देवर सेवक अळुकुवुदिल्ल । याव राक्षस तिंदीतु आतनन्नु ? आतन केन्ने तिंदीतु । सत्यवन्नु आ राक्षस जीर्णिसि-कोळ्ळलार । सत्यवन्नु जीर्णिसिकोळ्ळबल्ल शक्ति जगत्तिनल्ले इल्ल । ईश्वरन हेसरिनेदुरिगे पाप निल्लुवुदे असाध्य । एतले ईश्वरनोंदिगे सेरिकोळ्ळि । अवन कृपापात्ररागि । एल्ल कर्मगळन्नू अवनिगर्पिसि । अवनवरे आगिरि । एल्ल कर्मगळ नैवेद्यवन्नू प्रभुविगे अर्पिसबेकेंब भावने दिने दिने हेच्चु उत्कटवादल्लि निम्म क्षुद्र बाळु दिव्यवादीतु । मलिन जीवन सुंदरवादीतु ।

48. स्वल्पवादरू सवियिरलि

सारांशविष्टे. 'पत्रं पुष्पं फलं तोयं' एने इरलि, भक्तियिद्दरे साकु। अेष्टु कोट्टिरि अंबुदु मुख्यवल्ल। याव भावनेयिंद कोट्टिरि अेन्नुवुदु मुख्य। ओम्मे ननगू ओब्ब प्रोफेसरिगू शिक्षणशास्त्रद बग्गे मातु नडेयितु। इब्बरल्लू विचार भेद। कोनेगे प्रोफेसरु 'नानु हदिनेंटु वर्ष ई केलस माडुत्तिदेने' अंदरु। तम्म अभिप्राय ननगे ओप्पिगेयागुवंते अवरु प्रयत्निसबेकागित्तु। अदन्नु बिट्टु, इष्टु वर्ष शिक्षण कार्य माडुत्तिरुवुदागि अवरु हेळिकोंडाग नानु "हदिनेंटु वर्ष काल अेत्तु यंत्रदजोतेगे सुत्तुत्तिद्दरे अदु यंत्रशास्त्रज्ञनादीते?" अंदे। यंत्रशास्त्रज्ञ बेरे। गरगर तिरुगुव आ अेत्तु बेरे। शिक्षण शास्त्रज्ञ बेरे। शिक्षणदल्लि कूलि माडुववनु बेरे। निजवाद शास्त्रज्ञनिगे आरु तिंगळल्लि बरुव अनुभव, इप्पत्तु वर्ष केलस माडुव कूलिगारनिगे तिळियलारदु। सारांशविष्टे। इष्टु वर्ष केलस माडिदे अंदु आ प्रोफेसरु तन्न गड्डु तोरिसिद। गड्डदिंद सत्य सिद्धवागुवुदिल्ल। हागे परमेश्वरन मुंदे अेष्टु राशिहाकिदरू अदक्के महत्वविल्ल। अळते, रीति, बेलेगळिगे महत्वविल्ल। भावनेगे मात्र महत्व। अर्पण माडिदुदेनु, अेष्टु अंबुदु मुख्यवल्ल। अर्पणे माडिदुदु हेगे–अेन्नुवुदे मुख्य। गीतेयल्लिरुव श्लोक बरी एळुनूरु। हत्तु हन्नेरडु साविर श्लोकद ग्रंथगळू उंटु। वस्तु दोड्डदागिद्दमात्रक्के अदर उपयोगवू दोड्डदेंदेनू अल्ल। आ वस्तुविनल्लिरुव तेजस्सु अेंथदु, सामर्थ्य अेंथदु अेंबुदन्नु नोडबेकु। बाळिनल्लि माडिद क्रियेगळेष्टु अंबुदु महत्वदल्ल। ईश्वरार्पण बुद्धियिद

ऒंदे ऒंदु क्रिये नडेदरू सह अदरिंदले साकष्टु अनुभव दॊरॆतीतु । हत्तुहन्नेरडु वर्षगळल्लि दॊरॆयदंथ अनुभव ऒंदॊंदुसल ऒंदे क्षणदल्लि दॊरॆयुवुदुंटु ।

बाळिनल्लि साधारण कर्म, सादा क्रियॆ -- ऎल्लवन्नू परमात्मनिगॆ अर्पिसि । ऎंदरे बदुकिनल्लि सामर्थ्य बंदीतु । मोक्ष कैगॆ सिक्कीतु । कर्म माडुवुदु, अदर फलवन्नु त्यजिसदे ईश्वरनिगर्पिसुवुदु राजयोग । कर्मयोगक्कू मुंदिन हॆज्जॆ इदु । 'कर्म माडि, फल बिट्टु बिडि । फलद आसे इट्टुकॊळ्ळबेडि' ऎंदु कर्मयोग हेळुत्तदे । अल्लिगॆ कर्मयोग मुगियितु । 'कर्मद फलवन्नु त्यजिसबेडि । ऎल्ल कर्मगळन्नू देवरिगर्पिसि । अवु हूविद्दंते । मुदकॊय्युव साधन । आ मूर्तिगॆ अवन्नर्पिसि । ऒंदु कडॆयिंद कर्म, ऒंदु कडॆयिंद भक्ति -- हीगॆ संयोगमाडि बाळन्नु सुंदरगॊळिसिरि । फलद त्याग माडबेडि । अदन्नु देवरॊंदिगॆ कूडिसि ऎन्नुत्तदे राजयोग । कर्मयोगदल्लि हरिद फलगळन्नु राजयोगदल्लि बेरॆसलागुत्तदे । नॆडुवुदक्कू बिसुडुवुदक्कू बहळ अंतरवुंटु । नॆट्टद्दु अनंतवागि मत्ते सिक्कुत्तदे । बिसुटद्दु हागे नष्टवागि होगुत्तदे । ईश्वरनिगॆ अर्पिसिद कर्म नॆट्टंते । अदरिंद बाळिनल्लि अपार आनंद तुंबुत्तदे । अपार पावित्र्य बरुत्तदे ।

(17–4–32)

अध्याय 10.

49. गीतेय पूर्वार्ध – सिंहावलोकन

इल्लिगे गीतेय पूर्वार्ध मुगियितु। उत्तरार्धक्के प्रवेशिसुव मोदलु, इदु-वरेगे आद भागद साराशवेनेंदु कंडुकोंडरे ओळ्ळेयदादीतु। गीते मोहना-शार्थवू स्वधर्मप्रवृत्यर्थवू आगिदेयेंदु मोदलनेय अध्यायदल्लि। अेरडनेयद-रल्लि नमगे बाळिन सिद्धात, कर्मयोग, स्थितप्रज्ञदर्शनवायितु। मूरु नाल्कु ऐदनेय अध्यायगळल्लि कर्म, विकर्म अकर्मगळ विवरणे दोरेयितु। स्वधर्मा-चरणेये कर्म। होरगिनिंद स्वधर्माचरणेय कर्म नडेदिद्दाग अदक्के सहायवागि नडेयबेकाद मानसिक कर्मवे विकर्म। कर्म विकर्मगळेरडू ओंदुगूडि चित्तशुद्धि पूर्णवादाग, अेल्ल तळमळ, वासने, विकार, भेद-भावगळु इल्लवादाग अकर्मदेशे प्राप्तवागुत्तदे। ई अकर्मदेशेयल्लू मत्ते अेरडु रीति। हगलिरुळू कर्म माडुत्तिद्दरू सह कोंचवू माडदंते अनुभविसुवुदु ओंदु रीति। इदक्के प्रतियागि एनन्नू माडदेये अव्याहत-वागि कर्म नडेसिरुवुदु इन्नोंदु रीति। ई अेरडु रीतिगळिंद अकर्म स्थिति लभिसुत्तदे। ई रीतिगळेरडू तोरिकेगे भिन्नवागिरुवंते कंडरू अवुगळ स्वरूप मात्र ओंदे। ई रीतिगळिगे संन्यास, कर्मयोग अेंदु हेसरिद्दरू अेरडर सारवू ओंदे। कडेय अंतिम गुरि अकर्मस्थिति। मोक्षवेन्नुवुदु अदक्के। हीगे गीतेय मोदल ऐदु अध्यायदल्लि बाळिन अेल्ल शास्त्रार्थवू बंदुहोयितु।

अनंतर ई अकर्मरूपि गुरियन्नु पडेयलु अगत्यवाद अनेक दारि, ओळगिनिंद मनस्सन्नु शुद्धगोळिसुव अनेक साधनेगळ विचार

आरनेय अध्यायदिंद आरंभवायितु। आरनेय अध्यायदल्लि चित्तद एकाग्रतेगागि ध्यानयोगवन्नु सूचिसि अभ्यास, वैराग्यगळु अदक्के अगत्यवेंदु हेळिदे। एळनेय अध्यायदल्लि विशालवाद भक्तिय महा-साधनेयन्नु हेळिदे। प्रेमदिंदलो, जिज्ञासेयिदलो, विश्वकल्याणद आसक्तियिंदलो, इल्लवे वैयक्तिक कामनेयिंदलो – ईश्वरन कडे हेगादरू होगबहुदु। अंतू ओम्मे आतन दरबारिनल्लि प्रवेश माडिदरे सरि। ई अध्यायदल्लिन ई विषयवन्नु प्रपत्तियोग, अंदरे ईश्वरनिगे शरणु होगेंदु हेळुव योग – अंदु नानु करेयुत्तेने। एळनेयदरल्लि प्रपत्तियोग, अंटनेय-दरल्लि सातत्ययोग। इल्लि ना कोट्ट हेसरुगळु पुस्तकदल्लि काणिसलि-क्किल्ल। ननगे उपयोगवागुवंथ हेसरन्नु नानु कोडुत्तिदेने। साधने-यन्नु अंत्यकालदरेगू सततवागि नडसुवुदु सातत्ययोग। ओम्मे तुळिद दारियल्लिये सततवागि हेज्जे बीळुत्त होगबेकु। हिडिदू बिट्टू सागुव मनुष्य गुरियन्नेंदू तलपलार। साधने माडुवुदादरू अेल्लिय तनक अेंदु निराशेयिंदागलि बेसरदिंदागलि योचिसि उपयोगविल्ल। फल दोरेयुव-वरेगू साधने नडेदिरबेकु।

ई सातत्ययोगवन्नु हेळि ओंबत्तनेय अध्यायदल्लि ओंदु साधरण, आदरे बाळिन बण्णवन्नेल्ल बदलिसुव, वस्तुवन्नु भगवंत कोट्ट। अदु राजयोग। क्षण क्षणक्कू नडेयुव कर्मगळन्नेल्ल ईश्वरार्पण माडु अेन्नुत्तदे ओंबत्तनेय अध्याय। ई ओंदु विषयदिंदागि सर्व शास्त्र-साधनगळु, कर्म विकर्मगळु मुळुगिहोदवु। ई समर्पणेयोगदल्लि अेल्ल कर्मसाधनेगळू मुळुगिहोदवु। समर्पणयोगवेंदरेने राजयोग। इल्लिगे अेल्ल

साधनेगळिगू मुगिताय। हीगे व्यापकवू समर्थवू आद ई ईश्वरार्पण विचार साधारणवागि काणिसिदरू तुंब कष्टदागिबिट्टिदे। मनेयल्लि कुळितुकोंड हागे, अत्यंत अज्ञानियिंद मोदलागि विद्वासरवरेगे ऎल्ल-रिगू विशेष श्रमविल्लदये साध्यवागुव साधने इदु। ऎंतले सुलभ। आदरे सुलभवादरू इदन्नु साधिसलु बहळ पुण्य पडेदिरबेकु।

'अनेक सुकृतद योग, विठ्ठलन प्रेमद मार्ग।'

अनतजन्मद पुण्यविद्दरे मात्र ईश्वरनल्लि आसक्तियुंटागुत्तदे। कण्णिगे एनादरू कोंच ताकिदरे साकु, गळगळने कण्णीरु उदुरुत्तदे। आदरे परमेश्वरन हेसरु उच्चरिसुत्तलू ऎरडु हनियादरू कण्णिनल्लि बारदु। अदक्के उपायवेनु? साधुगळु हेळुवंते ओंदु अर्थदिंद अति सुलभवाद भाव इदु। हागेये कठिनवू हौदु। ईगिन कालदल्लंतु तीरा कठिन।

इवोत्तु जडवादद परे नम्म कण्णिन मेले इदे। ईश्वरनु इरुवु-दादरू ऎल्लि – ऎंब प्रश्ने प्रारंभवागुत्तदे। आत यारिगू, ऎल्लू प्रतीतवागुवुदिल्ल। बाळेल्लवू विकारमयवू, विषमतापूर्णवू आगिदे। अत्युच्च विचार माडुव तत्वज्ञानिगळिगू सह, इंदु ऎल्लरिगू होट्टेतुंबुवष्टु रोट्टि हेगे सिक्कीतेंबुदन्नु बिट्टरे बेरे विचारविल्ल। इदु अवर तप्पल्ल। इंदु अनेकरिगे होट्टेगे इल्ल। इंदिन अति दोड्ड समस्येयेंदरे अन्न। ई प्रश्नेयन्नु बिडिसुवुदरल्ले बुद्धियेल्लवू तोडगिकोंडिदे। "बुभुक्षमाणः रुद्ररूपेण अवतिष्ठते" ऎंदु सायणाचार्यरु रुद्रन व्याख्ये माडिदारे। हसिद जन ऎंदरेने रुद्रन अवतार। साम्राज्यवाद इत्यादि हलवु वाद-

तत्व, राजकीय, ई अन्नकागि तलेयेत्ति निंतिवे । ई प्रश्नेयिद दूरवागुव अवकाशवू इल्ल । यारोंदिगू कलहवाडदे सुखवागि ऎरडु तुत्तु अन्न हेगे तिन्नबहुदॆंब विचारदल्ले इन्दु दिन कळेयुत्तदे । इन्थ चमत्कारिक समाजरचने यिरुवल्लि ईश्वरार्पणदंथ सादा सुलभ विषयवू कष्टतरदागिरु-वुदेनू आश्चर्यवल्ल । इदक्केनु उपाय ? ईश्वरार्पणयोगवन्नु साधिसुवुदु हेगे, अदु सुलभवागुवुदु हेगे ऎंबुदन्नु ई अध्यायदल्लि नोडोण ।

50. परमेश्वरन दर्शनक्के बालबोधद रीति

चिक्क मक्कळिगे कलिसलु नावु योचिसुव उपयोगगळन्ने ऎल्लॆडे-यल्लू परमात्मनन्नु नोडलु ई अध्यायदल्लि सूचिसिदे । मक्कळिगे अक्षर कलिसुवुदु ऎरडु रीतियिद । मोदलु मोदलु अक्षरगळन्नु दोड्डदागि बरेदु तोरिसुवुदोंदु रीति । मुदे ई अक्षरगळन्ने चिक्कदागि बरेदु तोरिसि कलिसुत्तेवे । अदे 'क' अदे 'ग' । मोदलु दोड्डदु । अनंतर चिक्कदु । इदोंदु पद्धति । गोंदलविल्लद सादा अक्षरगळन्नु मोदलु कलिसि अनंतर कष्टसाध्य अक्षर कलिसुवुदु इन्नोंदु रीति । परमेश्वर-नन्नु काणलु कलिसुवुदू हीगे । मोदलु स्पष्टवाद परमेश्वरनन्नु नोडु-वुदु । समुद्र, पर्वत इत्यादिगळल्लि प्रकटवाद परमात्म तट्टने गोचरिसु-त्ताने । ई स्थूल परमात्म अर्थवादल्लि अनंतर ऒंदु नीरिन हनियल्लि, ऒंदु मण्णिन कणदल्लि कूड आतनिरुवुदु अर्थवादीतु । दोड्ड 'क' सण्ण 'क' गळल्लि व्यत्यासवेनू इल्ल । स्थूलदल्लिरुवुदे सूक्ष्मदल्लिदे । इदु ऒंदु रीति ।

इन्नू ऒंदु रीति, गोंदलक्कोळगागद हागे सरल परमात्मनन्नु

मोदलु नोडुवुदु। अनंतर कोंच गोदलद्दादरू सरि। शुद्ध परमात्मन आविर्भाव सहजवागि प्रकटवागिद्दलि अदन्नु ओडनेये ग्रहिसलु साध्यवागुत्तदे। रामनल्लि प्रकटवाद परमात्मन आविर्भाव अर्थवादहागे। ई राम अन्नुव शब्द सरलवादुदु। गोंदलक्केडेगोडद परमेश्वर ईत। रावण अेंब शब्दवो? अदु संयुक्ताक्षर। अल्लि एनो मिश्रणवुंटु। रावणन तपस्सु, कर्मशक्तिगळेनो घनवे। आदरे अदरल्लि क्रूरतन सेरिदे। मोदलु राम अेन्नुव सरल अक्षर कलियिरि। दये, वात्सल्य, प्रीतिगळुळ्ळ राम साक्षात् परमेश्वर। आतनन्नु बेगने ग्रहिसबहुदु। रावणनल्लिन देवरन्नु काणलु कोंच काल हिडिदीतु। मोदलु सरल अक्षर। अनंतर संयुक्ताक्षर। सज्जनरल्लि मोदलु परमात्मनन्नु कंडु अनतर दुर्जनरल्लू काणलु कलियबेकु। सागरदल्लिन विशाल परमेश्वरने आ नीरिन हनियल्लू इदाने। रामचन्द्रनल्लिन परमेश्वरने रावणनल्लू इदाने। स्थूलदल्लिरुवुदे सूक्ष्मदल्लि। सुलभतेयल्लिरुवुदे कठिनतेयल्लि। ई अेरडू रीतियिंद नावु ई विश्वग्रंथवन्नोदलु कलियबेकागिदे।

ई अपार सृष्टियेल्ल ईश्वरन पुस्तकविद्दंते। कण्णिनमेले दप्प परदे बिद्दिद्दाग ई पुस्तक मुच्चिदंते तोरुत्तदे। सृष्टिय ई पुस्तकदल्लि सुंदर अक्षरगळिंद परमात्म अेल्लेल्लू बरेदिदाने। नमगे अदु काणदु। हत्तिरदल्ले इरुव सादा ईश्वर रूप मनुष्यनिगे अर्थवागदु। दूरदल्लिरुव प्रखर रूपवन्नु तडेयलागदु। ईश्वर दर्शनक्के इदोंदु दोड्ड विघ्न। तायियल्ले देवरन्नु काणु – अेंदु हेळिदाग देवरु इष्टु सादा इरुवुदुंटे अेंदु मनुष्यन प्रश्ने। प्रखर परमात्म प्रकटवादरे नीनु तडेयबल्लेया?

दूरद सूर्य हत्तिर बरलेंदु कुंति आशिसिदळु। आदरे आत हत्तिर वंद हागे आके उरियतोडगिदळु -- आ उग्रतेयन्नु सहिसलारदे। तन्न अेल्ल शक्तियिंद ईश्वर अेदुरिगे वंदु नितरे तडेयलागुवुदिल्ल। तायिय सौम्यरूपदिंद काणिसिदरे नवलागुवुदिल्ल। मिठायि जीर्णवागदु। सादा हालु रुचिसदु। ई लक्षण रोगद्दु, मरणद्दु। परमात्मन दर्शनक्के इंथ रोगिष्ट मनःस्थिति सल्लदु। अदन्नु बिट्टु बिडलेबेकु। मोदलु नम्म बळि इरुव स्पष्ट, सरल परमात्मनन्नु नोडबेकु। अनंतर सूक्ष्म, कठिन परमात्मनन्नु नोडबेकु।

51. मानवरोळगिन देवरु

मोट्टमोदलनेय परमात्म -- मूर्ति तायि। 'मातृ देवो भव' अेंदु हेळुत्तदे श्रुति। हुट्टुत्तले मगुविगे तायिय दर्शन। वात्सल्यरूपदिंद परमात्मन मूर्तिये अल्लि नितहागिरुत्तदे। ई तायिय व्याप्तियन्ने बेळेसि 'वंदे मातरं' अेंदु राष्ट्रमातेयन्नु, मुंदे भूमाते पृथ्वियन्नु पूजिसुत्तेवे। आदरे मोदलिगे मगुविनेदुरु नित परमात्मन उच्च प्रतिमे तायियदे! तायिय पूजेयिंद मुक्ति दोरेयुवुदेनू असाध्यवल्ल। तायिय पूजे अेंदरे वात्सल्य रूपदिंद बंद परमात्मन पूजे। तायि निमित्त मात्र। अवळल्लि तन्न वात्सल्यवन्निरिसि परमात्म अवळन्नु कुणिसुत्ताने। तन्नोळगे इष्टोंदु वात्सल्यवेके अेंवुदु आकेगे तिळियदु। इळिवयस्सिनल्लि उपयोगक्के बरलि अेंब लेक्काचारदिंद आके मगुविन सेवे माडुत्ताळेनु? छे! आके आ मगुवन्नु हेत्तळु। वेने अनुभविसिदळु। आ नोवे आकेगे आ मगुविन बग्गे गीळु हुट्टिसितु। अवळन्नु वत्सले-

यन्नागि माडिदू आ वेनेये। मगुवन्नु प्रीतिसदिरलु अवळिंद साध्य-
विल्ल। निस्सीम सेवेयमूर्ति आ तायि! अत्युत्कृष्ट परमात्म पूजे ई
तायिय पूजे। ईश्वरनन्नु करेयुवुदू तायि अेतले। इदक्किंत उच्च
शब्दविन्नेल्लि? तायि अेंबुदु मोदलनेय स्पष्ट शब्द। अल्लि ईश्वरनन्नु
काणलु कलियबेकु। आमेले तंदे, गुरु मोदलादवरल्लि देवरन्नु काण-
बहुदु। गुरु शिक्षण कोडुत्ताने। पशुगळंतिद्दवन्नु मानवरन्नागि माडु-
त्ताने। अेंथ उपकार आतनदु! मोदलु तायि, आमेले तंदे, अनंतर
गुरु, आमेले साधु शरणरु। तीर स्पष्टरूपगळल्लिरुव ई देवरन्नु
मोदलु काणलु कलियबेकु। इल्लि आत काणिसदिद्दरे इन्नेल्लि काणिसि-
यानु?

तायि, तंदे, गुरुगळल्लि देवरन्नु गुरुतिसिदहागे चिक्क मक्कळल्लि
सह आतनन्नु गुरुतिसुवुदादरे अेष्टु सोगसु! ध्रुव, प्रह्लाद, नचिकेत,
सनक, सनंदन, सनत्कुमार अेल्लरू पुट्टपुट्ट मक्कळे। अवर वर्णनेगळल्लि
व्यासादिगळु, पुराणकाररु तल्लीनरागिहोगिदारे। शुकदेव, शंकराचार्यरू
बालकरे। अवर रूपदल्लि परमात्म अेष्टु शुद्ध रीतियल्लि प्रकटवादनो
हागे इन्नेल्लू प्रकटवागलिल्ल। मक्कळेंदरे क्रिस्तनिगे बलु प्रीति।
ओम्मे शिष्यनोब्ब केळिद: 'नीवु यावागलू देवर राज्यद बग्गे
माताडुत्तीरि। ई राज्यदल्लि प्रवेश दोरेयुवदादरू यारिगे?' हत्तिर
ओब्ब हुडुग निंतिद्द। आतनन्नेत्ति मेले येसु निल्लिसिद। 'ई हुडुगन
हागे इरुववरिगेल्ल अल्लि प्रवेश' अेंद। येसुविन मातु सत्य। ओम्मे
रामदासस्वामि मक्कळोंदिगे आडुत्तिद्दरु। अदन्नु कंडु केलवु सभ्यरिगे

आश्चर्यवायितु। ' एनु स्वामि, इदु नीवु नडेसिरोदु ' एंदु ओन्व केळिद। अदक्के समर्थरेंदरु

' वयसिनाग पोर, आदानव तोर
वयसिनाग थोर, आग्यानव चोर।

वयस्सु हेच्चिदहागे कोंवु मूडुत्तवे। आग देवर नेनपु आगदु। चिक्क मगुविन मनदमेले लेपविरुवुदिल्ल। अवन बुद्धि स्वच्छवागिरुत्तदे। ' सुळ्ळु हेळबारदु ' एंदु मगुविगे बोधिसुत्तारे। ' सुळ्ळु हेळुवुदेंदरेनु ' एंदु आत केळुत्ताने। आग ' इद्ददन्नु इद्दंते हेळबेकु ' एंब सिद्धातवन्नु अवनिगे तिळिसुत्तारे। आ मगुविगे पीकलाट। इद्ददन्नु इद्दंते हेळुवुदल्लदे बेरे इन्नोंदु रीतियू इरुवुदुटे? इल्लदुदन्नु हेळुवुदु हेगे? चौकवन्नु चौक अन्नबेकु, वर्तुलवेंदु अन्नकूडदु – एंदहागे इदु। आ मगुविगे आश्चर्यवागुत्तदे। मक्कळेंदरे शुद्ध परमात्मन मूर्तिगळिद्दहागे। अवरिगे हिरियरु सुळ्ळु शिक्षण कोडुत्तारे। इरलि। तायि, तंदे, गुरु, शरणर, मक्कळ रूपदल्लि नावु देवरन्नु काणदिद्दरे इन्नाव रूपदल्लि कंडेवु; इवक्किंत उत्कृष्ट रूप परमात्मनिगे बेरे इल्ल। आतन ई सादा, सौम्य रूपगळन्नु मोदलु गुरुतिसबेकु। इदु दप्पक्षरद परमेश्वर।

52. सृष्टियोळगे परमेश्वर: केलवु उदाहरणे

मोदलु मानवन सौम्यतम पावन मूर्तिगळल्लि परमात्मनन्नु काणलु कलियोण। हागे सृष्टियल्लिन विशाल मनोहर रूपगळल्लि मोदलु आतनन्नु काणलु कलियबेकु।

आ उषा! सूर्योदयक्के मोदलिन आ दिव्य प्रभे। आ उषा-देविय हाडु हेळुवाग ऋषिगळु नर्तिसुत्तिद्दरु। 'ओ उषा, परमात्मन संदेशदोंदिगे बरुव दिव्यदूति नीनु। मंजिन मणिगळल्लि मिंदु बंदवळु। अमृतत्वद बावुट नीनु एंदु ऋषिगळु भव्यवागि, हृदयंगमवागि वर्णि-सिदारे। 'परमेश्वरन संदेश होत्तुबरुव निन्नन्नु नोडि आतनन्नु नानु गुरुतिसदिद्दरे इन्नारु आतनन्नु ननगे तोरिसुववरु' एंद वैदिक ऋषि। एंथ चेलुविन रूपदिंद नर्तिसुत्त बंदु निल्लुत्ताळे उषे! नम्म दृष्टि अत्त होरळिदरे ताने?

हागेये आ सूर्य। आतन दर्शन एंदरे परमात्मन दर्शन। आत आकाशदल्लि बगे बगेय चित्र बरेयुत्ताने। बेळगे एद्दु नोडबेकु आतन कलेयन्नु। आ दिव्य कलेगे, आ अनंत सौंदर्यक्के उपमे कोडलु साध्यवे। आदरे यारु नोडुत्तारे? अल्लि आ सुंदर भगवत बंदिदाने, इल्लि ईत इन्नू हागे होदेदुकोंडु मलगुत्ताने! 'सोमारि, मलगबेकु एन्नुत्तीयल्लवे। निन्नन्नेब्बिसदे ना बिडुवुदिल्ल' एन्नुत्ताने सूर्य। तन्न बेच्चनेय किरणगळन्नु तोरिसि आ सोमारियन्नु एच्चरिसु-त्ताने।

"सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च"

सूर्य स्थावर जंगमक्केल्ल आत्म। चराचरक्केल्ल आत्म, आधार। ऋषिगळु आतनन्नु 'मित्र' एंदु करेदिदारे।

"मित्रो जनान् यातयति ब्रुवाणो
मित्रो दाधार पृथिवी मुतद्याम्"

"ई गेळेय जनपदवन्नेल्लविमुत्ताने। केलसक्के तोडगिसुत्ताने। स्वर्ग-पृथ्विगळन्नात धारणे माडुत्ताने। निजवागियू आ सूर्य वाळिन आधारवागिदाने। आतनल्लि देवरन्नु नोडि।"

पावनेयाद आ गंगे! नानु काशियल्लिद्दाग गंगातीरदल्लि कूडुत्तिद्दे। आ रात्रि एकांतवागि होगुत्तिद्दे। आ प्रवाह अेष्टु सुंदर! एष्टु प्रशांत! गंगानदिय आ भव्य गंभीर प्रवाह, अदर कन्नडिय मेले मूडिद अनंत तारे! नानु मूकनागुत्तिद्दे। शंकरन जडेयिंद, अंदरे हिमाचलदिंद हरिदु-बरुव आ गंगे! राजरु राज्यगळन्नु तृणवत्तागि भाविसि बिसुट्टु अवळ तीरदल्लि तपस्सु माडलु बरुत्तिद्दरु। अंथ आ गंगेयन्नु कंडु ननगे गाढगाति दोरेयुत्तित्तु। अदन्नु नानु वर्णिसलारे। अल्लिगे माते मुगियुत्तदे। सत्तवळिक तन्न मूळेयादरू गंगेयल्लि बीळलेंदु हिंदू मनुष्य आशिसुवुदर कारण ननगाग तिळियुत्तित्तु। नीवु नगबहुदु। अदरिंदेनू केडुवुदिल्ल। ननगेमात्र ई भावनेगळु तुंब पवित्रवागियू संग्रह-णीयवागियू तोरुत्तवे। सायुवाग गंगा जलद अेरडु हनियन्नु बायिगे बिडुत्तारे। आ हनिगळ मूलक परमात्मने मुखदल्लि अवतीर्णनागुत्ताने। आ गंगे अंदरे परमात्म। अवन करुणेयागि हरिदबळु आके। निम्म होरगिन कोळेयन्नेल्ल तोळेद तायि। गंगेयल्लि परमात्म प्रकटवादुदु काणिसदिद्दरे इन्नेल्लि काणिसबहुदु? सूर्य, नदिगळु, एरि इळियुव आ अनंत समुद्र – अेल्लवू परमात्मन मूर्तिगळे।

आ गाळि! अदु बरुवुदेल्लिंद, होगुवुदेल्लिगे – यारिगू तिळि-

यदु। भगवंतन दूत अदु । भारतदल्लिन केलवु गाळि मेलिन स्थिर हिमालयदिंद बंदरे, इन्नु केलवु गंभीर सागरदिंद बरुत्तवे। ई पवित्र-गाळि नम्म अेदेयन्नु स्पर्शिसुत्तवे। नम्मन्नु जागृतगोळिसुत्तवे। नम्म किवियल्लि गुणिगुणिसुत्तवे। अवुगळ सदेशवन्नारु केळबेकु? नमगे बंद नाल्कु सालिन पत्रगळन्नु सेरेमनेयधिकारि नमगे मुट्टिसदिद्दरे हुच्चरा-गुत्तेवे। अेलो हतभाग्य, एनुंटु आ चीटियल्लि? परमेश्वरन अनंत संदेशगळु क्षण क्षणक्कू गाळियल्लि बरुत्तिवेयल्ल -- अवुगळिगे किवि-गोडु! नम्म केलस कार्यगळन्नु माडुव ई दन, ई हसु -- ओष्टु वत्सल, जेष्टु प्रेमल! अेरडु मूरु मैलि दूरद काडिनिंद ओडि बरुत्तदे करुवि-गागि। गुड्ड बेट्टगळिंद स्वच्छवाद नीरन्नु होत्तु धो धो अेंदु हरियुत्त बरुव नदिगळन्नु कंडाग वेदद ऋषिगळिगे, तुंबिद मोलेगळोंदिगे करुविगागि हातोरेयुत्त बरुव हसुविन स्मरणेयागुत्तदे। अवरु नदि-यन्नु कुरितु हेळुत्तारे. "हे देवि, हालिनंथ पवित्र पावन मधुर नीरन्नु तरुव नीनु प्रत्यक्ष कामधेनु। हसु काडिनल्ले इरलारदु। हागे नीनू बेट्टदल्लिरलारे। अल्लिंद जिगियुत्त नीरडिसिद मक्कळ भेट्टिगागि नीनु बरुत्ती।"

"वाश्रा इव धेनवः स्यदमाना"

वत्सल हसुविन रूपदल्लि भगवंतने निंतिद्दाने आगिलल्लि।

इन्नु आ कुदुरे -- ओष्टु उत्तम, ओष्टु प्रामाणिक, ओष्टु स्वामिनिष्ठ! अरब्बीगळिगे कुदुरेयमेले अदेष्टु प्रीति! आ अरब्बि-यवन कते गोत्तिलवे निमगे? तोंदरेगोळगाद आ अरब्बियवनु तन्न

कुदुरेयन्नु सोदागारनिगे मारलु सिद्धनागुत्ताने । कैयल्लि चील हिडिदु-कोंड्डु अदर हत्तिर होगुत्ताने । कुदुरेय गंभीर, प्रेमल कण्णिन-कडे अवन दृष्टि होरळुत्तदे । अवन हृदय तुंबि बरुत्तदे । 'प्राण होदरू चिंतेयिल्ल । ई कुदुरेयन्नु नानु मारलारे । आगुवुदेल्ल आदीतु । होट्टेगे सिगदिद्दरू सरिये । देवरु नोडिकोंडानु' एन्नुत्ताने । बेन्नु चप्परिसुत्तल हेगे प्रीतियिंद फुरु फुरिसुत्तदे । एष्टु चंद ई आयाल, निजक्कू कुदुरेय गुण अमौल्य । एनिदे आ सैकलिनल्लि ? कुदुरेय सेवे माडिदरे निमगागि अदु प्राणवन्नादरू कोट्टीतु । निम्म गेळेयनादीतु । नन्न गेळेयनोब्ब कुदुरे सवारि कलियुत्तिद्द । अदु अवनन्नु केडहुत्तित्तु । आत नन्न हत्तिर बंदु, कुदुरे नन्नन्नु बेन्नमेले एरगोड्डुवुदिल्लवल्ल' एंद । नानु 'नीवु अदर मेले वरी सवारि माडलु होगुत्तीरि । अदर सेवेयन्नेदादरू माडुत्तीरा ? अदक्के तिनिसु हाकि, नीरु कुडिसि, मै तिक्कि—अनंतर कूतुकोळ्ळि' एंदे । आत हागे माडतोडगिद । केल्वु दिन कळेद बळिक नन्न बळिगे बंदु 'ईग कुदुरे नन्नन्नु केळक्के दूडुवुदिल्ल' एंद । कुदुरे एंदरे परमात्म । भक्तनन्नात दूडुवने ? आतन भक्तियन्नु कंडु कुदुरे नम्रवायितु । ईत भक्तनो अल्लवो एंदु परीक्षिसुत्तदे कुदुरे । भगवान् श्रीकृष्णनू सह कुदुरेय सेवे माडुत्तिद्द । तन्न पीतांबरदल्लि हाकि हुरुळि तिन्निसुत्तिद्द । दारियल्लि हळ्ळ, तिट्टे, केसरु अड्डबंदरे सैकलु दाटलारदु । कुदुरेयो नेगेयुत्त होगुत्तदे । सुंदर प्रेमल कुदुरेयेंदरे परमेश्वरन मूर्तिये ।

इन्नु सिंह' नानु बडोदेयल्लिद्दाग बेळगिनजाव अदर गर्जनेय

ध्वनि किवि सेरुत्तित्तु। देवालयद गर्भगुडियल्लि गुंयिगोडुव ते अदर हृदयगर्भद आळदिंद वद दनि। तत्क्षण हृदय त्तित्तु। सिंहद आ धीरोदात्त गंभीर मुद्रे! अदर आ राजठीवि, वैभव! वनराजनमेले चवरि बीसिदहागिरुव आ भव्य सुंदर ! वडोदेय उपवनदल्लि आ सिंह इत्तु। मुक्तवागिरलिल्ल। दल्लिये ओडियाडुत्तित्तु। अदर कण्णुगळल्लि क्रौर्यद कळे कोचवू ल्ल। आ मुखमुद्रेयल्लि दृष्टियल्लि, कारुण्य तुविरुत्तित्तु। लोकद ये अदक्किद्दहागिरलिल्ल। यावागलू तन्न ध्यानदल्ले। परमेश्वरन न मूर्ति अदु – अंदु ननगनिसुत्तदे। आन्ड्रोक्लीस् मत्तु सिंहद कते- वालयदल्लि नानोदिदे। आ कते ऎष्टु सुंदर! हसिदागलू सह सिंह आन्ड्रोक्लीसन उपकारवन्नु नेनेदु अवन गेळेयनागुत्तदे। अवन ड नेक्कतोडगुत्तदे। इदर अर्थवेनु? सिंहदल्लिन परमात्मनन्नु ोक्लीस कंडिद्द। शंकरन हत्तिर सिंह यावागलू इरुत्तदे। भगवंतन य विभूति सिंह।

हुलिय चमत्कारवेनु अल्पवे? अदरल्लि सह ईश्वरन तेजस्सु टवागिदे। अदरोंदिगे गेळेतन माडुवुदु अशक्यवल्ल। भगवान् णिनि काडिनल्लि शिष्यरिगे पाठ हेळुत्तिद्दाग हुलि बंतु। मक्कळिगे भरियागि, 'व्याघ्र व्याघ्रः' अंदु कूगिकोंडरु। पाणिनि 'हौदु, घ्र अंदरेनु? व्याजि घ्रातीति व्याघ्र। यावुदक्के घ्राणेंद्रिय तीक्ष्णवो ु व्याघ्र' अंदरु। हुलियन्नु कंडु मक्कळिगे हेदरिके। भगवान् णिनिगे मात्र हुलि निरुपद्रवियू आनंदमयवू आद शब्दवागित्तु।

व्याघ्रवन्नु विवरिस तोडगिदरु। हुलि अवरन्नु तिंदु हाकितु। आदरे एनंते? अदक्के अवर देहद वासने सवियेनिसितु। सरि। तिंदुबिट्टितु। पाणिनि मात्र पलायन माडलिल्ल। शब्द ब्रह्मद उपासकरु अवरु। अवरिगेल्लवू अद्वैतवे। हुलियल्लू कूड अवरु शब्द ब्रह्मद अनुभव पडेदरु। अवर ई महात्मेयिंदागिये भाष्यगळल्लि पाणिनिय हेसरु बंदागलेल्ल 'भगवान् पाणिनि' एंब पूज्यभावदिंद संबोधिसलागिदे। पाणिनिय उपकार दोड्डदु एंदिदारे।

> "अज्ञानांधस्य लोकस्य ज्ञानाजनशलाकया।
> चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै पाणिनये नमः॥"

हीगे भगवान् पाणिनि हुलियल्लि परमात्मनन्नु कंडरु। ज्ञानेश्वररु हेळिदारे

> 'घरा येवो पास्वर्ग। का वरि पडो व्याघ्र।
> परी आत्म बुद्धीसी भंग। कदा नोहे॥'

महर्षि पाणिनिय स्थिति हीगित्तु। हुलि दैवी विभूतियेंबुदु अवरिगे तिळिदित्तु।

हागे आ हावु। अदन्नु कंडरे हेदरुत्तारे। आदरे हावु कट्टा नैष्ठिक ब्राह्मण। एष्टु स्वच्छ, एष्टु सुंदर! स्वल्प कोळेयिद्दरू अदक्कागदु। कोळकु ब्राह्मणरेष्टो जन। कोळकु हावो? छे! एकांतवासि ऋषियंथ प्राणि इदु। निर्मल, सतेज, मनोहर, हारदतिरुव ई हाविगेके हेदरबेकु? अदन्नु पूजिसबेकेंदु नम्म पूर्वजरु हेळिदारे। हिंदू धर्मदल्लि एथेंथ हुच्चुरीति इवु—एंदु नीवेन्नबहुदु। नागपूजे

माडबेकेंदु हेळिदुदु निज। बाल्यदल्लि नानु गंधद हावु माडि तायिगे कोडुत्तिद्दे। 'पेटेयल्लि इन्नू चलोदु सिक्कुत्तदल्ल' ऎन्नुत्तिद्दे। तायि 'अदु उपयोगविल्लदुदु। बेड। मगन कैयदे ओळ्ळेयदु' ऎन्नुत्तिद्दरु। अनंतर आ हाविन पूजे। इदेनु हुच्चु? कोंच विचारमाडि नोडि। श्रावणमासदल्लि आ हावु अतिथियागि नम्म मनेगे बरुत्तदे। मळेय नीरिनिंद आ बडपायिय मने तुंबिहोगुत्तदे। इन्नेनु माडबेकु अदु? दूर एकांतदल्लिरुव आ ऋषि निमगे सुम्मने हेच्चु तोंदरे कोडबारदेंदु कट्टिगेगळ मध्ये बिद्दुकोंडिरुत्तदे। साध्यविद्दष्टु कडमे स्थळवन्ने व्यापिसिकोळ्ळुत्तदे। आदरू नावु दोण्णे ऎत्तिकोंडु धाविसुत्तेवे। संकटकोळगाद अतिथि मनेगे बंदाग अवनन्नु होडेयबेके नावु? सेयिंट् फ्रान्सिस् बग्गे ऒंदु कतेयिदे। काडिनल्लि हावुगळन्नु नोडुत्तल आत 'तम्म, बन्नि' ऎंदु प्रीतियिंद करेयुत्तिद्द। आ हावु बंदु अवन तोडेयमेले आडुत्तिद्दवु। मैमेले परि नलिदाडुत्तिद्दवु। इदु सुळ्ळु ऎनबेडि। प्रीतियल्लि अंथ शक्तियुंटु। हाविनल्लि विषविदे। मनुष्यनल्लि विषविल्लवे? हावु कच्चिदरू क्वचित्तागि। बेकेंतले अदु कच्चुवुदिल्ल। नूररल्लि तोंबत्तु हावुगळिगे विषविल्ल। निम्म होलवन्नु अदु कायुत्तदे। बेळेयन्नु नाशगोळिसुव असंख्य हुळुहुप्पडिगळन्नु तिंदु अदु बदुकुत्तदे। हाविल्लदिद्दल्लि बेळेय रक्षणे असाध्य। परोपकारि, शुद्ध, तेजस्वि, एकांतप्रिय आद ई हावु भगवत् स्वरूपि। नम्म देवतेगळल्लेल्ल ऒंदिल्लॊंदुकडे हावु इद्दे इदे। गणपतिय सोंटक्के हावु। शंकरन कोरळिगे हावु। भगवान् विष्णुविगंतू हावे हासुगे। हावि-

नल्लि भगवंतन मूर्ति प्रकटवागिरुवुदे ई अल्लदर भावार्थ। हाविनल्लि आ परमेश्वरन परिचय माडिकोळ्ळि।

53. सृष्टियोळगिन परमेश्वर : इन्नू केलवु उदाहरणे

इंथ उदाहरणे अेष्टु हेळलि? नानु कोट्टिरुवुदु बरी कल्पने। रामायणद सारसर्वस्व ई बगेय रमणीय कल्पनेगळल्लिदेयेंदु नन्न अभिप्राय। अल्लि तंदे मक्कळ प्रीति, तायि मक्कळ प्रीति, अण्ण तम्मंदिर प्रीति, पति-पत्नियर प्रीति – अेल्ला इदे। इदक्कागि रामायण ननगे प्रियवेनिसदु। रामनिगू वानररिगू सख्य बेळेयितल्ल। अदक्कागि रामायण अेंदरे ननगे प्रीति। वानररु नागजन अेंदु ईचेगे हेळुत्तारे। हळेयदन्नु तोडुवुदु इतिहासज्ञर केलस। आ बगे नानु दूरलारे। आदरे निजक्कू राम वानररोडिगे सख्य बेळेसिदुदरल्लि अशक्यवेनिदे? राम वानररल्लि स्नेह बेळेसिदुदरल्ले रामन रामत्व, रमणीयत्व। हागे हसुगळोडिगे कृष्णन संबंध। कृष्ण पूजेयेल्ल अदे आधारदमेले निंतिदे। श्रीकृष्णन चित्र अेंदरे अवन सुत्तमुत्त हसुगळिद्दे तीरबेकु। गोपालकृष्ण! गोपाल कृष्ण! कृष्णनिंद हसुगळन्नु बेर्पडिसिदरे अवनल्लि उळियुवुदेनु? रामनिंद वानररन्नु दूरमाडिदरे रामनेनु उळिद? वानररल्लि सह राम परमात्मनन्नु कंड। अवरोडिगे प्रीतिय, आत्मीयतेय संबंध बेळेसिद। रामायणद बीगद कै इदु। इदिल्लवादरे सविये इल्ल। तंदे मगन, तायि मक्कळ संबंध बेरेडेगू सिक्कीतु। आदरे नरवानरर मधुर मैत्रियन्नु रामायण तोरिसितु। बेरेल्लू इल्ल। वानररोळगिन देवरन्नु अरगिसिकोंडितु। वानररन्नु कंडु ऋषिगळिगे कौतुकवागु-

त्तित्तु । नेलदमेले कालिडदे गिडगळमेले हारुत्त तिरुगुव आ कोति-गळन्नु कंडु ऋषिगळिगे काव्यस्फूर्तियुंटागुत्तित्तु । ब्रह्मन कण्णु कोतिय कण्णिनंते इरुवुदेंदु उपनिषत्तिनल्लि हेळिदे । वानरर नेत्र चंचल । नाल्कू कडेगू अदर दृष्टि । ब्रह्मनिगू अंथ कण्णे बेकु । ईश्वरन कण्णु स्थिरवागिद्दु प्रयोजनविल्ल । नावु नीवु ध्यानस्थरागि कूडबहुदु । ईश्वर ध्यानस्थनादरे सृष्टिय गतियेनु ? अेल्लर योगक्षेम-वन्नू नोडुव ब्रह्मन कण्णु वानररल्लि काणिसिदवु ऋषिगळिगे । कोति गळल्लू देवरन्नु काणलु कलियिरि ।

इन्नु आ नविलु ! इल्लि नविलु हेच्चागिल्ल । गुजरातिनल्लि हेच्चु । नानु गुजरातिनल्लिद्दे । नित्यवू हत्तु हन्नेरडु मैलु अलेयुव चट नन्नदु । हीगे अलेयुवाग आगाग नविलन्नु नोडुत्तिद्दे । आकाश-दल्लि मोड कविदिरबेकु, मळे बीळुवहागिरबेकु, मुगिलिगे गाढवाद कप्पु बण्ण एररिबेकु, आग नविलु दनि येत्तुत्तदे । हृदय कल-मलगोळ्ळु अेद्द आ केकेयन्नु केळि ; तिळिदीतु । नविलिन आ स्वर-वेंदरे 'षड्जं रौति' ई मोदलने षड्ज हेळिदुदु नविलु । अनंतर हेच्चु कडमे प्रमाणदल्लि नावु इतर स्वरगळन्नु होंदिसिदेवु । मोडगळ कडेगिरुव अदर दृष्टि, आळवाद आ स्वर, गड गड धिमि धिमि अेंदु मेघगर्जने मोदलागुत्तलू अेद्दु निल्लुव अदर चवरि ! अेलेला ! आ चवरिय मुंदे मानवन ठीवियेल्लवू कळाहीन । बादषह सिंगरिसिकोळ्ळु-त्ताने । आ चवरियमुंदे अवन अलंकारवे ? अेंथ भव्य पिंछ, आ साविर कण्णु, आ बगे बगेय बण्ण, आ अनंत छाये, अद्भुत सुंदर

मृदु रमणीय रचने – नोडि। आ चवरियन्नु नोडि। अल्लिरुव परमात्मनन्नु गुरुतिसि। ई ऎल्ल सृष्टियू हीगे अलंकृतवागिदे। ऎल्लॆल्लू परमात्म दर्शन कोडुत्त नितिदाने। नोडलारद निर्भाग्यरु नावु। तुकाराम् हेळिदारे –

'शरणरिगे सर्वत्र सुभिक्ष।
निरभाग्य गेल्लॆडॆयु दुर्भिक्ष॥'

शरणरिगे ऎल्लॆल्लू सुफल। निर्भाग्यरिगे नमगे मात्र ऎल्लॆल्लू बरगाल।

वेददल्लि अग्निय उपासनॆय विचारविदे। अग्नियू नारायण। ऎंथ देदीप्यमान मूर्ति अदु। ऎरडु कट्टिगे उज्जिदरे तत्क्षण प्रकटवागुत्ताने। अदक्के मोदलु ऎल्लि अवितुकॊंडिद्दानो यारु बल्लरु? ऎष्टु बिसि, ऎष्टु तेजस्सु! वेदगळ मोदलने दनि होरडुदु अग्निय उपासनॆयिंद।

'अग्निमीळे पुरोहीतं यज्ञस्य देवमृत्विजं।
होतारं रत्नधातमं॥'

याव अग्निय उपासनॆयिंद वेदगळु मोदलादुवो, आ अग्निय कडॆ नोडि। आतन आ ज्वालॆगळन्नु नोडिदाग ननगे जीवात्मन खटिपिटि नॆनपागुत्तदॆ। आ ज्वालॆ मनॆयल्लिन ऒलॆयदादरू सरि, काडिनल्लि काळ्गिच्चिनदादरू सरि। वैरागिगॆल्लिय मनॆमारु? आ ज्वालॆ ऎल्लि इद्दरे अल्लि अदर हाराट मोदलु। निरंतर तळमळ। मेलक्के होगबेकॆंदु अदक्के आतुर। हवॆय ऒत्तडदिंद आ ज्वालॆ अलुगाडुत्तदॆ ऎंदीरि नीवु। नन्न अर्थवंतु हीगे। मेलिरुव आ परमात्मनन्नु,

आ तेजः समुद्र सूर्यनारायणनन्नु काणुवुदक्कागि अदु सदा नेगेयुत्तिरु-त्तदे। हुट्टिदंदिनिंद सायुववरेगे निरंतर हाराट अदरदु। सूर्य अंशि; ज्वाले अंश। अंशिय कडे होगलु अंशद चडपड। आ ज्वाले आरि-दाग मात्र आ खटिपटि निंतीतु। अदुवरेगू इल्ल। सूर्यनिगू तमगू तुंब अंतरविदेयेंब विचारवे अदक्किल्ल। तन्न शक्तियिद्दष्टु ई भूमियिंद हारुवुदोंदु मात्र अदक्के गोत्तु। इंथ ई अग्निय रूपदल्लि, धगधगिसुव वैराग्यवे प्रकटवागिदे। अंतले 'अग्निमीळे' एंदु वेदगळ मोदल सोल्लु होरटद्दु।

आ कोगिले! अदन्नु हेगे ताने मरेयलि? यारन्नु करेयुत्तदो अदु? वेसगेयल्लि होळे केरे बत्तिदवु। गिडगळुमात्र चिगितवु। यारु ई वैभववन्नु कोट्टरु? एल्लिदाने आ वैभवदात एंदु केळुत्तदेयेनु आ कोगिले? एंथ उत्कट मधुरस्वर! हिंदू धर्मदल्लि कोगिलेय व्रतविदे। कोगिलेय दनि केळिदल्लदे ऊट माडुवुदिल्लवेंदु महिळेयरु व्रत तोडु-त्तारे।' कोगिलेय रूपदल्लि प्रकटवागुव परमात्मनन्नु नोडलु कलिसुव व्रत-इदु। एंथ सुंदर दनि अदरदु। उपनिषत्तिन गायनविद्दंते! अदर दनियेनो किविगे बीळुत्तदे। कोगिलेमात्र काणिसदु। आ आंग्ल कवि वर्डसवर्त् अदक्कागि हुच्चनागुत्ताने। अदन्नु हुडुकुत्त काडु बेट्ट अलेयुत्ताने। इंग्लेंडिन महाकवि कोगिलेयन्नु शोधिसिदरे, भारतद स्त्रीयरु अदन्नु नोडदे ऊटवन्नु माडुवुदिल्ल। कोगिलेय व्रतदिंदागि नम्म स्त्रीयरु कविय पदवि पडेदिदारे। परमानंदद मधुर ध्वनि बीरुव कोगिलेय रूपदल्लि परमात्मने प्रकटवागुत्ताने।

कोगिलेयेनो चेढ। आ कागे मात्र कुरूपिये? सरल परमात्म-नन्नु कंडिरि। इन्नु संमिश्र परमात्मनन्नु नोडि। कागेयन्नु कंड्ड वेरगागि। नानंतू अढन्नु तुंबा मेच्चुत्तेने। अदर नुण्णनेय करिगिन कप्पु वण्ण। आ तीव्र ध्वनि! आ दनियेनु केट्टदे? अदरल्ल माधुर्य-वुंट्टु। रेक्केगळन्नु पटपट बडियुत्त बरुवाग ऎष्टु चेंद काणुत्तदे आ कागे! मक्कळ लक्ष्यवन्नेळेदुकोळ्ळुत्तदे। मुच्चिद बागिलिनोळगडेगे कुळितु चिक्क मगु ऊटमाडलोप्पदु। होरगडे अंगळदल्लि 'काव् काव्' ऎन्नुत्त अदक्के तिनिसबेकागुत्तदे। कागेयन्नु कडरे आ मगुविगे प्रीति। अदेनु हुच्चे? अल्ल। अपार ज्ञान अदक्किदे। कागेय रूपदिंद प्रकट-वाद परमात्मनोंदिगे अदु तट्टने समरसवागुत्तदे। तायि अन्नक्के मोसरु नीडलि, तुप्प नीडलि, सक्करे हाकलि, आ कडे मगुविगे गमनविल्ल। कागेय पट पट दनि, अदर कूगाटगळन्नु निरीक्षिसुवुदरल्ले अदक्के संतोष। सृष्टिय बगेगे मगुविगिरुव ई कौतुकद आधारद मेलेये 'इसोप नीति' येल्लवू निंतिदे। ऎल्ल कडेगळल्लू इसोपनिगे देवरु काणिसुत्तिद्द। नन्न मेच्चुगेय ग्रंथगळ पट्टियल्लि इसोप नीतिगे मोदलने स्थान कोट्टेनु, मरेयलारे। इसोपन राज्यदल्लि ऎरड्डु कै, ऎरड्डु कालिन ई मानव प्राणि मात्रवल्ल, नायि-नरि, मोल-तोळ, कागे-गुब्बि ऎल्लवू उंट्टु। अवेल्लवू मातनाडुत्तवे। नगुत्तवे। अदोंदु प्रचंड सम्मेळन। चराचर सृष्टियेल्ल इसोपनोंदिगे मातनाडुत्तदे। अवनिगे दिव्य दर्शनवागिदे। रामायण रचितवादुदू इदे दृष्टियिंद। इदे तत्त्वदिंद। रामन बाल्यवन्नु तुलसी-दासरु वर्णिसिदारे। अंगळदल्लि राम आडुत्तिद्दाने। हत्तिर कागे

इदे। राम मेल्लने अदन्नु हिडियलु यत्निसुत्ताने। अदु दूर होगुत्तदे। कोनेगे अवनिगे दणिवागुत्तदे। ओंदु उपाय माडुत्ताने। कैयल्लि मिठायि हिडिदुकोंडु अदर मुंदे हिडियुत्ताने। कागे स्वल्प हत्तिर बरुत्तदे। ई वर्णनेयिंद तुलसीदासरु पुट पुट तुंबिदारे। अदक्के कारण आ कागे परमेश्वर। रामन मूर्तियल्लिन अंशवे अदरल्लू इदे। रामन मत्तु कागेय आ परिचय, परमात्म – परमात्म परिचय।

54. दुर्जनरल्लू परमात्म दर्शन

सारांश – ई रीतियल्लि नानारूपगळिंद – पवित्र नदि, विशाल पर्वत, गंभीर समुद्र, वत्सल हसु, उत्साहि कुदुरे, गभीर सिंह, मधुर कोगिले, सुंदर नविलु, स्वच्छ मत्तु एकांतप्रिय सर्प, रेक्के बीसुत्त हारुव कागे, धडपडिसुव ज्वाले, प्रशांत तारेगळु ई रूपगळिंद परमात्म एल्लेल्लू तुंबिकोंडिदाने। कण्णुगळिगे नोडुव रूढियागबेकु। मोदलु स्पष्ट सरल अक्षर, अनंतर चिक्क संयुक्ताक्षर कलियबेकु। संयुक्ताक्षर कलित होरतु ओदिनल्लि प्रगतियिल्ल। संयुक्ताक्षर मत्ते मत्ते बरुत्तवे। दुर्जनरल्लि परमात्मनन्नु मेच्चबेकु। प्रह्लादनन्नु मेच्चुत्तेवे। हिरण्यकशिपुवन्नु मेच्चबेकु।

वेददल्लि, रुद्रसूत्रदल्लि हेळिदे –

" नमो नमः स्तेनाना पतये नमो नमः।
नम. पुंजिष्टेभ्यो नमो निषादेभ्य· "
" ब्रह्म दाशा ब्रह्म दासा ब्रह्मैवेमे कितवा "

" दरोडेगारर आ नायकनिगे नमस्कार ; आ भिल्ल कळ्ळरिगे

नमस्कार। ई ठक्करु, ई दुष्टरु, ई कळ्ळरु — ऎल्लरू ब्रह्मरे ऎल्लरिगू नमस्कार।"

इदर अर्थविष्टे। सुलभ अक्षरगळन्नेनो कलितेवु। इन्नु कठिन अक्षरगळन्नु कलियबेकु। कार्लैल् ऎंब लेखक 'विभूति पूजे' ऎंब पुस्तकवन्नु रचिसिदाने। नेपोलियन् कूड ओब्ब विभूति ऎंदु अदरल्लि आत हेळिदाने। इल्लिरुवात शुद्ध परमात्मनल्ल; मिश्र परमात्म। ईतनन्नु सह गुरुतिसलु कलियबेकु। ऎंतले तुलसीदासरु रावणनन्नु 'रामन विरोधि भक्त' ऎंदु करेदिरुवुदु. ई भक्तनदु स्वल्प बेरे-रीति। बॆंकियिंद कालु सुट्टु उरियुत्तदे। आदरे आत भागवन्नु बिसि-माडि, बावु इळियुत्तदे। तेज ऒंदे, आविर्भाव बेरे। राम रावणरल्लि आ आविर्भाव बेरे बेरे यागि काणिसिदरू अदन्नु रूपिसिद परमात्म-नोब्बने।

स्थूल — सूक्ष्म, सरल — मिश्र, सरल अक्षर — संयुक्ताक्षर ऎल्ल-वन्नू कलियिरि। कडेगे परमात्मनिल्लद स्थळवावुदू इल्ल ऎन्नुवुदन्नु अनुभविसिरि। अणुरेणुगळल्लू आतने। इरुवेयिंद मोदलागि ब्रह्मांडद वरेगू आत तुंबिकॊंडिदाने। ऎल्लर योगक्षेमवन्नु सदा नोडुव कृपाळु, ज्ञानमूर्ति, वत्सल, समर्थ, पावन, सुंदर, परमात्म नम्म सुत्त ऎल्लेल्लू व्यापिसिकॊंडिदाने।

(24-4-32)

अध्याय 11.

55. अर्जुननिगे विश्वरूप दर्शनद बयके

ई विश्वदल्लिन अनंत वस्तुगळल्लि तुंबिरुव परमात्मनन्नु हेगे नोडबेकु, कण्णिगे काणिसुव ई विराट् प्रदर्शनवन्नु हेगे जीर्णिसिकोळ्ळबेकु अेंबुदन्नु कळेद अध्यायदल्लि कलितेवु। मोदलु स्पष्ट, आमेले सूक्ष्म ; मोदलु सरल, आमेले मिश्र। हीगे अेल्ल वस्तुगळल्लिन परमात्मनन्नु काणबेकु, अवन साक्षात्कार पडेयबेकु, सतताभ्यासदिंद विश्ववन्नेल्ल आत्मरूपवागि नोडलु कलियबेकु अेंबुदन्नु कळेद सल तिळिदुकोंडेवु।

इवोत्तु हन्नोंदने अध्याय। भगवंत तन्न प्रत्यक्ष रूपवन्नु तोरिसि अर्जुननमेले परम कृपे माडिद अध्याय इदु। 'देवा, निन्न पूर्णरूपवन्नु नोडबेकेंब आसे ननगे। निन्न महा प्रभाववेल्ल प्रकटवादंथ रूपवन्नु नानु कण्णारे काणबेकु' अेंदु अर्जुन बिन्नविसिद। विश्वरूप दर्शनक्कागि आत मंडिसिद वेडिके इदु।

विश्व, जगत्तु अेंब शब्दगळन्नु नावु उपयोगिसुत्तेवे। ई जगत्तु विश्वद ओंदु चिक्क भाग। नमगे ई पुट्ट तुणुकिन स्वरूपवू सह सरियागि तिळियदु। नमगे विशालवागि तोरुव ई जगत्तू विश्वदेदुरिगे अति तुच्छ वस्तु। रात्रि आकाशद कडे नोडिदरे अनंत गोळगळु काणुत्तवे। आकाशद अंगळदल्लिन आ रंगवल्लि, आ सण्ण सण्ण सुंदर हूगळु, लकलकिसुव आ लक्ष लक्ष तारेगळु — इवुगळ स्वरूप गोत्तिदेये निमगे ? चिक्कदागि तोरुव आ तारेगळेल्ल प्रचंड-

वादवुगळु। तेजोमय ज्वलंत धातुविन गुंडुगळु। ई अनंत गुंडुगळ लेक्क माडलादीते? अवक्के आदियिल्ल, अंत्यविल्ल। बरिगण्णिगे साविरारु गुंडु काणिसिदरे, दुर्बीनिगे कोट्यावधि। इन्नू दोड्ड दुर्बीनु तंदरे अब्जावधि कंडावु। कोनेगे अदक्के अंत्यवेल्लि, हेगे, अेन्नुवुदे तिळिय-लारदु। मेले, केळगे, अेल्लेल्लू पसरिसिकोंडिरुव ई अनंत सृष्टियल्लि ओंदु चिक्क तुंडु ई जगत्तु। अदू कूड अेष्टु विशालवागि तोरुत्तदेयो!

परमात्मन स्वरूपद ओंदु अंगवायितु ई विशाल सृष्टि। इन्नू ओंदु अंगवुंटु। अदु कालदु। हिंदिन कालवन्नु गमनिसिदरे इति-हासद गर्भदल्लि हत्तुसाविर वर्षगळवरेगू हिंदे होगबहुदु। मुंदिन कालवंतू ऊहातीत। इतिहासद काल-हत्तुसाविर वर्ष। नम्म स्वंत बदुकिन कालवादरो नूरु वर्ष। कालद विस्तार अनादि, अनत, अेष्टु काल कळेयितो लेक्कविल्ल। मुंदे अेष्टिदेयो कल्पनेयिल्ल। विश्वद अेदुरिगे इतिहासद ई हत्तुसाविर वर्ष एनू इल्ल। भूतकाल अनादि। भविष्यकाल अनंत। अल्पवाद वर्तमानकाल अेल्लिदे निजवागि? तोरिसलु होगुवुदरोळगागि भूतकालक्के सेरुत्तिदे। इन्थ अति चपल वर्तमानकाल मात्र नम्मदु। ईग ना मातनाडुत्तिदेने। बायिंद शब्द होरबीळुवुदरोळगागि अदु भूतकालदल्लि मुळुगिहोगुत्तदे। इन्थ ई महा कालनदि सततवागि हरियुत्तिदे। अदर उगम तिळियदु। अंत्य तिळियदु। मध्यदल्लिन स्वल्प प्रवाहवष्टे नम्म दृष्टिगे बीळुत्तदे।

हीगे, ओंदु कडेगे स्थळद प्रचंड विस्तार, इन्नोंदु कडेगे कालद प्रचंड ओघ, ई अेरडु दृष्टिगळिंद सृष्टियन्नु निरीक्षिसतोडगिदरे,

कल्पनेयन्नु ऎष्टु ओडिसिदरू अदर अंत तिळियलारदॆंदु गोत्तागुत्तदे। मूरु कालगळल्लि, मूरु स्थळगळल्लि – भूत, भविष्य, वर्तमानगळल्लि; मेले, केळगे, इल्लि – ऎल्लेल्लू तुंबिकोंडिरुव आ विराट् परमात्म ओम्मेले, ऒंदे कालक्के, काणिसबेकॆंबुदु अर्जुनन अपेक्षे। आ अपेक्षे-यिंदागि ई हन्नोंदने अध्याय प्रकटवागिदे।

भगवंतनिगे अत्यंत प्रियनागिद्दवनु अर्जुन। ऎष्टु प्रिय? हत्तनेय अध्यायदल्लि इंथिथ स्वरूपगळल्लि नन्न चिंतने माडु ऎंदु हेळुवाग परमात्म पांडवरोळगिन अर्जुननल्लि नन्नन्नु काणु ऎंदु हेळिदाने। 'पाडवानां धनंजयः' ऎंदु श्रीकृष्ण हेळुत्ताने। प्रीतिय हुच्चु इदक्कू हेच्चु उंटे? भगवंतनिगे अर्जुनन बग्गे अपार प्रीति। आ प्रीतिय प्रसादरूप ई हन्नोंदनेय अध्याय। अर्जुननिगे दिव्य दृष्टि-कोट्टु, दिव्यरूप दर्शनद अवन अपेक्षेयन्नु भगवंत नडेयिसिकोट्ट। अर्जुननिगे प्रेमद प्रसाद कोट्ट।

56. चिक्क मूर्तियल्लू पूर्णदर्शन साध्य

आ दिव्यरूपद सुंदर वर्णने, भव्य वर्णने ई अध्यायदल्लिदे। अदेनो निजवे। आदरू ई विश्वरूपद बग्गे नानु विशेष मोह तोरिस-लारे। ननगे चिक्क रूपदिंदले तृप्ति। ननगे काणिसुव चिक्क पुट्ट रूपद सवियन्नु अनुभविसलु कलितिद्देने। परमेश्वर तुंडु तुंडागिल्ल। नमगे काणिसुव आतन रूपु ऒंदु तुंडु, इन्नुळिद परमेश्वर ऎल्लो इदाने ऎंदु ननगनिसुवुदिल्ल। विराट् विश्वदल्लि तुंबिकोंड परमात्मने संपूर्ण रूपदल्लि– चिक्क मूर्तियल्लू, ऒंदु मण्णिन कणदल्लू इदाने। अमृतद सिंधुवि-

नल्लिरुव सविये अदरदोंदु बिंदुविनल्लि। ननगे दोरेत अमृतद चिक्क बिंदुविन सवियन्नुणबेकेंदु ननगनिसुत्तदे। बेकेंतले नानिल्लि अमृतद दृष्टांतवन्नेत्तिकोंडिदेने। नीरिन इल्लवे हालिन विचार अेत्तलिल्ल। चिक्क लोटदल्लिरुव हालिन सविये दोड्ड लोटद हालिनल्लू इरुत्तदे। सवि ओंदे आदरू दोरेयुव पुष्टि अष्टे अल्ल। ओंदु हनि हालिगिंत लोट-हालिनल्लि हेच्चु पुष्टियुंटु। अमृतद दृष्टांतदल्लि मात्र हागल्ल। अमृतद समुद्रदल्लिरुव सवि अदर ओंदु हनियल्लियू इदे। अष्टे पुष्टियू इदे। ओंदु हनि अमृत कत्तिनल्लिळिदरू अमृतत्व प्राप्तिये!

हागे परमात्मन विराट् स्वरूपदल्लिरुव दिव्यते, पावित्र्य चिक्क मूर्तियल्लू उंटु। मादरिगागि ओंदु मुष्टि गोधियन्नु ओब्बरु कोट्टरु। अष्टरिंद नानदन्नु परीक्षिसदिद्दल्लि गोधिय चीलवन्ने तंदु नन्न मुंदिट्टरू प्रयोजनविल्ल। ईश्वरन चिक्क मादरि कण्णेदुरिगिरुवाग अवन गुरुतु तिळियदिद्दरे विराट्-मूर्तियन्नु कंडाग ताने हेगे तिळिदीतु? सण्णदु दोड्डदु अन्नुवुदल्लि अर्थवेनु? सण्णरूपद गुरुतु तिळिदरे दोड्डदु तिळिदीतु। अंतले देवरु नन्न दोड्ड रूपु तोरिसलि अेंब बयके ननगिल्ल। अर्जुननंते विश्वरूप दर्शनक्कागि बेडुवष्टु योग्यतेयू ननगिल्ल। अल्लदे, ननगे काणिसुत्तिरुवुदु विश्वरूपद तुणुकु अल्ल। ओडेदुहोद चित्रद तुणुकन्नु नोडिदरे पूर्ण चित्रद कल्पने बरलारदु। आदरे परमात्मनेनो इन्थ तुणुकुगळिंद हुट्टिदवनल्ल। आत कत्तरिगे सिक्किदु तुंडुतुंडागिल्ल। खंड खंडनागिल्ल। सण्ण स्वरूपदल्लि आ अनंत परमेश्वर पूर्णवागि तुंबिकोंडिदाने। चिक्क फोटो, दोड्ड फोटोगळल्लि

अंतरवेनु ? दोड्डदरल्लिरुवुदे पूर्णवागि चिक्कदरल्लि काणुत्तदे। दोड्ड फोटोविन तुंडल्ल चिक्क फोटो। चिक्क टैपिनल्लि अक्षरविद्दरू अर्थ ऒंदे। दोड्ड टैपुगळल्लि दोड्ड अर्थ, चिक्क टैपुगळल्लि चिक्क अर्थ – ऎंदेनू इल्ल।

मूर्तिपूजॆगू ई विचार पद्धतियॆ आधार। मूर्ति पूजॆयमेलॆ धाळि माडिदारे होरगिनवरू, नम्मवरू। केलवरु विचारकरू अदन्नु हळिदरु। आदरे नानु विचार माडिदहागेल्ल मूर्ति पूजॆय दिव्यते हॆच्चु हॆच्चु स्पष्टवागुत्तदे। मूर्ति पूजॆ ऎंदरेनु ? ऒंदु चिक्क वस्तुविनल्लि विश्व-वन्नॆल्ल अनुभविसलु कलियुवुदे मूर्ति पूजॆ। चिक्क हळ्ळियल्लि ब्रह्माण्ड-वन्नु काणलु कलियुवुदु। इदरल्लि असत्यवेनु बंतु। इदु बरी कल्पनॆ-यल्ल ; अनुभवद मातु। विराट् स्वरूपदल्लिद्दुदे चिक्क मूर्तियल्लू इरुत्तदे। मण्णिन कणदल्लू इरुत्तदे। आ मण्णिन कणदल्लि मावु, बाळॆ, गोधि, चिन्न, ताम्र, बॆळ्ळि ऎल्लवू इवे। सृष्टियॆल्लवू उंटु। सण्ण नाटक मंडलियल्लि केलवु पात्रगळे बेरॆ बेरॆ वेष धरिसि रंगभूमिगॆ बरुवहागॆ परमात्मनू बेरॆ बेरॆ रूपगळल्लि काणिसुत्ताने। नाटककार-नॊब्ब, ताने नाटक रचिसि इदरल्लि पात्रवन्नू वहिसुवहागॆ परमात्म अनंत नाटक रचिसि, ताने अनंत पात्रवहिसि नटिसुत्ताने। ई अनंत नाटकदल्लिन ऒंदु पात्रवन्नु गुरुतिसिकॊंडरे ऎल्लवन्नू गुरुतिसिद हागॆ।

काव्यदल्लि उपमॆ दृष्टांतगळिगॆ आधारवागिरुवुदे मूर्ति पूजॆगू आधर। दुंडगिन वस्तुवॊंदन्नु कंडरे आनंद उंटागुत्तदे। अदक्कॆ कारण अल्लिरुव सुव्यवस्थॆ। अदू ईश्वरन स्वरूप। आतन सृष्टि सर्वांग

सुंदर। अल्लि ओळ्ळेय व्यवस्थेयुंटु। आ दुडनेय वस्तु व्यवस्थित ईश्वरन मूर्ति। काडिनल्लि बेळेद डोंकु गिडवो? अदू ईश्वरन मूर्तिये। अल्लि आतन स्वच्छंदतनविदे। आ गिडक्के बंधनविल्ल। ईश्वरनिगे बंधन विधिसुवरारु? आ बंधनातीत परमात्म आ डोंकु गिडदल्लिदाने। सरळवाद कंभवोंदन्नु कंडाग अल्लि ईश्वरन समते काणुत्तदे। हेणिगेय कंभदल्लि, आकाशदल्लि नक्षत्रगळ रंगवल्लि बरेयुव परमात्म काणुत्ताने। कडिदु कत्तरिसि तयारिसिद उपवनदल्लि ईश्वरन संयमि स्वरूप काणिसिदरे, विशालवाद अरण्यदल्लि आतन भव्यतेयू स्वतंत्रतेयू काणिसुत्तवे। अरण्यदल्लि आनंद। हागादरे नावु हुच्चरे? अल्ल। एरडरिंदल्लू आनंदवागुत्तदे। ईश्वरन गुण एल्लेल्लू प्रकटवागिरुवुदे अदक्के कारण। नुण्णनेय सालिग्रामदल्लिरुव तेजस्से ओरटु ओरटाद नर्मदा गणपतियल्लू इदे। आ विराट्रूप ननगे बेरेयागि काणिसदिद्दरू अड्डियिल्ल।

परमात्म एल्ल कडेगळल्लू, एल्ल वस्तुगळल्लू बेरे बेरे रूपिनिंद प्रकटवागिदाने। एतले नमगे आनंद। आ वस्तुगळ बग्गे आत्मीयतेयुंटागुत्तदे। आनंदवागुवुदेके? याव संबंधवो एनो अंतू आनंदवागुत्तदे। मगुवन्नु नोडुत्तल तायिगे आनंदद संबंध होळेयुत्तदे। प्रतियोंदु वस्तुविगू परमात्म संबंध कल्पिसि। नन्नोळगिरुव परमात्मने आ वस्तुगळल्लू इदाने। आनंदक्के बेरे उपपत्तियिल्ल। एल्ल कडेयल्लू प्रीतिय संबंध बेळेसि। अनंतर स्वारस्य नोडि। अनंत सृष्टियल्लिन परमात्म आग अणुरेणुगळल्लू काणिसिकोंडानु। ओम्मे ई दृष्टि बंदरे आमेले एनागलिक्किल्ल? इंद्रियगळिगे हतोटि कलिसबेकु। भोगवासने

तोलगि प्रीतिय पवित्र दृष्टि बंदल्लि प्रतियोंदु वस्तुविनल्लू देवरु प्रकट-वादानु। आत्मद बण्णवेंथदु ऎंब बग्गे उपनिषत्तिनल्लि सुंदर वर्णने-यिदे। आत्मक्के याव बण्ण? ऋषिगळु प्रीतियिंद हेळुत्तारे :

"यथा अयं इंद्रगोपः"

कॆंपु रेशिमेयंथ नुण्णनेय मृगद कीटद हागे आत्मद रूप। आ कीट-वन्नु कंडाग ऎंथ आनंदवागुत्तदे! एके आनंद? नन्नल्लिरुव आनंदवे आ इन्द्रगोपदल्लि उंटु। अदक्कू ननगू संबंधविरदिद्दरे ननगे आनंद आगुत्तिरलिल्ल। नन्नल्लिरुव सुंदर आत्मवे आ इन्द्रगोपदल्लू इदे। ऎंतले अदर उपमे कोट्टे। उपमे कोडुवुदेके? अदरिंद आनंदवागुवु-देके? आ ऎरडु वस्तुगळल्लू होलिकेयुंटॆंदु उपमे कोडुत्तेवे। उपमेय, उपमानगळु तीर भिन्नवस्तुगळागिद्दरे आनंदवागदु। यारादरू 'उप्पु कारविद्दंते' ऎंदरे अवरिगे तले नेट्टगिल्ल ऎन्नुत्तेवे। 'तारेगळु हूगळ हागिवे' ऎंदु यारादरू हेळिदरे होलिके सरियागि आनंदवागु-त्तदे। उप्पु कारदंतिदेयॆंदु हेळुवाग सादृश्य अनुभववागदु। आदरे यारादरोब्बर दृष्टि विशालवागिद्दरे, उप्पिनल्लिरुव परमात्मने कारदल्लि इरुवनॆंब दर्शनवागिद्दरे, उप्पु कारदहागिदे ऎंब हेळिकेयिंदलू अंथवरिगे आनंदवादीतु। साराश : प्रतियोंदु वस्तुविनल्लू ईश्वरीरूप तुंबिदे। अदक्कागि विराट् दर्शनद अवश्यकतेयिल्ल।

57. विराट् -- विश्वरूप जीर्णवागदु

अल्लदे, आ विराट् दर्शन ननगे सहिसीतादरू हेगे? चिक्क सगुण सुंदर रूपद बग्गे ननगिरुव प्रीति, आत्मीयते, सवि, विश्वरूप-

दल्लि अनुभवक्के वंदीतो इल्लवो! अर्जुनन स्थितियू हीगे आगित्तु। कडेगे आत थर थर नडुगुत्ता, "देवा, निन्न आ मोदलिन सविरूपु तोरिसु" ऎंदु बेडुत्ताने। विराट् स्वरूपदर्शनक्कागि आशिसबेडि ऎंदु अर्जुन स्वानुभावदिंद हेळुत्तिदाने। परमात्म त्रिकालदल्लि, त्रिस्थळदल्लि व्यापिसिदाने। साकु। अदेल्ल ऒट्टुगूडि निगि निगि कॆंडवागि नन्नेदुरिगे बदु निंतरे नन्न स्थिति एनादीतु। तारॆगळॆण्टु शांतवागि काणुत्तवे। दूरदिंद नन्नोदिगॆ मातनाडिदहागे तोरुत्तदे। दृष्टियन्नु शातगॊळिसुव आ तारे हत्तिर बदरे धगधगिसुव बॆंकि! नानु सुट्टु होगबहुदु। ईश्वरन ई अनंत ब्रह्मांडगळु इद्द कडॆगळल्ले इरलि। अवेल्लवन्नू तंदु ऒंदे कोठडियल्लिडुवुदरल्लि एनु स्वारस्य? मुंबयिय आ कपोत गृहदल्लि साविरारु पारिवाळगळिवॆ। अल्लि स्वातंत्र्यवुंटे? आ दृश्यवेनो चमत्कारवे। कॆळगे, मेले, इल्लि, मूरू कडॆगळल्लि सृष्टि विभागिसल्पट्टिदॆ। इदे स्वारस्य। स्थलात्मक सृष्टियदु हेगो हागे कालात्मक सृष्टियदु। नमगॆ भूतकालद नॆनपु आगदु। मुंदिनदु तिळियदु। अदू निम्म कल्याणक्के कारण। ऎंदू मनुष्य प्राणिय अधिकारक्कॊळपडदॆ, परमात्मन विशेष अधिकारक्कॊळपट्ट वस्तुगळन्नु कुरानिनल्लि हेळिदे। 'भविष्य कालद ज्ञान' अवुगळल्लॊंदु। नावु अदाजु माडुत्तेवे। आ अंदाजु ऎंदरेनू ज्ञानवल्ल। भूतकाल तिळिय-दिरुवुदू ऒळ्ळेयदे। दुर्जननागिद्दवनॊब्ब ऒळ्ळेयवनागि नन्नेदुरिगे बंदरे, आतन भूतकालवन्नु स्मरिसिकॊंडाग अवन बगॆ ननगे आदर-वेनिसदु। अवनॆष्टु हेळिकॊंडरू अवन आ पूर्वद पापगळन्नु मरेयला-

गुवुदिल्ल। आत सत्तु, रूप बदलायिसिकोंड्ड मरळिदागले जगत्तिगे अवन पापगळ विस्मृतियादीतु।

हिंदिन स्मरणेयिंद विकार बेळेयुत्तदे। हिंदिन ई अेल्ल ज्ञानवू नाशवादल्लि अेल्लवू मुगिदंतेये। पाप पुण्यगळ विस्मृतियागल्लु ओंदु उपाय अगत्य। आ उपायवे सावु। अेंदरे पूर्वजन्मद विस्मृति। ई जन्मद वेदनेगळे असह्यवागि इरुवाग हिंदिन जन्मद कोळचेयन्नेके केदरबेकु? ई जन्मद कोठडियल्लेनु कडिमेये कोळे? बाल्य कालवन्नु सह नावु तुंबा मरेयुत्तेवे। विस्मृति ओळ्ळेयदु। हिन्दू मुस्लिम् ऐक्यक्के भूतकालद विस्मरणे उत्तमोपाय। औरंगज़ेब् जुलुमे नडेसिद। इन्नू अेष्टु दिन अदन्ने नेनेयुत्तिरुवुदु? गुजरातिनल्लि रतनबायियदु गर्बागीतेयुंटु। अदर कोनेयल्लि 'जगत्तिनल्लि कोनेगे अेल्लरदू कीर्ति उळिदीतु। पाप मरेतुहोदीतु' अेंदु हेळिदे। काल जाड्ड हिडिदिदे। इतिहासदल्लि ओळ्ळेयदन्नु आरिसिकोळ्ळबेकु। पापवन्नु बिडुबेकु। केट्टदन्नु बिट्टु ओळ्ळेयदन्ने नेनपिनल्लिट्टुकोंडरे मनुष्य बंगारवादानु। हागागुवुदिल्ल। अेंतले विस्मरणे अगत्य। अदक्कागिये भगवंत सावन्नु निर्मिसिदाने।

साराश: जगत्तु हेगिदेयो अदे मंगल। कालस्थलात्मक जगत्तन्नु ओंदे अेडे तरुव कारणविल्ल। अति परिचयदल्लि स्वारस्य-विल्ल? केलवु वस्तुगळोंदिगे सल्लुगे बेकु। केलवक्के दूरवागिरबेकु। गुरु अेदुरिगिद्दाग नम्रतेयिंद दूर कूडुत्तेवे। तायिय तोडेयन्ने एरि कूडुत्तेवे। याव मूर्तिय बळि हेगे वर्तिसबेको हागे वर्तिसबेकु।

हूवन्नु कैगेत्तिकोळ्ळबहुदु। बेंकियन्नु हिडितदल्लिडबेकु। दूरदिंद तारे सुंदर। सृष्टियू हागेये। अति दूरदल्लिरुव आ सृष्टियन्नु तीर हत्तिर तरुवल्लि स्वारस्यवेनू इल्ल। याव वस्तु ऎल्लिदेयो अल्ले इरलि। अदरल्लिये स्वारस्यवुंटु। दूरदिंद काणुव वस्तु हत्तिर बंदरे सुखावह-वादीतु ऎंदेनिल्ल। अदन्नु हागेये दूरवागिट्टु अदर रसवन्नु सवि। उद्दंडनागि हेच्चु सलुगे बेळेसि अति परिचय माडिकोळ्ळुवुदरल्लि अर्थ-वेनू इल्ल। त्रिकालगळू नम्मेदुरु निंतिल्ल। अदू ओळ्ळेयदे। त्रिकाल ज्ञानदल्लि आनंद, कल्याण उंटेंदु हेळलागुवुदिल्ल। अर्जुन प्रीतियिंद बेडिद, हट हिडिद, प्रार्थने माडिद। देवरु अदन्नु नेरवेरिसिद। तन्न विराट् स्वरूपवन्नु तेरेदु तोरिसिद। ननगे मात्र परमात्मन चिक्क रूपवे साकु। ई चिक्क रूपवेनू परमात्तन तुणुकल्ल। ओदुवेळे अदु आतन-दोंदु तुणुकेंदु तिळिदुकोंडरू आ विशाल मूर्तियदोंदु कालो कैयो बेरळो काणिसिदरू अदे नन्न भाग्यवेंदेनु। इदु नन्न अनुभवद मातु। वर्धादल्लि हरिजनरिगागि जमनालालजि लक्ष्मीनारायण मंदिरवन्नु तेरेदाग दर्शनक्कागि नानु होगिद्दे। हदिनैदु इप्पत्तु निमिष आ रूप-वन्नु नोडुत्तिद्दे। समाधि हत्तिद हागायितु ननगे। परमात्मन आ मुख, आ ऎदे, आ कै नोडुत्त नन्न दृष्टि कालिन बळि बंदु चरणगळ मेले स्थिरवायितु। 'ऎष्टु चेंद निन्न पाद सेवे!' ऎंब भावनेये कोनेगे स्थिरवायितु। चिक्क रूपिनल्लि आ महापुरुष हिडिसलागदिद्दरे आतन चरण सिक्किदरू साकु। देवरन्नु अर्जुन प्रार्थिसिद। अवन अधिकार दोड्डदु। अवन सलुगेयेष्टु, प्रेमवेष्टु, स्नेहभाववेष्टु! नन्न योग्यते एनु? चरणगळे साकु ननगे। अष्टे नन्न अधिकार।

58. सर्वार्थ सार

परमात्मन आ दिव्यरूपद वर्णनेयल्लि नन्न बुद्धियन्नु ओडिसुव इष्ट ननगिल्ल। अल्लि बुद्धियन्नोडिसुवुदु पापवादीतु। आ विश्वरूपद वर्णनेय पवित्र श्लोक ओदबेकु, पवित्रवागबेकु। बुद्धियन्नुपयोगिसि परमात्मन आ रूपवन्नु तुंडु तुंडु माडबेकेंदु ननगनिसवुदिल्ल। अदु अघोर उपासने। स्मशानक्के होगि हेण हरिदु, तंत्रोपासने माडुव अघोर पंथीय कर्मदंतादीतु। परमात्मन आ दिव्यरूप।

> "विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो
> विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्॥"

आद आ विशाल अनंत रूप। अदर वर्णनेय श्लोकगळन्नु ओदबेकु। मनस्सन्नु निर्मलगोळिसबेकु।

परमेश्वरन ई वर्णनेयन्नोदुवाग ओंदे ओंदु कडे बुद्धिगे योचनेगिट्टुकोळ्ळुत्तदे। 'अर्जुना, इवरेल्ल सायुववरु। नीनु निमित्तमात्रनागु। एल्ला माडुववनू नाने' एंदु परमात्म हेळुत्ताने। 'निमित्त मात्रं भव सव्यसाचिन्' एंब वाक्यवोंदे मनस्सिनल्लि दुमुदुमिसुत्तदे। ईश्वरन कैयल्लि नावु आयुधवागबेकु। बुद्धि योचिसतोडगुत्तदे। आयुधवागुवुदे? हेगे? देवर कैयल्लिन कोळलागबेको नानु? नन्नन्नु आत तुटिगळिगिट्टुकोंडु नन्निंद मधुर स्वर होरडिसुत्तानो? नन्नन्नु बारिसुत्तानो? अदु हेगे? कोळलागबेकादरे नन्न ओळगु बरियदागबेकु। नानो, विकारगळिंद तुंबिदेने। नन्निंद मधुर स्वर हेगेताने होरटीतु। नन्न ध्वनि ओरटु। नानु घनवस्तु; अहंकार पूर्ण। नानु अहंकार-

वन्नु बिडबेकु। पूर्णवागि नानु मुक्तनादाग, बरिदादाग परमात्म नन्नन्नु बारिसन्नहुदु। आतन कैयल्लि मुरलियागुवुदु साहसवे। अवन पादरक्षेयागेदरू सुलभवल्ल। परमात्मन पादगळिगे नोवन्नुंटु माडदंथ मृदु रक्षेयागबेकु। परमेश्वरन पादगळिगू मुळ्ळुगळिगू नडुवे नानु बिद्दुकोंडिरबेकु। नन्नन्नु नाने हद माडबेकु। नन्न चर्मवन्नु सुलिदु अदन्नु हदगोळिसबेकु। मृदुगोळिसबेकु। अंतले परमात्मन पादरक्षे-यागुवुदू सुलभवल्ल। परमात्मन कैय आयुधवागलु हत्तुसेरु भारद कब्बिणद गुंडागि प्रयोजनविल्ल। तपस्सिन साणेगे सिक्कि नन्नन्नु ना हरित माडिकोळ्ळबेकु। नन्न बदुकिन कत्ति ईश्वरन कैयल्लि झळपिस-बेकु। नन्न बुद्धियिंद ई दनि यावागलू होरडुत्तदे। देवर कैय आयुधवागबेकेंब विचारदल्ले मनस्सु तोडगिकोळ्ळुत्तदे। अदु आगुवुदु हेगे, अदन्नु साधिसुवुदु हेगे अंबुदन्नु कोनेय श्लोकदल्लि भगवंतने हेळि-दाने। तम्म भाष्यदल्लि शंकराचार्यरु ई श्लोक 'सर्वार्थ सार', गीतेय सर्वसार अंदु हेळिदारे। याव श्लोक अदु ?

> "मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः संग वर्जितः।
> निर्वैरः सर्वभूतेषु यः-स मामेति पांडव ॥"

लोकदल्लि यारोंदिगू वैरविल्लदव, तटस्थनागिद्दु कोंडु निरपेक्ष बुद्धियिंद जगत्तिन सेवे माडुवव, माडिदुदन्नेल्ल अर्पिसुवव, नन्न भक्ति-यिंद तुंबिदव, क्षमावंत, नि:संग, विरक्त, प्रेमलभक्त – इन्थवनु परमात्मन कैयल्लिन आयुधवागुत्ताने। इदे आ सारसर्वस्व।

(1-5-32)

अध्याय 12.

59. आररिंद हन्नोंदु अध्यायदवरेगे समग्रते

गंगा प्रवाह एल्लेडेगू पावन, पवित्र। अदरल्लि हरिद्वार, काशि प्रयागगळु इन्नू पवित्र। लोकवन्नेल्ल अवु पावनगोळिसिवे। भगवद्गीतेयू हागे। मोदलिनिंद कोनेयवरेगे गीतेयेल्लवू पावन, पवित्र। आदरे नड्डवे केलवु अध्यायगळु तीर्थक्षेत्रगळंतिवे। इन्दु ना मातनाडबेकाद अध्याय अत्यंत पवित्र तीर्थ। प्रत्यक्ष भगवंतने ई अध्यायवन्नु 'अमृत धारे' एंदु करेदिदाने। "ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते"। इप्पत्तु श्लोकगळ चिक्क अध्याय इदु। आदरू अमृतद धारे। अमृतदंते मधुर शात। भगवंतन मुखदिंद ई अध्यायदल्लि भक्तिरसद महिमेय तत्व होरहोरटिवे।

वास्तववागि आरने अध्यायदिंद भक्ति तत्वक्के मोदलायितु। ऐदने अध्यायद कोनेयवरेगे बाळिन शास्त्र बंतु। स्वधर्माचरणेय कर्म, अदक्के सहायकवाद मानसिक साधन स्वरूपि विकर्म, इवेरडर सहायदिंद कर्मवन्नु संपूर्ण भस्म माडुव अंतिम अकर्म, इवुगळ निलवुगळन्नु कुरितु ऐदु अध्यायगळल्लि चर्चे नडेयितु। बाळिन शास्त्र अल्लिगे मुगियितु। मुंदे आरने अध्यायदिंद हन्नोंदने अध्यायद कोनेयवरेगे, ओंदु अर्थदल्लि भक्तितत्वदे विचार। एकाग्रतेयिंद विचार मोदलायितु। चित्तद एकाग्रतेयागुवुदु हेगे, अदक्के साधनेगळेनु, चित्तद एकाग्रतेय अगत्य एष्टु एंबुदु आरने अध्यायदल्लि। हन्नोंदने अध्यायदल्लि समग्रतेय विचार बंतु। इष्टु दूर नावु हेगे हेज्जेयिट्टेवेंबुदन्नु नोडोण।

चित्तद एकाग्रतेयिंद आरंभवायितु। ई एकाग्रते बंदल्लि मनुष्य याव विषयवन्नादरू योचिसबल्ल। चित्तद एकाग्रतेयिंद – नन्न मेच्चुगेय विषयवन्नेत्तिकोंडरे, गणितद अभ्यासक्के तुंबा उपयोगवादीतु। खंडित-वागियू फल दोरेतीतु। आदरू चित्तद एकाग्रतेय सर्वोत्तम साध्यवल्ल इदु। गणितद अभ्यासदिंद एकाग्रतेयन्नु पूर्णवागि ओरेगे हच्चलागदु। गणितदल्लो, इल्लवे इन्नोंदु ज्ञान क्षेत्रदल्लो चित्तद एकाग्रतेयिंद यशस्सु दोरेतीतु। आदरू अदे निजवाद परीक्षेयल्ल। ऎंतले एळने अध्याय-दल्लि ई एकाग्रते देवर चरणगळल्लि इरबेकेंदु हेळलायितु। यावागलू परमात्मन चरणगळल्लि एकाग्रतेयिरलु, किवि, कण्णु, वाणि ऎल्लवू अवनल्लिये तन्मयवागिरलु सततवागि आमरणपर्यंतवू प्रयत्न पडबेकेंदु ऎंटनेय अध्यायदल्लि हेळलायितु।

"इंद्रियगळ्गायितभ्यास।
इन्निल्ल बेराव ध्यास॥"

नम्म इंद्रियगळिगे ई अभ्यासवागबेकु। ऎल्ला इन्द्रियगळिगू भगवंतन गीळु हिडियबेकु। हत्तिर यारे अळुत्तिरलि, भजने माडुत्तिरलि, वासनेय बले हेणेदिरलि, विरक्त सज्जनर – साधुगळ समागमवे इरलि, बेळकिरलि, कत्तलेयिरलि, एनिद्दरू हेगिद्दरू, मरणकालदल्लि परमेश्वर चित्तदेदुरिगे निंतुकोळ्ळुव हागे, बदुकिनुद्दक्कू इन्द्रियगळन्नु नडेसि-कोंडुहोगुव सातत्यद शिक्षण ऎंटने अध्यायदल्लि दोरेयितु। आरने अध्यायदल्लि एकाग्रते, एळनेयदरल्लि ईश्वराभिमुख एकाग्रते ऎंदरे 'प्रपत्ति', ऎंटनेयदरल्लि सातत्ययोग, ऒंबत्तनेयदरल्लि समर्पणतेय

परिचय। हत्तने अध्यायदल्लि क्रमिकते वंतु। मेट्टलु मेट्टलागि ईश्वरन रूपवन्नु हेगे काणबेको, इरुवेयिंद ब्रह्मदेवनतनक तुंबिकोंडिरुव परमात्म नन्नु हेगे मेल्ल मेल्लने नोडबेको विवरिसलायितु। हन्नोंदने अध्यायदल्लि समग्रतेय विचार। विश्वरूप दर्शनवन्ने नानु समग्रतायोग अन्नुत्तेने। धूळिन कणवोंदरल्लि सह पूर्ण विश्व तुंबिदेयेंबुदन्नु अनुभविसुवुदे विश्वरूप दर्शन। इदे विराट् दर्शन। ई रीतियागि आरने अध्यायदिंद हन्नोंदने अध्यायद तनक भक्तिरसद नानारीतिय विवेचने नडेयितु।

60. सगुण उपासक — निर्गुण उपासक : तायिय इब्बरु मक्कळु

हन्नेरडने अध्यायदल्लि भक्ति तत्व कोनेयागबेकु। अर्जुन समासिय प्रश्ने केळिद। एदने अध्यायदल्लि बाळिन शास्त्रद विचार मुगिदाग केळिदंथ प्रश्नेयन्ने आत इल्लि केळिद। 'सगुणवन्नु भजिसुववरु केलवरु। निर्गुणवन्नु भजिसुववरु केलवरु। इवरल्लि यारु निनगे प्रियरु, देवा?[1]' इदु आतन प्रश्ने।

भगवंत एनु उत्तर कोट्ट[2] ओब्ब तायि। आकेय इब्बरु मक्कळन्नु कुरितु प्रश्ने केळिद हागे इदु। ओब्ब मग इन्नू चिक्कवनु, आकेय बग्गे तुंबा प्रीतियुळ्ळवनु। आकेयन्नु नोडुत्तलू विपरीत आनंदितनागुववनु। आके कोंच कण्णु मरेयागुत्तलू बायि बायि बिडुववनु। तायियन्नु बिट्टु दूर होगलार। आकेयन्नु बिट्टिरलार। आकेय वियोगवन्नु सहिसलार। तायियिल्लद संसार अवन पालिगे शून्य। अंथ चिक्क हसुळे आत। इन्नोब्ब मग दोड्डवनागिद्दाने। तायिय प्रेम

अवनिगू तुंबा प्रीति। आदरू तिळिवळिके बंदिदे। तायियिंद आत दूरदल्लिरवल्ल। ऐदारु तिंगळु काल आके काणदिद्दरू तडेदुकोळ्ळवल्ल। आत तायिय सेवे माडुववनु। अल्ल भारवन्नु होत्तु केलस माडुत्ति-दाने। प्रौढ। केलसदल्लि तोडगिरुवुदरिंद तायिय वियोगवन्नु सहिसि-कोळ्ळवल्ल। जनगळल्लि आत मान्य। अल्लेल्लू अवन प्रसिद्धियन्नु केळि तायिगे संतोषवागुत्तदे। इंथ ईब्बोव्व मगनीत। ई इब्बरु मक्कळ तायियन्नु नीवु केळि. 'तायि, ई इब्बरल्लि ओब्बनन्नु मात्र निनगे कोडुत्तेवे। तेगेदुको' अंदु आकेगे हेळि। तायि अेथ उत्तर कोट्टाळु? याव मगुवन्नु आरिसिकोडाळु? अवरिब्बरन्नू तक्कडियल्लिट्टु तूगुत्त कुळिताळे? तायिय भूमिकेयन्नु लक्ष्यदल्लिट्टुकोळ्ळि। स्वाभा-विकवागि आके अेथ उत्तर कोट्टाळु? "वियोग आगुवुदे खडितवादरे दोड्डवनादरे सहिसबल्ल" अेदु आ बडपायि नुडिदाळु। चिक्क हसुळे अवळ अेदेगूसु। अदन्नाके दूरगोळिसलाररळु। आदरे आकेगे हेच्चु प्रियरारेंब प्रश्नेगे उत्तरवल्ल अदु। एनन्नादरू हेळलेबेकादुदरिंद आके हागे एनो हेळिदळु अष्टे। अवळ मातन्नु विगडिसि अर्थ माडुवुदु योग्यवल्ल।

उत्तर कोडुवाग आ तायिय मनस्सिनल्लि तलेदोरिद गोंदलवे भगवंतन मनस्सिनल्लू तलेदोरिदे। अर्जुन भगवंतनन्नु केळुत्ताने। "देवा, निन्नन्नु तुंबा प्रीतिसुव, यावागलू निन्न ध्यानमाडुव, भक्त-निद्दाने। अवन कण्णिगे निन्नन्नु काणुव हसिवु, इन्द्रियनिग्रह माड-बल्लव, सर्वभूत हितदल्लि मग्न; हगलिरुळू समाज सेवे माडुत्तिरुव

अवनिगे परमात्मनाद निन्न नेनपु बरुवुदिल्ल। अद्वैतमयनाद भक्तनीत। इवरिब्बरल्लि यारु निनगे हेच्चु प्रियरु हेळु?" भगवंतनन्नु अर्जुन केळिद प्रश्ने इदु। आ तायि कोट्ट धाटियल्ले भगवंत इदक्के उत्तर कोट्टिदाने: 'आ सगुण भक्त ननगे प्रिय। इन्नोब्बनू नन्नवने' देवरिगे गोंदलक्किट्टुकोंडिदे। उत्तर कोडबेकायितेंदु कोट्टद्दु – अष्टे।

वस्तु स्थितियिरुवुदू हागेये। अक्षरश. इब्बरु भक्तरदू एकरूप। इब्बरू ओंदे योग्यतेयवरु। अवर तुलने माडुवुदेदरे मर्यादे मीरिद हागे। ऐदने अध्यायदल्लि कर्मद बग्गे केळिदंथ प्रश्नेयन्ने अर्जुन भक्तिय बगेगू केळिदाने। ऐदने अध्यायदल्लि कर्म विकर्मगळ सहायदिंद मनुष्य अकर्मक्के बरुत्ताने। ई अकर्म स्थिति प्रकटवागुवुदु एरडु रूपगळल्लि। हगलू रात्रियू केलस नडेसिद्दरू सह कोंचवू कर्म नडेसदिरुवुदोंदु बगे, इप्पत्तुनाल्कु गंटेगळ काल कोंचवू कर्म नडेसदे जगत्तिन चर्येयन्नेल्ल माडुवुदु इन्नोंदु बगे। इवुगळ तुलने हेगागबेकु? रूपायिय ओंदु बदियन्नु इन्नोंदु बदिगे होलिसि। ओंदे नाण्य, एरडु बदि। इल्लि तुलने हेगादीतु? एरडु पक्कगळिगू समनाद योग्यते। एरडरदू ओंदे रूप। अकर्म भूमिकेय विवेचनेयल्लि भगवंत ओंदन्नु संन्यास, इन्नोंदन्नु योग एंदिदाने। एरडु शब्दगळिद्दरू अल्लि अर्थ ओंदे। संन्यास, योगगळल्लि यावुदु सुलभ एंबल्लि प्रश्ने बगेहरियितु। सगुण – निर्गुण प्रश्नेयू हागे। सगुण भक्त इन्द्रियगळमूलक परमात्मन सेवे माडुत्ताने। निर्गुण भक्त मनस्सिन मूलक विश्व हितचिंतने माडुत्ताने। मोदलनेयवन बाह्य सेवे सततवागि सागिदे, अंतरंगदल्लि चिंतने

नडेदिदे। एरडनेयवनु प्रत्यक्षवागि सेवे माडुवुदिल्ल। अवन अंतरंगदल्लि मात्र महासेवे नडेदे इदे। ई बगेय इब्बरु भक्तरल्लि श्रेष्ठरु यारु? हगलू रात्रि केलस माडियू कोंचवू कर्म माडदंथ सगुण भक्त आत। अंतरंगदल्लि एल्लरिगू हित कोरुव निर्गुण भक्त ईत। अंतरंगदल्लि इब्बरू एकरूपिगळु। होरगडे बेरे बेरेयागि तोरबहुदु। आदरू इब्बरू ओंदे। इब्बरू परमात्मनिगे प्रियरे। आदरे सगुण भक्ति हेच्चु सुलभ। ऐदने अध्यायदल्लि दोरेत उत्तरवे इल्लू दोरेयुत्तदे।

61. सगुण सुलभ, सुरक्षित

सगुण-भक्ति योगदल्लि इंद्रियगळन्नु प्रत्यक्ष दुडिसिकोळ्ळलु साध्य। साधनवागलूबहुदु, इन्द्रियगळु – विघ्नवागलूबहुदु। एरडू आगबहुदु। अवु कोल्लुववो कायुववो एंबुदु नोडुववन दृष्टियन्नव-लंबिसिदे। ओब्बन तायि मरणशय्येय मेलोरगिदाळे। आत आकेयन्नु नोडबेकागिदे। मध्ये हदिनैदु मैलु अंतर। मोटारु होगुवंथ दारियल्ल अदु। अड्डा तिड्डा कालु दारि। ई संदर्भदल्लि ई दारि साधनवो, विघ्नवो? ई अभद्र दारियेके नडुवे बंतो, इदु इरदिद्दरे कूडले तायि-यन्नु नोडबहुदागित्तु एंदु यारादरू हेळबहुदु। इन्थवरिगे आ दारि वैरि। दारि तुळियुत्त तुळियुत्त आत होगुत्ताने। दारियमेले सिट्टु बरुत्तदे। हेगादरू तायियन्नु काणलु सर सर होगले बेकु। दारि वैरियेंदु तिळिदु अल्ले आत कुळितरे वैरियंते तोरुव आ दारि अवनन्नु सोलिसीतु। बेग बेग नडेयुत्त होदरे मात्र आत आ वैरियन्नु गेद्दानु। इन्नोब्ब 'इदेनो काडु दारि। आदरू नडेदु होगलु इष्टादरू इदेयल्ल।

ई दारियिरदिद्दरे ई काडिनल्लि ना हेगे होगुत्तिद्दे ' एंदुकोंडु आ काल्लु दारियन्नु साधनवन्नागि तिळिदु वेग वेग हेज्जे हाकुत्ता होगुत्तिद्द । आ दारिय बग्गे अवनिगे प्रीति, मित्रत्व । दारियन्नु वैरियेन्नि, गेळेय एन्नि, अंतर हेच्चिचसुवंथदेन्नि ', अंतर कडिमे माडुवंथदेन्नि , हेगिद्दरू वेग वेग हेज्जे हाकुव केलसवन्नंतू माडलेबेकु । मनुष्यन चित्तवृत्तिय मेले, दृष्टिय मेले, दारि विघ्नरूपवो साधनरूपवो एंबुदर अवलंबन । इंद्रियगळ्दू हीगे । अवु विघ्नरूपवो साधनरूपवो एंबुदन्नु निम्म दृष्टियन्नवलंबिसिदे ।

सगुण उपासकनिगे इंद्रियगळु साधनरूप । अवु हूविद्दहागे । परमात्मनिगे अवन्नर्पिसबेकागिदे । कण्णिनिंद हरि रूप नोडबेकु, किवियिंद हरिकथे केळबेकु, नालिगेयिंद हरि नामोच्चारणे माडबेकु । कालिनिंद तीर्थयात्रे माडबेकु । कैयिंद सेवे माडबेकु । ई भावनेयिंद आत इंद्रियगळेल्लवन्नू परमात्मनिगर्पिसुत्ताने । तन्न भोगक्कागि अवु अल्ल । हू देवरिगे अर्पिसुवुदक्कागि । हारमाडि नम्म कत्तिनल्लि हाकि कोळ्ळवुदक्कल्ल । अंतेये इंद्रियगळन्नु देवर सेवेगागि उपयोगिसबेकु । इदु सगुणोपासकन दृष्टि । निर्गुणोपासकनिगादरो इंद्रियगळु विघ्नरूप-वागि तोरुत्तवे । अवुगळन्नात संयमदल्लिरिसुत्ताने, बंधिसुत्ताने । अवुगळ आहारवन्नु कडमे माडुत्ताने । अवुगळ मेले कावलिट्टिरुत्ताने । सगुणोपासक इष्टेल्ल माडबेकागिल्ल । तन्नेल्ल इंद्रियगळन्नु आत हरि-चरणदल्लि अर्पिसिबिडुत्ताने । ई एरडू इंद्रियनिग्रहद बगेगळे । इंद्रियद मनद एरडु प्रकारगळु हेगादरू सरिये, अंतू इंद्रियगळन्नु

हिडितदल्लिद्दुकोळ्ळि । ध्येयवोंदे । अवुगळन्नु विषयदल्लि हरियबिडुव हागिल्ल । ओंदु रीति सुलभवादरे, इन्नोंदु कठिन ।

निर्गुण उपासक सर्वभूतहितरत । सामान्य विषयवल्ल इदु । इडी विश्वद कल्याण माडुव विचार, माताडलु सुलभवादरू कृतियल्लि तरुवुदु तुंबा कष्ट । विश्व हितद चिंतेयुळ्ळवनिगे अदर योचनेयन्नुळिदु इन्नेनू माडलागुवुदिल्ल । अंतेये निर्गुण उपासने बहळ कठिन । बगे बगेय रीतियल्लि सगुण उपासनेयन्नु नम्म शक्तिगनुसारवागि माडबहुदु । नावु हुट्टिद हळ्ळिय सेवे, नम्म तंदे तायिगळ सेवेगळू सगुण पूजेये । जगद हितक्के निम्म आ सेवे विरुद्धवागिरदिद्दरे साकु । नीवु अष्टे अल्पप्रमाणदल्लि माडिदरू सरि, अदु इतरर हितगळिगे अड्ड बारदिद्दल्लि भक्तिय दर्जेगेरुवुदु निश्चित । इल्लवादरे आ सेवे आसक्ति आदीतु । तायि तंदे, निम्म गेळेयरु, दुःखितराद बंधुगळु, साधुशरणरु देवरेंदु तिळिदु सेवे माडबेकु । अवरल्लि परमात्मनन्नु कल्पिसिकोळ्ळबेकु । संतोषपडबेकु । सगुण पूजे सुलभ, निर्गुण पूजे कठिन । उळिदद्देल्ल एरडरदू ओंदे अर्थ । सौलभ्यद दृष्टियिंद सगुण श्रेयस्करवादुदु, अष्टे ।

सुलभतेय अंशवायितु । हागे इन्नोंदु अंशवुंटु । निर्गुणदल्लि भयवुंटु । अदु ज्ञानमय । सगुण प्रेममय, भावनामय । सगुणदल्लि सारल्यवुंटु । इल्लि भक्त हेच्चु सुरक्षितनागिरुत्ताने । निर्गुणदल्लि कोंच गंडातरविदे । ज्ञानद मेले नानु हेच्चागि श्रद्धेयिट्टिद्द कालवोंदित्तु । आदरे ज्ञानवोंदरिंदले नन्न कार्यवागलारदेंब अनुभव ननगे बंदिदे ।

मनस्सिन स्थूल मल ज्ञानदिंद सुट्टु बूदियागुत्तदे। सूक्ष्म मलवन्नु तोळदु विसुडुव सामर्थ्य ज्ञानक्किल्ल। स्वावलंबन, विचार, विवेक, अभ्यास, वैराग्य ई अेल्ल साधनेगळन्नु कैगोंडरू सह मनस्सिन सूक्ष्म मलवन्नु तोळेदुहाकलागुवुदिल्ल। भक्तिय नीरिल्लदे ई मलवन्नु तोळेयुवंतिल्ल। भक्तिय नीरिनल्लि अंथ शक्तियिदे। इदन्नु नीवु परावलंबनवेंदीरि। आदरे 'पर' अेंदरे 'बेरेयवरु' अेंदर्थवल्ल आ श्रेष्ठ परमात्म, आतन अवलंबन अेंदु अर्थ। परमात्मन आधार पडेयदे चित्तद मल मायवागदु।

'ज्ञान अेंब शब्दद अर्थवन्निल्लि सकुचितगोळिसिदे। मनस्सिन कोळेयन्नु ज्ञानदिंद तोळेयलागदु अेंदाग ज्ञान कडमे दर्जेयदायितु' अेंदु केलवरु हेळबहुदु। ई आक्षेपणेयन्नु ना ओप्पुत्तेने। ई मण्णिन पुत्थळिगे शुद्धवाद ज्ञान लभिसलु साध्यविल्लवेंदु नन्न अभिमत। ई देहदल्लि हुट्टिद ज्ञान अेष्टे शुद्धवागिद्दरू सह कोंच विकृतवागिरुवुदु अनिवार्य। इल्लि हुट्टुव ज्ञानद शक्ति मर्यादित। शुद्ध ज्ञान हुट्टिदल्लि अदरिंद अेल्ल कोळेयू सुट्टु बूदियागुवुदेंब विचारदल्लि ननगे संदेहविल्ल। चित्तद समेत अेल्ल 'कोळेयन्नू सुट्टुहाकबल्ल सामर्थ्य ज्ञानदल्लिदे'। आदरे ई विकारमय देहदल्लि ज्ञानद बल अल्प। अंतेये सूक्ष्म कोळे -तोळेदुहोगुवुदिल्ल। भक्तियन्नाश्रयिसदे सूक्ष्म कोळेयन्नु ओरेसि तेगे-यलु साध्यवागदु। अंतले भक्तिय नडुवे मनुष्य हेच्चु क्षेमदिंदिरु-त्ताने। 'हेच्चु' अेंब शब्द नानु सेरिसिदुदु अेंदिट्टुकोळ्ळि। सगुण भक्ति सुलभ। इल्लि ईश्वरने आधार। निर्गुणदल्लि स्वावलंबन।

इल्लिन 'स्व' द अर्थवेनु[2] स्वावलंब्वन अंदरे स्वंतद अंतःकरणदल्लिन परमात्मन आधार । इल्लू अदे अर्थ । केवल वुद्धिय आधारदिंदले शुद्धरादवरारू इल्ल । स्वावलंब्वनदिंद अंदरे अंतःकरणदल्लिन आत्मज्ञान-दिंद शुद्ध ज्ञान दोरेतीतु । साराश, निर्गुण भक्तिय स्वावलंब्वनदल्लू आत्मद्दे आधार ।

62. निर्गुणद अभावदिंद सगुण — सदोष

सगुण उपासनेय पक्षक्के नानु सुलभते सुरक्षितत्तेगळ तूक हाकिदे । हागे निर्गुणद पक्षक्कू हाकवहुदु । निर्गुणदल्लि मर्यादेयुंटु । वेरे वेरे केलसगळिगागि सेवेगागि नावु संस्थेयन्नु स्थापिसुत्तेवे । अदु प्रारंभवागुवुदु मोदलु व्यक्तिय मूलक । आ व्यक्तिये अदक्के मुख्य आधार, संस्थे मोदलिगे व्यक्तिनिष्ठवागिद्दरू मुंदे विकासवादंते तत्वनिष्ठवागबेकु । हागागदिद्धल्लि, स्फूर्ति कोडुव आ व्यक्ति इल्लदागु-त्तलू संस्थेयल्लि अव्यवस्थे तलेदोरीतु । नन्न मेच्चुगेय दृष्टांत कोडले[2] चरखद माले हरियुत्तलू नूलु तेगेयुवुदु हागिरलि, तेगेद नूलन्नु सुत्तुवुदू साध्यवागुवुदिल्ल । अदे मेरेगे आ व्यक्तिय आधार तप्पुत्तलू संस्थेगे दुर्दशे बरुत्तदे । अदु तत्वलियागुत्तदे । व्यक्तिनिष्ठेयिंद तत्वनिष्ठे हुट्टिदरे हीगागदु । सगुणक्के निर्गुणद सहाय वेकु । अदादरू व्यक्तियिंद, आकारदिंद, होरबीळलु कलियबेकु । हिमालयदिंद, शंकरन जडेयिंद गंगे होरटलु । आदरे आके अल्लिये निल्ललिल्ल । आ जडेयन्नु बिट्टु, हिमालयद कोळ्ळ कणिवे काडु बेट्टगळन्नु त्यजिसि बयलु सीमेगे जुळु-जुळु हरिदु बंदलु । आग अवळिंद जनक्के उपयोग-

वायितु। इदे रीतियागि व्यक्तिय आधार तप्पिदरू सह संस्थे तत्वद सुदृढ आधारद मेले निल्लु सिद्धवागिरबेकु। कमानु कट्टुवाग अदक्के आधार कोडुत्तारे। अनंतर अदन्नु तेगेदुबिडुत्तारे। आधारवन्नु तेगेद बळिक कमानु नितरेने अदु निजवाद आधारवागित्तेदु तिळियबेकु। स्फूर्तिय झरि मोदलु सगुण हुट्टिदुदु निज। कोनेगे तत्वनिष्ठेयल्लि, निर्गुणदल्लि परिपूर्णवागबेकु। भक्तिय उदरदिंद ज्ञान मैदळेयबेकु। भक्तिय बळ्ळिगे ज्ञानद हू बरबेकु।

ई विषयवन्नु बुद्धदेव अरितिद्द। आत मूरु बगेय निष्ठे हेळिदाने। मोदलु व्यक्तिनिष्ठेयिद्दरू अदरिंद तत्वनिष्ठे। ओम्मेले तत्वनिष्ठेयुटागदिद्दरू संघनिष्ठेयादरू हुट्टबेकु। ओब्ब व्यक्तिय बग्गे इद्द आदरभाव हदिनैदु व्यक्तिगळ बगेगू उंटागबेकु। संघद बग्गे सामुदायिक प्रीतियिरदिद्दरे ओडकु हुट्टीतु, कलहवादीतु। व्यक्ति-शरणते तोलगिहोगि संघशरणते तलेदोरबेकु। अनंतर सिद्धांतद निष्ठे निर्माणवागबेकु। "बुद्धं शरणं गच्छामि। संघं शरणं गच्छामि। धर्मं शरणं गच्छामि॥" मूरु बगेय शरणागतिगळिवु। मोदलु व्यक्तिय बग्गे प्रीति, अनंतर संघद बग्गे प्रीति। आदरे इवेरडू निष्ठेगळू डोलायमानवे। कोनेगे सिद्धात–निष्ठे उत्पन्नवादरे मात्र संस्थे उळि-दीतु। स्फूर्तिय झरि सगुणदिंद हुट्टिदरू सह अदु निर्गुणद समुद्रवन्ने सेरिकोळ्ळबेकु। निर्गुणद अभावदिंद सगुण सदोषवागुत्तदे। निर्गुणद मर्यादे सगुणवन्नु समतोलवागिरिसुत्तदे। अदक्कागि निर्गुणक्के सगुण आभारियागिदे।

हिंदू, क्रैस्त, इस्ला मुंताद अेल्ला धर्मगळल्लू मूर्तिपूजे यावुदादरोंदु रीतियल्लि उंटु। हिंदू धर्मदल्लि मूर्तिपूजे केळगिन मेट्टलिनदेंब भावनेयिद्दरू कूड अदु मान्यवादुदु। मूर्तिपूजेय महत्तु दोड्डदु। निर्गुणद मर्यादेयिरुवतनकवू मूर्तिपूजे निर्दोषवागित्तु। ई मर्यादे तप्पुत्तलू सगुण सदोषवायितु। मूरु धर्मगळू सगुण, निर्गुणद मर्यादेय अभावदिंद अवनत स्थितिगे वंदिवे। यज्ञ, यागादिगळल्लि प्राणिहत्ये नडेय तोडगितु। इवोत्तू शक्तिगे बलि कोडुव पद्धतियुंटु। इदु मूर्तिपूजेय अत्याचार। मर्यादेयन्नु विट्ट मूर्तिपूजे मेरे मीरि नडे-यितु। निर्गुण निष्ठे उत्पन्नवादरे ई उपटळविरदु।

63. अेरडू परस्पर पूरक : रामायणद दृष्टांत

सगुण सुलभ, सुरक्षित। आदरू अदक्के निर्गुणद आवश्यकते-युंटु। सगुण वेळेदु बळ्ळियागि अदक्के निर्गुणद तत्वनिष्ठेय हू बिडबेकु। निर्गुण सगुणगळेरडू परस्पर पूरकगळु, परस्पर विरुद्धवल्ल। सगुणदिंद निर्गुणक्के हेज्जे हाकबेकु। मनस्सिन सूक्ष्म कोळेयन्नु तेगेदु हाकुवुदक्कागि निर्गुणक्कू सगुणद आर्द्रते बेकु। ओंदरिंद इन्नोंदक्के शोभेयुंटु। रामायणदल्लि ई अेरडु बगेय भक्तियन्नु कुरितु बलु सुंदरवागि हेळिदे। अदर वर्णनेयिरुवुदु अयोध्याकांडदल्लि। रामायण-दल्लेल्ल ई अेरडु रीतियभक्तिगळ विस्तरणवे कंडुबरुत्तदे। भरतन भक्तियदु मोदलनेय रीति। लक्ष्मणन भक्तियदु अेरडनेय रीति। सगुण भक्ति, निर्गुण भक्तिगळ स्वरूप ई निदर्शनगळिंद कंडु बंदीतु।

राम काडिगे होरटुनिंताग लक्ष्मणनन्नु जोतेगे करेदोय्यलु

सिद्धनिरलिल्ल। आतनन्नु जोतेगे करेदोय्यलु याव कारणवू इल्लवेंदु रामनिगनिसितु। आत लक्ष्मणनिगेंद – "लक्ष्मणा, नानु काडिगे होगुत्तेने। तंदेय आज्ञेयागिदे। नीनु मनेयल्ले इरु। नन्नोंदिगे बंदु मोदले दुःखदल्लिरुव तंदेतायिगळिगे इन्नू व्यसनवन्नुंटुमाडबेड। तंदे तायिगळन्नू प्रजेगळन्नू सेविसु। अवर हत्तिर नीनिद्दल्लि ननगाव चिंतेयू बारदु। नन्न प्रतिनिधियागि नीनिल्लिरु। प्रजेगळ पालने माडु। नानु काडिनल्लि ऎंदरे संकटगळमध्यदल्लि प्रवेशिसुत्तिल्ल। ऋषिगळ आश्रमक्के होगुत्तिदेने।" ई बगेयागि लक्ष्मणनिगे राम समाधन हेळिद। आदरे लक्ष्मण रामन ऎल्ल हेळिकेगळन्नू ऒंदे एटिगे ऒंदे शब्ददिंद अळिसिबिट्ट। आ चित्रवन्नु तुंबा सुंदरवागि रचिसिदारे तुलसीदासरु। लक्ष्मण हेळिद: "ऒळ्ळे निगम नीतिगळन्नु नीवु ननगे हेळिकोडुत्तिदीरि। वास्तववागि ई नीतिगळन्नु नानु पालिसबेकु। आदरे ई राजनीतिय भारवन्नु नानु तडेदुकोळ्ळलारे। निम्म प्रतिनिधियागलु अगत्यवाद शक्ति नन्नल्लिल्ल। नानिन्नू मगु। मेरुमंदरद भारवन्नु हंसपक्षि होरबल्लदे? रामचन्द्रा, निन्न प्रीतियिंद बेळेदवनु नानु। निम्म आ राजनीतियन्नु इन्नारिगादरू हेळि। नानु इन्नू हुडुग" ऎंदु हेळि लक्ष्मण आ विषयवन्नेल्ल ऒम्मले निल्लिसिबिट्ट।

नीरन्नु बिट्ट बदुकलारदु मीनु। लक्ष्मणनदू हागे। रामनन्नु बिट्ट दूरविरलु आत समर्थनागिल्ल। आतन रोम रोमदल्लि सहानुभूति तुंबित्तु। राम निद्रिसिदाग तानु जागरणेमाडबेकु, अवन सेवे

माडबेकु — अदरल्ले संतोष लक्ष्मणनिगे। नम्म कण्णिगे यारादरू कल्लु बीरिदरे कै मुंदागि तानु अदर एट्टु तिन्नुत्तदे। लक्ष्मण हीगे रामन कैयागिद्द। रामनिगे बीळुव एटन्नु मोदलु अक्ष्मणने एदुरिसुत्तिद्द। लक्ष्मणनिगे तुलसीदासरु ओंदु सुंदर दृष्टांत कोट्टिदारे। मेले हाराडुत्तिरुत्तदे बावुट। एल्ल हाडुगळू आ बावुटवन्नु कुरितु, अदर बण्ण, अदर आकारगळन्नु कुरितु। अदन्नु हिडिदु सेटेदु निंतिरुव आ कोलु — यारु नेनेदारु अदन्नु? हारुतलिद्द रामन यशोध्वजक्के लक्ष्मण दंडदंते आधारवागि निंतिद्द। नेट्टगे निंतु निंतिद्द। दंड मणियदु। अदरंते रामन यशस्सु मेरेयलेंदु लक्ष्मण एंदू मणियलिल्ल। कीर्ति यारदु? रामनदे! जगत्तिगे काणुवुदु बावुट, दंडवल्ल। कळश काणुत्तदे, तळहदियल्ल। रामन कीर्ति मेरेयुत्तले इदे। लक्ष्मणन सुळिवे इल्ल। हदिनाल्कु वर्षगळ काल मणियलिल्ल ई दंड। तानु स्वतः हिंदे इद्दुकोंडु रामन कीर्तिध्वजवन्नु मेरेसिद। तीरा कष्टद केलसगळन्नु सह लक्ष्मणनिंदले माडिसिकोंड राम। सीतेयन्नु काडिगट्टुव केलसवू अवनमेले बित्तु। बडपायि लक्ष्मण अत्तिगेयन्नु कळुहिसि बंद। आतनिगे अस्तित्ववेन्नुवुदे उळियलिल्ल। आत रामन कण्णिनंतिद्द, कैगळंतिद्द, मनस्सिनंतिद्द। समुद्रदलि होळे मिलनवागुवंते लक्ष्मणन सेवे रामनल्लि मिलनवागित्तु। आत रामन नेरळिनंतागिद्द। लक्ष्मणनदु सगुण भक्ति।

भरतनदु निर्गुण भक्ति। तुलसीदासरु अवनन्नु चेन्नागि चित्रिसिदारे। राम वनक्के होदाग भरत अयोध्येयल्लिरलिल्ल। आत

अल्लिगे बंदाग दशरथ कालवागिद्द । नीने राज्यभार वहिसु अेंदु वशिष्ठ गुरु भरतनिगे हेळिदरु । भरतनादरो "नानु रामनन्नु काणलेबेकु" अेंदु हट हिडिद । रामन भेटिगागि अवन जीव तळमळिसुत्तित्तु । आदरू राज्यद व्यवस्थेगागि आत अेच्चरिके वहिसिद । इदु रामन राज्य । अदर व्यवस्थे नोडिकोळ्ळुवुदेंदरे रामन केलसवन्ने नोडिकोंडहागे । अदु भरतन विचार । संपत्तेल्लवू स्वामियदु । अदर व्यवस्थे नोडिकोळ्ळुवुदु मात्र नन्न कर्तव्यवेंदु आत तिळिदुकोंड । लक्ष्मणनंते राज्यभारदिंद दूरवागुवुदु भरतनिगे साध्यविरलिल्ल । आतन स्थितियिद्दुदु हागे । रामन बग्गे भक्ति अेंदरे रामन केलस माडुवुदु ; इल्लवादरे अंथ भक्तियिंद एनु प्रयोजन ? अेल्ला व्यवस्थेमाडि रामन भेटिगागि भरत वनक्के बंदिदाने । "राम, निन्न राज्यविदु । नीनु ...." अेंदु आत हेळुत्तिद्दहागे राम "भरत, नीने राज्य नडसु" अेन्नुत्ताने । भरत संकोचदिंद एद्दुनिंतु हेळुत्ताने : "निन्न अप्पणे हेगो हागे"। राम हेळिदुदे आतनिगे प्रमाण । अेल्लवन्नू आत रामनिगे ओप्पिसिद । हिंदिरुगि बंदु राज्यभार वहिसिकोंड । आदरू स्वारस्य नोडि । आत इद्दुदु अयोध्येयिंद अेरडु मैलु दूरदल्लि । तपस्सु माडुत्त तपस्वियागिद्दरू राज्यभार नोडिकोंड । कडेगे भरतनन्नु राम कंडाग वनक्के होगिबंद निजवाद तपस्वि यारेंबुदन्नु कंडुहिडियुवुदु कष्टवागित्तु । इब्बर मुख लक्षणगळ रीति ओंदे । वयस्सिनल्लि मात्र स्वल्प बदलावणे । सुखद मेलिन तपस्सिन कळेयू ओंदे तरहु । इवरिब्बरल्लि राम यारु, भरत यारु ?

हेळुवुदु कष्टवे। इन्थदोंदु चित्रवन्नु यारादरू बरेदरे अदोंदु अति पावन चित्रवादीतु । हीगे भरत देहदिंद रामनिगे दूरवागिद्दरू मनस्सिनिंद क्षणकालवू दूरवागिरलिल्ल। ओंदुकडे राज्यवन्नु नडेसुत्तिद्दरू आत मनस्सिनिंद रामन हत्तिर इद्द। निर्गुणदल्लि सगुणभक्ति पूर्णवागि तुंबिरुत्तदे। अल्लि हेगे वियोगद मातु आडुवुदु? अंतेये भरतनिगे अदु वियोगवेनिसलिल्ल। आत देवर केलसदल्लि तोडगिकोंडिद्द।

'रामन नाम, रामन भक्ति, रामन उपासने ऎंब मातु नमगेनू अर्थवागदु; नावु देवर केलस माडोण' ऎंदु इन्दिन युवकरु हेळुत्तारे। देवर केलस माडुव रीतियन्नु भरत तोरिसि कोडुत्तिदाने। केलसदल्लि तोडगिकोंडु भरत वियोगवन्नु नुंगिदाने। देवर केलस माडुवाग आतन वियोगद नेनपु सह बरदिरुवुदु बेरे। देवर परिचयवे इल्लदवन मातु बेरे। देवर केलस माडुत्त संयमपूर्णवाद बाळु नडेसुवुदु तुंब दुर्लभ। निर्गुण कार्य माडुत्तिरुवुदु भरतन वृत्तियागिद्दरू अदक्के सगुणद आधार तप्पलिल्ल। 'रामा, निम्म मातु ननगे शिरोधार्य। नीवु हेळुवुदरल्लि ननगाव संशयवू इल्ल' ऎंदु हेळि भरत होरटु नितरू सह मत्ते हिंदिरुगि 'रामचंद्रा, ननगे समाधानवागुवुदिल्ल। एनो कळवळ' ऎंद। राम अदन्नु गुरुतिसिद। 'हागादरे ई पादुके तेगेदुको' ऎंद। कडेयल्लू सगुणद बग्गे आदर उळियितु। कोनेगे निर्गुणवन्नु सगुण करगिसितु। लक्ष्मणनिगे आ पादुकेगळिंद तृप्तियागुवंतिरलिल्ल। आतन दृष्टियल्लि अदु, हालिन आसेयन्नु मज्जिगेयिंद

पूरैसिकोडहागागुत्तित्तु । भरतन भूमिके बेरे रीति । होरगडे दूर-वागिद्दुकोंडु आत कर्म माडुत्तिद्दरू मनस्सिनिंद राममयवागिद्द । कर्तव्य माडुवुदरल्लि रामभक्तियन्नु काणुत्तिद्दरू आतनिगू पादुके अगत्य ऎनिसितु । पादुकेगळिल्लदे राज्यमाडलारदाद । आ पादुकेगळ आज्ञेयॆंदु आत कर्तव्य माडतॊडगिद । लक्ष्मण रामन भक्त । हागे भरतनू भक्त । तोरिकॆगे इब्बर भूमिकेगळू बेरे बेरे । भरत कर्तव्य-निष्ठ, तत्वनिष्ठ । आदरू अवन तत्वनिष्ठे पादुकेगळ आश्रय पडेय-बेकायितु ।

64. ऎरड्डू परस्पर पूरक : कृष्णचरितेय दृष्टांत

हरिभक्तिय आर्द्रते अगत्य । अंतेये अर्जुननिगू कूड भगवंत 'मय्यासक्त मना पार्थ' – अर्जुना नन्नल्लि आसक्तनागिरु, नन्नल्लि श्रद्धेयन्निडु । अनंतर कर्म माडु – ऎंदु मत्ते मत्ते हेळिदाने । याव भगवद्गीतेगे आसक्ति ऎंब शब्दवे रुचिसदो, होळेयदो ; याव गीते-यल्लि अनासक्तनागि कर्म माडु, रागद्वेष बिट्टु कर्म माडु, निरपेक्ष कर्म-माडु ऎंदु मत्ते मत्ते हेळिदेयो , ऎल्लि अनासक्ति – निःसंगगळ पल्लवि मत्ते मत्ते केळिबरुत्तदेयो अदे भगवद्गीते हेळुत्तदे : 'अर्जुना, नन्न आसक्तियन्निट्टुको' । आदरे भगवंतन आसक्तिऎंदरे अति उच्च वस्तु-वॆंबुदन्नु नावु गमनदल्लिट्टुकॊळ्ळबेकु । अदेनु पार्थिव वस्तुगळ आसक्तिये ? निर्गुण सगुणगळु परस्पर बेरेतुकॊंडिवे । निर्गुणद आधारवन्नु सगुण पूर्णवागि कडिदुहाकलारदु । सगुणद आर्द्रते निर्गुणके बेकेबेकु । सदा कर्तव्यकर्म निरतनु कर्मरूपद पूजेयल्ले

तोडगिद् हागे । आ पूजेय जोतेयल्ले आर्द्रतेयू बेकु । 'मा मनुस्मर युध्यच' – नन्न नेनपिट्टुकोंडु युद्धमाडु । कर्मवू स्वयं पूजेये । आदरू अंतरंगद भाव जीवंतवागिरबेकु । केलवु हू तलेय मेलिट्टरे पूजेयागलिल्ल । अल्लि भावने बेकु । तलेयमेले हू इडुवुदु पूजेयदोंदु रीति, सत्कर्मदिंद पूजे सल्लिसुवुदु इन्नोंदु रीति । इवेरडरल्लू भावनेय आर्द्रते बेके बेकु । हू एरिसिदाग भावविल्लदिद्दरे कल्लिन मेले आ हू एरिसिदंतायितु । भावने मुख्य वस्तु । सगुण मत्तु निर्गुण, कर्म मत्तु प्रीति ज्ञान मत्तु भक्ति, इवेल्लवू एकरूप । इवेल्लवुगळ कोनेय अनुभववोंदे ।

उद्धव – अर्जुनर कतेयन्ने नोडि । रामायणदिंद नानु महाभारतक्के हारिबिट्टे । हीगे हारलु ननगे अधिकारवू उंटु । राम-कृष्ण इब्बरू ओंदे । भरत – लक्ष्मणरिद्दहागे उद्धव-अर्जुन । कृष्णनिल्लवल्लेल्ल उद्धवनिरलेबेकु । कृष्णन वियोग ओंदु क्षणवू अवनिगे सहनवागदु । अंत कृष्णन हत्तिर सदा सेवे सल्लिसुत्तिरबेकु । कृष्णनिल्लवादरे जगवेल्ल अवन पालिगे शून्य । अर्जुननू कृष्णन गेळेय । आदरे आत इरुवुदु दूरद दिल्लियल्लि । अर्जुन कृष्णन केलस माडुववनु । कृष्ण द्वारकेयल्लिद्दरे ईत हस्तिनापुरदल्लि । देह त्यजिसबेकाद अगत्यवेनिसिदाग भगवत उद्धवनिगेंद – 'उद्धवा, ना होरटे' । अदक्के उद्धव, 'नन्नन्नू संगड करेदुकोंडु होगुवुदिल्लवे ? कूडिये होगोण' अंद । 'ननगिष्टविल्ल, सूर्य तन्न तेजस्सन्नु अग्नियल्लिट्टु होगुत्ताने । हागे नन्न ज्योतियन्नु निन्नल्लिट्टु होरडुत्तेने' अंदु भगवंत कडेय व्यवस्थे माडि उद्धवनिगे बुद्धि हेळि कळुहिसुत्ताने । मुंदे उद्धवनिगे भगवंत निज-

ಧಾಮಕ್ಕೆ ತೆರಳಿದುದು ಮೈತ್ರೇಯ ಋಷಿಯಿಂದ ತಿಳಿಯುತ್ತದೆ । ಆಗ ಅವನ ಮನಸ್ಸಿನ-ಮೇಲೆ ಕೊಂಚವೂ ಪರಿಣಾಮವಾಗದು ।

'ಗುರು ಸತ್ತ, ಶಿಷ್ಯ ಅತ್ತ ಇಬ್ಬರದೂ ಬೋಧೆ ವ್ಯರ್ಥ ।'

ಎಂಬ ಹಾಗಲ್ಲ ಇದು । ಇಲ್ಲಿ ವಿಯೋಗದ ಪ್ರಶ್ನೆಯೇ ಇಲ್ಲ । ಆತ ಬಾಳಿನ ಕೊನೆಯ ವರೆಗೂ ಸಗುಣ ಉಪಾಸನೆಯಲ್ಲಿ ತೊಡಗಿದ್ದ । ಪರಮಾತ್ಮನ ಸನ್ನಿಧಿಯಲ್ಲಿದ್ದ । ಈಗ ಆತನಿಗೆ ನಿರ್ಗುಣದಲ್ಲಿಯೂ ಆನಂದವುಂಟಾಗ ತೊಡಗಿತು । ನಿರ್ಗುಣದ ಮೆಟ್ಟಲನ್ನು ಆತ ಏರಬೇಕಾಯಿತು । ಮುಂದೆ ಸಗುಣ, ಆದರೂ ಅದರ ಹಿಂದೆ ನಿರ್ಗುಣ ಬರಲೇಬೇಕು । ಇಲ್ಲವಾದರೆ ಪೂರ್ಣತ್ವವಿಲ್ಲ ।

ಅರ್ಜುನನದು ಇದಕ್ಕೆ ವಿರುದ್ಧ । ಕೃಷ್ಣ ಆತನಿಗೆ ಹೇಳಿದ ಕೆಲಸವೇನು ? ತಾನು ದೇಹ ತ್ಯಜಿಸಿದನಂತರ ತನ್ನ ಸ್ತ್ರೀಯರನ್ನೆಲ್ಲ ರಕ್ಷಿಸುವುದು । ಅರ್ಜುನ ದಿಲ್ಲಿಯಿಂದ ಬಂದು ದ್ವಾರಕೆಯಲ್ಲಿದ್ದ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಸ್ತ್ರೀಯರನ್ನೆಲ್ಲ ಕರೆದುಕೊಂಡು ಹೊರಟ । ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಹಿಸಾರದ ಬಳಿ ಪಂಜಾಬದಲ್ಲಿನ ಕಳ್ಳರು ಅವನನ್ನು ಸುಲಿದರು । ಆ ಕಾಲದ ಅತಿ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ವೀರ, ಏಕಮಾತ್ರ 'ನರ' ನೆಂಬ ಕೀರ್ತಿ ಪಡೆದವ, ಸೋಲನ್ನೇ ಅರಿಯದವ, ಅಂತೆಯೇ 'ಜಯ' ಎಂಬ ಹೆಸರಿನಿಂದ ಖ್ಯಾತನಾದವ, ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ ಶಂಕರನೊಡನೆ ಕಾದಿ ಅವನನ್ನು ಮಣಿಸಿದವ, ವೀರಾಧಿವೀರ, ಆ ಅರ್ಜುನ ಅಜಮೀರಿನ ಬಳಿ ಕಾಲ್ದೆಗೆದು ಓಡಿ ಉಳಿದುಕೊಂಡ । ಕೃಷ್ಣ ಹೊರಟು ಹೋದುದರಿಂದ ಅವನ ಮನಸ್ಸಿನಮೇಲೆ ತುಂಬಾ ಪರಿಣಾಮವಾಗಿತ್ತು । ಅವನ ಜೀವವೇ ಹೊರಟುಹೋಗಿ ನಿಸ್ತ್ರಾಣ ನಿಷ್ಪ್ರಾಣ ಶರೀರ ಉಳಿದ ಹಾಗಿತ್ತು । ಸಾರಾಂಶವಿಷ್ಟೇ : ಸದಾ ಕರ್ಮನಿರತನಾದ ಕೃಷ್ಣನಿಂದ ದೂರದಲ್ಲಿದ್ದ, ನಿರ್ಗುಣ ಉಪಾಸಕ ಅರ್ಜುನನಿಗೂ ಕಡೆಗೆ ವಿಯೋಗವನ್ನು ಸಹಿಸಲಾಗಲಿಲ್ಲ । ಕಟ್ಟಕಡೆಗೆ ಅವನ ನಿರ್ಗುಣ ಬಾಯಿ ಬಿಟ್ಟಿತು । ಆತನ ಕರ್ಮವೆಲ್ಲ ಮುಗಿದಂತಾಯಿತು । ನಿರ್ಗುಣದ ಅಂತ್ಯದಲ್ಲಿ ಅವನಿಗೆ ಸಗುಣದ ಅನುಭವ

वंतु। हीगे निर्गुणदोंदिगे सगुण बेरेयबेकागुत्तदे। सगुणदल्लि निर्गुण सेरबेकागुत्तदे। ओंदरिंद इन्नोंदक्के परिपूर्णते प्राप्तवागुत्तदे।

65. सगुण – निर्गुण एकरूप : स्वानुभव

अंतेये सगुण उपासक, निर्गुण उपासकरल्लिरुव अंतरवेनेंबुदन्नु हेळ होरटरे भाषे कुंठितवागुत्तदे। सगुण, निर्गुणगळेरडू कोनेगे ओंदे कडे सेरुत्तवे। भक्तिय झरि मोदलु सगुणदिंद होरटरू कोनेगे निर्गुणवन्ने सेरुत्तदे। हिंदे वैकम् सत्याग्रहवन्नु नोडलु ना होगिद्दे। मलबारु तीरदल्लि शंकराचार्यर जन्मस्थळविदेयेंदु भूगोलदल्लि बंद विषय ननगे नेनपित्तु। नानु होगुत्तिद्द ऊरिन हत्तिरदल्ले भगवान् शंकराचार्यर ऊरु 'कालडि' इरबहुदेंदु तिळिदु, जोतेगिद्द मलयाळि गृहस्थनन्नु आ बगेगे केळिदे। 'इल्लिंद हत्तु हन्नेरडु मैलु दूर इदे आ ऊरु। नीवु नोडबेके?' अंदरु। इल्ल अंदे। ना बंदद्दु सत्याग्रहक्के होगलु। दारियल्लि बेरेकडे होगुवुदु ननगे योग्यवेनिसलिल्ल। आदुदरिंद आग नानु आ ऊरु नोडलु होगलिल्ल। अदु सरि अंदु ईगलू ननगनिसुत्तदे। आदरे आग रात्रि मलगिकोंडाग आ कालडि ग्राम, आ शंकराचार्यर मूर्ति कण्णिनेदुरु कट्टुत्तित्तु। निद्दे बरुत्तिरलिल्ल। आ अनुभव ननगे ईगलू होसदागि तोरुत्तदे। शंकराचार्यर ज्ञानद आ प्रभाव, अवर आ दिव्य अद्वैतनिष्ठे, इदिरिगे पसरिसिरुव जगत्तन्नेल्ल क्षुद्रगोळिसुव अवर आ अलौकिक – ज्वलंत वैराग्य, अवर गंभीर भाषे, अवरिंद ननगाद अनंत उपकार, ई एल्ल कल्पने नन्न मनस्सिनल्लि तुंबुत्तिद्दवु। ई भावनेगळेल्ल रात्रियल्लि प्रकटवागुत्तिद्दवु।

निर्गुणदल्लि सगुण हेगे तुंबिकोंडिदेयेंबुदर अनुभव ननगाग बंतु । प्रत्यक्ष भेट्टियल्लि इष्टु प्रीतियिरदु । विशेषवागि पत्र बरेयुव अभ्यास ननगिल्ल । आदरे गेळेयनोब्बनिगे पत्र बरेयदिद्दाग ओळगोळगे नेन-पागुत्तिरुत्तदे । पत्र बरेयदिद्दरू मनस्सिनल्लि स्मरणेयिरुत्तदे । हीगे निर्गुणदल्लू सगुण गुप्तवागि तुंबिरुत्तदे । सगुण, निर्गुणगळेरडू ओंदे रूपदवु । प्रत्यक्ष मूर्तियोंदन्नु ऎत्तिकोंडु पूजे माडुवुदु, अंतरंगदल्लि यावागलू जगत्कल्याणद चिंतने नडेदिद्दरू होरगडे पूजे काणिसदिरु-वुदु : ई ऎरडु विचारगळिगू अष्टे बेले, अष्टे योग्यते ।

66. सगुण--निर्गुण वरी दृष्टिभेद, अंते भक्त लक्षणवन्नु जपिसु

कोनेगे नानु हेळुवुदिष्टे सगुण यावुदु, निर्गुण यावुदु ऎंबु-दन्नु निखरवागि हेळुवुदू सुलभवल्ल । ओंदु दृष्टियिंद सगुणवादुदु इन्नोंदु दृष्टियिंद निर्गुणवागिरलू साध्य । सगुणद सेवे माडुववरु ओंदु कल्लु तेगेदुकोंडु माडुत्तारे । आ कल्लिनल्लि देवरन्नु कल्पिसिकोळ्ळु-त्तारे । तायियल्लि, शरणरल्लि, प्रत्यक्ष चैतन्य प्रकटवागिदे । अल्लि ज्ञान, प्रीति, आत्मीयते अरळिदे । अल्लि परमात्मनेंदु अरितु पूजे नडेयदु । अवर सेवे माडबेकु । अल्लि सगुण परमात्मनन्नु काणबेकु । अदन्नु बिट्टु कल्लिनल्लि देवरन्नु काणुत्तारे शरणरु ! कल्लिनल्लि देवरन्नु काणुवुदु निर्गुण पराकाष्ठे । तंदे तायिगळु, नेरेहोरे, इवरल्लि प्रीति ज्ञान उपकारबुद्धि काणुत्तिदे । अल्लि ईश्वरनन्नु काणुवुदु सुलभ । कल्लिनल्लि काणुवुदु कष्ट । नर्मदेय कल्लन्नु देवरेंदु तिळियुत्तारे । अदु

निर्गुणद पूजेयल्लवो ? हीगू अनिसुत्तदे ओम्मोम्मे – कल्लिनल्लि देवरन्नु काणदिद्दरे इन्नेल्लि काणबेकु ? देवर मूर्तियागलु आ कल्ले योग्य । अदु निर्विकारि, शांत । कत्तलेयिरलि, बेळकिरलि, चळियिरलि, आ कल्लु हागे इरुत्तदे । इंथ ई निर्विकारि कल्ले परमात्मन मूर्तियागलु योग्य । तंदे तायि, नेरेहोरे, जनरु एल्लरू विकारमयरु । अवरल्लि अल्प स्वल्पवादरू विकारविरदिरलारदु । आदुदरिंद कल्लिन पूजेगिंत अवर सेवे माडुवुदे ओंदु दृष्टियिंद कष्टसाध्य ।

सारांश – सगुण निर्गुणगळेरडू परस्पर पूरक । सगुण सुलभवादरे निर्गुण कठिन । हागे सगुणवू कठिन, निर्गुणवू सुलभ । एरडरिंदलू दोरेयुव ध्येयवोंदे । ऐदनेय अध्यायदल्लि हेळिदहागे इप्पत्तुनाल्कु तासु कर्म माडियू कोंचवू कर्म माडदिरुव, इप्पत्तुनाल्कु तासु कालवू कर्मवन्ने माडदिद्दरू एल्ल कर्मगळन्नु माडुव योगियू संन्यासियू एकरूपियागिरुवंतेये इल्लू । संन्यास श्रेष्ठवो, योग श्रेष्ठवो एंब प्रश्नेगे उत्तर कोडुवाग भगवंतनिगे योचनेयुंटादंतेये इल्लू आयितु । कोनेगे सौलभ्य, कष्टगळन्नु तारतम्यदिंद एणिसि उत्तरवित्त । योग-संन्यास, सगुण-निर्गुण एल्लवू ओंदे । कोनेगे भगवंत हेळिद – ' अर्जुना, नीनु सगुणने इरु, निर्गुणने इरु । भक्तनागिद्दरे साकु । गुंडु कल्लागबेड ' । हीगे हेळि भगवंत कोनेयल्लि भक्तर लक्षणगळन्नु विवरिसिदाने । अमृत मधुरवागिद्दीतु । आदरे अदर माधुर्यवन्नु नावु सविदिल्ल । ई लक्षणगळेल्ल मधुरवागिवे । इल्लि कल्पनेय अगत्यविल्ल । अनुभव अगत्य । हन्नेरडने अध्यायदल्लिन ई भक्त लक्षणगळन्नु स्थितप्रज्ञन

लक्षणगळ हागे नावु नित्यवू पारायण माडबेकु । मनन माडबेकु । निधानवागि अवन्नु नम्म आचरणेगे तंदु पुष्टि पडेयबेकु । ई रीतियागि नम्म बाळु मेल्ल मेल्लने परमात्मनत्त सागबेकु ।

(15-5-32)

अध्याय 13

67. कर्मयोगक्के उपकारक देहात्म पृथक्करण

व्यासरु तम्म बाळिन सारवन्नेल्ल भगवद्गीतेयल्लि तुंबिदारे। बेरे बरेहवन्नु अवरु विस्तारवागि साकष्टु बरेदिदारे। महाभारतद संहितेगळे लक्ष, ओदूकालु लक्षदष्टु। संस्कृतदल्लि 'व्यास' एंब शब्दक्के विस्तार एंब अर्थवे बंदुबिट्टिदे। आदरे गीतेयल्लि विस्तारद कडे अवर लक्ष्यविल्ल। भूमितियल्लि यूक्लिड् केलवु तत्व हेळिदहागे, केलवु सिद्धात मंडिसिदहागे, बाळिगे उपयुक्तवाद हलवु तत्वगळन्नु व्यासरु गीतेयल्लि विवरिसिदारे। इल्लि विशेष चर्चेयिल्ल। उद्दुद विस्तारविल्ल। गीतेयल्लि हेळिद विषयगळन्नु प्रतियोब्बरू तम्म तम्म बाळिनल्लि उपयोगिसिकोळ्ळलु साध्यविरुवुदे इदक्के कारण। ई बगेय उपयोगक्कागिये अवन्नु गीतेयल्लि हेळिरुवुदु। बाळिगे उपयुक्तवाद विषयगळन्नु मात्र अल्लि विवरिसिदे। आ विवरणेय उद्देश्य अष्टे। अंतेये व्यासरु स्वल्पदरल्लिये तत्वगळन्नु विवरिसि संतुष्टरागिदारे। अवर ई संतोषदिंद, सत्य हागू आत्मानुभवगळ बगेगे अवरिगिद्द अपार नंबिके कंडु बरुत्तदे। सत्यवाद वस्तुवन्नु मंडिसलु हेच्चु युक्तियन्नु उपयोगिसबेकाद अगत्यवेनू इल्ल।

गीतेयन्नु नावु नोडिदेवे। बाळिनल्लि सहायद अगत्यविद्दाग-लेल्ल गीतेयिंद अदु दोरेयुवंतागबेकेंबुदे अदर उद्देश्य। इन्थ नेरवु नमगे यावागलू दोरेयलु साध्य। बाळिगे उपयुक्तवाद शास्त्र गीते; अंतेये अदरल्लि स्वधर्मक्के अष्टु महत्व। स्वधर्माचरणे बाळिन मुख्य

तळहदि । अदर मेले कट्टडवेल्ल निल्लबेकु । ई तळहदि भद्रवागिदष्टू कट्टड तडेदु निंतीतु । ई स्वधर्माचरणेगे ‘ कर्म ’ अन्नुत्तदे गीते । ई स्वधर्माचरणेय कर्मद सुत्तमुत्त हलवारु वस्तुगळु उंटु । अदर रक्षणे-गागि अनेक विकर्मगळ व्यवस्थेयू उंटु । स्वधर्माचरणेयन्नु सज्जुगोळि-सलु, सुंदरगोळिसलु, सफलगोळिसलु अवश्यविरुव नेरवन्नेल्ल ई स्वधर्मा-चरणद कर्मक्के सल्लिसबेकादुदु अगत्य । इदुवरेगे अनेक वस्तुगळन्नु नावु कंडेवु । अवुगळल्लि हेच्चु वस्तुगळु भक्तिय रूपदल्लिद्दवु । इवोत्तु ई हदिमूरने अध्यायदल्लि नानु नोडलिरुव वस्तुगळु स्वधर्मा-चरणेगे तुंबा उपयुक्त । ई वस्तुगळु विचारक्के संबंधपट्टंथवु ।

स्वधर्माचरणे माडुवात फलद त्याग माडबेकेंब मुख्य अंशवन्नु गीतेयल्लि एल्ल कडेगू हेळिदे । कर्म माडबेकु, अदर फलवन्नु त्यजिस-बेकु । गिडक्के नीरेरेयबेकु, अदन्नु बेळेयिसबेकु । आदरे अदर नेरळु, हू, हण्णुगळन्नु स्वत अनुभविसुव अपेक्षे इरबारदु । इन्थ स्वधर्मा-चरणद स्वरूप कर्मयोग । केवल कर्ममाडुवुदु कर्मयोगवल्ल । ई सृष्टि-यल्लि एल्लेल्लू कर्म नडेदे इदे । अदन्नु हेळबेकाद अगत्यविल्ल । आदरे स्वधर्माचरण स्वरूपि कर्मवन्नु — केवल कर्मवल्ल — माडि अदर फलवन्नु त्यजिसुवुदु सामान्यवल्ल । अदु मातनाडलु सुलभ, अर्थ-माडिकोळ्ळलु सुलभ । आचरणेयल्लि तरुवुदु मात्र कष्ट । एकेंदरे, कार्यक्के फलदासे मुख्य प्रेरकशक्ति एंब तिळिवळिकेयिदे । फलदासे-यन्नु त्यजिसि कर्म माडुवुदेंदरे विरुद्ध पद्धति । व्यवहारदल्लि, संसार-दल्लि कंडुबरुवुदक्के विरुद्धवर्तने । तुंबा कर्म माडुववन बाळिनल्लि

गीतेय कर्मयोगवुंटेंदु अनेक सल हेळुत्तेवे। अवन बाळु कर्मयोगमयवेंदु तिळियुत्तेवे। इदु वरी मातिन सडिलु। ई कर्मयोग गीतेय व्याख्येगे सरिहोगलारदु। कर्ममाडुव लक्षावधि जनरल्लि वरी कर्म मात्रवल्ल, स्वधर्माचरणरूपद कर्म माडुव लक्षावधि जनरल्लि सह, गीतेयल्लिन कर्मयोगवन्नाचरिसुववनु ओब्बनो, इब्बरो! अष्टे। कर्मयोगद सूक्ष्म हागू नैज अर्थद ओरेगे तिक्किदरे इन्थ पूर्ण कर्मयोगि सिक्कुवुदु तीर विरल। कर्म माडि अदर फल त्यजिसुवुदु असामान्य विचार। इदु-वरेगे गीतेयल्लि मंडिसल्पट्ट पृथक्करण इदे।

आ पृथक्करणके उपयुक्तवाद इन्नोंदुबगेय पृथक्करण ई हदि-मूरने अध्यायदल्लि हेळल्पट्टिदे। देह -- आत्मगळ पृथक्करण इदु। कण्णिनिंद नावु नोडुव रूपवन्नु मूर्ति, आकार, देह अन्नुत्तेवे। कण्णिनिंद बाह्यमूर्तिय परिचयवादरू वस्तुविन अंतरंगदल्लू नावु प्रवेशिसबेकागुत्तदे। तेंगिन कायन्नोडेदु ओळगिन तिरुळन्नु परीक्षिस-बेकु। मेले मै मुळ्ळादरू हलसु ओळगे रुचि। नम्मन्ने निरीक्षिसुवु-दिरलि, बेरेयवरन्ने निरीक्षिसुवुदिरलि, यावुदक्कू ई तरद ओळगण -होरगण पृथक्करण अगत्य। तोगटेयन्नु बदिगे सरिसुवुदेंदरे -- प्रतियोंदु वस्तुविन बाह्यरूपवन्नु, आतरिक रूपवन्नु पृथक्करण माडुवुदु। होरगण शरीर, ओळगिन आत्म, हीगे प्रतियोंदु वस्तुविगू इब्बगेय रूपविदे। कर्मदल्लू हागे। बाह्य फल कर्मद शरीर, कर्मदिंदुंटागुव चित्त शुद्धि अदर आत्म। स्वधर्माचरणेय बाह्य फलवाद शरीरवन्नु बिसुट्टु, ओळ-गिन चित्तशुद्धि रूपवाद सारभूत आत्मवन्नु स्वीकार माडबेकु। हीगे

नोडुव अभ्यास, देहवन्नु दूरगोळिसि प्रतियोंदु वस्तुविनल्लिन सत्य-वन्नु स्वीकरिसुव सारग्राहि दृष्टि नमगे बरबेकु। कण्णु, मनस्सु, विचारगळिगे ई बगेय शिक्षण -- अभ्यास दोरेयबेकु। प्रतियोंदरल्लि देहवन्नु दूरगोळिसि आत्मवन्नु पूजिसबेकु। हदिमूरने अध्यायदल्लि ई पृथक्करणद विवेचनेयिदे।

68. सुधारणेय मूलाधार

सारग्रहण दृष्टियन्निट्टुकोळ्ळुव विचार बहळ महत्वद्दु। चिक्क-तनदिंद ई अभ्यास बेळेदु बंदरे अष्टु ओळ्ळेयदादीतु। अरगिसि-कोळ्ळबेकाद विषय इदु, ग्रहिसबेकाद दृष्टि। बाळिगू आध्यात्म विद्येगू संबधवेनू इल्लवेंदु अनेकरिगे अनिसुत्तदे। ई बगेय संबंधविद्दरू सह, इरबारदेंदु हलवर विचार। देहदिंद आत्मवन्नु बेर्पडिसबेकेंब शिक्षणवन्नु बाल्यदिंदल कोडिसुव योजने नडेदल्लि बहळ ओळ्ळेय-दादीतु। इदु ओंदु शिक्षणद विषय। ईचेगे कुशिक्षणदिंद केट्ट परिणामगळु आगुत्तिवे। 'नानु देहरूप' एंब भावदिंद ई शिक्षण नम्मन्नु होरगे तरुत्तिल्ल। एल्लवू देवर विजृंभणेये! अदर उपासने एष्टु नडेदरू आ देहक्के बरबेकाद स्वरूप, अदक्के कोडबेकाद स्वरूप एल्ल काणिसदु। ई बगेय व्यर्थपूजे नडेदिदे ई देहद्दु। आत्मद सोगसिन कडे गमनवे इल्ल। ई स्थिति बंदुदु शिक्षणदिंद। देहद मंदासनविड्डुव रूढियन्नु हगलिरुळू कलिसलागुत्तिदे।

ई देहदेवतेय पूजे -- अर्चने माडुव शिक्षण तीर चिक्क वयस्सिनिंद मोदलागुत्तदे। कालिगे एल्लादरू कोंच गायवादल्लि

अदक्के स्वल्प मण्णु हच्चिदरे साकादीतु। मगुविगे अष्टे साकु। मण्णिन अगत्यवू इल्ल अदक्के। अल्प स्वल्प गायवादरू मगुविगे अदर चिंतेयिल्ल। आदरे आ मगुविन सरक्षकनिगे अदु सालदु। आत मगुवन्नु हत्तिर करेदुकोंडु हेगिदेयो, अेथ गाय, वहळ एट्टु वित्ते, रक्त वरुत्तिदेयल्ल! अेंदु प्रारंभिसि, आ मगु अळदिद्दरू सह अदन्नु अळिसुत्ताने। अळदिरुव मगुवन्नु अळिसुव ई लक्षणगळिगे एनेन्न वेकु? जिगिदाडवेड, आटवाडवेड, एट्टु विद्दीतु, गायवादीतु–इत्यादि ओंदे वगेय अेचरिकेगळन्नु कोडुत्ता, केवल देहद कडे नोडुवंथ शिक्षण कोडलागुत्तदे।

मगुविन लीलेयन्नु कंडु कौतुकपडुवुदरल्ल देहद संबंधवे। अदन्नु निंदिसिदागलू देहद संबंधवे। 'एनो सिवळवुरुका' अेन्नुत्तारे। आ मगुविगे अदेंथ आघात! अेंथ सुळ्ळु आरोप अदु। सिवळविरुव मातु निज। आदरे सहजवागि अदन्नु तेगेदुविडदे अदक्कागि आ मगुविन मेले अेंथ आघात। अदु आ मगुविगे सहनेवागदु। अदक्के खेदवागुत्तदे। अदर अंतरंगदल्लि, आत्मदल्लि, स्वच्छते निर्मलते तुंविद्दरू अदर मेले ई वृथा आरोप। निजक्कू आ हुडुग सिवळवुरुकनल्ल। अत्यत सुंदरनू पवित्रनू मधुरनू आद परमात्म आत। परमात्मन अंशविदे आ हुडुगनल्लि। अंथवनन्नु 'सिवळवुरुक' अेन्नुत्तारे। आ सिवळक्कू इवनिगू अंथ संबध एनिदे? आ हुडुगनिगे अदु तिळियुवुदू इल्ल। अदरिंद आ आघात अवनिगे सहनवागुवुदिल्ल। अवन चित्तदल्लि क्षोभे हुट्टुत्तदे। ई रीति क्षोभे

हुट्टिदरे सुधारणेयागलारदु । आदुदरिंद आ हुडुगनिगे सरियागि तिळिसि हेळि अवनन्नु शुचियागिडबेकु ।

इदक्के व्यतिरिक्तवागि वर्तिसि 'नीनु वरी देह' अेंब भाववन्नु आ हुडुगन मनस्सिनमेले बिंबिसुत्तेवे । शिक्षण शास्त्रदल्लि इदोंदु महत्ववाद सिद्धांतवागि परिगणिसल्पडबेकु । तन्निंद शिक्षण पडेयुत्तिरुवात सर्वांग सुंदर अेंब भाव गुरुविनल्लि अगत्य । गणितदल्लि तप्पिदरे केन्नेगे एट्टु हाकुत्तारे । केन्नेगे होडेयुवुदक्कू, गणितदल्लि तप्पुवुदक्कू एनु संबंध ? शालेगे तडवागि बंदरे केन्नेगे बिडुत्तारे । आ एटिनिंद केन्नेय रक्त वेगवागि हरियलारंभिसिदरे आत वेग बदाने ? गंटे अेष्टायितेंबुदन्नु आ रक्ताभिसरण तिळिसीते ? हागे होडेयुवुदरिंद आ हुडुगन पशुवृत्ति हेच्चिसिदंते । ई देहवेंदरे नीनु अेंब भावनेयन्नु बलगोळिसिदंते । हेदरिकेय कट्टडदमेले अवन बाळन्नु निल्लिसिदंते । सुधारणेयागुवुदु इन्थ ओत्तायदिंदल्ल, देहासक्तियन्नु बेळेसुवुदरिंदल्ल । देह बेरे, नानु बेरे अेंब विचार अरिवादाग सुधारणे माडलु साध्य ।

देह मनस्सुगळल्लिन दोषगळ अरिवु इरुवुदेनू तप्पल्ल । अदु अगत्य । आ दोषगळन्नु दूरगोळिसलु अदरिंद सहायवादीतु । आदरे नानु अेंदरे देहवल्ल अेंबदु मात्र स्पष्टवागि मनुष्यनिगे तिळिदिरबेकु । "नानु" अेंबुदु ई देहदिंद तीर भिन्न, अत्यंत सुंदर, सोज्वल, पवित्र अव्यंग आगिदे । तन्न दोषगळन्नु दूरगोळिसलु आत्मपरीक्षे नडसुवात देहवन्नु तन्निंद बेर्पडिसिये परीक्षेगे तोडगुत्ताने । यारादरू तन्न दोषवन्नेत्ति तोरिसिदरे अवनिगे कोप बरुवुदिल्ल । कोपिसिकोळ्ळदे आत

ई शरीररूपि, मनोरूपि यंत्रदल्लि दोषविद्देये अंत्र विचारदल्लि तोडगि अदन्नु दूरगोळिसि कोळ्ळुत्ताने। देहवन्नु तन्निंद प्रत्येकवागि काणलारदवनिगे सुधारणेये असाध्य। ई देह, ई घट, ई मण्णे नानु — अंब कल्पनेयुळ्ळवनु हेगे सुधारणे माडियानु? देह ननगे दोरेत साधनेगळल्लोंदु अंदु तिळिदरे मात्रवे सुधारणे आदीतु। चरखदल्लिन दोषवन्नु यारादरू कंडुहिडिदु तोरिसिदरे ननगे सिट्टु बरुत्तदेये? अल्लि दोषविद्दरे नानु अदन्नु तिदुत्तेने। शरीरद हीगे। कृषिय सामग्रिगळिद्द हागे ई देह। परमेश्वरन होलद कृषि माडलु सामग्रि ई देह। अदु केट्टु होदाग अदन्नु सुधारिसले बेकु। देह साधनरूपि। अदरिंद प्रत्येकवागिद्दु, दोषगळिंद मुक्तनागलु नानु प्रयत्निसबेकु। ई देहरूपि साधनदिंद नानु बेरे। नानु स्वामि, नानु ओडेय, ई देहवन्नु दुडिसि कोळ्ळुवव, अदरिंद उत्तम सेवे पडेयुववनु। हीगे देहदिंद बेरेयागिरुव प्रवृत्तियन्नु बाल्यदिंदले कलिसबेकु।

आटदिंद दूरवागिरुव त्रयस्थ आटद गुणदोषगळन्नु सरियागि अरियुवहागे, देह मनोबुद्धिगळिंद दूरवागिद्दरे मात्र अवुगळ गुणदोष नमगे तिळिदावु। ओब्ब मनुष्य 'ईचेगे नन्न ज्ञापकशक्ति अष्टु सरियागिल्ल। अदक्के एनु उपायमाडबेकु' अंदुकोळ्ळुत्ताने। आत हागेंदाग स्मरणशक्तियिंद आत बेरे अंबुदु स्पष्ट। अवन स्मरणशक्ति केट्टिदे अंदरे अवन यावुदो साधने, यावुदो आयुध केट्टहागे। यार मगनो तप्पिसिकोळ्ळुत्ताने। यारदो पुस्तक इल्ल। आदरे तन्नन्ने कळेदुकोंडवनन्नु काणुत्तेवेये? कडेगे साविन गळिगेयल्लि आतन देह अल्ल

रीतियल्लू केट्टुहोगिरुत्तदे । केलसक्के बारदागुत्तदे । आदरे आत मात्र आंतरिकवागि लेशमात्रवू केट्टिरुवुदिल्ल । आत अव्यंगवागिरुत्ताने, निरोगियागिरुत्ताने । ई विषय अर्थवागलु साध्यविदे । इदु अर्थवादल्लि अनेक गोंदल दूरवादावु ।

69. देहासक्तियिंद बाळिगे अड्डि

देह अंदरेने नानु अँब भावने अॅल्लेल्लू पसरिसिदे । याव विचारवन्नू माडदे ई देहद बेळवणिगेगागि मनुष्य बगे बगेय साधन-गळन्नु निर्मिसिदाने । अवुगळन्नु नोडि मनस्सिगे दिगिलागुत्तदे । ई देह हळेयदादरू, जीर्णवादरू हेगादरू माडि अदन्नु गट्टियागिरिस बेकेंब प्रयत्न मनुष्यनदु । आदरे ई देहवन्नु, ई तोगटेयन्नु अॆष्टु कापाडिकोंडरू साविनवरेगे मात्र ! मरणद गळिगे बंदरे तीरितु, अनन्तर ओंदु क्षणवू सह अदन्नु गट्टियागिडुवुदु साध्यविल्ल । मृत्युवि-नेदुरिगे अॆल्ल आडंबरवू नितुहोगुवुदे । ई तुच्छ देहक्कागि बगे बगेय साधनगळन्नु निर्मिसुत्ताने मानव । हगलू रात्रि अदरदे चिंते । देह रक्षणेगागि मास तिंदरू अड्डियिल्लवंते । ई मनुष्यन देह अंदरे बहळ बेलेयुळ्ळुदुदेनो ! अदन्नुळिसलु मास तिन्नबेकु ! पशुविन देहद बेले कडमेयंते , एकय्य कडमे ? मन्नुष्यन देहक्के हेच्चु बेलेयेके ? याव कारणदिंद ? ई पशुगळु सिक्किदुदन्नेल्ल तिन्नुत्तवे । अवक्के स्वार्थद विना बेरे विचारवे इल्ल । मनुष्य हागे माडुवुदिल्ल । तन्न सुत्तमुत्तलिन सृष्टियन्नु रक्षिसुत्ताने । अंतेये आतन देह बेलेयुळ्ळुदु, महत्वद्दु । आदरे याव कारणदिंद अदु महत्वदायितो आ कारणवन्ने मास तिन्नु-

वुदरिंद मनुष्य अळिसिबिडुत्ताने। नीनु संयमदिंदिद्दरे, सकल जीविगळिगागि होराडिदरे, अेल्लरन्नू रक्षिसुव वृत्ति निन्नल्लि इद्दरे नीनु दोड्डवनु। पशुविगित निन्नल्लि ई विशेष गुणगळिवे अेतले मनुष्य श्रेष्ठ। अंतेये मानवदेह दुर्लभ अेन्नुवुदु। आदरे याव आधारदिंद मनुष्य श्रेष्ठनागिदानो आ आधारवन्ने कळचिहाकिदरे आतन महत्तिन कट्टड उळिदीते? बेरे जीविगळ मास तिन्नुव पशुविन हागे मनुष्यनू मासतिन्नतोडगिदल्लि आतन श्रेष्ठतेय आधारवन्ने उरुळिसिदंतागुत्तदे। नानु कुळितिरुव मरद कोंबेयन्नु नाने मुरिदुहाकलु यत्निसिदहागे इदु।

वैद्यशास्त्रवंतू बगे बगेय चमत्कार नडसिदे। पशुविन मेले शस्त्रक्रिये नडेसि, अदर शरीरदल्लि, आ जीवंत पशुविन शरीरदल्लि, रोग जंतुगळन्नु हुट्टिसि, आ रोगगळिंद अंथेंथ परिणामगळागुत्तवेंबुदन्नु परीक्षिसुत्तदे। जीवंतपशुवोंदन्नु गोळाडिसि दोरकिसुव ज्ञान ई हाळु देहवन्नु उळिसुवुदक्कागि! भूतदयेय हेसरिनल्लि इदेल्लवू नडेदिदे। आ पशुविन शरीरदल्लि जंतुगळन्नु निर्मिसि, अदर रस तेगेदु अदन्नु मनुष्यन शरीरदल्लि चुच्चुवुदु! ई बगेय भीषणप्रकारगळेष्टो। याव देहक्कागि इदेल्ल नडेदिदेयो, आ देह क्षणमात्रदल्लि ओडेदु होगुव गाजिनंथदु। अदु यावाग ओडेदीतेंबुदर बगे कोंचवू भरवसेयिल्ल। मनुष्यदेहवन्नु उळिसलु ई रीति अनेक प्रयत्न नडेदिवे। आदरू कडेगे दोरेव अनुभववेनु? ई नश्वरदेहवन्नुळिसुव प्रयत्न नडेदष्टू अदर नाश हेच्चागुत्तिदे। इन्थ अनुभव बरुत्तिद्दरू सह देहवन्नु बेळेसुव मानवप्रयत्न नडेदे इदे।

अथ आहारर्दिद बुद्धि सात्विकवादीतु अेंबुदर कडे गमनविल्ल। मनस्सु ओळ्ळेयदागलु, बुद्धि निर्मलवागिरलु एनु माडबेकु, याबुदर सहाय पडेयबेकु अेंबुदन्नु मनुष्य योचिसुवुदिल्ल। शरीरद तूक हेगे हेच्चीतु अेंबुदर कडेगे अवन कटाक्ष। भूमियमेलिन मण्णु, अल्लिंद अेत्तु ई शरीरद मेले हेगे कुळितीतु, हेगे नितीतु अेंबुदर कडेगे अवन लक्ष्य। आदरे बडिदु बडिदु इट्ट बेरणिय गुपु कोनेगे ओणगि उरळुव हागे, शरीरद मेलेरिसिद ई मण्णिन हरवु, ई चर्म, ई मास कडेगे ओणगिहोगि ई शरीर मत्ते मोदलिनंतागुवुदू खंडित। होरगिन मण्णन्नु देहद मेले एरिसिकोंडु, तूक नडेयलागदष्टु हेच्चिसिकोंडरे एनु उपयोग? इष्टेल्ल व्यर्थभारवन्नेके हेच्चिसबेकु? ई देहवेंदरे नम्म कैय साधनगळल्लोंदु। इदन्नु सरियागि इट्टुकोळ्ळुवुदक्के अगत्यवादुदन्नु माडिदरे सरि। यत्रर्दिद केलस तेगेदुकोळ्ळबेकु। यत्रद अभिमान, 'यंत्राभिमान' अेंबुदेनादरू उंटे?, हागादरे ई देहयंत्रद बगेगू इदे भावने एकिरबारदु?

साराश – देहवु गुरियल्ल, साधन। ई बुद्धि बंदरे मनुष्य बेळेसिद वृथा आडंबरवन्नु अदु हेच्चिसलारदु। बाळु बेरे रीतियल्लि कडीतु। आग ई देहवन्नु सिंगरिसुव आसक्तियुंटागलिक्किल्ल। सादा बट्टेयोंदिद्दरे साकु ई देहक्के। आदरे मनुष्यन आसेगे अदु सालदु। आ बट्टे नुण्णगे इरबेकु। अदर मेले चित्र बेकु। जरतारि बेकु। अदक्कागि अनेक जन दुडियबेकु। इदेल्ल एतक्कागि? आ देवरिगेनु बुद्धि इरलिल्लवे? देहक्के अंदवाद बट्टे अगत्यविद्दल्लि, हुलिय मैमेले

इद्दहागे मनुष्यन मैमेल. आत पट्टे इडुत्तिरलिल्लवे ? नविलिगिद्द हागे सोगसाद पुच्छविडलु वरुत्तिरलिल्लवे ? अवनिगेनु अदु असाध्यवागित्ते ? मनुष्यनिगे ओंदे वण्ण कोट्ट देवरु। ओंदु कले विद्दरू सौंदर्य मायवागुत्तदे। मनुष्य इरुवुदे अंदवागि। मानव देहवन्नु इन्नू सिंगरिसबेकेंव उद्देश्यवे इल्ल परमात्मनिगे। सृष्टिय सौंदर्यवेनु सामान्यवे ? अदन्नु कण्णिनिंद नोडुवुदु मानवन केलस। मनुष्य अदन्नु मरेत। भ्रांतिगोंड। जर्मनि नम्म वण्णद कसवन्नु कोंडितंते। हागल्ल। नम्म मनस्सिन वण्ण मोदलु सत्तित्तु। आमेले ई कृत्रिम वण्ण नमगे रुचिसितु। अदक्कागि परावलंबिगळादेवु। विना कारण देहवन्नु सिंगरिसुव हुच्चिगे बिद्देवु। मनस्सन्नु सिंगरिसबेकु, वुद्धियन्नु अरळिसबेकु, हृदयवन्नु अदगोळिसबेकु अंबुदेल्ल बदिगे सरियितु।

70. तत्त्वमसि

अंतेये, भगवत ई हदिमूरने अध्यायदल्लि हेळिद विषय अत्यंत बेलेयुळ्ळद्दु। "नीनु देहवल्ल – आत्म"। "तत् त्वं असि"। आ आत्मरूपि नीनु। ई उद्गार बहळ पवित्रवादुदु। ई उच्चार बहळ पावन, उदात्त। संस्कृत साहित्यदल्लि ई उदात्त विचार बेरेतुहोगिदे। "मेलिन ई होदिके, ई तोगटे नीनल्ल। अखंड अविनाशि फल नीनु"। "अदु नीनु" अंब विचार मानवन अंतरंगदल्लि हुट्टिदाग, नानेंदरे ई देहवल्ल। आ परमात्म नानु अंब विचार बदाग, ओंदु बगेय अननुभूत आनंद मनस्सिनल्लि तुंवुत्तदे। आ नन्न रूपवन्नु नाशमाडुवुदु सृष्टियल्लिन याव वस्तुविगू साध्यविल्ल। यारिगू आ सामर्थ्यविल्ल।

आ उद्गारदल्लि इंथ सूक्ष्म विचार तुंबिदे ।

देहदाचेगिरुव अविनाशि, निष्कलंक आत्म तत्व नानु । आ आत्म तत्वक्कागि ई देह ननगे दोरेतिदे । परमात्म तत्व दूषितवादाग-लेल्ल अदन्नुळिसिकोळ्ळलेंदु ई देहवन्नु नानु त्यजिसुत्तेने । आ तत्व-वन्नु उज्वलवागिसुवुदक्कागि देहवन्नु बूदिमाडलु नानु यावागलू सिद्ध । ई देहद मेले सवारिमाडलु बंदवनु नानु । अदर मेरवणिगे माडलि-क्कल्ल । अदरमेले नन्न अधिकार नडेयबेकु । अदन्नु उपयोगिसिकोंडु नानु मंगलहितवन्नुंटुमाडेनु । त्रिलोकगळन्नू आनंददिंद तुंबेनु । महा तत्वक्कागि ई देहवन्नु बिसुट्टु ईश्वरन जयजयकार माडेनु । श्रीमंत कोळे बट्टे बिसुट्टु इन्नोंदन्नु तेगेदुकोळ्ळुव हागे नानु माडेनु । केलस-क्कागि ई देह । अदरिंद केलस नडेयदंतादाग अदन्नु बिसुडुवुदे सरि ।

सत्याग्रहदल्लि नमगे दोरेयुव शिक्षणवू इदे । देह, आत्म एरडू बेरे बेरे । ई विषय मानवन गमनक्के बंदाग, अदर स्वारस्य तिळि-दाग, निजवाद शिक्षणक्के, निजवाद विकासक्के प्रारंभ । आगले सत्याग्रह साधिसीतु । अंतेये प्रतियोब्बनू ई भावनेयन्नु नेट्टुकोळ्ळ-बेकु । देह निमित्तमात्रवाद साधन । परमात्म कोट्ट आयुध । अदर केलस मुगिद दिन अदन्नु बिसुट्टु बिडबेकु । चळिगालद उष्ण वस्त्र-गळन्नु बेसगेयल्लि बिसुडुत्तेवे । बेळगिन बट्टे मध्याह्न तेगेयुत्तेवे । हागे ई देहद विचार । अदर केलस तीरुवतनक अदन्निट्टुकोळ्ळुवुदु । अदरिंद केलस आगदाग ई देहरूपि बट्टेयन्नु तेगेदु बिसुडुवुदु । आत्मद विकासक्कागि भगवंत ई उपाय हेळिकोट्टिदाने ।

71. दब्बाळिके मुगियितु

देहदिद नानु बेरे अेब विषय लक्ष्यदल्लि बरुवतनकवू जुलुमे-गाररु नम्म मेले जुलुमे माडुत्तलिद्दारु। नम्मन्नु गुलामरन्नागिसि, नम्मन्नु पीडिसि गोळाडिसियारु। दब्बाळिके नडेयुवुदु भयद आधार-दिद। ओब्ब राक्षसनिद्द। अवनु ओब्ब मनुष्यनन्नु हिडिदिद्द। आ मनुष्यनिंद सततवागि केलस माडिसिकोळ्ळुत्तिद्द। आत केलस माड-दिद्दल्लि "निन्नन्नु तिंदुबिट्टेनु, नच्चुनुरि माडिबिट्टेनु" अेंदु बेदरिसु-त्तिद्द। मोदलु मोदलु आ मनुष्य भयपडुत्तिद्द। बरबरुत्त पीडने हेच्चिदहागेल्ल आत "तिंदु बिडु" अेंद। आदरे आ राक्षसनेनु तिन्नुववनु? अवनिगे बेकिद्दुदु ओब्ब गुलाम। अवनन्नु तिंदुबिट्टरे केलस माडुववरु यारु? प्रतिसलवू तिंदुबिडुवुदागि आत हेदरिसुत्तिद्द। आदरे 'तिन्नु' अेंदु उत्तर दोरेयुत्तलू अवन जुलुमे निंतु होयितु। ज़नतेगे ई देह रक्षणेय आसे हेच्चु अेंदु हिंसे माडुववरु तिळिदिरु-त्तारे। अवर देहक्के हिंसे कोट्टल्लि अवरु गुलामरागुत्तारे। ई देहद मेलण आसक्ति त्यजिसिदरे नीवु तत्क्षण सम्राटरागुत्तीरि। अेल्ल सामर्थ्यवू निम्म कैगे बरुत्तदे। अनतर निम्म मेले यार अधिकारवू नडेयलारदु। आग दब्बाळिके अेब भावनेये अवरिगिरुव आधारवे कळचिहोदीतु। 'नानु देह' अेंब भावनेये अवरिगिरुव आधार। इवर देहक्के हिंसे कोट्टरे कैवशरागुत्तारे अेंदु अवरिगेनिसुत्तदे। अंतेये हेदरिकेय मातन्नाडुत्तारे।

'नानु देह' अेब भावनेयिंदले इतररन्नु जुलुमे माडलु,

हिंसिसलु साध्यवागुत्तदे । इंग्लेंडिन हुतात्म क्रान्मर् अंददेनु ? नन्नन्नु सुडुत्तीरा ? सुट्टुबिडि । ई नन्न बलगैयन्ने मोदलु सुडि" । आ रिड्ले, आ ल्याटिमर् एनेंदरु ? "नम्मन्नु सुडुत्तीरा ? यारु सुडबल्लरु नम्मन्नु ? नावु होत्तिसिद धर्म-ज्योति एंदेंदिगू आरलारदु । देहद ई मेणवत्तियन्नु, ई कोब्बन्नु उरिसि, सत् तत्वगळ ज्योतियन्नु बेळगिसु-त्तिरुवुदु नम्म केलस । देह होदीतु । अदु एंदादरू होगुवुदे" । विष कुडिसि सायिसबेकेंदु साक्रटीसनिगे शिक्षेयायितु । आग आत — "नानीग मुदुक । इन्नु नाल्कु दिनगळल्लि ई देह नशिसले बेका-गित्तु । सायलिद्दुदन्नु सायिसुवुदरल्लि नीवु साधिसिद पुरुषार्थवेनो निमगे गोत्तु । स्वल्प विचार माडिदीरो इल्लवो ? देह सायुवुदु खडितवागित्तु । मर्त्यवस्तुवन्नु नीवु कोंदरे अदरल्लेनु पौरुष ?" एंद । सायुवुदक्के मुन्नादिन रात्रि साक्रटीस्, आत्मद अमरत्ववन्नु कुरितु तन्न शिष्यरिगे विवरिसिद । तन्न देहदल्लि विष प्रवेशिसिदाग तनगे एंथेंथ वेदने यागबहुदेंबुदन्नु तमाषेयागि हेळुत्तिद्द । आ बग्गे अवनिगे परिवेये इरलिल्ल । आत्मद अमरत्ववन्नु कुरितु चर्चे कोनेगोंड तरुवाय अवन शिष्यनोब्ब "नीवु सत्तबळिक हेगे हूळबेकु ?" एंदु केळिद । आग साक्रटीस् "एलो बुद्धिवंत, अवरु नन्नन्नु कोल्लुववरु, नीनु नन्नन्नु हूळुववनु ! कोल्लुववरु वैरिगळु, हूळुवव नन्न मेले बहळ प्रीति-युळ्ळवनेनु ? अवरु जाणतनदिंद कोल्लुत्तारे । नीनु जाणतनदिंद हूळुत्ती । नीनारो नन्नन्नु हूळलु ? नीवेल्ल हूळलपट्टरू नानु उळियुत्तेने । यावुदरल्लि नन्न हूळुत्ती ? मण्णिनल्लो, नश्यदल्लो ? नन्नन्नु यारू कोल्ल-

लाररु, नन्नन्नु यारू हूळलाररु। इष्टु होत्तु ना हेळिदुदेनु? आत्म अमर। अदन्नारु कोल्लवल्लरु, यारु हूळवल्लरु?" एंदु हेळिद। निजवागियू साक्रटीस् इंदिगू – एरडु एरडूवरे साविर वर्षगळादरू – एल्लरन्नू हूतु ता बदुकिदाने!

72. परमात्मशक्तियल्लि विश्वास

सारांश – देहद आसक्तियिरुवतनक, भीतियिरुवतनक निज-वाद रक्षणे दोरेयदु। अदुवरेगू सतत भीतिये। स्वल्प मलगिदरे साकु, हावु बंदु कच्चीतु, कळ्ळ बंदु कोंदानु एंब दिगिलु। हत्तिर दोण्णेयिट्टुकोंडु मलगुत्ताने मनुष्य। एतक्के? हत्तिर इरबेकु। कळ्ळ गिळ्ळ बंदरे.......... ' एन्नुत्ताने। अय्यो हुच्च, अदे दोण्णेयन्ने एत्ति कळ्ळ निन्न तलेगे हाकिदरे? आत तन्न दोण्णे तरुवुदन्नु मरेतिद्दरे आग नीनागि अवनिगे दोण्णेयन्नु सिद्धवागिट्टंतागदे? यार भरवसेयमेले नीनु मलगुत्ती? नीनाग केवल निसर्गद कैयल्लि। एच्चेत्तिद्दरे ताने निन्नन्नु नीनु रक्षिसिकोळ्ळुवुदु? निद्देयल्लि निन्नन्नु कापाडुवरारु?

यावुदो शक्तियमेले नंबिकेयिट्टु नानु मलगुत्तेने। हुलि, हसु इत्यादि सर्व पशुगळू याव शक्तियन्नु नंबि निद्रिसुववो, अदे शक्ति-यन्नु नंबि नानू निद्रिसुत्तेने। हुलिगू निद्दे बरुत्तदे। इडी जगत्ति-नोंदिगे वैर कट्टिकोंडु, क्षण क्षणक्कू हिंदे तिरुगिनोडुव आ सिंह – अदक्कू निद्दे बरुत्तदे। आ शक्तियल्लि अदक्के नंबिकेयिरदिद्दरे, केलवु सिंह मलगबेकु, केलवु एच्चेत्तुकोंडिद्दु कावलु नडेसबेकु एंदु

अदु व्यवस्थे माडुत्तित्तु। यावशक्तियमेले विश्वासविट्टु तोळ हुलि सिंह-गळंथ क्रूर पशुगळू निद्रिसुवुवो, आ विश्वव्यापक शक्तिय तोडेयमेले नानु मलगिदेने। तायिय मैमेले बालक सुखवागि निद्रिसुत्ताने। आग आत जगत्तिन चक्रवर्ति। ई विश्वंभर मातेय तोडेयमेले नीवु नावु ऎल्लरू इदे रीति प्रेमपूर्वक, ज्ञानपूर्वक निद्रिसलु कलियबेकु। यावुदर आधारदमेले नन्न जीवनवेल्ल निंतिदेयो, अदर अधिकाधिक परिचय-वन्नु नानु माडिकोळ्ळबेकु। आ शक्तिय बग्गे ननगे नंबिके हुट्टिदष्टू नन्न रक्षणे दृढवादीतु। आ शक्तिय अनुभव बंद हागेल्ल विकासवू हेच्चीतु। ई हदिमूरने अध्यायदल्लि अदर दिग्दर्शनविदे।

73. परमात्मशक्तिय उत्तरोत्तर अनुभव

देहदल्लिरुव आत्मद विचारवे इल्लदिरुवतनक मनुष्य सामान्य क्रियेगळल्ले तोडगिरुत्ताने। हसिवादरे ऊट माडुवुदु, नीरडिकेयादरे नीरु कुडियुवुदु, निद्दे बदरे मलगुवुदु -- इदन्नुळिदु बेरेनू अवनिगे तिळिदिरुवुदिल्ल। इष्टकागि आत जगळवाडुत्ताने, आसे माडुत्ताने, लोभियागुत्ताने। इन्थ दैहिक क्रियेगळल्ले आत मग्ननागिरुत्ताने। विकासक्कारंभवागुवुदु इन्नु मुंदे। इष्टरवरेगू आत्म सुम्मने नोडुत्तिरु-त्तदे। बाविय कडेगे अंबेगालिडुत्त होगुव पुट्ट मगुविन बेन्न हिंदे तायियिरुवंते, आत्मवू निंतिरुत्तदे। ऎल्ल क्रियेगळन्नू शांतरीतियिंद नोडुत्तिरुत्तदे। ई स्थितिगे 'उपद्रष्टा' ऎंदरे साक्ष्यरूपदिंद ऎल्ल-वन्नू नोडुववनु -- ऎंदु हेळिदे।

आत्म नोडुत्तिरुत्तदे। आदरे ओप्पिगे कोडदु। तन्नन्नु

केवल देहरूपवेंदु भाविसिकोंडु केलसमाडुव जीव अेच्चरागुत्तदे। तानु पशुविन हागे बाळु नडेसुत्तिरुवुदर अरिवु अवनिगे बरुत्तदे। ई विचारद मट्टक्के जीव बंदाग नैतिक भूमिकेगे आरंभ। अनंतर क्षण क्षणक्कू योग्यायोग्यद प्रश्ने एळुत्तदे। मनुष्य विवेकक्के ओळगागुत्ताने। पृथक्करणात्मक बुद्धि जागृतवागुत्तदे। स्वैर क्रिये निल्लुत्तदे। स्वच्छ-दंते निंतु संयम बरुत्तदे। ई नैतिक भूमिकेय मेले जीव बंदाग आत्म सुम्मने कुळितु नोडुवुदिल्ल। ओळगिनिंद अनुमोदने कोडुत्तदे। ‘शहबास’ अेंब धन्यतेय ध्वनि ओळगिनिंद बरुत्तदे। केवल ‘उपद्रष्टा’ आगिरदे ईग ‘अनुमंता’ आगुत्तदे।

हसिद अतिथियोब्ब बागिलिगे बंदाग निम्मेदुरिन तट्टेयन्नु नीवु अवनिगे कोडुत्तीरि। आ रात्रि निम्म आ सत्कृतियन्नु नेनेदुकोंडाग अेंथ आनंद! ओळगिनिंद आत्म “ओळ्ळेयदन्नु माडिदे” अेंदु मेल्लने उसिरुत्तदे। मगन बेन्नमेले कैयाडिसि तायि ‘चलो केलस माडिदे, मगु’ अेंदाग जगत्तिनल्लि भारि उडुगोरे सिक्कहागे आतनि-गनिसुत्तदे। अदे मेरेगे हृदयस्थ परमात्म “शहबास, मगु” अेंब शब्द नम्मन्नु उत्तेजिसुत्तदे, उत्साहगोळिसुत्तदे। आग भोगमय बाळ्न्नु तोरेदु नैतिक जीवनद भूमिकेय मेले जीव बंदु निंतिरुत्तदे।

इन्नु अदर मुंदिन भूमिके: नैतिक जीवनदल्लि कर्तव्य निरत-नागिद्दाग मनस्सिन मलवन्नेल्ल तोळेयलु मनुष्य प्रयत्निसुत्ताने। ई बगेय प्रयत्न नडेदिद्दाग आतनिगे दणिवागुवुदू उंटु। इन्थ समयदल्लि “देवरे, नन्न प्रयत्नगळु पराकाष्ठेयायितु। ननगे हेच्चु शक्ति नीडु।

हेच्चु बलवन्नु कोड्ड" ऎंदु जीव प्रार्थिसुत्तदे । ऎल्ल प्रयत्नगळू मुगिदु, तन्न शक्तियोंदे सालदु ऎंब अरिवु मानवनिगागुव तनक प्रार्थनेय स्वारस्य अवनिगे तिळियुवुदिल्ल। तन्न शक्तियेल्ल वेच्चवाद-वळिक, अदु सालदेंबुदु कंडुबंदाग, आर्तनागि द्रौपदिय हागे परमात्म-नन्नु करेयबेकु। अवन कडेगे ओडबेकु। परमात्मन कृपे सहायगळ झरि हरियुत्तले इदे। नीरड्डिसिदवरु बंदु तम्म हक्कु ऎंदु नीरु कुडिय बहुदु। इन्नू बेकादरे केळि पडेयबहुदु। ई तरद संबंध बरुवुदु ई मूरनेय भूमिकेयल्लि। परमात्म हेच्चु समीपवागुत्ताने। केवल शाब्दिक प्रोत्साहदल्लि मात्र तोडगदे आत सहाय माडलु धाविसुत्ताने।

मोदलु परमात्म दूर नितिद्द। लेक्कमाड्ड ऎंदु शिष्यनिगे गुरु दूर नितुकोळ्ळुत्ताने। हागे भोगमय जीवनदल्लि जीव तोडगिद्दाग दूर नितु 'सरि, सागलि ओट्टाट' ऎंदु परमात्म हेळुत्ताने। अनंतर नैतिक भूमिकेयमेले बरुत्तदे जीव। ई संदर्भदल्लि परमात्मनिगे तटस्थ नागिरलु साध्यवागुवुदिल्ल। जीव ओळ्ळेय केलस माडुत्तिदेयेंबुदु गोत्तागुत्तले आत मेल्लने इणिकि नोडुत्ताने। 'शहबास' ऎन्नुत्ताने। ई रीति सत्कर्मगळु नडेयुत्त, मनस्सिन स्थूल मल मायवागि, सूक्ष्म मलवन्नु तोळेयुव समय बंदाग, अदक्कागि जीव नडेसिद प्रयत्नगळेल्ल सालदे होदाग, देवरिगे करे बरुत्तदे। आत 'ओ' ऎन्नुत्ताने। ओडिबरुत्ताने। भक्तन उत्साह साल्दागुत्तले देवरु अवन नेरविगे बरुत्ताने। जगत्तिन सेवक सूर्यनारायण निम्म बागिलिनल्लिये निंति-दाने। मुच्चिद बागिलन्नु मुरिदु आत ओळगे सेरलार। एकंदरे आत

सेवक। स्वामिय गौरववन्नु आत कायुत्ताने। बागिलिगे एट्टु हाक-लार। ओळगडे स्वामि निद्दे होगिद्दरू सह ई सूर्य स्वरूपि सेवक होरगडे बागिलिनल्लि नितुकोंडिरुत्ताने। बागिलन्नु कोंच ओरेमाडिदरे साकु। बेळकन्नेल्ल तेगेदुकोंडु आत ओळगे सेरुत्ताने। कत्तलेयन्नु दूरगोळिसुत्ताने। परमात्मनू हीगेये। सहायक्कागि अवनन्नु याचिसिदरे साकु, बंदे बिडुत्ताने। सोंटदमेले कैयिट्टुकोंडु भीमातीरदल्लि आत सज्जागि निंतिदाने।

'कैयेत्ति नित, कापाडलेत'

इत्यादियागि तुकारामादिगळु वर्णिसिदारे। मूगु तेरेदिद्दरे साकु, गाळि ओळगे सेरुत्तदे। बागिलु कोंच तेरेदिद्दरे साकु, बेळकु ओळगे बरुत्तदे। गाळि बेळकुगळ दृष्टातवू अपूर्ण। परमात्म अवक्किंत हेच्चु समीपस्थ, हेच्चु उत्सुक। आत 'उपद्रष्टा' 'अनुमंता' आगि उळियदे 'भर्ता' अंदरे अेल्ल रीतियल्लू सहाय माडुववनागुत्ताने। मनस्सिन-कोळेयन्नु तोळेवाग नावु अगतिकरागि "नन्न नाडि निन्न कैयोळगे, कायो दोरेये" अेन्नुत्तेवे। "नीनोब्बने नेरवुगार, निन्न आसरेये नन्न सार" अेंदु प्रार्थिसुत्तेवे। इन्थ प्रार्थनेयन्नालिसियू दूर निंताने आ दयाघन? भक्तन सहायक आ परमात्म, कोरतेगळन्नु पूरयिसुव आ परमात्म मुंदे बरुत्ताने। आग आत रोहिदासन चर्म-वन्नु तोळेदानु, सज्जन कसायिय मास मारियानु, कबीरन सेले नेय्दानु। जनाबायिगे बीसलु नेरवादानु।

परमात्मन कृपेय प्रसाददिंद कर्मक्के फल दोरेतरू अदन्नु तानु

तेगेदुकोळ्ळदे देवरिगे अर्पिसबेकेंबुदु मुंदिन मेट्टलु। ‘निन्न फलवन्नु नीने तेगेदुको’ अँदु जीव देवरिगे हेळुत्तदे। देवरु हालु कुडियले-बेकेंदु हटहिडिद नामदेव। अदरल्लि तुंबा स्वारस्यवुंटु। कर्मफलरूप-वाद अेल्ल हालन्नू नामदेव देवरिगे अर्पिसतक्कव। आ बगेय बाळिन सर्व संपत्तन्नू अेल्ल गळिकेयन्नू यार कृपेयिंद अदु लभिसितो अवरिगे अर्पिसबेकु। धर्मराय स्वर्गदल्लि कालिडबेकु; अवन जोतेयल्लि ओंदु नायि इत्तु। अदक्के स्वर्गदल्लि प्रवेशविल्ल अँदरु। इडी जीवनदल्लि नानु गळिसिद सर्व भाग्यवन्नू धर्मराय ओंदे गळिगेयल्लि त्याग माडिद। अदे रीति साधक तानु गळिसिद सर्व फलवन्नू ईश्वरार्पण माडुत्ताने। उपद्रष्टा, अनुमंता, भर्ता अँब रूपगळल्लि प्रतीतनागुव परमात्म ईग भोक्तनागुत्ताने। शरीरदल्लिद्दु आ परमात्मने भोगवन्नु भोगिसुत्तिरुव-नेंब भूमिकेगे एरुत्तदे जीव।

इदर मुंदिन मेट्टलु, संकल्प माडुवुदन्नु निल्लिसुवुदु। कर्मदल्लि मूरु मेट्टलु – संकल्प माडुत्तेवे, अनंतर केलस माडुत्तेवे। कोनेगे फल दोरेयुत्तदे। प्रभुविन नेरविनिंद माडिद कर्मक्कागि दोरेत फलवन्नु अवनिगे अर्पिसियायितु। कर्म माडुवातनू परमात्म, अदर फलवन्नुणु-वातनू परमात्म। इन्नु आ कर्मद संकल्प माडुवातनू परमात्मने आगलि। कर्मद आदि मध्यांतदवरेगू परमात्मने इरलि। ज्ञानदेवरु हेळुत्तारे. ‘तोटगार अेल्लियवरेगे नीरु ओय्यबेको अल्लिगे अदु होगु-त्तदे, आतन प्रीतिय हूगिडगळन्नू हण्णिन गिडगळन्नू बेळेसुत्तदे। हागेये, नन्निंद एनु आगबेको आतने निर्धरिसलि’। नन्न मनद अेल्ल

संकल्पगळ होणेयू आतनदे। कुदुरेय मेले नानु भार होत्तुकोळ्ळवेकें? अदू कुदुरेय बेन्न मेलिरलि। नन्न तलेय मेले अदन्निट्टुकोंडरू सह अदर भार होरुवुदु कुदुरेये अल्लवे? आदुदरिंद अेल्ल भारवू अदर बेन्नमेले इरलि। हीगे बाळिन अेल्ल ओडाट -- अलेदाट, कुणिदाट -- हाराट, अेल्लवन्नू माडुववनु कडेगे परमेश्वरने। नन्न बाळिन "महेश्वर" आत। ई रीति विकासवागुत्त बंदहागे बाळेल्लवू ईश्वरमयवादीतु। उळियुवुदु ई देहद परदेमात्र। अदू हारिहोदाग जीव, शिव, आत्म--परमात्मगळ ऐक्यवागुत्तदे। हीगे --

"उपद्रष्टानुमंता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः"

ई स्वरूपदल्लि परमात्मन अनुभववन्नु उत्तरोत्तर हेच्चु पडेयबेकु। देवरु मोदलु तटस्थनागिद्दु नोडुत्ताने। नैतिक जीवनक्कारंभवागि सत्कर्मगळिगे मोदलादाग 'शहबास' अेन्नुत्ताने। चित्तद सूक्ष्म कोळेयन्नु तोळदु-हाकलु तन्न प्रयत्न सालदे भक्त करेदाग, आ अनाथनाथ सहाय-क्कागि धाविसुत्ताने। अनंतर, फलवन्नु आतनिगे अर्पिसि, अवनन्नु भोक्तनन्नागि माडबेकु। कोनेगे संकल्पगळेल्लवन्नु अवन मेले बिट्टु जीवनवेल्लवन्नु हरिमयवन्नागि माडबेकु। मानवन अंतिम साध्य इदु। कर्मयोग, भक्तियोगगळेंब रेक्केगळिंद हारुत्त साधक ई कोनेय मेट्टलन्नु एरबेकु।

74. नम्रते, निर्दंभ आदि मूलभूत ज्ञानसाधनगळु

इवेल्लवन्नु साधिसलु नैतिक साधनेय दृढवाद तळहदि बेकु। सत्य, असत्यगळन्नु विवेचिसि सत्यवन्ने स्वीकरिसबेकु। सारासारवन्नु

कंड्ड सारवन्नु तेगेदुकोळ्ळबेकु। चिप्पन्नु बिसुट्टु मुत्तन्नु तेगेदुकोळ्ळबेकु। हीगे बाळन्नु आरंभिसबेकु। आत्मप्रयत्न, परमेश्वर कृपेगळ बलदिंद मेलक्केरबेकु। देहदिंद आत्मवन्नु बेर्पडिसलु नमगे तिळिदिद्दल्लि ई साधनेगे तुंब सहायवादीतु। ई संदर्भदल्लि क्रिस्तन बलिदानद नेनपु बरुत्तदे। आतनिगे बलवागि मोळे जडिदिद्दरु। आ समयदल्लि क्रिस्तन बायिंद 'देवरे, इवरु हीगेके पीडिसुत्तारे' एंब मातु होरटवु। ओडनेये आत सवरिसिकोंडु 'देवरे, निन्न इष्टदंते आगलि। अवरन्नु रक्षिसु। अवरिगे तावु एनु माडुत्तिदेवेंबुदे गोत्तिल्ल' एंद। क्रिस्तन ई उदाहरणे बहळ-स्वारस्यभरितवागिदे। देहदिंद आत्मवन्नु एष्टरमट्टिगे बेर्पडिसबहुदो इदु तिळिसुत्तदे। एल्लियवरेगे नम्म गुरियिरबेकु, इरलु साध्य एंबुदु क्रिस्तन दृष्टांतदिंद तिळियुत्तदे। मरद तोगटेयंते मै कळचि बीळुत्तदे एंबवरेगे नम्म मट्ट एरितु। आत्मनन्नु देहदिंद बेर्पडिसुव विचार बंदागलेल्ल ननगे क्रिस्तन चित्र कण्णिगे कट्टिदंतागुत्तदे। मैयिंद आत्म बेरेयागुवुदु, मैय संबंधवन्नु कडिदुकोळ्ळुवुदु क्रिस्तन जीवनदल्लि काणबरुत्तदे।

देह – आत्मगळ ई पृथक्करण सत्य-असत्यद विवेकविल्लदे साध्यविल्ल। ई विवेक, तिळिवु मैगूडबेकु। ज्ञान एंदरे तिळिवुदु एंदु अर्थमाडुत्तेवे। आदरे बुद्धियिंद तिळियुवुदु ओंदु तिळिवु अल्ल। बायोळगे हिडिकूलु तुरुकिद मात्रके होट्टे तुंबदु। अदन्नु अगिदु गंटलोळगे इळिसबेकु। होट्टेयल्लि अदु जीर्णवागि रक्तवागि इडी शरीरके पुष्टियागबेकु। इष्टेल्ल आदाग अदु निजवागि ऊट। अदे

रीति वरी बुद्धियिंद तिळिदरे सालदु। तिळिदु बाळिनल्लि ओडगूडिसबेकु, अदेयल्लि नेडबेकु। कैकालु कण्णिनोळगे ज्ञान चिम्मबेकु। ज्ञानेंद्रियगळू कर्मेंद्रियगळू विचार पूर्वकवागिये कर्म माडुत्तिरुवंते आगबेकु। अंतले हदिमूरने अध्यायदल्लि भगवंत ज्ञानद व्याख्यानवन्नु अंदवागि माडिदाने। स्थितप्रज्ञन लक्षणगळिद्दंतेये ज्ञानद लक्षणगळू।

'नम्रता दंभशून्यत्वं अहिंसा ऋजुता क्षमा'

इत्यादि इप्पत्तु गुणगळ पट्टियन्नु भगवंत कोट्टिदाने। ई गुणगळे ज्ञान अंदु हेळि सुम्मनागलिल्ल। इदक्के विरुद्धवादुदेल्ल अज्ञान अंद, निच्चळवागि। ज्ञानक्के साधने अंदु हेळिरुवुदू ज्ञानवे। 'सद्गुणवे ज्ञान' अंद साक्रटीस्। साधने, साध्य अरडू ओंदे।

गीतेयोळगिन ई इप्पत्तु गुणगळन्नु ज्ञानदेवरु हदिनेंटु माडिदारे। अवरु ई साधनेयन्नु बहळ कळकळियिंद वर्णिसिदारे। ई साधने, ई गुणगळ बग्गे गीतेयल्लि ऐदे श्लोक इवे। आदरे ज्ञानदेवरु ई ऐदु श्लोकगळन्नु विस्तरिसि एळुनूरु पद्यगळन्नु बरेदिदारे। समाजदल्लि सद्गुणद विकासवागलि, समाजदल्लि सत्यरूपि परमात्मन अरिवु मूडलि अंदु ज्ञानदेवरिगे तळमळ। ई वर्णनेयल्लि अवरु तम्म सर्व अनुभववन्नू हरियिसिदारे। इदु मराठि माताडुववरिगे अवरु माडिद अनंत उपकार। ज्ञानदेवर रोम रोमदल्लि ई गुण तुंबित्तु। कोणवन्नु होडेदरे आ एटिगे अवर मैमेले बासुंडे अद्दितु। भूतमात्रद बग्गे अवरिगे अष्टु कळवळ। अथ कारुण्यपूर्ण हृदयदिंद ज्ञानदेवरु ज्ञानेश्वरियन्नु होरगेडविदरु। अदन्नु ओदि मनन माडबेकु। ओळगे

नेलेगोळिसबेकु। ज्ञानदेवर सविनुडि ननगे सवियळु दोरेयितु। नानु धन्य। ज्ञानदेवर सविनुडि नन्न नालगेयल्लि नेलेसलेंदु ननगे पुनर्जन्म प्राप्तवादरू धन्यवेंदेनु। इरलि। उत्तरोत्तर विकासमाडिकोळ्ळुत्त, आत्मदिंद देहवन्नु बेरे माडुत्त, एल्लरू तम्म इडी बाळन्नु परमेश्वर-मयवागि माडुव प्रयत्न माडबेकु।

(22-5-32)

अध्याय 14.

75. प्रकृतिय विमर्श

तम्मंदिरे, ओंदु अर्थदल्लि इदु हदिमूरने अध्यायक्के पूरक अध्याय। आत्मक्के निजवागि माडबेकादेनू इल्ल। आत्मवु स्वयंपूर्ण। अदर गति स्वाभाविकवागिये ऊर्ध्वगामि। आदरू यावुदादरू पदार्थक्के भारवाद वस्तुवन्नु तळुकु हाकिदरे इदर तूकक्के अदु केळक्के जगि बारदे? अदे रीति, ई देहद भार आत्मवन्नु केळक्के अेळयुत्ता इरुत्तदे। हिंदिन अध्यायदल्लि नावु नोडिदेवे। याव बगेय उपाय-वादरू सरिये; देहवन्नू आत्मवन्नू पृथकागि, बेरे बेरेयागि माडलु साध्यवादरे अदु प्रगतिगे दारियागुत्तदे। ई केलस बहळ कष्ट, कठिन। आदरे अदर फल मात्र हेच्चिनदु। आत्मद कालिनिंद देहद बेडियन्नु नावु कळचिहाकिदुदे आदरे, अतिशय आनंद लभिसुत्तदे। आग मनुष्यनिगे देहद दुःखदिंद दुःखवागदु, अवनु स्वतंत्रनागुत्ताने। देहवेंब वस्तुवोंदन्नु मनुष्य गेद्दनो, मत्तावुदु ताने अवन मेले अधिकार माडीतु? तन्नन्नु तानु आळ बल्लवनु इडी विश्ववन्ने आळबल्ल। आत्मद मेले देहद दब्बाळिकेयन्नु तोडेदुहाकि। देहद सुख-दुःख परकीय, परदेशि। सुख-दुःखक्कू आत्मक्कू हुल्लु कड्डियष्टू संबंधविल्ल।

ई सुख-दुःखवन्नु अेष्टुमट्टिगे बेरेगोळिसबहुदो येसुक्रिस्तन उदाहरणे कोट्टु मोदले हेळिदेने। देह हरिदु कळचि बीळुत्तिद्दागलू अेष्टु आनंदमयवागि प्रशांतवागि इरबहुदु अेंबुदन्नु क्रिस्त तोरिसिद। देहवन्नु आत्मदिंद बेरे माडुवुदु ओंदु कडे विवेकद केलसवादरे, मत्तोंदु कडे निग्रहद केलसवू हौदु। 'विवेक सहित वैराग्यद बल'

अेंदु तुकारामरु हेळिदारे। विवेक, वैराग्य अेरडू बेकु। वैराग्यवेंदरे ओंदु बगेय निग्रह, तितिक्षे। ई हदिनाल्कने अध्यायदल्लि निग्रहद दिशेयन्नु तोरलागिदे। दोणियन्नु नीरिनल्लि मुन्नडेसुव केलस हुट्टिनदु। आदरे दिक्कु तोरुव केलस चुक्काणियदु। दोणियन्नु नडेसलु हुट्टू बेकु, चुक्काणियू बेकु। अदरंते देहद सुख-दुःखदत्तणिंद आत्मनन्नु बेरे माडुव केलसक्के विवेक, निग्रह अेरडू बेकु।

देहद प्रकृतियन्नु परिशीलिसि वैद्य उपचारवन्नु सूचिसुत्ताने। हदिनाल्कने अध्यायदल्लि भगवंत सर्व प्रकृतियन्नू परिशीलिसि पृथक्करणमाडि, याव रोग हिडिदिदे अेंबुदन्नु तोरिसिदाने। इल्लि प्रकृतियन्नु स्पष्टवागि विभाग माडलागिदे। विभागिसुव भेदोपाय राजनीतिशास्त्रदल्लि बहळ मुख्य सूत्र। इदिरु निंत शत्रु समूहदल्लि भाग – भेद माडलु साध्यवादरे शत्रुवन्नु केळगे बीळिसिदंतेये। भगवान् श्रीकृष्ण इल्लि अदन्ने माडिदाने।

नन्न, निम्म, समस्त प्राणिगळ, सकल चराचरगळ प्रकृतियल्लू मूरु गुणगळिवे। आयुर्वेददल्लि कफ, वात, पित्तगळिद्दंते प्रकृतियल्लि सत्व, रज, तम अेंदु मूरु गुणगळु तुंबिवे। इरुवुदेल्लवू ई मूरु वस्तुगळ मसालेये। ओंदेडे हेच्चु, ओंदेडे कडमे; इष्टे व्यत्यास। ई मूररिंद आत्मवन्नु अेष्टेष्टु दूर इट्टरे अष्टष्टु मट्टिगे देहदिंद आत्मवन्नु दूरविडलु साध्य। देहदिंद आत्मवन्नु बेरेमाडुवुदु अेंदरे ई मूरु गुणगळन्नु परीक्षिसि, अवन्नु गेल्लुवुदु। निग्रहदिंद ओंदोंदु वस्तुवन्ने सोलिसुत्त सोलिसुत्त मुख्य वस्तुविन बळिगे होगि सेरबेकु।

76. तमोगुण : अदर उपाय : शरीरश्रम

मोदलु तमोगुणवन्नु नोडोण। ईगिन समाजस्थितियल्लि तमोगुणद श्रुतिगेट्ट परिणामवे अत्यधिकवागि काणबरुत्तदे। तमोगुणद मुख्य परिणाम – सोमारितन , अदरिंद निद्दे, प्रमाद। ई मूरन्नु गेल्ललु साध्यवादरे तमोगुणवन्नु गेद्दंते। तमोगुणद ई मूरु वर्गगळल्लि मैगळ्ळतनवे बहळ भयानक। उत्तमोत्तम मनुष्यरु कूड सोमारितनदिंद भ्रष्टरागुत्तारे। समाजद समस्त सुख शांतियन्नू निर्नाम माडुव रिपु इदु। एळ्करिंद मुदुकरवरेगे ऎल्लरन्नू हाळुमाडुत्तदे। ई हगे ऎल्लॆल्लू व्यापिसिदॆ, नम्मन्नु नुंगलु हॊंचुहाकि कुळितिदॆ। ऎल्लिन मोनेयष्टु संदु सिक्कितो नुग्गिते ओळगॆ! ओंदु तुत्तु हॆच्चागि तिंदिरो, शत्रु गंटलोळगॆ इळिद। कोंच हॆच्चु निद्दे माडिदरो सोमारितन कण्णोळगॆ हुट्टि बरुत्तदे। ई आलस्य गुण होगुववरॆगॆ, ऎल्लवू व्यर्थ। आदरे सोमारितनवेदरे ऎल्लरिगू आसे। बेग बेग केलसमाडि ओंदॆसल हॆच्चु हण संपादिसुवुदॆंदरॆ आमेलॆ विश्रांति दॊरॆतीतॆंब आसॆये ताने ? विशेषवागि हण सिक्कबेकु ऎंदरॆ आमेलिन सोमारितनक्कॆ सर्वसिद्धतॆ माडिकॊंडंतॆ! मुप्पिनल्लि नमगॆ विश्रांति बेकु ऎंदु नावॆल्लरू तिळिदिदॆवॆ। इदु तप्पु तिळुवळिकॆ। नीवु सरियागि नडॆदुकॊंडरॆ मुप्पिनल्लि अदरिंद उपयोगवादीतु। अनुभवस्थरादुदरिंद मुप्पिनल्लि मत्ति तष्टु उपयोगकरवादीरि! आदरॆ आ कालदल्लॆ विश्रांतियंतॆ!

सोमारितनक्कॆ संदु कॊडबारदॆंदरॆ अदक्कॆ दक्षतॆ बेकु। ऎंथ दॊड्ड राज नळचक्रवर्ति। आत कालु तॊळॆदाग ऎल्लो ओंदु चिक्कॆ-

यष्टगल नेनेयलिल्ल। सरि, अदे संधि। अदरोळगिंद ओळके तूरिद कलि। नळराजनो अत्यंत शुद्ध, सर्वतोपरि स्वच्छ। स्वल्प काल्ल नेनेयलिल्ल। अष्टु आलस्यक्के ओळगे तूरिदने कलि। निमगो सर्वांगवू अशुचि। ऎल्लिंद बेकादरू मैगळ्ळतनद कलि ओळहोग-बहुदु। मै सोमारियायितेंदरे मनोबुद्धिगळू सोमारिगळागुत्तवे। इंदु समाजद कट्टड सोमारितनद तळहदिय मेले निंतिदे। अदरिद अनंत दुःख प्राप्तवागिदे। ई सोमारितनवन्नु नावु कित्तोगेयबल्लेवादरे समस्त-वल्लदिद्दरू बहुभाग दुःख दूरवादीतु।

ईचेगे ऎल्लेल्लू समाज सुधारणेय मातु। सामान्य मनुष्यनिगे कूड कनिष्ठपक्ष इंतिष्टु सुख सिगबेकु, हागे समाज रचनेयागबेकु ऎंब चर्चे नडेदिदे। ऒत्तट्टिगे अतिशय सुख, ऒत्तट्टिगे अत्यंत दुःख इवे। ऒंदु कडे ऐश्वर्यद राशि, इन्नॊंदु कडे बडतनद आळवाद कंदक। ई सामाजिक विषमतेयन्नु हेगे दूरमाडलादीतु? अत्यवश्य-वाद सुख ऎल्लरिगू सिगलेबेकु। ऎल्लरू सोमारितन बिट्टु केलस माडुवुदे अदक्के उपाय। दुःखक्के मुख्य कारण सोमारितन। ऎल्लरू शरीर श्रमद व्रत कैगॊंडरे, केलस माडुव संकल्प तॊट्टरे, ई दुःख दूरवागुत्तदे!

आदरे समाजदल्लि एनु कंडुबरुत्तदे? ऒंदु कडे मूलेगे बिद्दु तुक्कुहिडिदु निरुपयोगियाद जन। श्रीमंतर मै उपयोगवे इल्लदे तुक्कु हिडिदिदे। इन्नॊंदु कडे मै सवे सवेदु जीर्णवागिहोगुवष्टु विपरीत दुडित। ऎल्ला समाजगळल्लू मैय दुडितवन्नु तप्पिसिकॊळ्ळुव प्रकृति

इदे। सायुव गळिगेयतनक यारु केलस माडले बेकागिदेयो अवरु अदन्नु संतोषदिंद माडुत्तिल्ल। बिडद कर्म अंदु माडुत्तारे। जाण-रादवरु शरीर श्रम तप्पिसिकोळ्ळलु साविर नेप हेळुत्तारे। 'व्यर्थवागि शरीरश्रमदल्लि कालहरण माडलेके?' अन्नुत्ताने ओब्ब। ई व्यर्थ निद्दे एकेंदु यारू हेळरु। ऊटक्कागि व्यर्थ कालव्ययवेके अन्नरु। हसिवागुत्तदे अंदु उण्णुत्तारे। निद्दे बरुत्तदे अंदु निद्रिसुत्तारे। शरीर श्रमद मातु बंदरे मात्र व्यर्थ कालहरणवेके अन्न प्रश्ने। 'नानेके दुडितदल्लि होत्तु कळेयबेकु? एके ई केलस माडबेकु? नावु मानसिक कर्म माडिकोंडु इरुत्तेवे'। ओळ्ळेयदय्य, मानसिक कर्मताने निन्नदु। मानसिकवागिये ऊटमाडु, मानसिकवागिये निद्देमाडु। मनोमय निद्रे, मनोमय अन्नगळ व्यवस्थे माडिको।

समाजदल्लि हीगे अरडु भाग इवे। ओंदु – दडि दुडिदु सत्तु सुण्णवागुव जन, इन्नोंदु – इत्तण कड्डि अत्त हाकदे इरुव जन। नन्न गेळेयनोब्ब हेळुत्तिद्द – केलवु वरी मै, केलवु वरी बुरुडे: ओंदुकडे वरी रुंड, इन्नोंदु कडे वरी मुंड। मुंड दुडिदुडिदु सवेदुहोगबेकु। रुंड वरी विचार माडबेकु। राहु केतुगळंते हीगे वरी रुंड मुंडगळ गुंपागिदे ई समाज। हागे निजवागियू वरी रुंड मुंडगळे आगिद्दरे अदू ओळितॆ आगुत्तित्तु। कुंट-कुरुड न्यायदंते एनादरू व्यवस्थे माडबहुदित्तु। कुरुडनिगे कुंट दारि तोरिसलि, कुंटनन्नु कुरुड हेगल-मेलेरिसिकोळ्ळलि। हागे ई रुंडमुंडगळन्नु जोडिसुवंतिल्ल। प्रति-योब्बरिगू रुंडवू इदे, मुंडवू इदे। रुंड मुंडगळु अल्लेल्ल जोडिसिकोंडु-

इवे । इदक्के एनु माडबेकु ? प्रतियोब्बरू सोमारितनवन्नु बिडबेकु ।

सोमारितन बिडुवुदेंदरे शरीर परिश्रम माडुवुदु । सोमारितन-वन्नु गेल्ललु इदे उपाय । ई उपायवन्नु आचरिसदिद्दरे अदर शिक्षे-यन्नु भोगिसदे तप्पदु । रोगवो मत्तोंदो अंतू यावुदो ओंदु रूपदल्लि शिक्षे खंडित । शरीरवन्नु नमगे कोट्टिरुवुदे श्रमपडलिक्के । शरीरश्रम-दल्लि कळेद काल व्यर्थवल्ल । अदर प्रतिफल सिगुत्तदे । आरोग्य उत्तमवागुत्तदे । बुद्धि तेजोपूर्णवू तीव्रवू आगुत्तदे । विशेष विचार-वंतर विचारदल्लि, अवर होट्टेनोवु तलेनोविन प्रतिबिंब काणुत्तदे । विचारवतरु गाळि बिसिलुगळल्लि, सृष्टि सान्निध्यदल्लि दुडिदरे अवर विचार तेजस्वियागुत्तदे । शरीरद अनारोग्यद परिणाम मनस्सिनमेले आगदे ? अदे रीति शरीरद आरोग्यद परिणामवू मनस्सिनमेले आगु-त्तदे । इदु अनुभवसिद्ध सत्य । मुंदे क्षयरोग बंदाग नंदी बेट्टद गाळि सेविसलु होगुवुदक्किंत, आतपस्नानद प्रयोगमाडुवुदक्किंत, इवोत्ते बयलिनल्लि गुद्दलि हिडिदु अगेदरे, गिडक्के नीरु हाकिदरे, सौदे सीळि-दरे एनु तप्पु ?

77. तमोगुणक्के इन्नू उपाय

सोमारितनवन्नु गेल्लुवुदु ओंदु । इन्नोंदु -- निद्देयन्नु गेल्लु-वुदु । निद्दे निजवागि पवित्रवादुदु । सेवे माडि बळलिद साधु संतर निद्देयेंदरे अदु योगवे । अंथ शांत, गाढ निद्रे पुण्यवंतरिगे मात्र लभ्य । निद्दे गाढवागिरबेकु । निद्देय महत्व दीर्घकालदल्लिल्ल । हासिगे ओष्टु उद्द, मनुष्य अदरमेले ओष्टु होत्तु मलगिद्द, इदल्ल निद्देय लेक्क । बावि

आळवागिद्दष्टू नीरु स्वच्छ, सवि। अदे रीति निद्दे स्वल्प होत्ते आदरू गाढवागिद्दरे उत्तम फल। चंचल मनस्सिनिंद मूरु गंटे माडिद अभ्यासक्किंत निश्चल मनस्सिनिंद अर्ध गंटे माडिद अभ्यासवे उत्तम। निद्देयदू हागे। वहळहोत्तु मलगिदरे हित परिणामवेनिल्ल। रोगि इप्पत्तुनाल्कु गंटेयू हासिगेय मेले इरुत्ताने। हासिगेगे अटिकोंडिरुत्ताने। आदरे निद्देगे अंटिकोंडिरलार। निजवाद निद्दे गाढ, नि स्वप्न निद्रे। सत्त मेले एने यमयातने यिरलि, निद्दे वारद केट्ट कनसु मुत्तिकोंडवन यमयातनेयो ? वेददल्लि त्रस्तरागि ऋषिगळु हेळिदारे– 'परा दुःस्वप्नं सुव।' 'इंथ दुष्ट निद्रे बेडवे बेड।' निद्दे विश्रातिगागि। निद्देयल्लि कनसिन साविर विचार बदु अदेय मेले कूडुवुदादरे अदेतर विश्राति ?

गाढनिद्रे हेगे लभिसवेकु ? सोमारितनक्के हेळुव मद्दे इदक्कू। देहवन्नु निरंतरवागि उपयोगिसवेकु। आग नेलक्के विद्दवनु सत्तंते विद्दानु। निद्दे पुटाणि मृत्यु। सोगसागि निद्दे वरवेकेंदरे हलवु दिनद सिद्धते वेकु। मै वळलवेकु। षेक्स्पियर् हेळिदाने – दोरेगे तलेय मेले किरीट, तलेयोळगे नूरु चिंते। अंथा दोरेगे निद्दे वारदु। अदक्के ओंदु कारण, अवनु शरीर श्रमवन्नु माडदुदु। अच्चरवागिरवेकादाग निद्दे माडुववनु निद्दे माडुवाग अेद्दे इरुत्ताने। हगलुहोत्तु वुद्धि शरीरगळन्नु दुडिसदे इद्दरे निद्दे माडिदंतेये। रात्रि निद्देयल्लि वुद्धि जागृतवागिद्दरे निद्रा सुखवेल्लियदु ? सरि, अेष्टु होत्तादरू एळदे बिद्दिरुवुदु। परम पुरुपार्थ गळिसवेकाद बाळन्नु निद्देयल्लि कळदरे

अर्ध आयुष्यवे निद्रेयल्लि कळेदरे एनन्नु

ळ कळेदरे तमोगुणद मूरने लक्षणवाद
। निद्रापरनाद मनुष्यन चित्त दक्षवागि
हुट्टुत्तदे। अति निद्रेयिंद सोमारितन,
रोगवु) हुट्टुत्तवे। परमार्थवन्नु नाशमाडुव
ळ मरेविनिंद हानियागुत्तदे। आदरे नम्म
कवागिहोगिदे। अदोंदु महादोष अंदु
रत्नो नोडलु होगवेकु अंदु एर्पाडागिरुत्तदे।
अंदु केळिदरे 'अय्यो, मरेते होयितु'
ोडु तप्पु एनिसुवुदे इल्ल। इष्टु उत्तर
मरेविगे मद्दे इल्लवेंदु तिळिदंतिदे समाज।
, व्यवहारदल्लू एरडरल्लियू हानिये। मरेवु
हुळु हिडियुत्तदे। बदुकु बीळागुत्तदे।
मनस्सिन सोमारितन। मनस्सु जागरूक-
मारि मनस्सिगे मरेविन रोग तप्पिदुदे अल्ल।

ममादो मच्चुनो पदं"

ममादवन्नु गेल्लबेकेंदरे सोमारितन, निद्देगळन्नु
संतत सावधानशीलनागु। एनेनु माडबेको
डु। विचार माडदे सुम्मने सहजवाद केलस

बेड । केलसक्के मोदलल्लू विचार, कडेयल्लू विचार । मोदलू कोनेगू सर्वत्र विचाररूपि परमेश्वर निंतिरलि । हागे माडुत्त होदरे अनवधानद रोग दूरवादीतु । इडी कालवन्नु सरियागि बळसु । गळिगेगळिगेय लेक्क इडु । हागादरे सोमारितनद कलिय प्रवेशक्के अेडेयिल्लवादीतु । हीगे तमोगुणवन्नु गेल्लुव प्रयत्न माडबेकु ।

78. रजोगुणक्के उपाय : स्वधर्म -- मर्यादे

अनंतर रजोगुणद कडे तिरुगबेकु । रजोगुण भयानक शत्रु । तमोगुणद्दे अेरडने मुख इदु । अेरडू ओंदे । मातु अेरडु, वस्तु ओंदे अेन्नबेकु । मलगिये इद्दवरिगे अेद्दु ओडाडुव वयके । अेद्दु ओडाडुववरिगे मलगुव इच्छे । तमोगुणदिंद रजोगुणद दर्शनवागुत्तदे । रजोगुणदिंद तमोगुणक्के बरुत्तेवे । ओंदु इद्दल्लि अेरडनेयदू इरुत्तदे । रोट्टिगे इत्त काद कावलि, अत्त केंड । मनुष्यनिगे इत्त तिरुगिदरे तमोगुण, अत्त तिरुगिदरे रजोगुण । 'इत्त बा, निन्नन्नु तमोगुणद कडे हारिसुत्तेने' अेन्नुत्तदे रजोगुण । 'नन्न कडे बा, रजोगुणद कडे अेसेयुत्तेने' अेन्नुत्तदे तमोगुण । हीगे परस्पर नेरवागि रजोगुण तमोगुणगळु मनुष्यनन्नु नाशमाडुत्तवे । काल्चेंडिन हणेयबरह एटु तिन्नुवुदु । हीगे रजोगुण तमोगुणगळ एटु तिंदु मनुष्य जन्म कळेयुत्तदे ।

रजोगुणद प्रधान लक्षण नाना कार्यकलाप माडुव हव्यास । अमानुष कर्मदल्लि अपार आसक्ति । रजोगुणदिंद अपरंपार कर्मसंग हेणेदुकोळ्ळुत्तदे । लोभात्मक कर्मासक्ति हुट्टुत्तदे । आग वासना-

विकारद वेगवन्नु तडेयलु असाध्य। इत्तण गुड्ड कडिदु, अत्तण कंदक तुंबु। समुद्रक्के मण्णु होत्तु अदन्नु मुच्चु। सहारा मरुभूमियल्लि समुद्र तोडु। इल्लि सूयेज् कालुवे तोडु, अल्लि पनाम कट्टु। इंथ सल्लद गोंदलद हव्यास। इदन्नु मुरि, अदन्नु कट्टु। मगु कागद तेगेदुकोळ्ळुत्तदे, हरियुत्तदे; मत्तेनादरू माडुत्तदे। इदू हागेये। अदन्नु इदरल्लि सेरिसु। इदन्नु अदरल्लि सेरिसु। अदन्नु मुळुगिसु, इदन्नु हारिसु। हीगे रजोगुणद अनंत क्रीडे। हक्कि मुगिलल्लि हारुत्तदे। नावू हारबेकु। मीनु नीरिनोळगे इरुत्तदे। नावू नीरिनल्लि मुळुगि अदरंते इरबेकु। नरदेहदल्लि बंदु हक्कियंते, मीनिनंते माडुवुदु कृतार्थते अेंदु तिळियुत्तारे। परकाय प्रवेशद, मत्तोंदु देहद कौतुकवन्नु अनुभविसुव वयके नरदेहदल्लि हुट्टुत्तदे। मंगळग्रहक्के हारिहोगबेकु, अल्लिन वसतियन्नु नोडबेकु अेंदु ओब्बनिगे चपल। चित्तवु सदा भ्रमणमाडुत्तिरुत्तदे। नाना वासनाभूतगळु मैयोळगे होगुत्तवे। एनादरोंदु केलस। इष्टु दोड्डवनु, मनुष्य नानु इरुत्तिरलु सृष्टि इद्दंतेये हेगे इरबेकु? पैल्वाननिगे मैयोळगे तीटे। कंबवन्नु हायुत्ताने। मरवन्नु गुद्दुत्ताने। हीगिरुत्तदे रजोगुणद तुळुकु। ई बेट्टे बंदरे नेल तोडि कल्लु तेगेयुत्ताने। अदक्के वज्र वैढूर्य अेंदु हेसरिडुत्ताने। समुद्रदोळगे मुळुगुत्ताने। तळद कसवन्नु दडक्के तंदुहाकि अदन्नु मुत्तु अेन्नुत्ताने। आ मुत्तिगे तूतु इल्ल। अदक्के तूतु कोरेयुत्ताने। अदन्नु अेल्लिडबेकु। अक्कसालिगनिंद किवि-मूगिगे तूतु माडिसुत्ताने। हीगेके ई रीति माडुत्तानो मनुष्य? अेल्लवू रजोगुणद प्रभाव।

रजोगुणद इन्नोंदु प्रभाव अस्थिरते। रजोगुणक्के आगिंदागले फल बेकु। आदुदरिंद, अङ्कित्तो मनुष्य बेरे हादि हिडियुत्ताने। रजोगुणियादव इदन्नु बिट्ट, अदन्नु हिडिद; अंतू ढिनवू होसदु। कट्टकडेगे कैयल्लि ओंदू उळियदु।

'राजसं चलं अध्रुवं'

रजोगुणद कृति चंचल, अनिश्चित। मक्कळु जोळ बित्ति, कूडले मोळकेगागि हुडुकुत्तवे। रजोगुणिय स्वभाव हीगे। ऎल्लवू ओडनेये मडिलल्लि बीळबेकु। अधीरनागुत्ताने। अवनिगे संयमविरुवुदिल्ल। ओंदे कडे काल्लु ऊरुवुदु अवनिगे तिळियदु। इल्लि स्वल्प केलसमाडिद, स्वल्प हेसरायितु। अल्लिंद ऎद्दु मत्तोंदु कडेगे होद। इवोत्तु मदरासिनल्लि मानपत्र। नाळे कलकत्ते। नाडिद्दु बोंबायि। आमेले नागपुर। ऎष्टु पौरसभेगळु इवेयो अष्टु मानपत्र बेकु। मान ओंदे अवन कण्णिगे काणुव वस्तु। ओंदे कडे स्थिरवागिद्दु केलस माडुवुदु अवनिगे रूढिये इल्ल। इदरिंद रजोगुणि मनुष्यन स्थिति भयानकवागुत्तदे।

रजोगुणदिंद मनुष्य नाना उद्योगगळल्लि कैयाडिसुत्ताने। अवनिगे स्वधर्म यावुदू इरदु। स्वधर्माचरणेयेंदरे निजवागि इतर नाना कर्मगळ त्याग। गीतेय कर्म रजोगुणक्के कोडलियेट्टु। रजोगुणदल्लि ऎल्लवू चंचल। गुड्डद मेले बिद्द नीरु ऎल्ला कडेगू हरिदरे होळेयादीतु। अदरल्लि शक्ति हुट्टीतु। अदरिंद देशक्के उपयोगवादीतु। हागे मनुष्यनू तन्न शक्तियन्नु नाना कार्यगळल्लि व्यर्थवागि कळेयदे

ओंदे कार्यदल्लि विनियोगिसिदरे एनादरू केलसवादीतु । अंतेये स्वधर्मद महत्व ।

संततवागि स्वधर्म चिंतने माडुत्त अदक्कागिये सर्व शक्तियन्नू विनियोगिसबेकु । बेरेकडे लक्ष्यवे होगबारदु । इदे स्वधर्मद ओरेगल्लु । कर्मयोगवेंदरे अति कर्मवू अल्ल, अमानुष कर्मवू अल्ल । सुम्मने हत्तारु केलस माडिदरे अदु कर्मयोगवल्ल । गीतेय कर्मयोग बेरे । फलद कडे गमन कोडदे, केवल स्वभावप्राप्त अपरिहार्य स्वधर्मवन्नु नडेसुवुदु, तद्द्वारा चित्तशुद्धि माडिकोळ्ळुवुदु – कर्मयोगद वैशिष्ट्य । कर्मवन्नु माडुवुदेनु, सृष्टियल्लि सर्वत्र इद्दे इदे । कर्मयोगवेंदरे विशिष्ट मनोवृत्तियिंद एल्लवन्नू माडुवुदु । होलदल्लि बीज बित्तुवुदक्कू, हिडि तुंबा काळु तेगेदुकोंडु एत्तलो चल्लुवुदक्कू बहळ अंतरविदे । बित्तिदरे फल, बिसुटरे नष्ट । गीते हेळुव कर्म, बीज बित्तिदंते । अंथ स्वधर्मरूप कर्तव्यदल्लि बहळ शक्ति इदे । अदक्के एष्टु परिश्रम माडिदरू कडिमेये । अदरल्लि परदाटक्के अवकाशवे इल्ल ।

79. स्वधर्मवन्नु निर्धरिसुवुदु हेगे ?

ई स्वधर्मवन्नु निर्धरिसुवुदु हेगे एंदु केळिदरे 'अदु स्वाभाविक' एंबुदे उत्तर । स्वधर्म सहजवागि इरुत्तदे । अदन्नु हुडुकबेकेंब विचारवे आश्चर्यकर । मनुष्य हुट्टिदाग अवन स्वधर्मवू हुट्टितु । मगु तायियन्नु हुडुकबेकादुदिल्ल । हागे स्वधर्मवन्नू हुडुकबेकादुदिल्ल । अदु मुंगडवागिये बरुत्तदे । नमगिंत मोदलु जगत्तु इत्तु । नावु होदमेलू इरुत्तदे । नम्म हिंदे दोड्ड प्रवाह हरियुत्तित्तु । मुंदेयू

हरियुत्तदे । अंथ प्रवाहदल्लि नावु हुट्टि बंदिदेवे । यार होट्टेयल्लि हुट्टिदेवो आ तंदेतायिगळ सेवे, यार नडुवे हुट्टिदेवो आ रैतर सेवे, इवु नमगे निसर्गवित्त संदेश । नन्न वृत्ति नन्न अनुभवद्दे ताने । ननगे हसिवागुत्तदे, नीरडसुत्तदे । हसिदवरिगे अन्न नीडुव, नीरडिसिदवरिगे नीरु हनिसुव, धर्म ननगे अदरिंद दोरेयितु । सेवारूपद, भूतदयारूपद स्वधर्मवन्नु हुडुकबेकादुदिल्ल । स्वधर्मद शोधने नडेसिद कडे, परधर्म अथवा अधर्म इद्दिरबेकेंदु निश्चयवागि तिळियबेकु ।

सेवकनिगे सेवेयन्नु हुडुकुव अगत्यवेनु ? अदु ताने अवन बळिगे बरुत्तदे । आदरे ओंदु मातु अनायासवागि लभिसिदेल्ल धर्मवल्ल । ओब्ब रैत बंदु 'रात्रि स्वल्प नम्म बेलियन्नु हत्तुमारु मुदके हाकोण बा । गद्दलविल्लदे नन्न होल विस्तारवागुत्तदे' एंदु ननगे हेळिदरे, अदु असत्यवादुदरिंद नन्न कर्तव्यवागदु ।

चातुर्वर्ण्यदल्लि स्वाभाविकते, धर्म इवे । अदरिंद ननगदु रुचिसुत्तदे । ई स्वधर्मवन्नु तप्पिसलु साध्यविल्ल । यारु नन्नन्नु पडेदरो अवरे नन्न तायितंदे । अवरु ननगे इष्टविल्ल एंदरे हेगे ? तायि तंदेगळ कसबु मक्कळिगे स्वाभाविकवागिये प्राप्तवागुत्तदे । हिरियरिंद बंद कसबु नीति विरुद्धविल्लदिद्दरे अदन्नु माडुवुदु, मुंबरिसुवुदु चातुर्वर्ण्यद मुख्य विशेष । इवोत्तु चातुर्वर्ण्य केट्टिदे । अदन्नु आचरिसुवुदु कठिणवागिदे । अदर मडिकेयन्नु अच्चुकट्टागि इडलु साध्यवादरे बहळ अंदवादुदु । अदु इल्लवादरे होस कसबु कलियुवुदरल्ले मनुष्य मोदलने इप्पत्तैदु मूवत्तु वर्ष कळेयुत्ताने । कलितमेले सेवाक्षेत्रद शोधने । हीगे

मोदलिन इप्पत्तैदु वर्ष शिक्षणदल्ले कळेयितु। आ शिक्षण बाळिगे संबंधिसिदुदल्ल । इदु मुंदिन बाळिगे सिद्धते अंदरे, कलियुवाग यारू बदुकुव मातिल्ल। एनिद्दरू अनंतर। मोदलु बरी कलिके, आमेले बदुकु । शिक्षण बेरे, बदुकु बेरे--हीगागिदे । आदरे यावुदक्के जीवनद संबंधविल्लवो अदु सावु। हिन्दुस्तानद सरासरि आयुस्सु इप्पत्तेळु वर्ष। अदरल्लि इप्पत्तैदु वर्षदवरेगे ई सिद्धते। होस कसबन्नु कलियलु बहळ काल हिडियुत्तदे। आमेले ऎल्लादरू कसबु नडस-बेकु। अदरल्लि उत्साहद ऎष्टो काल व्यर्थवागुत्तदे। आ हुरुपु, हुम्मस्सु, सेवेयिंद देह सार्थक माडुवुदु, ऎल्लवू व्यर्थ। बाळु आटवल्ल। आदरे बाळिन कसबन्नु हुडुकुवुदरल्ले हुडुगन आयुष्य पूर्णवागुत्तदल्ल। ऎंथ दुःखद संगति। इदक्कागिये हिंदू धर्म वर्णधर्मद युक्ति माडितु।

चातुर्वर्ण्यद कल्पनेयन्नु बदिगिडोण। आदरू ऎल्ल राष्ट्र-गळल्लू, ऎल्लेडेयल्लू, चातुर्वर्ण्यविल्लदकडेयू, ऎल्लरिगू स्वधर्म प्राप्त-वागिदे। नावेल्लरू ऒंदे प्रवाहदल्लि, हेच्चु कडमे ऒंदे परिस्थिति-यल्लि हुट्टि बंदवरु। आदुदरिंद स्वधर्माचरणरूपि कर्तव्य तानागिये प्राप्तवागुत्तदे। अंतये दूरद कर्तव्य--ऎष्टादरू अदु गौणवे। ऎष्टु सॊगसागिद्दरू अदन्नु हिडिदरे प्रयोजनविल्ल। अनेक सल दूरद्दु अंदवागिये काणुत्तदे। मनुष्य दूरद्दक्के बेरगागुत्ताने। नितल्ले मनुष्य सुत्तलू मंजु कविदिरुत्तदे। आदरे हत्तिरद मंजु अवनिगे काणदु। दूर बॆट्टु माडि 'अल्लि मंजु इदे' ऎन्नुत्ताने। अल्लियवनु 'इल्लि मंजिदे' ऎन्नुत्ताने। मंजु ऎल्लेडेयल्लू इदे। आदरे हत्तिरद्दु काणदु।

मनुष्यनिगे दूरद्दर सेळेत हेच्चु। हत्तिरद्दु तलेगे हत्तुत्तदे। दूरद्दु कनसिनल्लि काणुत्तदे। इद्दु मोह। इदन्नु तप्पिसिकोळ्ळलेबेकु। सहजप्राप्त स्वधर्म सरळवादरू, कोरे ऎनिसिदरू, नीरसवागि तोरिदरू, ननगे यावुदु सहज प्राप्तवो अदे हित, अदे सुंदर। समुद्रदल्लि मुळुगुत्तिरुववनिगे सोट्टो डोंको अंतू ऒंदु कट्टिगे सिक्करे, अदु नयवागि पालिष् माडिदुदल्लदिद्दरू अदु अवनन्नु पारुमाडीतु। वडगिय अंगळदल्लि अंदवाद केत्तने सामानु वहळ इद्दावु। अवु अल्लिद्दरे ई मुळुगुववनिगे एनु लाभ? अवनिगे आ सोट्ट तुंडे तारकवादंते, ननगे सहजवागि वंद धर्म हेगे इरलि, अदे ननगे तारक, अदरल्लि मग्ननागुवुदे ननगे शोभायमान। अदरिंदले ननगे उद्धार। बेरे सेवेगागि अरसुत्ता होदरे अदु सिगदु, इद्दु उळियदु। हीगागि कडेगे सेवावृत्तिये दूरवागुत्तदे। अंते, स्वधर्मरूपि कर्तव्यदल्लि मग्ननागिरबेकु।

स्वधर्मदल्लि मग्ननादरे रजोगुण बाडुत्तदे। चित्त एकाग्रवागुत्तदल्ल। आदुदरिंद स्वधर्मक्के व्यतिरिक्त अदु ओडदु। अदरिंद चंचल रजोगुणद रभस करगिहोगुत्तदे। शांतवू आळवू आगिद्दरे, ऎष्टे नीरु हरिदु बरलि, अदन्नु होळे तन्न गर्भदल्लि ओळगिळिसिकोळ्ळुत्तदे। मनुष्यन सर्व बल, समस्त वेग, सकल शक्तियन्नू स्वधर्मद नदि धरिसबल्लदु। स्वधर्मदल्लि ऎष्टु शक्ति तुंबिदरू कडमेये। स्वधर्मदल्लि शक्ति तुंबिदरे रजोगुणद हाराट मुगियुत्तदे। हीगे रजोगुणवन्नु सोलिसबेकु।

80. सत्वगुण -- अदक्के उपाय

इन्नुळियितु सत्वगुण। अदर बगे ऎच्चरदिंद नडेयबेकु। इदरिंद आत्मवन्नु बेरे माडुवुदु हेगे? इदु सूक्ष्मविचारद संगति। सत्वगुणवन्नु संपूर्ण कळेयलागदु। रजस्सु तमस्सुगळन्नु पूरा कत्तरिसबेकु। सत्वगुणद भूमिके बेरे बगेयदु। गुंपु हेच्चागिद्दु अवरन्नु ओडिसबेकागिद्दल्लि सॊंटद मेलक्के गुंडु हारिसदे कालिन मट्टक्के हारिसि ऎंदु सिपायिगे अप्पणे कॊडुत्तारे। अदरिंद मनुष्य सायुवुदिल्ल। गायगॊळ्ळुत्ताने। सत्व गुणवन्नु हीगे गासिगॊळिसबेके विना कॊल्लबारदु। रजोगुण तमोगुणगळु कळेदमेले शुद्ध सत्वगुण इरुत्तदे। शरीर इरुववरेगे यावुदादरॊंदु भूमिके अगत्य। रज, तमगळु होदमेले शुद्ध सत्वदिंदल्ल बेरेयागुवुदॆंदरेनु?

सत्वगुणद अभिमान अंटुत्तदे। शुद्ध स्वरूपदिंद आत्मवन्नु केळगे नूकुत्तदे अभिमान। दीपद बेळकु होरगे प्रकाशमानवागि बीळबेकादरे ओळगिन काडिगेयन्नु तेगेयबेकु। अदन्नु ऒरेसिद मेल्ल गाजिन मेले धूळु इद्दरे अदन्नू ऒरेसबेकु। आत्मप्रभेगे तमोगुणद काडिगेयन्नु तेगेयबेकु। आमेले रजोगुणद धूळन्नु ऒरेसबेकु। तमोगुणवन्नु तेगेयबेकु। आग शुद्ध सत्वगुणद गाजु उळियुत्तदे। सत्वगुणवन्नु कळेयबेकु ऎंदरे गाजन्ने ऒडेयबेके? इल्ल, गाजन्नु ऒडेदरे दीप बेळगदु, दीपद बेळकु हरडलु गाजुबेकु। ई शुद्धवाद होळे होळेव गाजन्नु ऒडेयदे कण्णिगे बाधकवागदंते सण्ण कागदद चूरु ऒंदन्नु अड्ड इडबेकु। कण्णु कुक्कबारदु। सत्वगुणवन्नु गेल्लुवुदु

ऎंदरे अदर अभिमान, आसक्तिगळन्नु सोलिसुवुदु। सत्वगुणदिंद केलस माडिसिकॊळ्ळबेकु। ऎच्चरदिंद युक्तियिंद माडिसिकॊळ्ळबेकु। सत्वगुणवन्नु निरहंकारियागि माडबेकु।

सत्वगुणद अहंकारवन्नु गेल्लुवुदु हेगे? इदक्के ऒंदु उपायविदे। सत्वगुणवन्नु नम्मोळगे भद्रगोळिसबेकु। सत्वगुणद अभिमान सातत्यदिंद होगुत्तदे। सत्वगुणद कर्मगळन्नु सततवागि ऎसगि, अदन्नु स्वभाववागिये माडबेकु। सत्वगुण मूरुगळिगेय अतिथियागबारदु, मनेयवनागबेकु। यावागलादरू ऒम्मे नम्मिंद आगुव कृतिय बगेगे नमगे अभिमान हुट्टुत्तदे। दिनवू निद्दे माडुत्तेवल्ल। अदन्नु यारिगू हेळुवुदिल्ल। अदे रोगियॊब्बनिगे हदिनैदु दिनदिंद निद्दे इल्लदे ऒंदु दिन स्वल्प निद्दे हत्तलि, इवोत्तु ननगे निद्दे बंतु ऎंदु ऎल्लरिगू हेळुत्ताने। अवनिगे अदु महत्वद सुद्दि। नम्म श्वासोच्छ्वासवू ऒंदु दृष्टांत। इप्पत्तुनाल्कु तासु उसिराडुत्तेवे। बरहोगुववरिगेल्ल अदन्नु हेळुत्तेवेये? नानु उसिराडुव प्राणि ऎंदु यारू प्रौढरु हेळरु। हरिद्वारदल्लि तेलिबिट्ट कड्डि कल्कत्तेयवरेगे ऒंदु साविरद ऐनूरु मैलि हरिदुबंदरू अदु बडायि कॊच्चदु। सहज प्रवाहदल्लि हरिदु बंतु। यारादरू प्रवाहक्के अड्डहोदरे, इदिरु ईसि हत्तुमारु होदरे, ऎष्टु जंब कॊच्चियानो! स्वाभाविकवादुदरल्लि अहंकार काणदु।

ऒंदु ऒळ्ळे केलस माडिदाग अहंकारबेनिसुत्तदे। याके? अदु स्वाभाविकवल्ल अंत। मगु ऒंदु ऒळ्ळे केलस माडिदरे तायि अवन बॆन्न तडवुत्ताळे। इल्लदिद्दरे अवन बॆन्निगू आकेय कैय बॆत्तक्कू

गंट्टु। रात्रिय गाढांधकारदल्लि ओंदु मिणुकु हुळु। आग अदर बडायि एनु केळीरि। ओम्मेगे पूरा मिचन्नु तोरदु। स्वल्प मिणुमिणु, स्वल्प तडे, मत्ते मिणुमिणु। अदर बेळकु सततवागिद्दरे ई जंब इरुत्तिरलिल्ल। सातत्यदिंद विशेष भावने होगुत्तदे। सत्वगुण नम्म क्रियेयल्लि सतत-वागि प्रकटवादरे अदे स्वभाववागुत्तदे। सिंहक्के तन्न शौर्यद अभिमान-विल्ल। अदक्के अदर अरिवे इल्ल। इदे रीति नावु सात्विकरेंब नेनपू आगदष्टु सहजवागबेकु सात्विकते। बेळकन्नु बीरुवुदु सूर्यन नैसर्गिक क्रिये। अदरल्लि अवनिगे अभिमानविल्ल। ई बग्गे सूर्यनिगे मानपत्र कोड होदरे--'नानु विशेष एनु माडिदे? नानु बेळकु कोडुत्तेने एंदरेनु? बेळकु कोडुवुदु एंदरे नानु बदुकिरुवुदु। कोडदिद्दरे नानु सत्ते एंतले। ननगे बेरे तिळियदु' एंदानु। सूर्यन ई मातु इद्दंते सात्विक मनुष्यनदू आगबेकु। सत्वगुण रोम रोमदल्लू तुंबिरबेकु। हीगे अदु स्वभाववादरे आग अहंकार एनिसदु। सत्वगुणवन्नु सप्पे-माडलु, सोलिसलु इदु ओंदु उपाय।

इन्नोंदु उपाय -- सत्वगुणद आसक्तियन्नु बिडुवुदु। अहंकार बेरे, आसक्ति बेरे। इदु सूक्ष्म विचार। दृष्टांतदिंद तिळिदीतु। सत्वगुणद अहंकार होदरू आसक्ति इरुत्तदे। श्वासोच्छ्वासद उदा-हरणेयन्ने तेगेदुकोळ्ळोण। अदर अभिमानविल्ल। आदरे अदरल्लि बहळ आसक्तियिदे। ऐदे निमिष उसिराडबेड एंदरे साध्यविल्ल। मूगिगे उसिराटद अभिमानविल्ल। आदरे गाळियन्नेनो सेळयुत्तले इरुत्तदे। साक्रटीसनदोंदु संगतियिदे। अवन मूगु मोंडु। अदन्नु

नोडि जन नगुत्तिद्दरु। आदरे विनोदि साक्रटीस् ‘ नन्न मूगु वळु अंद ’ एन्नुत्तिद्द। दोड्ड मूगिनिंद तुंबा गाळि ओळगे होगुत्तदे। अदे अंद। मूगिगे उसिराटद अहंकारविल्ल। आसक्तियिदे। सत्वगुणद आसक्तियू इंथदे। भूतदये अत्यंत उपयुक्त गुण। आदरे अदरल्लू आसक्ति कूडदु। भूतदयेयिरलि। आसक्ति बेड।

सत्वगुणद मूलक साधुगळु इतररिगे मार्गदर्शकरागुत्तारे। अवर देह भूतदयेयमूलक सार्वजनिकवागुत्तदे। वेल्लक्के नोण मुत्तुवंते इडी लोक साधुवन्नु मुत्तुत्तदे। साधु प्रकटिसुव अपार प्रेमदिंद विश्ववे अवनन्नु प्रेमिसुत्तदे। साधु तन्न देहद आसक्तियन्नु बिडुत्ताने। इडी जगत्तिन आसक्ति कट्टिकोळ्ळुत्ताने। इडी लोक अवन देहवन्नु नोडिकोळ्ळुत्तदे। ई आसक्तियन्नु साधुगळु दूरमाडबेकु। ई जगत्-प्रेम, ई महत् फलदिंद आत्मवन्नु दूर माडबेकु। अदू नानु स्वल्प हेच्चु विशेष एनिसलागदु। हीगे सत्वगुणवन्नु मैगूडिसिकोळ्ळबेकु।

मोदलु अहकारवन्नु गेल्लबेकु। आमेले आसक्तियन्नु। सातत्यदिंद अहंकारवन्नु गेल्लबहुदु। फलासक्तियन्नु बिट्टु सत्वगुण-दिंद दोरेव फलवन्नु ईश्वरार्पणमाडि आसक्तियन्नु गेल्लबेकु। बाळिनल्लि सत्वगुण स्थिरवादमेले ओम्मे कीर्तियरूपदल्लि, ओम्मे सिद्धिय रूपदल्लि फल बरुत्तदे। आ फल तुच्छवेंदु तिळियिरि। माविनमर ओंदादरू हण्णन्नु तिंदीते? एष्टे मोहकवागलि, रसालवागिरलि, आ हण्णन्नु तिन्नुवुदक्किंत तिन्नदिरुवुदरल्ले अदक्के सवि। उपभोगक्किंत त्याग सवि। इडी जीवनदल्लि दोरकिसिकोंड महा फलवाद स्वर्गसुखवन्नु

कडेयल्लि धर्मराय विट्ट । जीवनद सर्व त्यागगळमेले कलशवेरिसिद । आ मधुर फल सवियलु अवनिगे अधिकारवित्तु । अदन्नु सविदिद्दरे मुगियुत्तित्तु । 'क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशंति'। ई चक्र अवन हिंदेये इरुत्तित्तु। धर्मरायनदु ऎंथ त्याग! अदु सर्वदा नन्न कण्णिगे कट्टिदे । हीगे सतत सत्वाचरणे माडि अदर अहंकारवन्नु सोलिसबेकु । तटस्थनागि, अदर फलवन्नु ईश्वरनिगे अर्पिसि, आसक्तियन्नु गेल्लबेकु । आग सत्वगुणवन्नु गेद्दंते ।

81. कडेयमातु : आत्मज्ञान – भक्तिय आश्रय

इन्नु कोनेय मातु । सत्वगुणियादरू, अहंकारवन्नु गेद्दरू, फलासक्तियन्नु बिट्टरू, ई देह कच्चिकोंडिरुववरेगे नडुनडुवे रज-तमगळ धाळि इद्दे इरुत्तदे । इवु सोतवु ऎंदु ऒंदु गळिगे अनिसीतु । मत्ते अवु द्विगुण वेगदिंद बंदावु । आदुदरिंद सततवू जागरूकरागिरबेकु । समुद्रद नीरु वेगवागि बंदु दडदल्लि आखातवन्नु कोरेवहागे रज-तमगळु वेगवागि बंदु मनदल्लि आखात तोडुत्तवे । स्वल्पवू संदु कोडबेडि । कड्डु कट्ट कावलु इडि । ऎष्टे दक्षतेयिद्दरू आत्मज्ञानवागदे, आत्मदर्शनवागदे विपत्ते एनादरू माडि आत्मज्ञान पडेयिरि ।

केवल जागृतिय कसरत्तिनिंद इदु आगदु । हागादरे हेगे? अभ्यासदिंद आदीते? इल्ल। ऒंदे उपाय। 'भगवंतनल्लि अत्यंत कळकळियिंद भक्तियिड्डुवुदु'। रज-तमोगुणगळन्नु गेद्दरे सत्वगुणवन्नु स्थिरगोळिसि अदर फलासक्तियन्नु गेल्लवहुदु । आदरे अष्टरिंद मुगियदु। आत्मज्ञानवागदे इदु असाध्य । कट्टकडेगे देवर दये बेकु।

अध्याय 15

82. प्रयत्न मार्ग -- भक्ति बेरे अल्ल

ऒंदु अर्थदल्लि इंदु नावु गीतेय तुदिगे मुट्टिदेवे, हदिनैदने अध्यायदल्लि ऎल्ला विचारगळू परिपूर्णते पडेदिवे। हदिनारने, हदिनेळने अध्यायगळु परिशिष्टविद्दंते। हदिनेंटनेयदु उपसंहार। अदरिंदले भगवंत ई अध्यायद कॊनेयल्लि शास्त्र ऎंब संज्ञेयन्नु इदक्के कॊट्टिदाने।

"इति गुह्यतमं शास्त्रं इदमुक्तं मयानघ"

हीगे हेळिदाने भगवंत कडेयल्लि। इदु कट्टकडेय अध्याय ऎंदल्ल भगवंत हेळिदुदु। इल्लियवरेगे हेळिद जीवन शास्त्र, सिद्धात ई अध्यायदल्लि पूर्णगॊंडिदे अंत। ई अध्यायदल्लि परमार्थ पूर्णवायितु। सकल वेदसारवू अदरल्लि बंदिदे। मनुष्यनिगे परमार्थ दर्शन माडिसुवुदे वेदगळ कॆलस। अदु ई अध्यायदल्लि आगिदे ऎंदु इदक्के 'वेदसार' ऎंब गौरवद पदवि।

हदिमूरने अध्यायदल्लि देहदिंद आत्मवन्नु बेरे माडबेकाद अवश्यकतेयन्नु कंडेवु। हदिनाल्करल्लि आ बगॆ स्वल्प प्रयत्नवादवन्नु परिशीलिसिदेवु। रजोगुण तमोगुणगळन्नु निग्रहदिंद त्यजिसबेकु। सत्वगुणवन्नु अरळिसिकॊंडु अदरल्लि आसक्तियन्नु गॆल्लबेकु। अदर आसक्तियन्नु गॆल्लबेकु। अदर फलवन्नु त्यजिसबेकु। हीगे प्रयत्न माडबेकु। ई प्रयत्न संपूर्णवागि फलप्रदवागलु आत्मज्ञान अगत्य। अदन्ने कडेगे तिळिसिदॆ। ई आत्मज्ञान भक्तियिल्लदे इल्ल।

भक्तिमार्गवेंदरे प्रयत्नमार्गवल्लदे बेरे अल्ल। इदन्नु तिळिसलिक्कागिये ई हदिनैदने अध्यायद आदियल्लि संसारवन्नु महा वृक्षक्के होलिसिदे। त्रिगुणगळिंद पोषितवाद प्रचंड शाखेगळिवे इदक्के। अनासक्ति, वैराग्यगळेंब आयुधगळिंद अदन्नु कडियबेकु एंदु आरंभदल्ले हेळिदे। हिंदिन अध्यायदल्लि हेळिद साधनामार्गवन्ने इल्लि आरंभदल्लिये मत्ते हेळिदेयेंबुदु स्पष्ट। रज-तमगळन्नु होडेदु-हाकबेकु; सत्व गुणवन्नु बेळेसि अरळिसबेकु। ओंदु विनाशक कार्य, ओंदु विधायक कार्य। एरडू सेरि ओंदे दारि। कळे कीळुवुदू बीज बित्तुवुदू एरडू ओंदे क्रियेय अंग। इदू हागे। रामायणदल्लि रावण कुंभकर्ण विभीषणरु मूवरू अण्ण-तम्मंदिरु। कुंभकर्ण तमोगुण, रावण रजोगुण, विभीषण सत्वगुण। नम्म शरीरदल्लि ई मूवर रामायण रचितवागुत्तदे। ई रामायणदल्लि रावण कुंभकर्णर नाशवे विहित। हरिचरण शरणवागुवंतिद्दरे मात्र विभीषणतत्व उन्नतिगे साधकवादीतु, पोषकवादीतु। अदरिंद अदु संग्राह्य। हदिनाल्कने अध्यायदल्लि इदन्नु नोडिदेवे। हदिनैदनेयर आरंभदल्लि मत्ते अदे। सत्वरजस्तमगळिंद तुंबिद संसारवन्नु असंग-शास्त्रदिंद कत्तरिसि हाकु। रज तमगळन्नु विरोधिसु। सत्वगुणवन्नु अरळिसु। पवित्रनागु। सत्वद आसक्तियन्नु गेद्दु अलिसनागिरु। कमलद ई आदर्शवन्नु भगवद्गीते मंडिसिदे। भारतीय संस्कृतियल्लि जीवनद आदर्श वस्तुविगे, उत्तमोत्तम वस्तुविगे, कमलद उपमे कोट्टिदारे। कमल भारतीय संस्कृतिय प्रतीक। उत्तमोत्तम विचार-

ಗಳನ್ನು ಪ್ರಕಟಗೊಳಿಸುವ ಚಿಹ್ನೆಯೆಂದರೆ ಕಮಲ । ಕಮಲ ಸ್ವಚ್ಛ, ಪವಿತ್ರ, ಅಲಿಪ್ತ । ಕಮಲಕ್ಕೆ ಅಲಿಪ್ತತೆ, ಪವಿತ್ರತೆ ಎರಡೂ ಶಕ್ತಿಗಳಿವೆ । ಭಗವಂತನ ಅವಯವಗಳಿಗೆ ಪ್ರತ್ಯೇಕ ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿ ಕಮಲದ ಹೋಲಿಕೆ ಕೊಡುತ್ತಾರೆ । ನೇತ್ರ ಕಮಲ, ಪದಕಮಲ, ಕರಕಮಲ, ಮುಖಕಮಲ, ನಾಭಿಕಮಲ, ಹೃದಯಕಮಲ, ಶಿರಃಕಮಲ -- ಎಲ್ಲೆಡೆಯಲ್ಲೂ ಸೌಂದರ್ಯ ಪಾವಿತ್ರ್ಯಗಳೂ ಇವೆ, ಅಲಿಪ್ತತೆಯೂ ಇದೆ । ಇದನ್ನು ತೋರಿಸಬೇಕು । ನಮ್ಮ ಮನಸ್ಸಿನ ಮೇಲೆ ಮುದ್ರಿಸಬೇಕು ।

ಹಿಂದಿನ ಅಧ್ಯಾಯದಲ್ಲಿ ಹೇಳಿದ ಸಾಧನೆಗೆ ಪೂರ್ಣಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಕೊಡಲಿಕ್ಕಾಗಿಯೇ ಈ ಅಧ್ಯಾಯ । ಪ್ರಯತ್ನದಲ್ಲಿ ಭಕ್ತಿ, ಆತ್ಮಜ್ಞಾನಗಳನ್ನು ಬೆರೆಸಿದರೆ ಪೂರ್ಣತೆ ಬರುತ್ತದೆ । ಪ್ರಯತ್ನ ಮಾರ್ಗದ ಒಂದು ಭಾಗ ಭಕ್ತಿ । ಭಕ್ತಿ, ಆತ್ಮಜ್ಞಾನಗಳು ಸಾಧನದ ಅಂಗಗಳು । ವೇದಗಳಲ್ಲಿ ಋಷಿಗಳು ಹೇಳಿದಾರೆ : " ಯಾರು ಜಾಗೃತರೋ ಅವರನ್ನು ವೇದಗಳು ಪ್ರೀತಿಸುತ್ತವೆ । ಅವರನ್ನು ಸಂದರ್ಶಿಸಲು ಅವು ಬರುತ್ತವೆ "। ಅಂದರೆ ಜಾಗೃತನಾದವನ ಬಳಿಗೆ ವೇದನಾರಾಯಣ ಬರುತ್ತಾನೆ । ಜ್ಞಾನ ಬರುತ್ತದೆ, ಭಕ್ತಿ ಬರುತ್ತದೆ । ಪ್ರಯತ್ನ ಮಾರ್ಗ ಬೇರೆ, ಭಕ್ತಿ ಜ್ಞಾನಗಳು ಬೇರೆ ಅಲ್ಲ । ಆ ಪ್ರಯತ್ನದಲ್ಲಿ ಸವಿಯನ್ನು ಬೆರೆಸುವ ತತ್ವಗಳು ಇವು । ಈ ಅಧ್ಯಾಯದ ಸಂದೇಶ ಅದು । ಏಕಾಗ್ರಚಿತ್ತದಿಂದ ಭಕ್ತಿ ಜ್ಞಾನಗಳ ಈ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಕೇಳಿ ।

83. ಭಕ್ತಿಯಿಂದ ಪ್ರಯತ್ನ ಸುಖಕರವಾಗುತ್ತದೆ

ಜೀವನವನ್ನು ಚೂರು ಚೂರಾಗಿ ಕತ್ತರಿಸಲು ಬಾರದು । ಕರ್ಮ ಜ್ಞಾನ ಭಕ್ತಿಗಳನ್ನು ನನ್ನಿಂದ ಬೇರೆ ಮಾಡಲಾದೀತೆ ? ಅವು ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಅಲ್ಲವೂ ಅಲ್ಲ । ಉದಾಹರಣೆಗಾಗಿ ಈ ಸೆರೆಮನೆಯ ಸ್ವಯಂಪಾಕದ ಕೆಲಸವನ್ನು ನೋಡಿ । ಐದಾರು ನೂರು ಜನರಿಗೆ ಅಡಿಗೆಯಾಗಬೇಕು । ನಮ್ಮಲ್ಲಿ ಕೆಲವರು ಅದನ್ನು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದೀರಿ । ಅಡಿಗೆಯ ಜ್ಞಾನವಿಲ್ಲದವನು ಆ ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಬಂದರೆ ಅದನ್ನು ಕೆಡಿಸುತ್ತಾನೆ । ರೊಟ್ಟಿ

हसि हसियागिद्दीतु अथवा सीदुहोदीतु। अडिगेय ज्ञानविदे ऎन्नि। आदरे आ केलसदल्लि ऒलवु इल्लदिद्दरे, भक्ति भावने इल्लदिद्दरे, ई रॊट्टि नन्न बंधुगळिगे ऎंदरे नारायणनिगे अर्पितवागुत्तदे; अवन्नु चॆन्नागि सुडबेकु, इदु प्रभुसेवे ऎंब भावने ऎदॆयल्लि इल्लदिद्दरे, ज्ञानविद्दरू अवनु अडिगॆगे योग्यनागलार। अडिगेय ज्ञान बेकु। अदरल्लि ऒलवू बेकु। भक्ति तत्वद रस हृदयदॊळगॆ इल्लदे अडिगे सुरसवागदु। अदरिंदले तायिय विना इदु साध्यविल्ल। तायल्लदे अन्यरारु ऒलविनिंद, श्रद्धॆयिंद ई केलस माडियारु। ई केलसक्के तपस्से बेकु। तापवन्नु सहिसदे, कष्टपडदे ई केलसवादीते? प्रेम, ज्ञान, कर्मगळु ऒंदे केलसदल्लि तोडगिदंते काणुत्तवे। जीवनदल्लि ऎल्ल कर्मवू ई मूरु गुणगळमेले निंतिदॆ। ऒंदु मूरु कालु मणे। अदर कालु ऒंदु मुरिदरू मणे सरियागि निल्लदु। मूरु कालु; अदर हॆसरिनल्लॆ अदर स्वरूपविदॆ। बाळिनल्लू हीगॆ। ज्ञान भक्ति कर्मगळु ऎंदरे श्रमसातत्य। इदु बाळिन मूरु कालु मणे। ई मूरु कंबगळ मेलॆ निंतिदॆ जीवन द्वारके। मूरू कालु सेरि ऒंदु पदार्थ। मूरु कालु मणेय दृष्टांत अक्षरशः सरिहोगुत्तदे। तर्कक्के भक्ति ज्ञान कर्मगळु बेरॆ इरलि। प्रत्यक्षवागि अवन्नु बेरॆ बेरॆ माडलु बरुवंतिल्ल। मूरू सेरि ऒंदे विशाल वस्तु।

हीगिद्दरू भक्तियदु विशेष गुणविल्लदिल्ल। याव कर्मदल्ले आगलि भक्ति बेरॆतरे आ कर्म सुलभ ऎनिसुत्तदे। सुलभवॆनिसुत्तदे ऎंदरे कष्टवागदु ऎंदल्ल। आदरे आ कष्ट कष्टवॆनिसदु, आनंदवागि

कंडीतु । हूविनंते हगुरागिद्दीतु । भक्तिमार्ग सुलभवेन्नलु कारणवेनु ? भक्तिय देसेयिंद कर्मद भार काणदु । कर्मद काठिण्य होगुत्तदे । ऒन्दु केलस माडिदरू एनू माडदंतेये इरुत्तदे । भगवान् क्रिस्त ऒंदेडे हीगे हेळिदाने : 'उपवास माडिदरे निन्न मोरेय मेले उपवासद गुरुतु काणदिरलि । केन्नेगे गंध हच्चिकोंडवनंते प्रफुल्लितवू आनंदमयवू आगि इरलि । उपवासद वळलिके काणदिरलि ।' वृत्तिये भक्तिमय वागबेकु ; कष्ट मरेते होगबेकु । वीर देशभक्त नगु नगुत्त गल्लि-गेरिद ऎंदु हेळुत्तेवल्ल । सुधन्व काद ऎण्णेय कोप्परिगेयल्लिळिद नगु नगुत्त ; बायल्लि कृष्ण हरि गोविंद ऎन्नुत्त । इदर अर्थ -- अपारवाद कष्टवे इद्दरू भक्तिय देसेयिंद अदु भासवागदु । नीरिनल्लिरुव दोणि सागुवुदु कष्टवल्ल । नेलदमेले, कल्लिनमेले तंदु अदन्नु ऎळेदरे ? दोणिय केळगे नीरिद्दरे ताने तेलिहोगुत्तदे । अदे रीति नम्म जीवन नौकेय केळगे भक्ति जलविद्दरे आ नौकेयन्नु आनंददिंद हुट्टुहाकि सागिसबहुदु । आदरे बाळु शुष्कवादरे,मरळु नेलवादरे कल्लु बंडे इद्दरे, दोणियन्नु नडेसुव केलस बहळ कठिनवागुत्तदे । भक्ति तत्व बाळिन दोणिगे नीरिद्दंते , बाळन्नु सुलभगोळिसुत्तदे ।

भक्तिमार्गदिंद साधनेयल्लि सुलभते बरुत्तदे । आदरे आत्मज्ञान विना त्रिगुणगळन्नु शाश्वतवागि दाटलु साध्यविल्ल । आत्मज्ञानक्के एनु साधन ? सत्व सातत्यदिंद सत्वगुणवन्नु अरगिसिकोंडु, अदर अहंकार फलासक्तिगळन्नु गेल्लुव भक्तिय प्रयत्नवे आ साधन । ई साधनेयल्लि सततवागि प्रयत्न माडुत्ता माडुत्ता ऒंदु दिन आत्मदर्शनवादीतु ।

अलियवरेगे प्रयत्नक्के कोनेयिल्ल। परम पुरुषार्थद मातु इदु। आत्म दर्शन सण्ण मातल्ल। आडाडुत्त आत्मदर्शनवागदु। अदक्के सतत प्रयत्न धारे अगत्य। परमार्थ मार्गदल्लि ओंदु क्षणवन्नू निरागेयल्लि कळेये ऎंबुदु ओंदु परत्तु। निरागेयिंद सुम्मने कूडुवुदिल्ल। परमार्थक्के वेरे साधनविल्ल। ओम्मोम्मे साधक बळलि.

"तुम कारन तपसंयम किरिया कहो कहालौं कीजे"

'देवरे, ऎष्टु दिन तपस्सु माडलि?' ऎंदानु। आदरे आ उद्गार गौण। तपस्सु संयमगळु तन्न स्वभाववे आगुवष्टु अवु मैगूडलि। इन्नेष्टु दिन ई साधने ऎंब मातु भक्तिगे भूषणवल्ल। अधीरभाव, निरागाभावगळिगे भक्ति ऎंदू ऎडे कोडदु। इन्थ बेसर अदरल्लि बारदु। भक्तियल्लि उत्तरोत्तर उल्लास, उत्साह मूडबेकु। ई वर्गो ई अध्यायदल्लि बहळ सोगसाद विचार माडिदे।

84. सेवेय त्रिपुटिः सेव्य, सेवक, सेवासाधन

ई विश्वदल्लि नमगे अनंत वस्तुगळु काणुत्तवे। इवेल्लवन्नू मूरु भाग माडबेकु। भक्तनिगे वेळग्गे ऎद्दरे कण्णिगे काणुवुदु मूरे वस्तु। अवन अर्ध लक्ष्य देवरकडे। देवर पूजेय सिद्धते माडुत्ताने। नानु सेवक-भक्त, अवनु सेव्य-भगवंत; इवेरडु अवन बळि सदा इरुत्तवे। इडी सृष्टिये अवनिगे पूजासामग्रि। अरळिद हू, गंध, धूप दीपविद्दंते सर्वसृष्टि। मूरे वस्तु. सेवक--भक्त, सेव्य--परमात्म, सेवासाधन--सृष्टि। ई अध्यायदल्लिरुवुदु ई पाठ। आदरे यावुदादरोंदु मूर्तिय पूजे माडुव सेवकनिगे सृष्टियल्लिन सर्ववस्तुगळू पूजासामग्रि ऎनिसदु। तोटदिंद

नाल्कु हू हरिदु तरुत्ताने। ऒॆल्लिंदादरू ऊदिनकड्डि तरुत्ताने। एनादरू नैवेद्य तोरिसुत्ताने। अवनिगे आय्दुकोळ्ळबेकेनिसुत्तदे। आदरे हदिनैदनेय अध्यायदल्लिरुव विशाल संदेशदल्लि ई आय्केपाय्केयिल्ल। तपस्सिन साधन, कर्मद साधन ऎल्लवू परमेश्वरन सेवेय साधन। अदरल्लि केलवन्नु हू ऎन्नि, केलवन्नु गंधवेन्नि, केलवन्नु नैवेद्यवेन्नि। हीगे सर्व कर्मवन्नू पूजा द्रव्यवागि माडबेकु। हीगिदे दृष्टि। लोकदल्लि मूरे वस्तु। गीते याव वैराग्यमय साधन मार्गवन्नु निम्म मनस्सिन मेले मुद्रियोत्तवयसुत्तदेयो आ मार्गक्के गीते भक्तिमय स्वरूपवन्नु कोट्टिदे। अदर कर्मतेयन्नु कित्तुहाकि सुलभतेयन्नु तंदिदे।

आश्रमदल्लि गार मेलादरू हेच्चु केलस बिद्दरे तन्नमेले हेच्चु केलस बिद्दितल्ल ऎंदु अवनिगे अनिसदु। इदरल्लि बहळ सारविदे। पूजेमाडुववनिगे ऎरडु गंटे बिट्टु नाल्कु गंटे होत्तु सिक्करे इदेके इष्टु होत्तु ऎंदु बेसरवादीते? हेच्चु आनंदवे आदीतु। आश्रमदल्लि ई अनुभव प्राप्तवागुत्तदे। ई अनुभव सर्वजीवनदल्लि सर्वत्र बरबेकु। जीवनवु सेवा पारायणवागबेकु। अवनु सेव्य पुरुषोत्तम। अवन सेवेगागि सदा सिद्धनाद नानु–अक्षर पुरुष। अक्षर पुरुष ऎंदरे ऎंदू दणियद, सृष्टिय आरंभदिंद सेवे माडुत्तिरुव सनातन सेवक। रामन मुंदे हनुमत सदा कै जोडिसि निंतते। अवनिगे बेसरविल्ल। अवनंते चिरंजीवियागिरबेकेंदु ई सेवक निंतिदाने।

इंथ आजन्मसेवक अक्षर पुरुष। परमात्मनेब संस्थे जीवंतविदे। सेवक नानु सदा इदेने। प्रभु शाश्वतवादरे नानू शाश्वत।

सेवेमाडिसिकोंडु अवनु बळलुत्तानो सेवे माडि ना दणियुत्तेनो नोडोण। अवन हत्तु अवतार माडिदरे नन्नदू हत्तु। अवनु रामनादरे नानु हनुमंत। अवनु कृष्णनादरे नानुउद्धव। अवनदेष्टु अवतारगळो नन्नदू अष्टे। नडेयलि ई मधुर स्पर्धे। परमेश्वरनन्नु हीगे युग युग सेवे माडुव, यावागलू नाशवागद, जीववे अक्षर पुरुष। अवनु पुरुषोत्तम – स्वामि, नानु अवन दास अँब भावने यावागलू हृदयदल्लिरबेकु। निमिष निमिषक्कू बदलागुव, अनंत रूपगळिंद नटिसुव, ई सृष्टिसमस्तवू पूजेय साधन। प्रत्येक क्रियेयू पुरुषोत्तमन पूजेये।

सेव्य परमात्म पुरुषोत्तम, सेवक जीव अक्षर पुरुष। आदरे साधन रूपवाद ई सृष्टि क्षर। इदु क्षर अँबुदरल्लि दोड्ड अर्थविदे। सृष्टिगे इदु निंदेयल्ल, भूषण। इदरिंद सृष्टि नित्य नवीनवागिदे। निन्निन हू इंदु प्रयोजनविल्ल, अदु निर्माल्यवायितु। सृष्टि नाशवंत अँबुदु दोड्ड भाग्य। इदु सेवेय वैभव। सेवेगे दिनवू होस हू। इदे रीति शरीरवू होस होसदन्नु धारणेमाडि परमेश्वरन सेवे माडीतु। नन्न साधनेगे दिनवू होस रूपु कोट्टु अदरिंद होस पूजे माडेनु। नाशवंत-वादुदरिंद अदरल्लि सौंदर्यविदे। चंद्रन कले इन्दिनदु नाळेयिल्ल। दिनवू बेरे लावण्य। बिदिगेय वर्धमान चन्द्रनन्नु कंडरे अेष्टु हिगु? शंकरन हणेयल्लि बिदिगेय चन्द्रन शोभे प्रकटवागिदे। अष्टमि चन्द्रन चॅंद बहळ हेच्चु। अष्टमिय दिन आकाशदल्लि हलवु मुत्तु काणुत्तवे। हुण्णिमेय दिन चन्द्रन तेजदिंद आ चिक्के काणवु। हुण्णिमेयल्लि परमात्मन मुखचन्द्र काणुत्तदे। अमावास्येय आनंद बहळ

गंभीरवागिरुत्तदे । आ होत्तु अेन्तु निस्तब्धते, अेन्तु शांतते ! चन्द्रन ओत्तायद प्रकाशविल्लदुदरिंद असंख्य तारेगळु मिणुगुत्तिरुत्तवे । अमावास्येयल्लि स्वातंत्र्यद पूर्ण विलास । तन्न तेजद बडायि तोरुव चन्द्र अंदु मुगिलिनल्लि इल्ल । तनगे प्रकाश कोडुव सूर्यनोडने एक-रूपवागिरुत्ताने । परमेश्वरनोडने बेरेतिरुत्ताने । स्वातमार्पणे माडि जीव तन्निंद लोकक्के किंचित्तू तोंदरेयागदंते इरबेकेंब ज्ञान आ दिन बरुत्तदे । चन्द्रन स्वरूप क्षर , बदलागुत्तदे । आदरे बेरे बेरे आनंद कोडुत्ताने ।

सृष्टिय नाशवंतिकेये अदर अमरत्व । सृष्टिय रूप झळु झळु हरियुत्तिदे । रूपगंगे हरियदिद्दरे अल्लि गुंडियागुत्तदे । होळेय नीरु अखंडवागि हरियुत्तिरुत्तदे । नीरु सदा बदलागुत्तदे । आ तेरे बंदु-होयितु, होसदु बंदीतु । आ नीरु जीवंतवागिरुत्तदे । वस्तुविन आनंद अदर नवीनतेयल्लिदे । ग्रीष्मऋतुविनल्लि देवरिगे बेरे हू । मळेगाल-दल्लि हसिरु गरिके । शरदृतुविनल्लि रमणीय कमल । आया ऋतु कालोद्भव पुष्पगळिंद देवरन्नु पूजिसबेकु । इदरिंद आ पूजे नित्य नवीनवागि मेरेयुत्तदे । बेसरवागदु । चिक्क मक्कळिगे ‘अ’ बरे, अदन्नु तिद्दु अेन्नुत्तेवे । ‘अ’ द कटकट मक्कळिगे बेसर । अक्षर-वन्नु एके दप्पनागिसबेको अदक्के तिळियदु । बळपवन्नु अड्ड हिडिदु बेग अदन्नु दप्पनागिसुत्तदे । मुंदे होस अक्षरगळ गुंपन्नु नोडुत्तदे । बेरे बेरे पुस्तक ओदुत्तदे । साहित्यद नाना सुमनगळन्नु अनुभविसु-त्तदे । अदक्के अपार आनंदवागुत्तदे । सेवा प्रांतदल्लू हीगे । होस होस साधनेगळिंद सेवेय हुरुपु हुट्टुत्तदे । सेवावृत्ति विकासगोळ्ळुत्तदे ।

सृष्टिय नाशवंतिकें दिनवू होस हूवन्नु अरळिसुत्तिदे । अरिन पक्कदल्लि मसणविदे अंत ऊरिगे रमणीयवने, हळबरु होगुत्तारे, होसबरु बरुत्तारे । सृष्टि होसदन्नु बेळेसुत्तदे । होरगिन स्मशानविल्लवादरे मनेयंगळक्के बंदीतु अदु । हळबरन्ने नोडिनोडि बेसरवादीतु । बेसिगे-यल्लि बिसिलु इरुत्तदे । भूमि सुडुत्तदे । अदरिंद बस्तरागबारदु । ई रूप बदलादीतु । मळेय सुखवन्नु अनुभविसलु स्वल्प सुडबेकु । नेल चेन्नागि कायदिद्दरे मळे स्वल्प बंदोडने नेल केसरागुत्तदे । तृण-धान्य बेळेयदु । नानोम्मे बेसगेयल्लि अलेयुत्तिद्दे । तले सुडुत्तित्तु । आनंदवेनिसुत्तित्तु । ओब्ब गेळेय हेळिद – तले कादीतु, कष्टवादीतु । नानु हेळिदे – 'काल केळगिन मण्णु कादिदे । ई मण्णिन चेंडू स्वल्प कायलि' । तले कादिद्दाग हनि बंदरे ऎष्टु आनंद । बिसिलिनल्लि कायदवनु मळे बंदरे पुस्तकगळ नडुवे तलमरेसि कुळितानु । मनेयोळगे कोणेयल्लि, आ गोरियोळगे, कुळितिद्दानु । होरगिन ई विशाल अभि-षेक पात्रेय केळगे नितु नलिदाडलिक्किल्ल । नम्म महर्षि मनु ओळ्ळे रसिक, सृष्टि प्रेमि । स्मृतियल्लि – मळे हनि बिद्दरे रजाकोडबेकेंदु बरेदिदाने । हनि बिद्दरे आश्रमदल्लि कुळितु उरुबु हाकबेके ? मळे-यल्लि कुणियबेकु, आडबेकु, हाडबेकु । सृष्टियोडने एकरूपवागबेकु । मळेयल्लि नेलवू मुगिलू परस्पर भेटियागुत्तवे । आ भव्यदृश्य ऎष्टु आनंददायि ! ई सृष्टि स्वत. शिक्षण कोडुत्तदे ।

सृष्टिय क्षरते, नाशवंतिकें अंदरे साधनगळ नवीनते । इंथा नवनव प्रसवा, साधन धात्रि सृष्टि ; सेवेगागि नडुविगिदु निंत सनातन

सेवक ; सेव्य परमात्म। नडेयलि ई क्रीडे। परम पुरुषनाद पुरुषोत्तम बेरे बेरे सेवासाधन कोट्टु नन्निंद ओलविन सेवे माडिसिकोळ्ळुत्तिदाने। ननगे नाना साधन कोट्टु आटवाडिसुत्तिदाने। नन्निंद बेरे बेरे प्रयोग माडिसुत्तिदाने। इन्थ दृष्टि बाळिनलि बंदरे ॲष्टु आनंदवादीतु!

85. अहंशून्य सेवे अंदरे भक्ति

नावु माडिद प्रतियोंदु कृतियू भक्तिमयवागलि ॲंबुदु गीतेय इच्छे। गळिगे, अर्धगळिगे माडिद परमेश्वर पूजे सरि। बेळगे संजे सुंदरवाद सूर्य प्रभे बण्ण बीरिद्दाग चित्तवन्नु स्थिरगोळिसि तासु अर्ध तासु संसारवन्नु मरेयुवुदू अनंतद चिंतने माडुवुदू उत्कृष्ट विचार। ई सदाचारवन्नु ॲंदू बिडबेडि। आदरे गीतेगे इष्टरिंद समाधानविल्ल। बेळगिनिंद संजेयवरेगे यच्च यावत् नडेव सर्व क्रियेयू भगवंतन पूजेगागि ॲंदे नडेयबेकु। स्नान माडुवाग, ऊट माडुवाग, कस गुडिसुवाग अवनन्नु स्मरिसुत्तिरबेकु। इदु नन्न स्वामिय, बाळ्दोरेय मनेयंगळ ॲंदु गुडिसबेकु। हागे अनिसबेकु। ई दृष्टियिंद समस्त कर्मवू पूजा कर्मवागबेकु। ई दृष्टि बदरे नडतेयलि ॲष्टु व्यत्यासवागुत्तदो नोडि। पूजेगागि हूवन्नु हेगे काळजियिंद आरिसुत्तेवो, मट्टसवागि हेगे बट्टलल्लि इडुत्तेवो, अदरमेले भार बीळदंते हेगे नोडुत्तेवो, ॲल्लि होलसु आदावो ॲंदु हेगे मूसुवुदू कूड इल्लवो, हागे बाळिन दिन दिनद केलसगळल्लि दृष्टि बरबेकु। इदु नन्न हळ्ळि। इल्लि ओंकलिंगर रूपदल्लि नारायण विहरिसुत्तिदाने। ई हळ्ळियन्नु नानु गुडिसुत्तेने, निर्मलवागिडुत्तेने। गीतेयल्लि ई दृष्टिये सर्वस्व। सर्व कर्मवू स्वामिपूजे। ई मातन्नु

हेळुवुदरल्लि गीतेगे वहळ हुरुपु । आवेश । गीतेयंथ ग्रंथराजक्के गळिगे अरगळिगेय पूजेयिंद तृप्तियिल्ल । इडी बाळु हरिमयवागवेकु । इदु गीतेय हव्यास ।

पुरुषोत्तम योगवन्नु हेळि कर्ममय जीवनक्के गीते पूर्णते कोडु-त्तदे । अवनु सेव्य पुरुषोत्तम ; नानु अवन सेवक ; ई सृष्टि सेवा-साधन । ई संगति ओंदुसल अनुभववायितो आमेले केळुवुदेनिदे ? तुकारामरु हेळिदारे :

" आयितो दरुशन, माडेनु ना सेवे
हायदु हिडियदु मनक्के वेरेनूवे "

अनंतर अखंड सेवे साधिसीतु । नानु अेन्नलु यारू इल्लदंता-दीतु । नानु – नन्नतन अळिदीतु – अेल्लवू भगवंतनिगागि । परार्थवन्नु सवियुवुदल्लदे वेरावुदू इरलिक्किल्ल । नन्नोळगिन 'नन्न तन' वन्नु कित्तेसेदु बाळन्नु हरिपरायणवागिसि भक्तिमयवागिसवेकु – गीते परि-परियल्लि इदन्नु हेळिदे । सेव्य परमात्म, सेवक नानु, साधन रूपद ई सृष्टि । परिग्रहद हेसरन्ने ओरेसिहाकिदारे । बाळिनल्लि मत्ताव चिंतेयू इल्ल ।

86. ज्ञानलक्षण : नानु पुरुष, अवनु पुरुष, अदू पुरुष

हीगे कर्मदल्लि भक्तियन्नु वेरेसुव विषयवेनो आयितु । आदरे अदरल्लि ज्ञानवू वेकु । इल्लदिद्दरे गीतेगे समाधानविल्ल । हागेंदरे इवु वेरे वेरे वस्तुगळल्ल । मातिनल्लि वेरे वेरे शब्द वळसुत्तेवे । अष्टे । कर्म अेंदरेने भक्ति । यावुदो केलवु कर्मगळल्लि भक्तियन्नु तंदु वेरेस-

वेकागिल्ल। ज्ञानद्दू इष्टे। इंथ ज्ञान हेगे दोरेतीतु? 'सर्वत्र पुरुष-दर्शनवादरे ज्ञान लभिसुत्तदे' अंदु गीते हेळुत्तदे। नीनु सेवे माडुव सनातन सेवक। नीनु सेवा पुरुष। अवनु पुरुषोत्तम -- सेव्य पुरुष। नाना रूप धारिणियाद ई वाहिनि, नाना साधन साधकवाद ई सृष्टियू पुरुषने।

ई दृष्टियन्निडुवुदु अंदरेनु? सर्वत्र अव्याज निर्मल सेवाभाव-वन्नु अळवडिसिकोळ्ळुवुदु। निन्न कालिनल्लि चप्पलि किरु किरुगुट्टु-त्तिदे। अदक्के स्वल्प ऎण्णे सवरु। अदरल्लि परमात्मन अंशविदे। अदन्नु चेन्नागि इडु। सेवासाधनवाद राटेगे ऎण्णे कुडिसु। अदु सद्दु माडुत्तिदे। 'नेति नेति' नूले, नूलल्लोल्ले -- ऎन्नुत्तिदे। राटे सेवा-साधन, अदन्नु मट्टसवागिडु। अदर माले, अदु अदर जनिवार, चेन्नागिडु। इडी सृष्टियन्नु चैतन्यमयवेंदु भाविसु। अदन्नु जडवेंदु तिळियबेड। इम्पाद ओंकारद हाडु हाडुत्तदे राटे। अदु जडवे? परमात्मन मूर्तिये अदु! ऎत्तिन हब्बद दिन अहंकार बिट्टु ऎत्तिन पूजे माडुत्तेवे। ई संगति बहळ महत्वद्दु। हब्बद विचार दिनवू मनस्सिनल्लिरलि। ऎत्तन्नु चेन्नागि इट्टुकोंडु अदरिंद यथायोग्य केलस-वन्नु माडिसिकोळ्ळोण। आवोत्तिन भक्ति आवोत्ते मुगियबारदु। ऎत्तु परमात्मन मूर्ति। नोग नेगिलन्नु, बेसायद ऎल्ला मुट्टन्नु सरियागिडु। सेवेय सर्व साधनवू पवित्रवे। ऎष्टु विशालवागिदे ई दृष्टि। पूजे माडुवुदेंदरे कुंकुम गंधाक्षतेगळ धारणवल्ल। पात्रेयन्नु कन्नडियंते बेळगिडल्लु अदु पात्रेय पूजे। स्वच्छवागि ओरेसि इट्टरे अदे दीपद

पूजे। कुडुगोलन्नु मसेदु सिद्ध माडिट्टुको वेसायक्के। अदे अदर पूजे। जीवनदल्लि सर्वत्रवू ई दृष्टियन्नु तंदुकोळ्ळबेकु। सेवा द्रव्यवन्नु उत्कृष्टवागि निर्मलवागि इट्टुकोळ्ळबेकु। नानु अक्षरपुरुष, अवनु पुरुषोत्तम, अदु साधनरूप सृष्टि। इदेल्लवू पुरुषने, परमात्मने! अेल्लेल्लू ओंदे चैतन्य आटवाडुत्तिदे। ई दृष्टि बंदरे नम्म कर्मदल्लि ज्ञानवे हरिदु बंदंते।

कर्मदल्लि भक्तियन्नु तुंबि, मेले ज्ञानवन्नु सुरिदरे आग जीवनवे दिव्य रसायनवादंते। गीते कट्टकडेगे नम्मन्नु अद्वैतमय सेवेय दारियल्लि तंदु बिट्टिदे। सकल सृष्टियल्लू मूवरे पुरुषरु। ओब्बने पुरुषोत्तम ई मूरू रूप धरिसिदाने। मूवरु सेरि ओब्बने पुरुष। केवल अद्वैत। परमोच्च शिखरदमेले इल्लि नम्मन्नु तंदु बिट्टिदे गीते। कर्म, भक्ति, ज्ञान एकरूप। जीव, देव, सृष्टि ओंदे रूप। कर्म, ज्ञान, भक्तिगळल्लि विरोधवे इल्ल। ज्ञानदेवरु अमृतानुभवक्के महाराष्ट्रक्के रुचिसुव दृष्टांत कोट्टिदारे ओंदे कल्लिनल्लि कोरेद कल्लिन गुडि। आ कल्लिनल्लिये केत्तिद देव, आ देवरिदिरु कल्लिन भक्त ओब्ब। अवन बळि कल्लिनल्लि माडिद हू। इदेल्लवू ओंदे कल्लिनिंद माडिदुदु। अखंडवाद ओंदे कल्लु अेल्ल रूपगळन्नू तळेदु नटिसुत्तदे। भक्तिय व्यवहारदल्ल हीगेके आगबारदु? ब्रह्मसृष्टि, ई पूजाद्रव्य प्रत्येकवागिद्दू आत्मरूपियेके आगबारदु? स्वामि – सेवक संबंधविद्दू ऐक्यवेके आगबारदु? मूवरु पुरुषरू ओंदे। ज्ञान, कर्म, भक्ति मूरन्नू सेरिसि ओंदु विशाल प्रवाह माडबेकु। हीगिदे आ परिपूर्ण पुरुषोत्तम योग।

सेवक, स्वामि, सेवाद्रव्यगळु एकरूपवागिद्दू भक्तिप्रेमद आटवाडबेकु।

हीगे पुरुषोत्तमयोग यार हृदयदल्लि मूडुत्तदेयो अवनु निजवागि भक्ति तोरवल्ल।

"स सर्वविद्भजति मा सर्वभावेन भारत"

इंथ पुरुष ज्ञानियागिद्दू संपूर्ण भक्तनागिरुत्ताने। ऎल्लि ज्ञानविदेयो अल्लि प्रेमवू इदे। परमेश्वर ज्ञान, परमेश्वर प्रेम बेरे बेरे विषयगळल्ल। हागलक्कायि कहि। कहियेनिसिदरे अदरल्लि प्रीति हुट्टदु। ऒंदु अपवादविद्दरे इद्दीतु। कहि ऎनिसिदरे बेसर बरुत्तदे। अदे कल्लु-सक्करे ऎनिसितो करगलु तॊडगुत्तदे। कूडले प्रीतिय झरि हुट्टुत्तदे। परमेश्वरन बग्गे ज्ञानवागुवुदू, प्रीति हुट्टुवुदू ऒंदे। परमेश्वरन रूपद माधुर्यक्के सक्करेयंथ कसद होलिके कॊडुवुदे ? आ मधुर परमेश्वरन ज्ञानवाद मरुगळिगॆये प्रेमभाव हुट्टुत्तदे। ज्ञानवागुवुदु, प्रेम मूडुवुदु ऎरडू प्रत्येक क्रियेगळल्ल। अद्वैतदल्लि भक्तियिदेयो इल्लवो ऎंब वादवन्नेब्बिसबेड। भक्ति ज्ञानगळु ऒंदे वस्तुविगॆ ऎरडु हॆसरु। ज्ञानदेवरु हेळिदारे :

"अदे भक्ति, अदे ज्ञान। विठलनोब्बने काण॥"

भक्ति हागू ज्ञान, ऒंदक्के ऎरडु हॆसरु।

परम भक्ति जीवनदल्लि ऒडमूडिदरे माडिद कर्म भक्ति ज्ञान-गळिंद बेरेयागिरदु। कर्म भक्ति ज्ञानगळु सेरि ऒंदे रमणीय रूप-दॊळगिनिंद अद्भुत प्रेममय, ज्ञानमय सेवे सहजवागि निर्माणवागुत्तदे। ननगे तायिय मेले प्रीति। ई प्रीति कर्मदल्लि प्रकटवागबेकु। प्रेम

सदा दुडियुत्तिरुत्तदे, सेवेगळल्लि होरबीळुत्तदे, सेवेये प्रेमद बाह्यरूप। अनत सेवा कर्मदल्लि नाव्यवाड्डुत्तदे प्रेम। प्रेमविद्दल्लि ज्ञान बरुत्तदे। नानु यार सेवे माडबेको, अवरिगे यावुदु इष्टवो ननगे तिळियबेडवे? इल्लवादरे सेवे दुस्सेवेयादीतु। प्रेमक्के सेव्य वस्तुविन ज्ञान अगत्य। प्रेमद प्रभाव कार्यद्वारा प्रसारवागलु ज्ञान अवश्यक। आदरे अदर तळादि प्रेम। अदे इल्लदिद्दरे ज्ञान निष्प्रयोजक। प्रेमदिंद माडिद कर्मवे बेरे, सामान्य कर्म बेरे। होलदिंद बळलिबद मगनन्नु नोडि मुदि तायि प्रीतियिंद 'बळलि बदेया मगु' अंदरे, आ चिक्क क्रियेयल्लि ऎष्टु सामर्थ्यविदेयो! बाळिनल्लि सर्व कर्मदल्लू ज्ञान भक्तिगळन्नु तुंबु। अदन्ने पुरुषोत्तमयोग ऎन्नुवुदु।

87. सर्व वेदसारवू नन्न कैयल्ले

इदे सकल वेदद सार। वेदगळु अनंत। अनंत वेदगळ सार-संग्रह ई पुरुषोत्तमयोग। वेद ऎल्लिदे? वेदगळदु दोड्डदोडु स्वारस्य-विदे। वेदसार ऎल्लि? ई अध्यायद आरंभदल्लिये 'छंदांसि पर्णानि' ऎंदु हेळिदे। अय्या, आ वेद ई गिडद ऎले ऎलेयल्लियू तुंबिदे। आ संहितेयल्लि, निन्न चीलदल्लि अडगिल्ल वेद। ई विश्वदल्लि ऎल्लेल्लू हरडिदे। इंग्लिष् कवि षेक्स्पियर् हेळिदाने–'हरिव होळेयल्लि सद्ग्रंथ, कल्लिनल्लि प्रवचन केळिसुत्तदे'। वेदगळु संस्कृतदल्लिल्ल, संहितेयल्लिल्ल, सृष्टियल्लिदे। सेवे माडिदरे अदु कंडीतु। 'प्रभाते कर दर्शनं' बेळगाग ऎद्दोडनेये अंगै नोडु। सकलवू अंगैयल्लिदे। सेवे माडु ऎंदु आ वेद हेळुत्तदे। निन्न कै श्रमिसित्तो इल्लवो? इंदु

श्रमिसलु सिद्धवे, इल्लवे ? कै दुडिदु जड्डु विद्दिदेयो इल्लवो ? सेवे माडि कै सवेदरे ब्रह्मलिखित तेरेयुत्तदे। हीगिदे 'प्रभाते कर दर्शनं'द अर्थ।

वेद ऎल्लिदे ? निन्न हत्तिरवे इदेयल्ल। शंकराचार्यरिगे ऎंटु वर्षक्के वेद प्राप्तवायितते। पाप, शंकराचार्यरिगे मंदबुद्धि। अवरिगे ऎंटु वर्ष हिडियितु। आदरे निनगे जन्मत. बंदिदे ई वेद। ऎंटु वर्षवेके बेकु ? नाने जीवंत वेद। इल्लियवरेगिन समस्त परंपरेयु नन्नोळगे इदे। आ परपरेय फलवे नानु। आ वेदबीजद फलवे नानु। नन्न फलदल्लि अनंत वेदद बीजवन्नु संग्रहिसिदेने। नन्न होट्टेयल्लि वेद नलवत्तु – ऐवत्तु पट्टु दोड्डदागिदे। वेदद सार नम्म कैयल्ले इदे। सेवे, प्रेम, ज्ञानगळ मेले जीवनवन्नु रचिसबेकु। आग वेद कैयल्ले इद्दंते। नानु अर्थ माडिदुदे वेद। वेद होरगिल्ल। 'वेदद अर्थ नमगे गोत्तु' ऎंदु सेवामूर्तिगळाद साधुगळु हेळुत्तारे। सकल वेदवू नन्नन्ने अरितिदे, नाने सकल वेदद सार, पुरुषोत्तम' ऎंदु भगवंत हेळिदाने। अदे वेदात सार, अदे पुरुषोत्तमयोग। इदन्नु बाळिनल्लि तरलु साध्य-वादरे ऒप्पु आनंदवादीतु! आग पुरुष माडिदुदरल्लेल्ल वेदवे प्रकट-वादीतु : हीगे सूचिसिदे गीते। ई अध्याय गीतेय सार। गीतेय संदेश इल्लि पूर्णवागि प्रकटवागिदे। इदन्नु बाळिनल्लि तरलु ऎल्लरू हगल इरुळू दुडियबेकु। मत्तेनिदे ?

(29–5–32)

अध्याय 16.

88. पुरुषोत्तमयोगद पूर्वप्रभे : दैवी संपत्ति

गीतेय मोदल ऐदु अध्यायगळल्लि जीवनद योचनेय, नम्म जन्म हेगे सफलवादीतेवुदर विचार इदे। अनंतर आरने अध्यायदिंद हन्नोंदरवरेगे भक्तिदर्शन। हन्नेरडरल्लि सगुण-निर्गुण भक्तिगळन्नु तुलनेमाडि, भक्तन लक्षणगळन्नु स्थूलवागि हेळिदे। हन्नेरडर कोनेय-वरेगे कर्म, भक्ति अेरडू तत्वगळ परिशीलने। मूरनेयदाद ज्ञानद विभाग उळियितु। अदक्के हदिमूरु, हदिनाल्कु, हदिनैदनेय अध्याय-गळु। देहदिंद आत्मवन्नु बेरेगोळिसुवुदु, अदक्कागि मूरु गुणगळन्नु गेल्लुवुदु, कडेगे सर्वत्र प्रभुवन्ने काणुवुदु. हदिनैदने अध्यायदल्लि जीवनशास्त्र सपूर्णवायितु। पुरुषोत्तमयोगदल्लि जीवनद संपूर्णते लभिसु-त्तदे। अदराचे एनू उळियदु।

कर्म, ज्ञान भक्तिगळ प्रत्येकते ननगे सहिसदु। केलवरु साधकरिगे केवल कर्मदल्लि निष्ठे, केलवरु भक्तियन्ने स्वतंत्र मार्गमाडि अदरमेले निल्लुत्तारे, केलवरिगे ज्ञानदल्लि निष्ठे। जीवनवेंदरे केवल कर्म, केवल भक्ति, केवल ज्ञान अेंब 'केवलवाद' वन्नु ओप्पलु ननगिष्टविल्ल। अदक्के प्रतियागि कर्म, भक्ति, ज्ञानगळ समुच्चय वाद-वन्नू नानोप्पलारे। स्वल्प कर्म, स्वल्प भक्ति, स्वल्प ज्ञान अेंब 'उपयुक्ततावाद' वू ननगे रुचिसदु। मोदलु कर्म, आमेले भक्ति, कडेगे ज्ञान अेंब 'क्रमवाद' वू ननगे ओप्पिगेयिल्ल। ई मूरन्नू रसायन माडुव 'सामंजस्यवाद' वू ननगे सरियिल्ल। कर्मवे भक्ति,

अदे ज्ञान ऎंबुदु नन्न अनुभव। मिठायियल्लि अदर सवि, अदर आकार, अदर तूक बेरे बेरे इल्ल। मिठायियन्नु बायोळगे हाकि-कॊंडाग अदर आकार तिंदे, तूक अरगिसिकॊंडे, सवि चप्परिसिदे। मूरू ऒंदे कडे इवे। मिठायिय प्रत्येक कण कणदल्लू आकार, तूक, सवि इवे। ई तुंडिनल्लि आकार, अदरल्लि तूक, इन्नॊंदरल्लि सवि — हीगिल्ल। हागे जीवनदल्लि प्रतियॊंदु कृतियल्लू परमार्थ तुंबि तुळुकु-त्तिरबेकु। प्रतियॊंदु कृतियू सेवामय, प्रेममय, ज्ञानमय आगिरबेकु। जीवनदल्लि सर्वांगदल्लू कर्म, भक्ति, ज्ञानगळु तुंबिरबेकु। इदन्ने पुरुषोत्तमयोगवॆन्नुत्तारे।

इडी बाळन्नु परमार्थमयवागि माडु ऎंबुदु हेळलिक्के सुलभ। आदरे ई उच्चारदल्लि एनु भावविदॆयो विचारिसिदरे, निर्मलसेवे सल्लिसलु अंतःकरणदॊळगे शुद्ध ज्ञान, भक्तिगळ ऒलवु इरबेकु। अंते कर्म, भक्ति, ज्ञानगळु ऒंदे। ई परमदॆशॆगे पुरुषोत्तमयोगवॆन्नुत्तारे। जीवनद अंतिम सीमे इल्लि सिक्कीतु।

हदिनारने अध्यायदल्लि एनु हेळिदे? सूर्योदयवागबेकादरे मॊट्टमॊदलु हेगे प्रभे हरडबेको हागे जीवनदल्लि कर्म, ज्ञान, भक्तिगळ पूर्णतेय पुरुषोत्तमयोगद उदयवागलिक्के मॊदलु सद्गुणगळ प्रभे हॊरगडे सूसबेकु, हरडबेकु। परिपूर्ण जीवनद ई आगामि प्रभेयन्नु हदिनारने अध्यायदल्लि वर्णिसिदारे। याव कत्तलेयॊडने हॊराडि, यावुदन्नु करगिसि, ई प्रभे प्रकटवागुत्तदॆयो आ कत्तलन्नु इल्लि वर्णिसिदे। यावुदादरॊंदु वस्तुविगे प्रमाणवेंदु, साक्ष्यवेंदु, ऎष्टो प्रत्यक्ष वस्तु-

दर्शनवन्नु बेडुत्तेवे। सेवे, ज्ञान, भक्तिगळु बाळिनल्लि बंदिवेयेंदरे अदन्नु हेगे तिळिदुकोळ्ळबेकु[2] होलदल्लि कष्टपट्टु दुडिदु कडेगे कालिन राशियन्नु पडेयुत्तेवे। अदन्नु अळेदु तरुत्तेवे। अदे रीति नावु माडुव साधनेयिंद नमगे बंद अनुभवबेनु, एष्टुमट्टिगे सद्वृत्ति अरळि बंतु, एष्टु सद्गुण मैगूडितु, बाळु निजवागि एष्टु सेवामय-वागिदे, इदन्नेल्ल परिशीलिसलु ई अध्याय हेळुत्तिदे। जीवनद ई वर्धन -- कलेयन्नु गीते दैवीसंपत्ति एन्नुत्तदे। इदक्के विरुद्ध वृत्तियन्नु आसुरी एन्नुत्तदे। हदिनारने अध्यायदल्लि दैवी -- आसुरी संपत्तिगळ जगळवन्नु तोरिसिदे।

89. अहिंसे -- हिंसेगळ सेने

मोदलने अध्यायदल्लि कौरव-पाडवरन्नु इदिरु-बदिरु निल्लिसि-दंते सद्गुणद दैवीसेने, दुर्गुणद आसुरी सेनेगळन्नु इल्लि इदिरुबदिरु निल्लिसिदे। मानवन मनस्सिनल्लि नडेव सत् -- असत् प्रवृत्तिगळ जगळवन्नु रूपकवागि हेणेव पद्धति अति प्राचीनकालदिंदलू इदे। वेदगळल्लि इन्द्र-वृत्र; पुराणगळल्लि देव-दानव, राम-रावण, पार्सी धर्मग्रंथगळल्लि अहुरमज्द् - अहरिमान्; क्रिस्तान धर्मदल्लि प्रभु-सैतान्; इस्लामिनल्लि परमेश्वर-इब्लीस्, ईथ विरोध सर्व धर्मगळल्लू इदे। काव्यगळल्लि स्थूलविषयगळ वर्णनेयन्नु सूक्ष्म रूपगळल्लि माडु-त्तारे। धर्मग्रंथगळल्लि सूक्ष्म मनोभाववन्नु एद्दु काणुवंते स्थूलरूप कोट्टु वर्णिसुत्तारे। काव्यदल्लि स्थूलवन्नु सूक्ष्मवागि वर्णिसिदरे, इल्लि सूक्ष्म स्थूलवागुत्तदे। इदरिंद गीतारंभदल्लि बंद युद्धद वर्णने केवल

काल्पनिकवेंदु सूचनेयल्ल। अदु ऐतिहासिक संगतिये इद्दीतु। आदरे कवि आ संगतियन्नु तन्न इष्टहेतुविगागि बळसुत्ताने। कर्तव्यमोह अड्डुवंदरे हेगे नडेयबेकु ऎंबुदक्के युद्धद रूपकवन्नु कोट्टिदे। ई हदिनारने अध्यायदल्लि ओळितु-केडकुगळ जगळवन्नु तोरिसिदे। गीते-यल्लि ई युद्धद रूपकविदे।

कुरुक्षेत्र होरगू इदे, नम्म मनस्सिनोळगू इदे। सूक्ष्म रीतियल्लि नोडिदरे मनस्सिनोळगिरुव कलहवे होरगडे रूपगोंडु काणुत्तदे। होरगे इदिरु निंत शत्रु नन्न मनस्सिनोळगिन शत्रुवे साकारवागि बंदंते। कन्नडियल्लि नन्न सौंदर्य विकारगळु काणुवंते नन्न मनस्सिन ओळितु-केडुकु विचारगळु शत्रु मित्रर रूपदल्लि काणबरुत्तदे। ऎच्चरदल्लि कंडुदन्ने कनसिनल्लि काणुवंते मनस्सिनल्लिद्दुदे होरगे काणबरुत्तदे। ओळगिन युद्ध, होरगिन युद्ध, इवुगळल्लि व्यत्यासविल्ल। निजवागि युद्ध ओळगे इदे।

अंतःकरणदल्लि इत्त सद्गुण, अत्त दुर्गुण निंतिवे। अवु तम्म एर्पाडन्नु सरियागि माडिकोंडिवे। दंडिगोब्ब दळवायि इद्दंते सद्गुण-गळिगू ओब्ब दळवायि इद्दाने। अवन हेसरु ‘अभय’। ई अध्याय-दल्लि अभयक्के मोदलने स्थान। ई मातु सहज सुलभवागि आदुदल्ल। हेतु पुरस्सरवागि अभय शब्दवन्नु मोदलु जोडिसिदे। अभयविल्लदे याव गुणवू बेळेयलारदु। सत्यसंधतेयिल्लदे सद्गुणक्के बेलेयिल्ल। अदक्के निर्भयते बेकु। भयभीत वातावरणदल्लि सद्गुण वृद्धियागदु, सद्गुणवू दुर्गुणवादीतु, सत्प्रवृत्तियू दौर्बल्यवादीतु। निर्भयते सकल सद्गुणगळ मुख्य नायक। आदरे दंडिगे अगाडि पिछाडि ऎरडू मुख्य। मुंदिनिंद

नेरागि मुत्तवहुदु। हिंदिनिंद कळ्ळतनदलि मुत्तवहुदु। सद्गुणद मुंचूणियल्लि निर्भयते इद्दरे, हिंभागदल्लि नम्रते इदे। हीगिदे ई सुंदर रचने। ओदरल्ले इप्पत्तारु गुण। इदरल्लि इप्पत्तैदु गुण शरीरदल्लि संग्रहितवागिवे। मनुष्यनिगे अवुगळ अहंकार कवियितो हिंदिनिंद मुत्तिदंतागि संग्रहिसिदुदेल्लवू नष्टवागुत्तदे। अंते हिंभागदल्लि नम्रते सद्गुणवन्नु इरिसिद्दु। नम्रते यिल्लदिद्दरे गेलव्रू सोलादीतु। मुंदे निर्भयते, हिंदे नम्रते – हीगे ऎल्ला सद्गुणगळन्नु विकासगॊळिसबहुदु। इवेरडर नडुवे इरुव इप्पत्तुनाल्कु गुणगळू अहिंसेगे पर्याय गुणगळु ऎन्नबहुदु। भूतदये, मार्दव, क्षमे, शांति, अक्रोध, अहिंसे, अद्रोह ऎल्लवू अहिंसेगे बेरे बेरे पर्याय पदगळु। अहिंसे, सत्य, इवेरडरल्लि ऎल्ला सद्गुणगळू बरुत्तवे। ऎल्ल सद्गुणगळन्नू संक्षेपिसिदरे कडेगे उळियुवुदु अहिंसे, सत्य ऎरडे! अवुगळ गर्भदल्लि उळिदेल्ल सद्गुण-गळू इवे। आदरे निर्भयते, नम्रतेगळ माते बेरे। निर्भयतेयिंद प्रगति, नम्रतेयिंद संरक्षणे। सत्य-अहिंसेगळ बंडवाळ कट्टिकॊंडु निर्भयतेयिंद मुन्नुरियबेकु। बाळु विशालवागिदे। अदरल्लि अनिरुद्ध सचार माड-बेकु। कालु जारदिरलिक्के नम्रतेयिद्दरे आयितु। अल्लिंद मुंदे सागु, निर्भयदिंद सत्य, अहिंसेगळन्नु प्रयोगमाडुत्त। सत्य-अहिंसेगळ विकास, निर्भयते, नम्रतेगळिंद आगुत्तदे।

ऒट्टट्टु सद्गुणद दंडु, इन्नॊट्टट्टु दुर्गुणद दंडु। दंभ, अज्ञानादि दुर्गुणगळ बग्गे हेच्चु हेळबेकागिल्ल। इदु नमगे तिळिदुदे। दंभ मैगूडिदहागे इदे। बाळेल्लवू दंभदमेले निंतिदे। अज्ञानवन्नु कुरितु

हेळुवुदादरे, इदोंदु सोगसाद नेपवागिदे। पदे पदे अदन्नु मंडिसुत्तेवे। अदोंदु तप्पे अल्लवेंदु तिळियुत्तेवे। आदरे भगवंत हेळुत्ताने – 'अज्ञान दोड्ड पाप'। साक्रटीस् तद्विरुद्धवागि हेळिद। न्यायालयदल्लि 'नीवु पापवेंदु तिळियुवुदु अज्ञान। अज्ञान क्षम्य। अज्ञानविल्लदे पाप हेगे आदीतु? अज्ञानक्के हेगे शिक्षे कोडुत्तीरि?' ऎंद। आदरे अज्ञानवे पाप ऎन्नुत्ताने भगवंत। कायदेय अज्ञान यारन्नू संरक्षिसलारदु ऎंदु कायदे हेळुत्तदे। ईश्वरन नियमगळ अज्ञानवे दोड्ड अपराध। भगवंतन मातु, साक्रटीसन मातु, ऎरडर भावार्थवू ऒंदे। स्वंत अज्ञानद कडे हेगे नोडबेकु ऎंदु भगवंत हेळुत्ताने। परर पापवन्नु हेगे काणबेकु ऎंदु साक्रटीस् हेळुत्ताने। परर पापवन्नु क्षमिसबेकु। स्वंत अज्ञानवन्नु क्षमिसिदरू अदु पाप। अज्ञान लेशवू इरकूडदु।

90. अहिंसेय विकासद नाल्कु मजलु

हीगे ऒंदु कडे दैवी संपत्ति, इन्नॊंदु कडे आसुरी संपत्ति, ऎरडु दंडु निंतिवे। इदरल्लि आसुरी संपत्तियन्नु तप्पिसबेकु, दैवी संपत्तियन्नु अप्पबेकु। सत्य, अहिंसे इत्यादि दैवी गुणगळ विकास अनादिकालदिंदलू आगुत्तिदे। नड्डुवे आगिहोद कालदल्लि बेकादष्टु विकासवागिदे। आदरू इन्नू विकासवागबेकु। विकासद मितियन्नु मुट्टिल्ल। सामाजिक शरीरविरुववरेगे विकासक्के अनंतावकाशवुंटु। वैयक्तिक विकासवादरू सामाजिक, राष्ट्रीय जागतिक विकास उळिदे इरुत्तदे। व्यक्ति तन्न विकासक्के गोब्बर चेल्लि, आमेले समाज राष्ट्रगळल्लि लक्षातर व्यक्तिगळ विकासवन्नु मोदलिडिसबेकु। उदाहरणेगे-

मनुष्य आदिर्यिदल्ल विकासवन्नु साधिसिदरू इवोत्तू अवन विकास नडेदे इदे ।

अहिंसेय विकास हेगे हेगे आयितेवुदन्नु नोडुवंतिदे । अदरिंद उत्तरोत्तर पारमार्थिक जीवन विकास हेगे आगुत्तदेयो अदक्के इन्नू हेगे अवकाशविदेयो काणबरुत्तदे । हिंसकन दाळियन्नु हेगे तडेयबेकेंबुदन्नु अहिसक योचिसतोडगिद । पूर्वदल्लि समाजद रक्षणेगागि क्षत्रिय वर्गवन्नु निर्मिसितु । आदरे अवरे मुंदे समाज भक्षणे माडतोडगिदरु । ई उन्मत्त क्षत्रियरिंद हेगे पारागबेकेंबुदन्नु अहिंसक ब्राह्मण योचिसतोडगिद । स्वयं अहिंसकनादरू परशुराम हिंसेयन्नु अवलंबिसि क्षत्रियरन्नु तोडेदुहाकिद । क्षत्रियरु हिंसेयन्नु बिडलि अेंदु ताने हिंसकनाद । इदु अहिंसेय प्रयोग । आदरे इदु सफलवागलिल्ल । इप्पत्तोंदुसल क्षत्रियरन्नु सहार माडिदरू अवरु बदुकिकोंडरु । ई प्रयोगद मूलदल्ले तप्पिद्दुदे कारण । क्षत्रियर क्षात्रवन्नु तग्गिसलु नाने हेच्चु क्षात्रवन्नु अवलंबिसिदरे क्षत्रिय वर्ण हेगे नष्टवादीतु[2] नाने हिंसक क्षत्रियनादे । आ बीज स्थिरवे आयितु । बीजवन्नु कापाडि गिडवन्नु कडिदरे मत्ते मत्ते अदु चिगिते चिगियुत्तदे । परशुराम दोड्ड मनुष्य । आदरे प्रयोग बहळ विचित्रवायितु । ताने क्षत्रियनागि लोकवन्नु निःक्षत्रिय माडबयसिद । निजवागि प्रयोग तन्निंदले मोदलागबेकित्तु । मोट्ट मोदलु तन्न तलयन्ने कडियबेकागित्तु । परशुरामन दोषवन्नु तोरलुदु अवनिगिंत ना जाण अेंदल्ल । नानु अेळक । आदरे अवन हेगलमेले ना निंतिदेने । अंते

ननगे हेच्चु काणिसुत्तदे। परशुरामन प्रयोगद आधारवे तप्पु। हिंसा-मयवागि हिंसेयन्नु दूरमाडुवुदु साध्यविल्ल। अदरिंद हिंसकर संख्ये हेच्चीतु। आदरे आग ई मातु गमनक्के बरलिल्ल। आगिन शूररु, अहिंसाप्रियजनरु तम तमगे होळेदंते प्रयोग माडिदरु। परशुराम आगिन कालद हिरिय अहिंसावादि। हिंसे माडबेकेंदु अवनु हिंसे माडलिल्ल। अहिंसेय स्थापनेगागि नडेयितु आ हिंसे।

आ प्रयोग तप्पितु। मुंदे श्रीरामन काल। आ कालदल्लि मत्ते ब्राह्मणरु विचार माडिदरु। अवरु हिंसेयन्नु बिट्टरु। एने आगलि तावु स्वत हिंसे माडकूडदु एंदु निश्चयिसिदरु। आदरे राक्षसर दाळियन्नु हिम्मेट्टिसुवुदु हेगे? अवरिगे हीगे अनिसितु: क्षत्रियरु हेगू हिंसे माडुववरे। अवर कैयिंद राक्षसर संहार माडिसिदरायितु। मुळ्ळिनिंद मुळ्ळन्नु कित्तु हाकिदरायितु। तावु निर्लिप्तरागिरबेकु। विश्वामित्र तन्न यागरक्षणेगागि रामलक्ष्मणरन्नु करेदोय्दु अवरिंद राक्षस संहार माडिसिद। 'स्वसंरक्षणे माडिकोळ्ळलारद अहिंसेगे काले इल्ल। अंथ हेळव अहिंसे हेगे उळिदीतु?' एंदु नावु योचिसु-त्तेवे ई कालदल्लि। आदरे वशिष्ठ विश्वामित्ररिगे क्षत्रियर बलदिंद तम्म रक्षणे माडिकोळ्ळुवुदु कीळागि काणलिल्ल। आदरे रामनंथ क्षत्रिय काणबरदिद्दरे? 'नानु सत्तरू सरि, हिंसे माडलोल्ले' एन्नुत्तिद्द विश्वामित्र। तावु हिंसे माडि, हिंसेयन्नु नाशमाडुव प्रयोगवागले आगिहोगित्तु। ईग तम्म अहिंसेयन्नंतू बिडुवहागिल्ल एंबुदु निर्धर-वागित्तु। क्षत्रिय सिगदिद्दरे अहिंसकरु सायुत्तिद्दरु। अदु आगिन

मजलु। विश्वामित्रन बळि निंतु राम केळिद : 'इदेनु ई राशि ?' 'इदु ब्राह्मणर ऎलुबिन राशि। तम्म मेले बिद्द हिंसक राक्षसरन्नु अहिंसक ब्राह्मणरु निरोधिसलिल्ल। अवरु सत्तरु। अवर ऎलुबिन राशि इदु।' ब्राह्मणर ई अहिंसेयल्लि त्यागवित्तु। आदरे इतररिंद संरक्षितरागुव वयकेयू इत्तु। ई दौर्बल्यदिंद अहिंसे पूर्णवागदु।

साधुसंतरु मुंदे मूरने प्रयोग नडेसिदरु। मत्तोब्बर रक्षणेयन्नु बेडुवंतिल्ल। नन्न अहिंसेये नन्नन्नु काय्दीतु। हागे आदरेने अदु निजवाद रक्षणे ऎंदु अवरु निश्चयिसिदरु। अवर ई प्रयोग व्यक्ति-निष्ठवादुदु। अदन्नु अवरु पूर्णतेगे ऒय्दु मुट्टिसिदरु। आदरे अदरल्लि आ व्यक्तिगतते उळियितु। हिंसकजनरु समाजदमेले बंदु विद्याग जनरु साधुगळ बळि बंदु 'नावेनु माडबेकु ?' ऎंदु केळिदरे, अदक्के निश्चितवाद उत्तर कोडलु अवरिगे कष्टवागुत्तित्तो एनो। वैयक्तिक जीवनदल्लि परिपूर्ण अहिंसेयन्नु उपयोगिसुव साधुवू समाजक्के सलहे कोडुवाग 'नावु दुर्बलरु, एनु माडलादीतु' ऎन्नुत्तिद्दनो एनो। साधुगळल्लि दोषारोपणे बालसाहसवे। नानु अवर हेगलमेले निंतिदेने ऎंदु कण्णिगे कंडुदन्नु हेळुत्तेने। अवरु नन्नन्नु क्षमिसबेकु। अवरु नन्नन्नु क्षमिसुत्तारे। अवर क्षमागुण अपार। अहिंसेयन्नु सामुदायिक प्रयोगवागि माडलु अवरिगे होळेयलिल्लवेंदल्ल। आदरे अवरिगे परि-स्थिति अनुकूलवेनिसलिल्ल। तम्म स्वंतक्के बेरे बेरे प्रयोग माडिदरु। हागे बिडि बिडियागि माडिद प्रयोगगळिंदले शास्त्र हुट्टुवुदु। सम्मिलित अनुभवदिंद शास्त्र।

साधुसंतर तरुवाय नाल्कनेय प्रयोगवन्नु इंदु नावु माडु-त्तिदेवे। समस्त समाजवू ओट्टागि अहिंसक साधनगळिंद हिंसेगे प्रतीकार माडुव प्रयोगवन्नु नावु इंदु नडेसिदेवे। हीगे नाल्कु प्रयोग-वन्नु नावु कंडिदेवे। बिडि बिडि प्रयोगगळल्लि अपूर्णते इद्दे इरुत्तदे। विकास क्रमदल्लि ई मातु अपरिहार्य। आदरे आया कालक्के आया प्रयोग पूर्णवेन्नबेकु। मुंदे हत्तु साविर वर्षवादमेले ईगिन नम्म ई अहिंसक युद्धदल्लि बेकादष्टु हिंसेयिद्दुदु कंडुबंदीतु। शुद्ध अहिंसेय प्रयोग इन्नू नडेयुत्तले इद्दीतु। ज्ञान, कर्म, भक्तिमात्रवे अल्लदे सकल सद्गुणगळ विकासवू आगुत्तलिदे। पूर्णवादुदु ओंदु वस्तु : परमात्म। भगवद्गीतेयल्लि पुरुषोत्तमयोग पूर्णवागि इदे। आदरे वैयक्तिक सामु-दायिक जीवनगळल्लि अदर पूर्ण विकासवागबेकागिदे। वचनगळ विकासवू आगुत्तदे। ऋषिगळु मंत्रद्रष्टाररु, अवरे कर्तरल्ल। अवरिगे मंत्रद अर्थ कंडितु। आदरे अदे अर्थ ऎन्नुवुदे? अवरिगे ओंदु दर्शनवायितु। मुंदे नमगे अदर विकासित अर्थ काणुव संभवविदे। अवरिगिंत नमगे हेच्चागि कंडरे अदरल्लि विशेषवेनू इल्ल। अवर आधार-दिंदले नावु मुंदे हेज्जेयिडुवुदु। अहिंसेय विकासद बग्गे इल्लि हेळु-त्तिदेने। सकल सद्गुणगळ सरासरि सारवन्नु हिंडिदरे बरुवुदु अहिंसेये। नावु इवोत्तु अदे युद्धदल्लि सिक्किदेवे। अंतेये, ई तत्व हेगे विकासवागुत्तिदेयो नोडिदेवु।

91. अहिंसेय ओंदु महा प्रयोग : मांसाहार परित्याग

हिंसकरु बंदु मेले बिद्दरे अहिंसकरु हेगे आत्मरक्षणे माडिकोळ्ळ-बेकु ऎंबुदन्नु, अहिंसेय ओंदु पक्षवन्नु, नावु नोडिदेवु। मनुष्य-

मनुष्यर जगळदल्लि अहिंसे हेगे अरळुत्तिदेयो नोडिदुदायितु। आदरे मानव-पशु युद्धवू उंटु। मनुष्यरु इन्नू तम्म तम्मोळगिन अंतःकलह-वन्ने निल्लिसिल्ल। अवर गर्भदल्लि पशुविन्नू हागेये उळिदिदे। तम्म तम्म जगळवन्नु निल्लिसलु बारदुदु हागिरलि; मनुष्यरिगे तम्मोळगिन हीन दीन पशुसमानरन्नु नुंगदे बदुकलू सह बंदिल्ल। साविरारु वर्ष बदुकि बाळिद्दरू हेगे बदुकि बाळबेकेंबुदन्ने इदुवरेगे विचार माडिल्ल मनुष्य। मनुष्यनिगे बदुकलु बरुवुदिल्ल। आदरे ई बगेयल्लू विकास-वागुत्त बंदिदे। ऒंदानोंदु कालदल्लि मनुष्यन समस्त निर्वाहवू मृगा-धारदिंदले आगुत्तित्तु। अदु जाणरिगे रुचिसलिल्ल। मासवन्नु तिन्नलेबेकागिद्दरे यज्ञदल्लि हतवाद पशुविन मांस तिन्नु ऎंदु निर्बंधि-सिदरु। हिंसेयन्नु केळगे कूडिसुव उद्देश अदु। ऎष्टो जन मासवन्नु बिट्टुबिट्टरु। संपूर्णवागि बिडदवरु यज्ञदल्लि अदन्नु परमेश्वरनिगे अर्पिसि, स्वल्प तपस्सुमाडि,. आमेले तिन्नबहुदॆंदु अप्पणे दोरेयितु। यज्ञदल्लि मात्र मास तिन्नबहुदु ऎंदु हिंसेयन्नु नेलक्के तळ्ळुव युक्ति हूडिदरु। आदरे बरबरुत्त यज्ञ सर्वसामान्यवायितु। यारु बेकादरू बंदु निंतु यज्ञ माडुवुदु, मास तिन्नुवुदु हीगायितु। मुंदे भगवान् बुद्धदेवन अवतार। 'तिन्नबेकादरे मांस तिन्नि, देवर हेसरु हेळि तिन्नबेडि' ऎंद बुद्ध। ऎरडू मातिगू ऒंदे हेतु: हिंसेयन्नु केळगे तळ्ळुवुदु। ऎल्लिंदले आगलि, गाडिसंयमद हादियल्लि बरबेकु। यज्ञ-याग माडु अथवा माडबेड। ऎरडरल्लू ऒंदे पाठ. मासाशन त्याग। हीगे निधानवागि नावु मांसवन्नु बिट्टेवु।

जगत्तिन इतिहासदल्लि भारतवर्षदल्लि मात्रवे ई महत्प्रयोग

नडेदुदु। कोट्यन्तर जन मासवन्नु बिट्टरु। इवोत्तु नावु मास तिन्नु-वुदिल्ल। अदरल्लि नम्मदेनू हिरितनविल्ल। नम्म पूर्वजर पुण्य। नमगे अदु मैयोग्गिदे। हिंदिन ऋषिगळु साधुगळु मांस तिन्नुत्तिद्दरु ऎंदु केळिदाग नमगे अच्चरियागुत्तदे। ऋषिगळु मांस तिन्नुवुदे! उंटे? मास तिन्नुत्तिद्दरू संयमदिंद अवरदन्नु त्यागमाडिदरु। अवरिगे अदर श्रेयस्सु इदे। नमगे आ कष्टविल्ल। अवर पुण्यफल नमगे सिक्कितु। भवभूति कविय उत्तरराम चरित्रेयल्लि ओंदु संदर्भविदे। वाल्मीकिगळ आश्रमक्के वशिष्ठरु बंदाग अवर स्वागतक्कागि ऎळगरुवोंदन्नु कोंदरु। ओब्ब चिक्क हुडुग, दोड्ड हुडुग ओब्बनोडने 'इवोत्तु आश्रमक्के आ गड्डद हुलि बंदित्तल्ल। अदु नम्म ऎळगरुवन्नु तिंदु हाकितल्लवे' ऎंद। दोड्ड हुडुग 'अवरु वसिष्ठऋषिगळु, हागे अन्नबारदु' ऎंद। हिंदिनवरु मांस तिन्नुत्तिद्दरु। ईगिनवरु नावु तिन्नुवुदिल्ल। आदुदरिंद अवरिगिंत नावु श्रेष्ठरेंदल्ल। अवर अनुभवद लाभ नमगे सिक्कितु। अवर अनुभववन्नु नावु इन्नू विकासगोळिसबेकु। संपूर्ण-वागि हालन्नु बिडुव प्रयोगवन्नु नावु माडबेकु। मनुष्यरु इतर प्राणिगळ हालन्नु कुडियुवुदु गौणवे सरि। इन्नु हत्तु साविर वर्षक्के बरुव जन नम्म बगे 'हालु कुडियबारदेंब व्रत तोट्टरे? हालन्नु हेगादरू कुडियुत्तिद्दरो! इष्टु कीळे!' ऎंदारु। साराश इष्टु निर्भयते नम्रतेगळिंद प्रयोगमाडुत्त नावेल्लरू मुंबरियबेकु। सत्यद क्षितिजवन्नु विशालवागिसुत्त होगबेकु। विकासक्के बेकादष्टु अवकाश-विदे। याव गुणवू इन्नू पूर्ण विकसितवागिल्ल।

92. आसुरी संपत्तिय विविध महत्त्वाकांक्षे: सत्ते, संस्कृति, संपत्ति

दैवी संपत्तियन्नु विकासगोळिसवेकु। आसुरी संपत्तियन्नु वहिष्करिसवेकु। अदक्कागि भगवत आसुरी सपत्तियन्नु वर्णिसिदाने। अदरल्लि मुख्य अंश मूरु। असुरर चरित्रेय सार 'सत्ते, संस्कृति, संपत्ति'। तम्म संस्कृतिये सर्वोत्कृष्ट, अदे सत्य, अदन्नु लोकद तलेय मेले हेरवेकु अँव महत्वाकांक्षे। निम्म संस्कृतियन्नु हेरलेके? आमेले अदन्नु वहळ ओळ्ळेयदेन्नि। एनु ओळ्ळेयदु? निम्मदादुदरिंद ओळ्ळेयदु। आसुरी व्यक्तिगळे इंथवरु। इंथवरु कट्टिद साम्राज्य-विन्नेनु? अदक्कू ई मूरु अंश वेकागिल्लवे।

ब्राह्मणरिगे अनिसुत्तदल्ल, तम्म संस्कृतिये सर्व श्रेष्ठ अँदु। समस्त ज्ञानवू तम्म वेदगळल्लिदे। लोकदल्लेल्ला वैदिक संस्कृतिय विजयवागवेकु। 'अग्रतश्चतुरो वेदान् पृष्टत सशरं धनुः' हीगे इडी भूमियमेले तम्म सस्कृतिय वावुटवन्नु कुणिसवेकु। आदरे वेन्निगे 'सशरं धनु' इद्दरे मुंदिन वेदगळु मण्णु मुक्किदंतेये! कुरानिनल्लि एनिदेयो अदु मात्रवे निज अँदु मुसल्मानरिगे अनिसुत्तदे। क्रिस्तान-रिगू हागे अनिसुत्तदे। इतर धर्मदवरु अष्टे मेलेरिरलि, क्रिस्तनल्लि विश्वासविल्लदिद्दरे अवरिगे स्वर्गविल्ल। देवर मनेगे अवरु ओंदे वागिलु माडिसिदारे। अदु क्रिस्तन वागिलु। जन तम्म मनेगे वेकादष्टु वागिलु किटकि इडिसुत्तारे। तम्म देवर मनेगे मात्र ओंदे। 'आढ्योभि-जनवानस्मि कोन्योस्ति सदृशो मया' अँदु अेल्लरिगू अनिसुत्तदे। नानु

भारद्वाज कुलदवनु । नन्नी परंपरे अव्याहतवागि नडेदुबंदिदे । पाश्चात्यरल्लू इदे हाडे । नन्न नरगळल्लि नार्मन् सरदारर रक्त हरियुत्तिदे । नम्मल्लि गुरु परंपरेयिल्लवे । मूल आदि शंकररु आमेलोब्ब ब्रह्मदेवनन्नो मत्तोब्बनन्नो गंटुहाकबेकु । मुंदे नारद, आमेले व्यास, आमेले मत्तोब्ब ऋषि, मत्ते यारादरू नाल्कु जनरन्नु हाकि, आमेले तन्न गुरु, अनंतर तानु – हीगे परंपरेयन्नु तोरबेकु । तानु भारि मनुष्य, तन्न संस्कृति श्रेष्ठ ऎंदु वंशावळियिंद सिद्ध माडबेकु । निन्न संस्कृति उत्तमवागिद्दरे निन्न कृतिगळल्लि अदु कंडुबरलि । अदर प्रभे आचरणेयल्लि हरडलि । अदेल्ल एनू इल्ल । तन्न बाळिनल्लिये इल्लद संस्कृति, तन्न मनेयल्ले इल्लद संस्कृति लोकदल्लेल्ल हरडलि ऎंदरे अदु आसुरी विचार सरणि ।

नन्न संस्कृतिये सर्व सुंदरविंदंते लोकद सकल संपत्तिगू नाने पात्र । सकल संपत्तू ननगे बेकु । नानदन्नु पडेयुत्तेने । एके ऎंदरे ऎल्लवन्नू समनागि हंचलिक्के । अदक्कागि तन्नन्नु धन-संपत्तिनल्लि हूळबेकु । अक्बर् हेळुत्तिद्दनंते – 'इन्नू रजपूतरु नन्न साम्राज्यदल्लेके सेररु ? ऒंदे साम्राज्यवादीतु, शांति स्थापितवादीतु' । अक्बरनिगू प्रामाणिकवागियू हागे अनिसुत्तदे । संपत्तन्नेल्ल एकत्रवागिसबेकु । एके ? मत्ते हंचलिक्के ।

अदक्कागि ननगे अधिकार, सत्ते बेकु । सर्व सत्तेयू ऒंदे कैयल्लि केंद्रीकृतवागबेकु । इडी जगत्तु नन्न आडळितदल्लि इरबेकु । स्वतंत्रवागि, नन्न तंत्रदंते ऎल्लवू नडेयबेकु । नन्न अप्पणेयंते नडेदवरु,

नन्न तंत्रदंते नडेदवरु स्वतंत्ररु। हीगे संस्कृति, सत्ते, संपत्तु ई मूरु अंशगळन्नु आसुरी संपत्तिगे तुविसिकोडलागुत्तदे।

ओंदानोंदु कालदल्लि समाजद मेले ब्राह्मणर वर्चस्सु इत्तु। अवरु शास्त्र बरेयबेकु, शासन माडबेकु। दोरे अवरिगे नमस्करिसबेकु। मुंदे आ युग अंतरिसितु। क्षत्रियर युग बंतु। कुदुरे बिडुवुदु, दिग्विजय माडिसुवुदु, हीगे क्षत्रियर संस्कृतियू बंदितु, होयितु। ब्राह्मण हेळिद – 'नानु कलिसुववनु, उळिदवरु कलियुववरु। नन्नन्नु बिट्टु गुरु मत्तारु?' ब्राह्मणनिगे तन्न संस्कृतिय अभिमान। क्षत्रियन कीलु – अधिकार। 'इवोत्तु अवनन्नु होडेदेनु, नाळे इवनन्नु कोंदेनु'। इदु अवन घोषणे। मुंदे वैश्यर युग। 'बेन्निन मेले गुद्दु। होट्टेयमेले होडेयबेड' अंबुदु वैश्यर सर्व तत्वज्ञान। अल्लरिगू होट्टेय जाणतन कलिसबेकु। 'ई हण नन्नदु, अदू नन्नदे आदीतु'। अदु जप, अदे संकल्प। इंग्लिषरु हेळुवुदिल्लवे – 'स्वराज्य बेकादरे तेगेदु-कोळ्ळि। नम्म सामानन्नु इल्लि मारिकोळ्ळलु अवकाश कोडि। निम्म संस्कृतियन्नु नीवु चेन्नागि अभ्यास माडि। लंगोटि हाकि। संस्कृति-यन्नु संबाळिसिकोळ्ळि।' ईगिन युद्धगळू व्यापारदवु। आदरे ई युगवू कळेदीतु। आगले कळेयलु आरंभवागिदे। हीगिदे आसुरी संपत्तिय रीति।

93. काम क्रोध मुक्तिय शास्त्रीय संयम मार्ग

आसुरी संपत्तियन्नु दूरमाडुव प्रयत्न माडबेकु। आसुरी संपत्ति अंदरे 'काम क्रोध लोभ'। इवु इडी लोकवन्ने कुणिसुत्तिवे।

ई कुणित इन्नु साकु । अदन्नु त्रिडले बेकु । कामदिंद क्रोध लोभ हुट्टुत्तवे । कामक्के अनुकूल परिस्थिति दोरे यितेंदरे लोभ हुट्टिते । प्रतिकूलवायितो क्रोध । गीतेयल्लि श्लोक श्लोकदल्लू ई मूरन्नू बिट्टु दूरविरु अंदु हेळिदे । हदिनारनेय अध्यायद कोनेयल्लू इदन्ने हेळिदे । काम क्रोध लोभगळु मूरू नरकद दोड्ड द्वारगळु । ई बागिलोळगिंद बहळ जनसंदणि । अष्टो जन बरहोगुत्तिरुत्तारे । नरकद दारि रमणीय । अल्लि मोटारू होगुत्तदे । अष्टो जन गेळेयरू भेटियादारु । आदरे सत्यद दारि किरिदु ।

ई काम क्रोधगळिंद नावु पारागुवुदु हेगे ? संयमद दारि हिडियबेकु । शास्त्रीय संयमद कच्चेयन्नु बिगियबेकु । साधु संतर अनुभववे शास्त्र । प्रयोग माडि अवरु पडेद अनुभवदिंद शास्त्र हुट्टुत्तदे । ई संयमवे सिद्धांतद कसे-कट्टु । सुम्मने संशयगोळ्ळुत्त कूडदिरु । कामक्रोधवे इल्लवादरे जगत्तु हेगे नडेदीतु ? लोक नडेयबेकल्ल । स्वल्प मट्टिगादरू काम क्रोध इरबेडवे ? दयविट्टु ई बगेय संशय पडबेडि । कामक्रोधक्केनु कडमे ? बेकादष्टु, निनगे अगत्यवादुदक्किंत हेच्चागि – बेडवादष्टु तुंबिकोंडिदे । व्यर्थवागि बुद्धि भेदवन्नेके हुट्टिसिकोळ्ळबेकु ? काम क्रोध लोभ नीनु बयसुवुदक्किंत हेच्चागि इदे । कामवे इल्लवादरे संतानप्राप्ति हेगे अंब चिंते बेड । नीनु अष्टे संतति निर्माण माडिदरू ओंदु दिन ई पृथ्वियल्लि मनुष्यन हेसरे इल्लदहागे निर्नामवादीतु । शास्त्रज्ञरू अदे मातन्ने हेळुत्तारे । भूमि स्वल्प स्वल्पवागि कावारि तण्णगागुत्तिदे । ओंदानोंदु कालदल्लि

पृथ्वि अत्यंत उष्णवागित्तु। अदर मेले प्राणवे इरलिल्ल। ऒंदानोंदु काल मत्ते बंदीतु, आग पृथ्वि पूरा तण्णगागि जीवसृष्टियेल्ला प्रळयद पालादीतु। हीगागलु लक्षांतर वर्ष बेकादीतु। नीनु बेकादष्टु संतानोत्पत्ति माडु। कट्टकडेगे ई प्रळय निश्चय। परमेश्वर ताळुव अवतार धर्मरक्षणेगागि; संख्येय रक्षणेगागियल्ल। धर्मपरायणनाद मनुष्य ऒब्बने आगलि इरुवतनक, पापभीरुवू सत्यष्ठिनू ऒब्बने आदरू इरुवतनक चिंतेयिल्ल। अवनमेले ईश्वरन दृष्टियिद्दीतु। धर्महीनरादवरु साविरारु जन इद्देनु, इरदिद्देरेनु[2] ऒंदे।

इदन्नेल्ल अरितु सृष्टिगे श्रुतिगूडिसबेड। संयमपूर्वक नडे। ताळ्मॆट्टु नडेयबेड। लोकसंग्रह माडबेकेंदरे लोक हेळिदंते नडेयबेकेंदल्ल। मनुष्यर संघवन्नु वृद्धि माडुवुदागलि संपत्तन्नु राशि हाकुवुदागलि सुधारणेयल्ल। संख्येयन्नु अवलंबिसिल्ल विकास। मेरे तप्पि जनसंख्ये बेळेदरे मनुष्यरु ऒब्बरन्नोब्बरु कॊंदारु। मॊदलु पशु पक्षिगळन्नु तिंदु मनुष्य समाज सॊक्कीतु। आमेले हसुगूसु मक्कळन्नु हरिदु तिंदारु। कामक्रोधगळलि सारविदे ऎंबुदन्नु ऒप्पिदरे कट्टकडेगे मनुष्यरु मनुष्यरन्ने हरि हरिदु तिंदारु। इदरलि ऎल्लष्टू संगयबेड। लोकसंग्रहबेंदरे लोकक्के सुंदर, विशुद्ध मार्गवन्नु तोरुवुदु। काम क्रोधदिंद मुक्तरागि, अदरिंद मनुष्यरु पृथ्वियिद निर्नामवादरेन्नि। मंगळग्रहद मेले जीवोत्पत्तियादीतु। आ चिंते बेड। अव्यक्त परमात्म ऎल्लेल्लू तुंबि इदाने। अवनु निन्न काळजि माडियानु। मॊदलु नीनु मुक्तनागु। बहळ दूर नोडबेकागिल्ल। सृष्टियचिंते, मानव जातिय

चिंते निनगे बेड । निन्न नैतिक शक्ति बेळेयु ; काम क्रोधगळन्नु गुडिसि बळिदु बिसाडु ।

' मोदलु बिडिसु निन्न कोरलु '

निन्न कुत्तिगे सिक्किदे । मोदलु अदन्नु बिडिसु । अष्टादरे अष्टो केलसवायितु । ससार समुद्रदिद दूरवागि ढंडेयमेले निंतु समुद्रद विनोदवन्नु नोडुवुदरल्लिदे आनंद । नीरु कुडिदु उसिरु बिगिद, वायि मूगुगळल्लि नीरु होगुव मनुष्यनिगे समुद्रदोळगिद्दु एनु आनंद ? साधु संतरु समुद्र तीरदल्लि निंतु आनंदवन्नु सूरेगोळ्ळुत्तारे । संसारदिद अलिप्तरागिरुव संतर ई वृत्ति मैगूडदे ननगे आनंदविल्ल । कमल पत्र-दंते अलिप्तनागिरु । ' संतरु दोड्ड पर्वतगळ शिखरद मेलिरुत्तारे । अल्लिद केळगडे संसारद कडे नोडुत्तारे । आग अवरिगे संसार क्षुद्र-वागि काणुत्तदे ' अंदिदाने वुद्ध । नीनू मेलेरि नोडु । आग ई विशाल विस्तारवेल्ल क्षुद्रवागि कंडीतु । आमेले संसारद कडे मनस्से होगलिक्किल्ल ।

सारांश – आसुरी संपत्तियन्नु दूरमाडि दैवीसंपत्तियन्नु बेळेसि कोळ्ळबेकेंदु ई अध्यायदल्लि भगवंत कळकळियिंद पुनःपुनः हेळिदाने । आ रीति यत्न माडबेकु ।

(5-6-32)

अध्याय 17.

94. सुबद्ध वर्तनेयिंद वृत्ति स्वतंत्र

मेल्लमेल्लने नावु तुदिगे बंदु मुट्टुत्तिदेवे। हदिनैदने अध्याय-दल्लि जीवनद संपूर्ण शास्त्रवन्नु अरितेवु। हदिनाररल्लि ओंदु परिशिष्ट-वयितु। मनुष्यन मनस्सिनल्लि, अवन मनस्सिन प्रतिबिंबवाद समाज-दल्लि एरडु वृत्तिगळ, एरडु संस्कृतिगळ, एरडु संपत्तिगळ जगळ नडेदिदे। अदरल्लि दैवीसंपत्तियन्नु विकासगोळिसकोळ्ळबेकु एंबुदु हदिनारने अध्यायद परिशिष्टद पाठ। हदिनेळने अध्यायदल्लि एरडने परिशिष्ट। ई अध्यायदल्लि कार्यक्रम -- योगवन्नु हेळिदे एन्नबहुदु। ई अध्यायदल्लि नित्य क्रियेयन्नु, दिनद कार्यक्रमवन्नु सूचिसुत्तदे गीते।

नम्म वृत्ति प्रसन्नवू विमुक्तवू आगिरबेकेंदरे नम्म नडतेगे कट्टु नियम बेकु। नम्म नित्य कार्यक्रम यावुदादरोंदु निर्दिष्ट रीति-यल्लि सागबेकु। आ निश्चित, नियमित रीतियल्लि, आ मितियल्लि, नम्म बाळु सागिदरे मात्र मनस्सु मुक्तवागिरलु साध्य। नदि स्वच्छंदवागि हरियुत्तदे। अदर प्रवाह बंधितवागिदे। हागिल्लदिद्दरे अदर विमुक्ततेयू नशिसि होगुत्तदे। ज्ञानिय उदाहरणे तेगेदु कोळ्ळोण। सूर्य ज्ञानि पुरुषन आचार्य। भगवंत कर्मयोगवन्नु मोदलु हेळिद्दुदु सूर्यनिगे। सूर्यनिंद मनुविगे एंदरे विचारपर मनुष्य-रिगे अदु प्राप्तवायितु। सूर्य स्वतंत्र, मुक्त। अवनु नियमित। आ नियमितत्तनदल्लिये अवन स्वतंत्रतेय सर्व सारविदे। गोत्ताद दारियल्लि ओडाडुत्त दारि सुपरिचितवादरे, दारिय कडे गमनकोडदे, मनस्सिनल्लि

एनादरू विचारमाडुत्त नडेयबहुदु । इदु नमगे अनुभवद मातु । दिनदिनवू होस होस हादियल्लि नडेदरे गमनवेल्ल दारिय कडेगे इरबेकागुत्तदे । मनस्सिगे आग बिडुवु इल्ल । बाळिन भार तगलदे बाळिन आनंद दोरेयबेकेंदरे, अदक्कागि नावु नडतेयन्नु बंधिसिकोळ्ळबेकु ।

अदक्कागि ई अध्यायदल्लि कार्यक्रमवन्नु सूचिसिदाने भगवंत । हुट्टुवागले मूरु संस्थे नम्म जोतेगे बरुत्तवे । ई मूरु संस्थेगळ केलसवन्नु उत्तम रीतियल्लि नडेसि मनुष्य संसारवन्नु सुखमयवागि माडिकोळ्ळलु तक्क कार्यक्रमवन्नु गीते हेळिदे । ई मूरु संस्थे यावुवु ?

मोदलनेयदु – नम्म सुत्तलू मुत्तिरुव शरीर । नम्म सुत्तलू हब्बिरुव ई विशाल ब्रह्माड, ई अपार सृष्टि एरडने संस्थे । नावु अदर अंश । नावु हुट्टिबंद समाज ; नम्म बदुकिगे नेरळु-नेरवु आद तायि तंदे, अण्ण तंगि, नेरे होरेयवरु : इवरु मूरने संस्थे । ई मूरु संस्थेगळन्नु नावु नित्यवू उपयोगिसुत्तेवे, सवेसुत्तेवे । ई संस्थेगळल्लि नावु एनु सवेसुत्तेवो, एष्टु सवेसुत्तेवो अष्टन्नु मत्ते तुंबिकोळ्ळलु नावु सततवू यत्निसबेकु , बाळन्नु सफलगोळिसबेकु । अहंकार बिट्टु ई-संस्थेगळ बगो नमगे जन्मतः प्राप्तवाद कर्तव्यवन्नु निर्वहिसबेकु ।

ई कर्तव्य निर्वहिसबेकु । सरि । आदरे अदक्केनु योजने ? यज्ञ, दान, तप – मूरू सेरि ई योजने । ई शब्दगळु नमगे तिळिदुवे । आदरू नमगे अवुगळ अर्थ सरियागि तिळिदिल्ल । अर्थवन्नु अरितु बाळिनल्लि अवन्नु बेरेसिकोंडरे मूरू संस्थे सफलवागि नम्म बाळु मुक्तवू, प्रसन्नवू आदीतु ।

95. अदक्कागि त्रिविध क्रियायोग

अदर अर्थवन्नरियलु मोदलु यज्ञ अंदरेनो नोडोण। सृष्टि संस्थेयन्नु नावु नित्यवू बळसुत्तिदेवे। नूरु जन ओंदेडे सेरि इद्दरे मरुदिनवे सृष्टि भंगवागि तोरुत्तदे। अल्लिय गाळि नम्मिंद केट्टितु। स्थळ होलसायितु। ऊटमाडि सृष्टियन्नु सवेसुत्तेवे। सृष्टि संस्थेय ई सवकलन्नु तुंबिकोडबेकु। इदक्कागि यज्ञसंस्थे निर्माणवायितु। यज्ञद उद्देश्यवेनु? सृष्टियल्लि हीगे नाशवादुदन्नु तुंबिकोडुवुदे यज्ञ। साविरारु वर्षगळिंद नावु बेसाय माडुत्तिदेवे। नेलद हुलुसु कडिमेयागुत्तिदे। नावदन्नु सवेसुत्तिदेवे। यज्ञ नमगे हेळुत्तदे–'पृथ्विय हुलुसन्नु तिरुगि कोडु। होल उळु। सूर्यन शाख अदरोळगे होगलि। गोब्बर हाकु'। नाशवादुदन्नु मत्ते तुंबुवुदु–यज्ञद ओंदु उद्देश्य। मत्तोंदु. बळसुव वस्तुविन शुद्धीकरण। नावु बावियन्नु उपयोगिसुत्तेवे। अक्कपक्कदल्लि केसरागुत्तदे। नीरु निल्लुत्तदे। बाविय सुत्तलिन सृष्टि भंगवायितु। अदन्नु शुद्धगोळिसबेकु। अदरोळगिन नीरन्नु एत्ति चेल्लबेकु। केसरन्नु दूर तेगेदु हाकबेकु। सवेदुदन्नु तुंबुवुदु, शुद्धिगोळिसुवुदु – इवुगळ जोतेगे प्रत्यक्षवागि एनन्नादरू निर्माण माडबेकागुत्तदे। यज्ञदल्लि मूरनेयदु इदू ओंदु। नावु बट्टेयन्नु बळसुत्तेवे। दिनवू नूलु तेगेदु अदन्नु मत्ते निर्मिसबेकु। हत्ति बिडिसुवुदु, धान्य बेळेसुवुदु, नूलु तेगेयुवुदु, एल्लवू यज्ञक्रिये। यज्ञदल्लि निर्माण माडुवुदु स्वार्थक्कागियल्ल। नावु सवेसिदुदन्नु नाशमाडिदुदन्नु पुनः उत्पत्ति माडिकोडुव कर्तव्य भावने अदरल्लिरबेकु। इदु परोपकारवल्ल। नावु

मोदले सालगाररु! हुट्टुवागले साल होत्तु तदिदेवे। ई साल तीरिसलु एनन्नु निर्मिसबेको अदक्के यज्ञ अथवा सेवे अन्नुत्तारे; परोपकारवल्ल। आ सेवेयिद साल तीरिसबेकु। हेज्जे हेज्जेगू नावु सृष्टि संस्थेयन्नु बळसुत्तेवे। आ नष्टवन्नु तुंबिकोडलिक्के, अदन्नु शुद्धिगोळिसलिक्के, होसदन्नु उत्पत्तिमाडलिक्के, यज्ञ माडबेकु।

ऎरडने संस्थे – मनुष्य समाज। तायि तंदे, गुरु, गेळेय इवरु नमगागि श्रमपडुत्तारे। ई समाज ऋणवन्नु तीरिसलेंदे नमगे दानवन्नु हेळिदारे। समाजद सालवन्नु तीरिसलु माडिद प्रयोगवे दान। दानवेंदरे परोपकारवल्ल। समाजदिंद अपार सेवे पडेदिदेने नानु। ई लोकदल्लि नानु असहाय, दुर्बल आगिद्दे। ऎळकनागिद्दाग नन्नन्नु ई समाज दोड्डवनन्नागि माडितु। अदक्कागि नानु समाजद सेवे माडबेकु। पररिंद एनन्नू पडेयदे माडिद सेवे परोपकार। आदरे आरंभदल्ले समाजदिंद होरलारदष्टु पडेदिदेनल्ल। ई समाजद सालदिंद मुक्तनागलु माडबेकाद सेवेये दान। मानव समाज मुंवरियलु माडिद सहायवे दान। सृष्टिय नाशवन्नु मत्ते तुंबिकोडलु माडिद श्रमवे यज्ञ। समाजद सालवन्नु हरिसलु शरीरवन्नू हणवन्नू उळिद साधनगळन्नू उपयोगिसि माडिद सहाय दान।

इवल्लदे मूरनेय संस्थेयू इदे – शरीर। दिनदिनवू मै सवेयुत्तले इदे। मनस्सु, बुद्धि, इंद्रिय ऎल्लवन्नू बळसुत्तेवे, सवेसुत्तेवे। ई शरीररूपि संस्थेयल्लि उत्पन्नवागुव विकारगळ, दोषगळ शुद्धिगागि तपस्सन्नु हेळिदारे।

ई समाज, शरीर, सृष्टि, मूरू संस्थेगळ केलस उत्कृष्टवागि सागुवंते नडेयुवुदे नम्म कर्तव्य । योग्यवो अयोग्यवो अनेक संस्थे-गळन्नु नावु कट्टुत्तेवे । ई मूरु मात्र नावु कट्टिदुदल्ल । स्वभावतः नमगे अवु दोरेतिवे । इवु कृत्रिम संस्थेगळल्ल । यज्ञ दान तपगळेंब साधनगळिंद ई सस्थेगळ नष्टवन्नु तुंबिकोड्डुवुदु नमगे स्वभाव प्राप्त धर्म । ई रीति नावु नडेयतोडगिदरे नमगे इद्दुदो इल्लदो शक्ति, इल्लि उपयोगवागुत्तदे । इतर केलस माडलु होदरे शक्ति उळियलिक्के इल्ल । सृष्टि, समाज, शरीर ई मूरू संस्थे सुंदरवागिरलिक्कागि नम्म सर्व शक्तियन्नू विनियोगिसबेकादीतु । 'देवरे, नीनु ननगेंथ हच्चड कोट्टियो अंथदन्ने हिंदक्के कोडुत्तेने । सरियागि नोडि तेगेदुको ई हच्चड' एंदु कबीर हेळिदंते नावू हेळुवतादरे, अष्टु सफलते । अंथ सफलते सिगलेंदे यज्ञ-दान-तपगळ त्रिविध कार्यक्रमवन्नु नडेसबेकु ।

यज्ञ, दान, तपगळल्लि भेदवन्नु कडेवु । आदरे निजवागि भेदवेनू इल्ल । ई मूरु संस्थे हागे केवल प्रत्येकवल्ल । सृष्टिगे होरतल्ल समाज । शरीरवू अष्टे । मूरु सेरि ओंदु भव्य सृष्टिसस्थे । अंते नावु माडबेकाद उत्पादक कर्म, दान, तपगळन्नु व्यापकार्थदल्लि यज्ञवेंदे हेळबहुदु । नाल्कने अध्यायदल्लि गीते द्रव्ययज्ञ, तपोयज्ञ इत्यादिगळन्नु हेळिदे । यज्ञद अर्थवन्नु गीते विशालगोळिसिदे ।

ई मूरू संस्थेगळिगागि माडबेकाद सेवे यज्ञरूपवादुदु । आ सेवे निरपेक्षवागिरबेकु । अदरल्लि फलापेक्षेयिरलु बारदु । एकेंदरे नावु मोदले, मुंगडवागिये, फल पडेदिदेवे । तलेयमेले सालविदे । अदन्नु

तीरिसबेकु। यज्ञदिंद सृष्टियल्लि साम्यावस्थे बरुत्तदे। दानदिंद समाजदल्लि साम्यावस्थे बरुत्तदे। तपदिंद शरीरदल्लि साम्यावस्थे बरुत्तदे। ई मूरू संस्थेगळल्लि साम्यावस्थेयन्नु काय्दुकोळ्ळुव कार्यक्रम इदु। अंदरे शुद्धियादीतु, दूषित भाव निर्मूलवादीतु।

ई सेवे सल्लिसलिक्केंदु किंचित् भोगवन्नु पडेयबेकादीतु। भोगवू यज्ञद ओंदु अंग। गीते अदन्नु आहार एन्नुत्तदे। ई शरीर-यंत्रक्के अन्नद इद्दिलन्नु हाकबेकु। ई अन्न स्वयं यज्ञवल्लदिद्दरू यज्ञ सिद्धवादरे यज्ञागवागुत्तदे। अदरिंदले 'उदरभरणवल्लवय्य, यज्ञकर्मविदनरि' एन्नुवुदु। तोटदिंद हू कोय्दु तंदु देवरिगे एरिसिदरे, अदु पूजे। हूवन्नु निर्मिसलु तोटदल्लि दुडिदरे, अदू पूजेये। देहक्के अन्न नीडिदरेने अदरिंद उपयोग। यज्ञसाधकवाद कर्मवू यज्ञवे। इदन्नु 'तदर्थीय कर्म', यज्ञार्थ कर्म एंदु गीते हेळुत्तदे। ई शरीर सदा सेवेगागि सिद्धविरलि एंदु नावदक्के कोडुव आहुति यज्ञरूप आहुति। सेवेगेंदु माडिद ऊट पवित्र।

इवेल्ल विषयगळल्लि मत्ते मूलदिंदलू श्रद्धे बेकु। सकल सेवेयल्लू परमेश्वरार्पण भावविरबेकु। अदे बहळ मुख्य। ईश्वरार्पण बुद्धियिल्लदे सेवामयते साधिसदु; असभव। प्रधानवस्तुवाद ईश्वरार्पणेयन्ने मरेतरे नडेयदु।

96. साधनेय सात्विकीकरण

नम्म क्रियेयन्नु हेगादरे ईश्वरनिगे अर्पिसबहुदु? क्रिये सात्विकवादाग। नम्म सर्व कर्मवू सात्विकवादंते अदन्नु ईश्वरार्पणे माडलु

साध्य। यज्ञ, दान, तप अेल्लवू सात्विकवागबेकु। क्रियेयन्नु हेगे सात्विकवागिसबेको हदिनाल्कने अध्यायदल्लि नोडिदेवे। ई अध्याय-दल्लि अदर विनियोगवन्नु हेळिदे।

ई सात्विकतेय योजने माडुवुदरल्लि गीतेगे इन्नोंदु उद्देश्यविदे। यज्ञ-दान-तपगळ मूलक नम्मिंद होरगडे नडेव विश्व सेवेगे ओळगे आध्यात्मिक साधने अेंब हेसरु कोडबेकु। सृष्टिय सेवे – साधनेगळिगे अेरडु बेरे बेरे कार्यक्रम बेड। साधने-सेवे बेरे बेरे अल्लवे अल्ल। अेरडक्कू ओंदे प्रयत्न, ओंदे कर्म। हीगे माडिद कर्मवन्नु कोनेगे ईश्वरार्पण माडिदरायितु। सेवे, साधने, ईश्वरार्पण : ई योग ओंदे क्रियेयिंद आगबेकु।

यज्ञ सात्विकवागलु अेरडु अंगगळु अगत्य। निष्फलतेय अभाव, सकामतेय अभाव, अेरडू यज्ञदल्लि इरबेकु। यज्ञदल्लि सकामते तलेदोरिदरे अदु राजस यज्ञ। निष्फलतेयिद्दरे अदु तमास यज्ञ।

नूलुवुदू ओंदु यज्ञ। नूलु एळेयुत्त अदरल्लि आत्मवन्नु तुंबदिद्दरे, चित्तद एकाग्रते इरदिद्दरे, अंथ सूत्रयज्ञ केवल जडवागुत्तदे। होरगे अेष्टे केलस नडेदिद्दरू ओळगे मनस्सिनल्लि मेळविल्ल-दिद्दरे आ क्रियेयेल्लवू विधिहीनवागुत्तदे। विधिहीनकर्म जड। अदरल्लि तमोगुण इरुत्तदे। उत्कृष्टतेयन्नु निर्मिसलु आ क्रिये असमर्थ। अदरिंद फल निष्पत्तियागदु। यज्ञदल्लि सकामतेयल्लदिद्दरू अदरिंद उत्कृष्ट फल पडेयबेकु। कर्मदल्लि मनस्सिल्लदिद्दरे, आत्मविल्लदिद्दरे, अदु भारवागुत्तदे। अदरिंद उत्कृष्ट फल हेगे दोरेतीतु? होरगिन केलस

केट्टरे ओळ्ळे मनस्सिन मेळविरदु, निश्चय। कर्मदल्लि आत्मवन्नु तुंबु। ओळगडे मेळविरलि। सृष्टिसंस्थेय साल तीरिसलु नावु उत्कृष्ट फलोत्पत्ति माडबेकु। कर्मदल्लि फलहीनतॆ बारदिरलि ऎंदे ई ओळगिन मेळद विधियुक्तते इरबेकादुदु।

हीगे निष्कामतॆयन्नु मैगूडिसिकॊंडु, विधिपूर्वक यशस्वि कर्मवन्नु माडिदाग चित्तशुद्धि मॊदलादीतु। चित्तशुद्धिगॆ ऒरॆगल्लावुदु? होरगिन कॆलसवन्नु परीक्षिसि नोडु। अदु निर्मलवू सुंदरवू अल्लदिद्दरॆ चित्तवु मलिनवॆंदु तिळियलु अड्डियिल्ल। कर्मदल्लि सौंदर्य हेगॆ निर्माणवागुत्तदॆ? चित्तशुद्धि पूर्वकवागियू, परिश्रम पूर्वकवागियू माडिद कर्मदमेलॆ परमेश्वर तन्न प्रसन्नतॆय मुद्रॆयॊत्तुत्ताने। कर्मद बॆन्निनमेलॆ प्रसन्न परमेश्वर प्रीतियिंद कैयाडिसिदरॆ अल्लि सॊबगु हुट्टुत्तदॆ। सॊबगु, सॊंपु ऎंदरॆनु? पवित्र श्रमदिंद दॊरॆत परमेश्वर प्रसाद। मूर्तियन्नु निर्मिसुत्त अदरल्लि तन्मयनाद विग्रह-शिल्पिगॆ आ सुंदर विग्रह तन्न कैयिंद निर्मितवागिल्ल ऎंब भावनॆ बरुत्तदॆ। विग्रह रूपगॊळ्ळुत्तिद्दाग कडॆय गळिगॆयल्लि ऎल्लिंदलो सौंदर्य तानॆ तानागि बंदु तुंबिकॊळ्ळुत्तदॆ। चित्तशुद्धियिल्लदॆ ईश्वरी कलॆ प्रकटवादीतॆ? विग्रहदल्लिरुव सर्व स्वारस्यवू इदु. तन्नॊळगिन अंतःकरणद सॊबगॆल्लवू अल्लि बंदु तुंबिकॊळ्ळुत्तदॆ। मूर्ति ऎंदरॆ तन्न चित्तद प्रतिमॆ। नम्म सर्व कर्मवू नम्म मनस्सिन मूर्ति। मनस्सु सुंदरवागिद्दरॆ ई कर्ममय मूर्तियू सुंदर। होरगण कर्मद शुद्धि मनस्सिन शुद्धियिंद, मनस्सिन शुद्धि होरगण कर्मदिंद तिळिदुबरुत्तदॆ।

इन्नोंदु मातु उळियितु । ई एल्ल कर्मक्कू मंत्र बेकु । मंत्र-
हीन कर्म व्यर्थ । नूलुवाग ई दारदिंद नानु बडवरोंदिगे सेरिकोळ्ळु-
त्तिदेने एंब मंत्र ओळगिरबेकु । ई मंत्र ओळगिरदिद्दरे तासु तासु
केलस माडिदरू अदु व्यर्थ । ई क्रिये चित्तशुद्धि माडलारदु । ई
हत्तिय हंजियिंद अव्यक्त परमात्म सूत्ररूपदल्लि प्रकटवागुत्तिदाने एंब
मंत्रवन्नु आ क्रियेयोळगे तुंबि, आमेले अदन्नु नोडु । आ क्रिये अत्यंत
सात्विकवू सुंदरवू आदीतु । अदु आराधनेयादीतु । यज्ञरूप सेवे-
यादीतु । आ सण्ण दारदेळेयिंद समाजवन्नु, जनतेयन्नु कट्टिहाकबहुदु ।
बालकृष्णन चिक्क बायोळगे यशोदा तायिगे इडी विश्ववे काणिसितु ।
मंत्रमयवाद दारदेळेयल्लिये निनगे विशाल विश्व कंडीतु ।

97. आहार शुद्धि

नम्मिंद इंथ सेवे आगबेकेंदरे आहार शुद्धि अगत्य । एंथ
अन्नवो अंथ मनस्सु । आहार परिमितवागिरबेकु । आहार यावुदु
एंबुदक्किंत एष्टु एंबुदु हेच्चु महत्वद्दु । आहारद विवर मुख्यवल्ल-
वेंदल्ल । आदरे युक्तप्रमाणदल्लि तेगेदुकोळ्ळुत्तेवो इल्लवो एंबुदु हेच्चु
महत्वद्दु । नावु तिंदुदर परिणाम आगले बेकष्टे । नावेके तिन्नुत्तेवे ?
नावु माडुव सेवे उत्कृष्टवागलि एंदु । आहार यज्ञाग । सेवारूप यज्ञ-
फलरूपवागलि एंदु आहार । ई भावनेयिंद नोडु । अदु स्वच्छवू
शुद्धवू आगिरबेकु । व्यक्ति जीवनदल्लि साधिसबहुदाद आहार
शुद्धिगे मितिये इल्ल । आहार शुद्धिगागि नम्म समाज तपस्सु माडिदे ।
अदक्कागि हिंदूस्थानदल्लि विशाल प्रयत्न नडेयितु । आ प्रयोगदल्लि

साविरारु वर्ष कळेदिदे। आ प्रयोगक्कागि ऎष्टु तपश्शक्ति वेच्चवायितो हेळलु अळवल्ल। इडी जाति जातिये मासवन्नु बिट्टिथ देश सर्व जगत्तिनल्लि हिंदुस्थानवोंदे। इल्लि मास तिन्नुव जातिगळल्लू कूड मास नित्यान्नवल्ल, मुख्याहारवल्ल। तिन्नुववरिगू अदु हीन ऎनिसुत्तदे। मनस्सिनल्लि अवरू मास वर्जन माडिदारे। मासाहारवन्नु कॆळगॆ हाकलिक्कॆंदे यज्ञ रूढवायितु। अदक्कागिये यज्ञ निषिद्धवायितु। श्रीकृष्णभगवंत यज्ञद अर्थवन्ने बदलिसिद। कृष्ण हालिन महिमेयन्नु हॆच्चिसिद। कृष्ण ऎष्टो असाधारण संगतिगळन्नु माडिद। आदरे भारतीय जनक्के याव कृष्णनन्नु कंडरे इष्ट ? गोपालकृष्ण, गोपालकृष्ण। ई हॆसरे भारतद जनक्के प्रिय। आ कृष्ण, अवन बळि मलगिरुव हसु, अवन तुटिय मेलिन कोळलु, हीगॆ गोसेवे माडुव गोपाल कृष्णने आबालवृद्धरिगे परिचित। गोरक्षणॆय महत्तर उपयोग मासाहार त्यागदल्लि आयितु। हसुविन हालिन महिमॆ हॆच्चितु, मासाहार कडिमॆयायितु।

इल्लिगॆ आहार शुद्धि सपूर्णवादंतल्ल। नावु अदन्नु मुंदोय्यबेकु। बंगालि जनरु मीनु तिन्नुत्तारॆंदरे ऎष्टो जनक्के अच्चरियागुत्तदे। आदरे अवरन्नु दूषिसबारदु। अदु योग्यवल्ल। बंगालदल्लि बरी अन्न। अदरिंद शरीर पोषणॆ सपूर्णवागदु। अदक्कागि बेरे प्रयोग माडबेकु। मीनु तिन्नदे याव वनस्पतियन्नु तिंदरे अष्टु पुष्टि बदीतो विचार माडबेकु। असाधारण त्यागद व्यक्ति हुट्टियानु। प्रयोग नडेदीतु। अथ व्यक्तिये समाजवन्नु मुंदोय्यबेकादरे! सूर्य बॆळगुत्तिरुत्ताने। अदरिंद

नमगे जीविसिरलु बेकाद तॊवत्तॆंदु अंश उष्ण मैयॊळगे इरुत्तदे। समाजदल्लि बेळबेळगुव ज्वलत वैराग्यसूर्य निर्माणवादाग, श्रद्धेयिंद परिस्थितियन्नु कित्तॊगॆदु रेक्के इल्लदे ध्येयद मुगिलल्लि विहरिसतॊडगिदाग, नमगे अल्प स्वल्प संसारोपयोगि वैराग्य बरुत्तदे। मासाहार निल्लिसलु ऋषिगळु ऎष्टु तपस्सु माडबेकायितो, अदेल्लवू इथ वेळॆयल्लि नन्न मनस्सिनल्लि मूडिबरुत्तदे।

इंदु नम्म सामुदायिक आहार शुद्धि इष्टागिदे। अनंत त्याग गैय्दु हिरियरु गळिसिद ई गळिकेयन्नु कळॆयदिरि। भारतीय संस्कृतिय ई अंशवन्नु मुळुगिसदिरि। हेगो हागे बदुकबेकागिल्ल नावु। हेगादरू बदुकबेकॆन्नुववन केलस बहळ सुलभ। मृगवू हेगो बदुकुत्तलिदे। मृगद हागे एनु नावू? मृगक्कू नमगू एनादरू अंतरविद्दरे अदन्नु बेळॆसुवुदे संस्कृतिवर्धन। नम्म राष्ट्रदल्लि मासाहार त्यागद महा प्रयोग नडॆयितु। अल्लिंद मुंदे बन्नि। कनिष्ठ पक्ष, ईग इरुव स्थिति यल्लादरू इरि। कॆळगॆ जारदिरि।

ई ऎच्चरिके कॊडलु कारणविदे। इत्तीचॆगे अनेकरिगे मास इष्टवागिदे। ईग पौर्वात्य पाश्चात्य संस्कृतिगळु परस्परवागि तम्म प्रभाव बीरुत्तिवे। इदरल्लि कडॆगॆ ऒळितॆ आदीतु। नन्न श्रद्धे अदु। पाश्चात्य संस्कृतिय देसॆयिंद नम्म जड श्रद्धे कुसिदु बीळुत्तिदे। अंध-श्रद्धे अळिदरे एनू नष्टविल्ल। ऒळ्ळॆयदु उळिदे उळिदीतु। कॆट्टद्दु सुट्टु होदीतु। अंध-श्रद्धे उरिदुहोगि अदर स्थळदल्लि अंध अश्रद्धे बंदरे प्रयोजनविल्ल। श्रद्धे मात्रवे कुरुडु अल्ल। कुरुडुतनद गुत्तिगॆयन्नॆनु हिडिदिल्ल श्रद्धे। अश्रद्धेयू कुरुडागिरबल्लदु।

मासाहारद बग्गे मत्ते विचार मोदलागिदे ईग। अदेने इरलि, होस विचार मूडिदे अंदरे ननगे आनंद। अदरिंद लोक अेच्चरवागिदे, अत्तित्त नुग्गुत्तिदे अंदु तिळियोण। जागृतिय लक्षण कंडु ओळितेनिसुत्तदे। आदरे जागृतरागियू कण्णु मुच्चि नडेदरे बीळुव संभवविदे। आदुदरिद पूर्ण जागृतियागुववरेगे, कण्णोळगे अेच्चर तुंबुववरेगे, कैकालिगे मिति मेरे हाकिकोंडरे ओळितु। बेकादष्टु अड्डु तिड्डु विचार माडि। नाल्कू निट्टिनिंद विचार माडि। विचारद कत्तरियिंद धर्मवन्नु कत्तरिसि। विचारद कत्तरिगे तुंडागुव धर्म केलसक्के बारदुदु, तिळि। कत्तरिसि बिद्द तुंडु होगलि। तुंडागदे उळिद भाग, निन्न कत्तरिये तुंडागुव गट्टि भाग इदेयल्ल, अदे निजवाद धर्म। धर्मक्के विचारद भीतियिल्ल। विचार माडि। आदरे ओम्मेगे कृति माडदिरि। अरेजागृतियल्लि तडविदरे अेडवि बीळुवुदे! विचार वेगवागि नडेदरू अवसरद आचरणे बेड। कृतियल्लि संयमविरलि। पूर्व पुण्यवन्नु कळेयदिरि।

98 गीतेय अविरोधि-जीवनयोजने

आहारद शुद्धियिंद चित्त शुद्धियादीतु। शरीरक्के बल बंदीतु। समाज सेवेयन्नु सरियागि माडलु आदीतु। चित्तदोळगे हिग्गिद्दीतु। समाजदल्लि संतोष हरडीतु। यज्ञ-दान-तप क्रियेगळु विध्युक्तवागि मंत्र सहितवागि नडेव समाजदल्लि विरोध हुट्टुवुदिल्ल। कन्नडिगळन्नु ओदकोंडु इदिरागि इट्टरे इदरल्लि अदरोळगिनदु, अदरल्लि इदरोळगिनदु काणुवंते, व्यक्ति समाजगळल्लि बिंब-प्रतिबिंब न्यायदिंद संतोष प्रकट-

वागुत्तदे। नन्न संतोष समाजद्दु, समाजद संतोष नन्नदु। उभय संतोषगळन्नू तूगि नोडिदरे ऎरडू ऒंदे रूप ऎंबुदु कंडीतु। ऎल्लॆडॆयू अद्वैतद अनुभववादीतु। द्वैत, द्रोहगळु मुळुगि होदावु। याव योजनेयल्लि इंथ सुव्यवस्थे इरबल्लदो अंथ योजनेयन्नु गीते हेळुत्तदे। निम्म दिनद कार्यक्रमवन्नु गीतेय योजनेय प्रकार गॊत्तुपडिसिकॊंडरे ऎष्टु सरळ, सुरक्षित ?

इंदु व्यक्तिजीवन समाजजीवनगळल्लि जगळ तलॆहाकिदॆ। ई जगळवन्नु हेगे दूरमाडबेकॆंदु ऎल्लॆल्ल चर्चे। व्यक्ति–समाज इल्लि यावुदु ऎल्ले ? व्यक्ति गौणवे, समाज गौणवे ? यारु श्रेष्ठ ? केलवरु व्यक्तिवादवन्नु पुरस्करिसि समाज जडवॆन्नुत्तारे। नन्न बळिगे दंडाळु ऒब्ब बदरे दळवायि गौरववागि मातािडिसियानु, सौम्य भाषे बळसियानु। आदरे दंडिगे मात्र मनस्सिगे बंदंते अप्पणे कॊट्टानु। दंडु अचेतन, मरद दिम्मि। अदन्नु इत्तिदत्त, अत्तिदित्त सरिदाडिसुत्ताने। व्यक्ति चैतन्यमय, समाज जड। इदर अनुभव इल्ले बरुत्तदे, नोडि। नन्नॆदुरिगे इन्नूरु–मुन्नूरु जन इदीरि। निमगे रुचिसलि रुचिसदिरलि नानेनो हेळुत्तिदेने। ननगे होळेदुदन्नु हेळुत्तेने। नीवु जडविद्दंते। अदे ऒब्बने व्यक्ति इदिरिगे बदरे अवनु हेळुवुदन्नु केळबेकादीतु। विचारमाडि उत्तर कॊडबेकादीतु। आदरे इल्लि निम्मन्नु गंटॆगट्टले कूडिसुत्तिदेने।

समाज जड, व्यक्ति चैतन्यमय ऎंदु व्यक्तिचैतन्यवादवन्नु ऒब्बरु प्रतिपादिसिदरे, ऒब्ब समुदायक्के महत्व कॊडुत्ताने। नन्न

कूदलु उदुरितु, कै मुरियितु, कण्णु होदवु, हल्लु बिद्दवु, इष्टेल्ल आदरू, ओंदु श्वासकोशवे होदरू नानु बदुकिरुत्तेने। ओंटोंटि अवयव जड। यावुदादरोंदु अवयव नष्टवादरे सर्व नाशवागदु। सामुदायिक शरीर नडेदे इरुत्तदे। हीगे एरडु परस्पर विरुद्ध विचार-सरणि इवे। नीनु याव दृष्टियिंद नोडवेको अदक्के तक्कंते वाद। कन्नडकक्के याव बण्णविद्दरे सृष्टिगे अदे बण्ण।

केलवरु व्यक्तिगे महत्व कोडुत्तारे, केलवरु समाजक्के। समाजदल्लि 'जीवनक्कागि जगळ' एंब कल्पने बंदिरुवुदे इदक्के कारण। आदरे जगळक्कागि जीवनवे? एके? अदक्किंत सायबार-देके? जगळ साविगागिये। स्वार्थपरमार्थगळल्लि भेदविदे एंदु मोदलु कंडुहिडिद मनुष्यनिगे धन्यवाद! इल्लद वस्तुवन्नु इद्दंते भास-गोळिसुव बुद्धि सामर्थ्यवुळ्ळवरिगे एनादरू माडि बेरगुगोळिसुव बयके हुट्टुत्तदे। इल्लवे इल्लद भेदवन्नु हुट्टिसि, जनरन्नु नंबिसुवुदु आश्चर्यकर! चीनि भित्तिय हागिदे इदु। क्षितिजक्के ओंदु एल्ले निर्मिसि, अदराचेगे एनू इल्ल एंदंतिदे ई मातु। इदक्केल्ल कारण यज्ञमय जीवनद अभाव। अदरिंद व्यक्ति-समाजगळ नडुवे ई भेद तलेदोरिदे।

व्यक्ति-समाजगळ नडुवे निजवागि भेदविल्ल। ओंदु कोठडि-यल्लि एरडु भाग माडलिक्केंदु ओंदु परदे हाकिदारे। गाळि बीसिदाग आ परदे हिंदक्कू मुंदक्कू सरिदु ओम्मे आ भाग दोड्डदागि, ओम्मे ई भाग दोड्डदागि काणुत्तदे। गाळिय लहरियंते ई विभाग। आ

विभाग खचितवल्ल। गीतेगे ई जगळ गोत्तिल्ल। इदु काल्पनिक जगळ। अंतःशुद्धिय नियमवन्नु पालिसु अन्नुत्तदे गीते। आग व्यक्तिहित-समाजहितगळल्लि विरोधवे हुट्टदु। ओंदरिंद ओंदर हितक्के बाधे बारदु। ई बाधेयन्नु ई विरोधवन्नु निवारिसुवुदे गीतेय कौशल। गीतेय ई नियमवन्नु अनुसरिसुव व्यक्ति ओब्बने ओब्ब हुट्टिकोंडरू सरिये, अवनिंद इडी राष्ट्रवे संपन्नवादीतु। राष्ट्रवेंदरे राष्ट्रदोळगिन व्यक्तिगळु। इंथ ज्ञानसंपन्न आचारसंपन्न व्यक्तिगळे इल्लद राष्ट्रवन्नु राष्ट्रवेंबुदु हेगे? हिन्दुस्थान एंदरेनु? हिन्दुस्थानवेंदरे रवीन्द्रनाथ कवि, हिंदुस्थानवेंदरे गांधीजि। इंथ हेसरु इन्नू हत्तु। होरगण लोकक्के हिंदुस्थानद कल्पने ई हलवु व्यक्तिगळिंदले ताने! प्राचीन कालदिंद ओब्बिब्बरु व्यक्तिगळु, मध्यकालद नाल्कारु व्यक्ति-गळु, इंदिन एंटु हत्तु, इदक्के हिमालय, गंगेगळन्नु सेरिसिदरे आयितु हिंदुस्थान – इदे हिंदुस्थानद अर्थ। उळिदुदेल्ल अदर भाष्य। भाष्य-वेंदरे सूत्रद विस्तार। हालिनिंद मोसरु ; मोसरिनिंद मज्जिगे, बेण्णे। हालु मोसरु मज्जिगे बेण्णेगळिगे जगळविल्ल। एष्टु बेण्णे बरुत्तदे एंबुदु हालिन परीक्षे। हागेये समाजद परीक्षे व्यक्तिगळ मूलक। व्यक्ति-समाजगळल्लि विरोधविल्ल। विरोध इद्दीतु हेगे? व्यक्ति व्यक्तिगळ नडुवेयू विरोधविरलागदु। ओब्बनिगिंत इन्नोब्ब संपन्ननाद मात्रक्के एनु केड्डितु? यारू विपन्नरागिरदिद्दरे सरि। सिरिवंतन सिरियन्नु समाजक्कागि बळसिदरे आयितु। एडगडे जेविनल्लिद्दरेनु, बलगडे जेविनल्लिद्दरेनु हण? एरडू नन्न जेबे। यारादरू संपन्नरादरे नानू संपन्ननादे। राष्ट्रवू संपन्नवायितु। इंथ युक्तियन्नु साधिसलादीतु।

आदरे नावु भेद माडुत्तेवे। रुंड मुंड बेरे बेरेयादरे एरडू सायुत्तवे। व्यक्ति-समाजगळल्लि भेदवेणिसदिरि। ओंदे क्रियेयन्नु स्वार्थ-परमार्थ एरडक्कू अविरोधवागि माडुवुदु हेगेंबुदन्नु गीते तिळिसुत्तदे। नन्न कोठडियोळगण गाळि, होरगिन गाळि इवेरडरल्लि विरोधविल्ल। विरोध कल्पिसि, नन्न कोठडिय बागिलु बिगिदुकोंडरे नानु उसिरुगट्टि सत्तेनु। अविरोधवन्नु कल्पिसिकोंडु बागिलु तेरेदरे अनंतवाद गाळि बरुत्तदे। नन्न स्वंत जमीनु स्वंत मने एंदु तुंडरिसिकोंड गळिगेये अनंत संपत्तियिंद दूरवागुत्ताने। नन्न चिक्क मने सुट्टरे, बिद्दरे नन्न सर्वस्ववू होयितेंदु अळुत्तेने। आदरे हागेके हेळबेकु, अळबेकु? किरुकल्पने माडुवुदु, आमेले अळुवुदु! ई ऐनूरु रूपायि नन्नदु एंदरे सृष्टिय अपार संपत्तिनिंद ना दूरवादे। इवरिब्बरु नन्न तम्मंदिरु एंदाग असंख्य सोदररु दूरवादरु। इदर भास नमगिल्ल। मनुष्य एष्टु संकोच माडुत्ताने! मनुष्यन स्वार्थवे परार्थवागबेकु। व्यक्ति-समाजगळ सहकार हेगादीतेंब सकल सुंदर मार्गवन्नु गीते तोरिसुत्तदे। नालगे होट्टेगळ नडुवे एनु विरोध? होट्टेगे एष्टु बेको अष्टु अन्नवन्नु नालगे कोडबेकु। होट्टे साकु एंदोडने नालगे निल्लिसि बिडबेकु। होट्टे ओंदु संस्थे। नालगे ओंदु संस्थे। ई सर्व संस्थेगळिगे नानु साम्राट्। इवेल्ल संस्थेगळल्लू अद्वैत। एल्लिद तंदिरि ई हाळु विरोध? ओंदु देहदल्लि ई संस्थेगळ विरोधविल्लदे सहकार इरुवंते व्यक्ति-समाजगळू इरबेकु। समाजदल्लि ई सहकार बेळेयलेंदु गीते चित्तशुद्धि पूर्वकवाद यज्ञ दान तपगळन्नु माडलु हेळुत्तदे। आ कर्मदिंद व्यक्ति-समाज एरडर हितवू साधिसीतु।

यारदु यज्ञमय जीवनवो अवरु सर्वरिगू सेरिदवरु। तन्न मेले तायिगे प्रीति अदु प्रतियोब्ब हुडुगनिगू अनिसुत्तदे। अदे रीति यज्ञमयपुरुष नम्मवनेनिसुत्ताने। इडी लोकक्के अवनु बेकु। अंथ पुरुष तम्म प्राण, तम्म मित्र, सख अंदु अल्लरिगू अनिसुत्तदे।

“ इद्दरिरबेकिंथ पुरुष
लोकक्के बेकेनिसि मनुष ”

हीगे समर्थ रामदासरु हेळिदारे। इन्थ जीवन नडेसुव युक्तियन्नु गीते नमगे हेळिदे।

99. समर्पणेय मंत्र

यज्ञमय जीवन नडेसि, पुन· अदेल्लवन्नु ईश्वरार्पण माडि अंबुदु गीतेय संदेश। जीवन सेवामयवागदिद्दरे ईश्वरार्पणवेनु बंतु? आदरे सर्वजीवनवू सेवामयवागबेकेंदु हेळवुदु सुलभ, माडुवुदु कष्ट। अनेक जन्मगळेत्तिदमेले एनो स्वल्प साधिसीतु। ओंदुवेळे अल्ल कर्मवू सेवामयवादरू पूजामयवादंतल्ल। आदुदरिंद ओं तत् सत् मंत्रदिंद सर्व कर्मवन्नु ईश्वरार्पण माडबेकु।

सेवाकर्म संपूर्णवागि सेवामयवागुवुदु कठिण। परार्थदल्लि स्वार्थवू बंदु होगुत्तदे। केवल परार्थ संभवविल्ल। लेशमात्रवू स्वार्थ-विल्ल अन्नलु बरुवंतिल्ल। आदुदरिंद दिने दिने हेच्चु निस्वार्थ निष्काम सेवे नम्निदागलि अंदु इच्छिसुत्त नडेयबेकु। सेवे उत्तरोत्तर हेच्चु शुद्धवागलि अंबुदिद्दरे अल्ला क्रियेयन्नु ईश्वरनिगर्पिसु। ज्ञानदेवरु हेळिदंते--

'नामामृत सविदरो वैष्णवरु
जीवनकले साधिसिदरु योगिगळु'

नामामृतद सवि बेरे, जीवनद कले बेरे अल्ल। नामद आतरिक घोष – बाह्य जीवनद कले, अेरडरल्लू मेळवुंटु। योगि, वैष्णव इब्बरू ओंदे। परमेश्वरनिगे क्रियेयन्नु अर्पिसिदरे स्वार्थ, परार्थ, परमार्थ-गळु एकरूपवागुत्तवे। मोदलु नानु नीनु अेंबुदन्नु ओंदे माडबेकु। नानु नीनु सेरि नावु आदेवु। ईग नावु – अवरु अेंबुदन्नु ओंदु माडबेकु। मोदलु नन्न – ई सृष्टिय मेळ कूडबेकु। आमेले परमेश्वर-नोडने। इदन्ने ओं तत् सत् मंत्र सूचिसुत्तदे।

परमात्मनिगे अनंत नामगळिवे। अवेल्लवन्नू सेरिसि व्यासरु विष्णु सहस्रनाम रचिसिदारे। याव याव हेसरन्नु नावु कल्पिसबहुदो अवेल्लवू अदरल्लिदे। याव हेसरन्नु नेनेयबेको अदन्नु आ अर्थदल्लि सृष्टियोळगे नोडबेकु। तदनुरूपवागि बदुकन्नु कट्टबेकु। परमेश्वरन हेसरन्नु मनस्सिनल्लि नेनेदु, सृष्टियल्लि कंडु, नावु अदरंते आगबेकु। इदन्नु नानु त्रिपदा गायत्रि अेन्नुत्तेने। उदाहरणेगागि, परमेश्वरन दयामय नामवन्नु नेनेदरे, रहीम् इदे। दयाळु देवरन्नु सृष्टियल्लि कण्तेरेदु काणबेकु। प्रतियोंदु मगुविगू सेवेगोंदु तायियन्नु कोट्टिदाने परमेश्वर। मगु बदुकलु गाळि कोट्टिदाने। हीगे आ दयामय सृष्टि-योळगिन अनंत दयेयन्नु कंडु नम्म बदुकन्नु दयामयवागिसबेकु। भगवद्गीतेय कालदल्लि परमेश्वरनिगे इद्द प्रसिद्ध नामवन्नु गीते सूचिसिदे अदे ओं तत् सत्।

ओं अेंदरे हौदु, देवरु इद्दाने। ई इप्पत्तने शतमानदल्लू परमेश्वर इद्दाने। 'स एव अद्य स उ श्वः' अवने इंदु इद्दाने। अवने निन्ने इद्द। अवने नाळे इरुत्ताने। अवनु स्थिर। ई सृष्टियू स्थिर। नड्डुकट्टि साधिसलु नानु सिद्ध। नानु साधक, अवनु देव, ई सृष्टि पूजाद्रव्य – पूजा साधने। ई भावनेयिंद नानु तुंबिदागले ओं अेंब अक्षर गंटलोळगे इळिदते। अवनू नानू नन्न साधन अेल्लवू इदे अेंब भावनेयन्नु ओंकार मैगूडिसबेकु। यावाग नोडिदरू सूर्य किरणसहितने। यावागलू किरणगळन्नु बिट्टिल्ल। अवनु किरणगळन्नु मरेय। अदे रीति यावुदरल्लि नोडिदरू नम्म साधनेये काणबेकु। हागादरेने ओं अक्षरवन्नु नावु अरगिसिकोंडेवेन्नलु बंदीतु।

आमेले सत्। परमेश्वरनु सत् – अेंदरे शुभ, मंगळ। ई भावनेयन्नु मनदोळगे मूडिसि, अदर मांगल्यवन्नु सृष्टियल्लि अनुभविसि। नीरिन ओंदे सम मट्टवन्नु नोडि। नीरिनल्लि ओंदु कोड तुंबिको। ओंदु गळिगेयल्लि आ तग्गु तुंबुत्तदे। अेष्टु मगलते, अेष्टु प्रीति इद्दु! होळे तग्गन्नु सेरिसदु। अदन्नु तुंबलु धाविसुत्तदे। 'नदी वेगेन शुध्यति'। सृष्टिरूप नदि वेगदिंद शुद्धवागुत्तदे। सृष्टि अेंदे अेल्लवू शुभ, मंगळ। नन्न कर्मवू हागे आगलि। परमेश्वरन ई 'सत्' नामवन्नु अरगिसिकोळ्ळलु नम्म सर्व क्रियेयू निर्मलवू भक्तिमयवू आगबेकु। सोमरसवन्नु पवित्रकदिंद सोसिकोळ्ळुवंते नम्म सर्व कर्मगळन्नू नित्यवू परीक्षे माडि अदन्नु निर्दोषमयवागि माडबेकु।

उळिदुदु 'तत्'। तत् अंदरे अदु। एनो प्रत्येकवादुदु, ई सृष्टियिंद अलिप्तवादुदु। परमात्म ई सृष्टियिंद बेरे, अंदरे अलिप्त। सूर्य मूडिदरे कमल अरळुत्तदे, हक्कि हारुत्तवे, कत्तलु कळेयुत्तदे। सूर्य मात्र अेल्लो दूर इरुत्ताने। इदेल्ल परिणामदिंद प्रत्येकवागिरुत्ताने। निम्म कर्मदल्लि अनासक्तियिरबेकु, अलिप्ततेयन्नुंटुमाडबेकु अंदरे बाळिनल्लि आ 'तत्' इळिदु बंदंते।

हीगे 'ओं तत् सत्' अेंब वैदिक मंत्रवन्नु जपिसुत्त सर्व क्रियेयन्नु परमेश्वरार्पण माडुवुदन्नु गीते कलिसुत्तदे। सर्व कर्मवन्नु परमेश्वरनिगे अर्पिसुव विचार ओंबत्तनेय अध्यायदल्लिये बंदिदे। 'यत्करोषि यदश्नासि' अेंब श्लोकदल्लि इदन्ने हेळिदे। अदन्ने हदिनेळनेय अध्यायदल्लू हेळिदे। परमेश्वरनिगे अर्पिसुव क्रिये सात्विकवागबेकु। हागिद्दरेने अदु अर्पण योग्य। इदन्नु ओत्ति हेळिदारे इल्लि।

100. पापापहारि हरिनाम

इदेल्लवू निज। आदरे ओंदु प्रश्ने। 'ओं तत् सत्' मंत्रवन्नु पवित्रपुरुष अरगिसिकोंडानु। पापि एनु माडबेकु? पापिय बायल्लि शोभिसुवंथ हेसरु ओंदादरू इदेयो इल्लवो? ओं तत् सत् मंत्रदल्लि ई शक्तियिदे। असत्यदिंद सत्यद कडे ओय्युव शक्ति ईश्वरन याव हेसरिगादरू इदे पापदिंद निष्पापद कडे अदु ओय्यबल्लदु। बाळन्नु मेल्ल मेल्लने शुद्धिगोळिसबेकु। परमात्म खंडितवागि निनगे नेरवादानु। निन्न दौर्बल्यद समयदल्लि निन्न कै हिडिदानु।

ऒंदु कडे पुण्यमयवादरू अहंकारद बदुकु, इन्नॊंदु कडे पापमयवादरू नम्र जीवन। इवॆरडरल्लि ऒंदन्नु आरिसिको ऎंदरे बायिंद हेळलागदिद्दरू मनस्सिनल्लिये अंदुकॊंडेनु · 'याव पापदल्लि परमेश्वरन स्मरणॆयिद्देयो आ पापवे ननगिरलि'। पुण्यमय जीवनदिंद परमेश्वरन मरवु आगुवुदिद्दरे, अवनु नॆनपागुव पापमय जीवनवे इरलि ऎंदु नन्न मनस्सु हेळीतु। पापमय जीवनवन्नु नानु समर्थिसुत्तेनॆंदु इदर अर्थवल्ल। आदरे पुण्यद अहंकारदष्टु पापवल्ल, इन्न्य पाप!

'अंजिढेनय्य जाणतन. अड्ड वेड नारायण'

ऎंदु तुकारामरु हेळिदारे। आ दॊड्डस्तिके बेड। अदक्किंत पापि दुःखि आगिद्दरू लेसु। जाण मगु तायिगू दूरवे। जाणनल्लद मगुवन्नु तायि मडिलल्लि ऎत्तिकॊंडाळु। स्वावलंबि – पुण्यवंतनागुवुदु ननगॆ बेड। परमेश्वरावलंबियाद पापियागिरुवुदे ननगॆ प्रिय। नन्न पापवन्नु तॊळॆदुहाकियू उळियुवष्टिदॆ परमात्मन पावित्र्य। पाप माडदिरलु प्रयत्निसोण। अदु कैलागदिद्दरे नम्म हृदयवादरू गोळाडीतु। मनस्सु तळमळिसीतु। आमेले परमेश्वरन गुरुतु आदीतु। अवनु विनोद नोडुत्त निंतिदाने। अवनिगॆ हेळु · 'नानु पापि। अदक्के निन्न बागिलिगॆ बंदे'। भगवंतन स्मरणॆय अधिकार पुण्यवंतनिगिदॆ। एकॆंदरे अवनु पुण्यवंत। भगवंतन स्मरणॆय अधिकार पापिगू इदे। एकॆंदरे अवनु पापि!

(12-6-32)

अध्याय 18

101. अर्जुनन कट्टकडेय प्रश्ने

ईश्वरन कृपेयिंद नावु इंदु हदिनेंटने अध्यायक्के बंदिदेवे। क्षण-क्षणक्कू बदलुत्ता इरुव ई लोकदल्लि याव संकल्प ईडेरुवुदू देवर कैयल्ले इदे। सेरेमनेयल्लंतू हेज्जे हेज्जेगू अनिश्चिततॆ अनुभववागुत्तदे। इल्लि एनादरॊंदु केलस मॊदलिट्टु त्रयसुवुदु कष्ट। ई गीता-प्रवचन कॊनेगंडीतॆंदु प्रारंभदल्लि ऎणिसुवंतिरलिल्ल। देवर इच्छेयित्तु ऎंदु नावु कॊनेगे बंदु मुट्टिदेवे।

हदिनाल्कने अध्यायदल्लि सात्विक, राजस, तामस ऎंदु जीवनवन्नु, कर्मवन्नु मूरु बगेयागि विगडिसितु। अदरल्लि राजस तामसगळन्नु कित्तॊगॆदु सात्विकवन्नु स्वीकरिसबेकॆंदु हेळितु। आमेले हदिनेळने अध्यायदल्लि बेरॊंदु रीतियल्लि आ मूरु बगेयन्नु कंडेवु यज्ञ, दान, तप। ऒंदे शब्ददल्लि हेळबेकॆंदरे यज्ञवे जीवनद सार। यज्ञक्के उपयुक्तवाद आहारादि कर्म सात्विकविरबेकु। अदन्नु यज्ञरूप-दल्लि तॆगॆदुकॊळ्ळबेकु। यज्ञरूपवाद सात्विक कर्म सरि; उळिदुदेल्ल वर्ज्य ऎंब ध्वनि हदिनेळने अध्यायदल्लि केळिबंतु। ऒं तत् सत् मंत्रवन्नेके जपिसबेकॊ तिळियितु। ऒं ऎंदरे सातत्य, तत् ऎंदरे अलिप्ततॆ, सत् ऎंदरे सात्विकतॆ। इवु मूरू इद्दरेने आ साधने परमेश्वरनिगे अर्पिसलु योग्य। इदेल्ल प्रस्तापदिंद केलवु कर्म त्याज्य, केलवु कर्म अत्याज्य ऎंबुदु तिळियितु।

गीतेय समस्त बोधनेयन्नू नोडिदरे कर्मत्याग माडबेड अंदु अल्ल कडेयल्लू हेळलागिदे। गीते हेळुवुदु कर्मफल त्याग। कर्मवन्नु सतत माडबेकु, फलवन्नु बिडबेकु ; ई संदेश अल्लेल्लू इदे गीतेयल्लि। इदु ओंदु पक्ष। इन्नोंदु कडे केलवु कर्मगळन्नु बिडबेकु, केलवन्नु माडबेकु अंदु काणुत्तदे। आदुदरिंद कडेय अध्यायद आरंभदल्लि अर्जुन केळिदाने ' 'फलत्याग-पूर्वकवागि कर्म माडु अन्नुत्ती। मत्ते केलवन्नु अगत्यवागि बिडबेकु, केलवन्नु माडबेकु अन्नुत्ती। इवन्नु मेळगूडिसलु साध्यवे'? बाळिन निष्टु यावुदो स्पष्टवागलि अंदु ई प्रश्ने बंदिदे। फलत्यागद मर्म मनस्सिगे नाटलि अंदु। संन्यासवेंदु शास्त्र हेळुव धर्मदल्लि स्वरूपतः कर्मवन्नु बिडबेकागुत्तदे। कर्मद स्वरूप बिडबेकु। फलत्यागदल्लि कर्मद फल बिडबेकु। गीतेय फलत्यागदल्लि प्रत्यक्ष कर्म-त्यागवू अगत्यवे? इदु प्रश्ने। फलत्यागद ओरेगल्लिनमेले संन्यासदेनु उपयोग? संन्यासद मिति अल्लियवरेगे? संन्यास फलत्यागगळ अल्ले एनु? हेगे गोत्तु? इदु अर्जुनन प्रश्ने।

102. फलत्याग – सार्वभौम परीक्षे

इदक्के उत्तर हेळुत्त भगवंत ओंदु मातन्नु स्पष्टवागि हेळिद ' फलत्यागद ओरेगल्लु सार्वभौम वस्तु। फलत्यागद तत्ववन्नु सर्वत्रवू अन्वयिसबहुदु। सर्वकर्मद फलत्याग माडबेकेंब मातिगू राजस तामस कर्म त्यागमाडबेकेंबुदक्कू विरोधविल्ल। फलत्यागद युक्ति माडिदरे केलवु

कर्म तावागिये बिद्दु होगुत्तवे। अवुगळ स्वरूपवे अंथदु। फलत्याग-पूर्वक कर्म माडु अंदरे केलवु कर्मगळन्नु बिडु अंदु अर्थवागुत्तदे। फलत्यागपूर्वक कर्म माडिदरे हलवु कर्मगळ त्याग प्रत्यक्षवागि अदरल्लि बंदे तीरुत्तदे।

ई मातन्नु स्वल्प कण्णरळिसि नोडोण। फलत्यागपूर्वक माडिदाग काम्यकर्म, कामनेये बीजवाद कर्म, नाशवागि होयितु। फलत्यागद इदिरु काम्यकर्म, निषिद्ध कर्मगळु तलेयेत्ति निल्ललारवु। फलत्यागपूर्वक कर्मवेंदरे केवल कृत्रिम, तांत्रिक, यांत्रिक क्रियेयल्ल। ई ओरेगल्लिनिंदले यावुदन्नु माडबेकु, यावुदन्नु बिडबेकु अंबुदु तन्निंद ताने निर्धरवागुत्तदे। 'गीते फलत्यागपूर्वक कर्म माडेन्नुत्तदे। इंथदन्नु माडु अंदु हेळिल्ल' अंदारु। हागे अनिसीतु। आदरे अदु सरियल्ल। फलत्यागपूर्वक माडबेकु अंबुदरल्ले यावुदन्नु माडबेकु, यावुदन्नु बिडबेकु अंबुदु तिळिदु बरुत्तदे। हिंसात्मक कर्म, असत्यमय कर्म, चोर कर्म इवन्नु फलत्यागपूर्वक माडलु बरुवंतिल्ल। फलत्यागद ओरेगल्लिगे तिक्किदोडनेये ई कर्मगळु उरुळि बीळुत्तवे। रविय प्रभे हरडिदरे अल्लवू बेळकागि काणुत्तदे। आदरे कत्तलु बेळकागि कंडीते? अदु मायवागुत्तदे। निषिद्ध कर्म, काम्यकर्मगळ स्थितियू अदे रीति। अल्ल कर्मवन्नू फलत्यागद ओरेगल्लिगे उज्जि नोडबेकु। अनासक्ति-पूर्वक, फलापेक्षे लवलेशवू इल्लदे, कर्म माडलु नन्गे साध्यवे अंबुदन्नु मोदलु नोडबेकु। फलत्यागवे कर्म माडुवुदर ओरेगल्लु। आदुदरिंद, काम्यकर्म तनगे ताने त्याज्यवागुत्तदे। अदर सन्यासवे योग्य।

उळिदुदु शुद्ध सात्विक कर्म। अदन्नु अहंकार बिट्टु अनासक्त रीति-यल्लि माडबेकु। काम्यकर्मवन्नु त्यजिसुवुदे ऒंदु कर्म। फलत्यागद कत्तरियन्नू अल्लू आडिसबेकु। काम्यकर्म त्याग सहजवागबेकु।

हीगे मूरु संगति नोडिदेवु। मोदलु: माडबेकाद कर्म-वन्नु फलत्यागपूर्वक माडबेकु। ऎरडनेयदु: राजस-तामस कर्म, काम्य-निषिद्ध कर्मगळु फलत्यागद कत्तरि हिडिदरे तावे कत्तरिसि बीळुत्तवे। मूरनेयदु: माडिद त्यागवन्नु कत्तरिय बायिगे हिडिदु, इंतिष्टु त्याग माडिदे नानु ऎंब अहंकार हुट्टदंते माडबेकु।

राजस तामस कर्मवेके त्याज्य? अवु शुद्धवल्लवादुदरिंद। शुद्धवल्लदुदरिंद माडुववन मनस्सिगे आ कर्मलेप बळियुत्तदे। हेच्चु विचारमाडिदरे सात्विक कर्मवू सदोष ऎनिसुत्तदे। कर्मवॆंबुदरल्लेल्ल दोषविद्दे इदे। रैतन स्वधर्मवन्ने तेगेदुकोळ्ळि। अदु शुद्ध सात्विक क्रिये। ई यज्ञमय स्वधर्मरूप व्यवसायदल्लू हिंसेयिदे। उळुवाग बेसाय माडुवाग ऎष्टो जीवजंतु सायुत्तवे। बाविय बळि केसरादीतल्ल ऒंदु कल्लु चप्पडि हासुवाग ऎष्टो प्राणिगळु सायुत्तवे। बेळिग्गे बागिलु तेगेदु सूर्यन बेळकन्नु मनेयोळगे हरिसिदरे असंख्य जंतु सायुत्तवे। नावु शुद्धीकरणवॆंबुदु मारणक्रियेये। हीगे सात्विक स्वधर्म-रूप क्रियेयल्ले दोषविद्दरे हेगे माडबेकु?

नानु मोदलु हेळिद्दे: समस्त गुणगळू इन्नू विकासवागबेका-गिवे। ज्ञान, भक्ति, सेवे, अहिंसे, इवुगळ बिंदु मात्रवे अनुभव-वागिदे। सर्वानुभववू आगले आगिहोगिल्ल। अनुभव पडे पडेयुत्त

जगत्तु मुंबरियुत्तिदे। कृषि कर्मदल्लि हिंसेयिदे, अहिंसक जन अदन्नु माडबारदु अंब विचार मध्ययुगदल्लि हुट्टितु। अंथवरु व्यापार माडलि। धान्य बेळेयुवुदु पाप, मारुवुदु पापवल्ल। हीगे क्रियेयन्नु कैबिट्टरे हितवागदु। हागे कर्मसंकोच माड माडुत्त नडेदरे कडेगे आत्मनाश-वादीतु। कर्मवन्नु तप्पिसिकोळ्ळलु अेष्टेष्टु विचारमाडिदरे अष्टष्टु कर्मद जाल बेळेदीतु। निन्न ध्यानद व्यापारक्कागि यारादरू बेसाय माडबेको इल्लवो? अदरल्लि आगुव हिंसेगे नीनु पालुगारनल्लवे? हत्ति बेळेयुवुदु पापवादरे बेळेदुदन्नु मारुवुदू पापवे। हत्ति बेळेयुवुदु सदोषवेंदु अदन्नु कैबिडुवुदु बुद्धिदोष। अेल्ल कर्मगळन्नू बहिष्करिसि, ई कर्मबेड, आ कर्मबेड अेंदु यावुदन्नू माडदिरुवुदरल्लि दयाभावविल्ल। दये अल्लि अळिन्दिदे। चिगुरु तरिदरे गिड ओणगदु। इन्नू सोंपागि बेळेदीतु। क्रियासंकोच माडिदरे आत्मसंकोचवे आदीतु।

103. क्रियेयिंद बिडिसिकोळ्ळुव निज रीति

समस्त क्रियेयू दोषसहितवागिद्दरे अेल्ला क्रियेयन्नू एके बिड-बारदु? हीगिदे ई तोडकु। मोदले ओम्मे इदक्के उत्तर कोट्टागिदे। सर्व कर्मवन्नू त्यजिसुव कल्पनेयेनो बहळ सोगसु। बहळ मोहकर विचार। आदरे ई असंख्य कर्मवन्नु बिडुवुदु हेगे? राजस तामस कर्मवन्नु बिडुव रीति सात्विक कर्मक्कू अन्वयिसुत्तदेनु? हागादरे सदोषवाद सात्विक कर्मवन्नु तडेवुदु हेगे? ' सेंद्राय तक्षकाय स्वाहा ' अेंदाग इंद्रनंतू अमर, आदुदरिंद अवनू सायदे अवन जोतेगे तक्षकनू सायदे गट्टियागि उळिदानु। इदोंदु विचित्र। सात्विक कर्मदल्लि

पुण्यवू इदे, स्वल्प दोषवू इदे। स्वल्प दोषविदेयेंदु पुण्यवन्नु बलि कोट्टरे पुण्यक्रियेयेनु सायदु; अदक्के जिगटिदे। दोषक्रिये मात्र हेच्चादीतु। ई बगेय विवेकहीन त्यागदिंद पुण्यरूपद इंद्रनंनू सायुवुदिल्ल; सायबेकाद दोषरूप तक्षकनू सायुवुदिल्ल। हीगादरे अदन्नु त्यजिसुवुदु हेगे? बेक्कु हिंसे माडुत्तदेंदु अदन्नु ओडिसिदरे इलिगळु हिंसे माडियावु। हावु हिंसे माडुत्तदेंदु अदन्नु ओडिसिदरे होल्दल्लि नूरारु जंतुगळ हिंसे नडेदीतु। होल्दल्लि बेळे नाशवादरे साविरारु जन सत्तारु। अंते विवेकयुक्त त्याग बेकु।

मत्स्येंद्रनाथरु गोरखनाथरिगे हेळिदरु: 'ई हुडुगनन्नु मडि माडिसिकोंडु बा।' आत अवनन्नु चेन्नागि बंडेगे अप्पळिसि बेलिय-मेले हरविद। 'मडिमाडिसि तंदेया हुडुगनन्नु' एंदु मत्स्येंद्रनाथरु केळिदरु। शिष्य तानु माडिदुदन्नु हेळिद। हुडुगनिगे मडिमाडिसु-वुदु हीगेये? बट्टे मडिमाडुवुदू, मनुष्यरन्नु मडिमाडुवुदू ओंदे बगेयल्ल। अवेरडरल्लि भेदविदे। हागे राजस तामस कर्म त्यागक्कू सात्विक कर्म त्यागक्कू भेदविदे। सात्विक कर्मवन्नु बिडुव रीति बेरे।

विवेकहीन कर्मवेसगिदरे अदु हेडेमरळि कूतरू कूतीतु।

'त्यागद होट्टेलि भोगवु मोळेतरे
देवने नानु, गैवेनु एनु?'

अन्नुत्तारे तुकारामरु। अल्पवादुदोंदु त्यागमाडलु होदरे दोड्डदोंदु भोगवे एदेयमेले बंदु कूतुकोळ्ळुत्तदे। आग आ अल्पत्याग मिथ्ये-यागुत्तदे। सूक्ष्मवाद त्यागवन्नु पूर्णगोळिसलु दोड्ड दोड्ड इंद्रभवन

कट्टुत्तेवे। अदर बदलु चिक्क गुडिसले ओळितु। अदे साकु। लंगोटि तोट्टु सर्वविलासवन्नू सुत्तलू हरडिकोळ्ळुवुदक्किंत पैरणु अंगि लेसु। आदुदरिंद सात्विक कर्मगळ त्यागद रीतियन्नु प्रत्येकवागि हेळ्दिाने भगवंत। ऎल्ल सात्विक कर्मवन्नू माडबेकु, अदर फलवन्नु मात्र बिडबेकु। केलवु कर्म समूलवागि बिडतक्कवु। केलवक्के फल बिट्टरायितु। मैमेले होलसु बिद्दरे तोळेयलु साध्य। सहजवागिये मै बण्ण कप्पिद्दरे सुण्ण बळियलादीते? आ कप्पु हागे इरलि। अदन्नु नोडलेबेड। अदन्नु अमंगळवेन्नबेड।

ओब्ब मनुष्यनिद्द। अवनिगे तन्न मने अमंगळवेनिसि अदन्नु बिट्टु हळ्ळिगे होद। अल्लू अवनिगे होलसेनिसितु। अडविगे होद। अल्लॊंदु माविनमरद केळगे कुळित। मेलिंद पक्षियॊंदु अवन तलेयमेले हेसिगे माडितु। ई अडवियू अमंगळवॆंदु होळॆगे होगि कुळित। अल्लि दॊड्ड मीनु चिक्क मीनन्नु तिन्नुत्तित्तु। इदन्नु नोडियंतू अवनिगे असह्यवायितु। सृष्टियेल्लवू अमंगळ, इल्लिरदे प्राणबिडुवुदे लेसु ऎंदु चिंते माडिद। आगॊब्ब गृहस्थ बंदु हीगेके प्राण बिडुत्ती ऎंद। 'ई जगत्तु अमंगळवादुदरिंद'। 'निन्न अमेध्यमय शरीर, अदर कॊळ्ळु, इल्लि सुट्टरे ऎष्टु होलसादीतु। नावेल्लि होगोण? ऒंदु कूदलु सुट्टरे ऎष्टो होलसु नात। निन्न इडी कॊब्बु सुडबेकल्ल। ऎष्टु दुर्गंधवादीतो योचिसु' ऎंद आ गृहस्थ। अदक्के इवनु सिट्टागि 'ई लोकदल्लि बदुकलिक्कू दारियिल्ल, सायलिक्कू इल्ल। एनु माडबेकु?' ऎंद।

अमंगळ अमंगळ अँदु ॲल्लवन्नु कैबिट्टरे नडेयदु। चिक्क कर्म-वन्नु बिट्टरे दोड्ड गुड्डवे बंदु कुळितीतु। होरगिनिंद बिट्टरे बिडुवंथदल्ल कर्मद स्वभाव। ओघदल्लि सहज प्राप्तवाद कर्मद विरुद्ध होगलु तन्न शक्तियन्नु उपयोगिसिदरे, प्रवाहक्के इदिरागि होगवयसिदरे, कडेगे अवनु सोतु प्रवाहदल्लि कोच्चिहोदानु। प्रवाहक्के अनुकूलवाद क्रियेमाडि तन्न तारणोपाय हुडुकबेकु। अदरिंद मनद मेलिन लेप कडमेयादीतु। चित्त शुद्धवादीतु। मुंदे क्रिये ताने सडलिबिद्दीतु। कर्मत्यागविल्लदेये क्रिये जारीतु। कर्मवंतू बिडुवुदे इल्ल। क्रिये बिद्दुहोदीतु।

क्रिये बेरे, कर्म बेरे। भेदविदे। उदाहरणार्थ ऒंदु कडे बहळ गद्दलविदे, अदन्नु निल्लिसबेकु। ऒब्ब सिपायि बंदु 'निल्लिसि' अँदु ताने गट्टियागि कूगुत्ताने। अल्लिय मातिन गद्दल निल्लिसलु गट्टियागि कूगुव तीव्र कर्मवन्नु अवनु माडबेकायितु। इन्नोब्ब बंदु निंतु सुम्मने बोट्टुमाडियानु। अष्टक्के जन सुम्मनादारु। मूरनेयवनु सुम्मने अल्लि बंदु काणिसिकॊंडरायितु। ऒब्बनदु तीव्रक्रिये, इन्नोब्बनदु सौम्यक्रिये, मूरनेयवनदु सूक्ष्मक्रिये। क्रिये कडमेयागुत्त बंतु। आदरे जनरन्नु सुम्मनागिसुव कर्म मात्र सम। चित्तशुद्धि हेच्चाद हागेल्ल क्रियेय तीव्रते कडमेयागुत्तदे। तीव्रदिंद सौम्य, सौम्यदिंद सूक्ष्म, सूक्ष्मदिंद शून्य—आदीतु। कर्म बेरे, क्रिये बेरे। कर्तनिगे इष्ट-वादुदे कर्म। इदु अदर व्याख्ये। कर्मक्के प्रथमा द्वितीया विभक्ति इदे। क्रियेगे ऒंदु स्वतंत्र क्रियापदवे बेकु। कर्म बेरे, क्रिये बेरे अँबुदन्नु तिळिदुको। सिट्टु बंदरे ऒब्ब बहळ कूगुत्ताने, इन्नोब्ब

माते आड । ज्ञानि लेशमात्रवू क्रिये माड । आदरे अनंत कर्म माडुत्ताने । अवन अस्तित्ववे अपार लोकसंग्रह माडुत्तदे । ज्ञानि इद्दरे साकु । अवन कैकालु केलस माडदिद्दरू अवनु केलस माडुत्ताने । क्रिये सूक्ष्मवादष्टू कर्म हेच्चागुत्तदे । विचारद ई धारे मुंबरिदरे, चित्त परिपूर्ण शुद्धवादरे, कडेगे क्रिये शून्यवागि अनंत कर्म नडेयुत्तलिद्दीतु एन्नबहुदु । मोदलु तीव्र, तीव्रदिंद सौम्य, सौम्यदिंद सूक्ष्म, सूक्ष्मदिंद शून्य । हीगे ई ओघदिंदले क्रियाशून्यत्व लभिसीतु । आमेले अनंत कर्म तानागिये आदीतु ।

मेले मेले कर्मवन्नु दूर माडिदरे दूरवागदु । निष्कामतापूर्वकवागि माडुत्त मेल्लमेल्लने अदर अनुभव बंदीतु । ब्रौनिंग् कवि --'मोसगार पोप्' एंब कविते बरेदिदाने । आ पोपनिगे ओब्ब हेळिद--'नीनु नटने माडुत्तीयेके ? ई कपनियेके ? वेषवेल्ल एके ? ई गंभीर मुद्रे एके ?' आग अवनु हेळिद --'नानेके माडुत्तेनो केळु । ई नाटक माडमाडुत्त तिळियदेये श्रद्धास्पर्शवागुव संभवविदे' । अंते निष्कामक्रिये माडुत्तिरबेकु । मेल्लमेल्लने निष्क्रियत्व मैगूडीतु ।

104. साधकनिगे स्वधर्मद उपाय

सारांश -- राजस तामस कर्मगळन्नु पूर्तियागि बिडबेकु । सात्विक कर्म माडबेकु । सहज प्रसवाद सात्विक कर्म सदोषवादरू अदन्नु बिडबारदु एंब विवेकवेकु । दोषविद्दरे इरलि । अदन्नु निवारिसहोदरे इन्नू असंख्य दोष बंदु बिद्दावु । निनगे मोंडमूगु इद्दरे हागे इरलि । अदन्नु कुयिदु अंदवागि माडबयसिदरे मत्तष्टु विकार-

वादीतु । इद्दे चेन्नु । सदोपवादरू सात्विक कर्म ओघप्राप्तवादुदरिंद बिडबारदु । अदन्नु माडबेकु । आदरे अदर फलवन्नु बिडबेकु ।

इन्नोंदु मातु हेळबेकु । ओघप्राप्तवल्लद कर्मवन्नु ऎष्टु चेन्नागि माडबल्ले ऎंदु निनगनिसिदरू अदन्नु माडबेड । ओघदल्लि बंदुदष्टे साकु । प्रयासपट्टु मत्तोंदन्नु मैमेले हाकिकोळ्ळबेड । पाटाटोपमाडि नडसबेकाद कर्म ऎष्टु चेंदविद्दरू दूरविरलि । अदर मोह बेड । ओघप्राप्तवादुदरल्लिये फलत्याग संभव । ई कर्म लेसु, आ कर्म लेसु ऎंब लोभदिंद ऎल्ल कडेगे हाराडिदरे फलत्यागवेल्लि? बाळु पूरा छिद्र-छिद्रवागि होदीतु । फलागेयिंदले आदरू परधर्मरूप कर्म माडिदरे फल कैगे सिगदु । बाळिनल्लि स्थिरते कैगूडदु । आ कर्मद आसक्ति चित्तद मेले अमरीतु । सात्विक कर्मद आसेयू सह कूडदु । अदन्नु दूरमाडबेकु । नाना बगेय सात्विक कर्मगळन्नु माडलु बयसिदरे अदरल्लू राजसते, तामसते हुट्टुत्तवे । आदुदरिंद निनगे ओघप्राप्तवागि बंद सात्विक कर्मवन्नष्टे नीनु माडु ।

स्वधर्मदल्लि स्वदेशिधर्म, स्वजातिधर्म, स्वकालीन धर्मगळु बरुत्तवे । ई मूररिंद स्वधर्मवागुत्तदे । नन्न वृत्तिगे यावुदु अनुकूल, अनुरूप; याव कर्तव्य ननगे प्राप्तवागिदे, ई ऎल्ल स्वधर्मवू ताने तिळियुत्तदे । निन्नल्लि निन्न-तनवेनो इदे ऎंतले नीनु नीनागिदीये । प्रतियोब्बरल्लू एनो विशेषविरुत्तदे । कुरिय विकास कुरियागिरुवुदरल्ले । कुरियागिद्दे अदु विकासमाडिकोळ्ळबेकु । कुरि तानु हसुवागुत्तेने ऎंदरे साध्यविल्ल । स्वयंप्राप्तवाद कुरितनवन्नु त्यागमाडलिक्के बारदु ।

अदक्कागि देहवन्ने बिडबेकादीतु। होस धर्मक्कागि होस जन्मवन्ने तळेयबेकादीतु। ई जन्मदल्लि कुरितनवे पवित्र। अत्तु-कप्पेय कते इदेयल्ल। कप्पेय मैयुब्बरक्के मितियिदे। अदु अत्तिनते आगबेकेंदरे सत्तीतु। मत्तोंदर रूपवन्नु नकलु माडुवुदु योग्यवल्ल। अंतेये परधर्म भयावहवेंदु हेळिदे।

स्वधर्मदल्लू अरडु विभाग। ओंदु बदलागुव विभाग, इन्नोंदु बदलागदुदु। इवोत्तिन नानु नाळे इल्ल। नाळेयदु नाडिद्दिल्ल। दिनवू बदलागुत्तले इदेने। अळेय मगुवागिद्दाग नन्न स्वधर्म केवल संवर्धन। तारुण्यदल्लि नन्नोळगे कर्मशक्ति तुंबिरुवुदरिंद समाजसेवे। प्रौडदशेयल्लि नन्न ज्ञानद लाभ इतररिगादीतु। हीगे स्वधर्म बदलुत्तदे। बदलागदुदू इदे। इदक्के पूर्वकालद शास्त्रसंज्ञे कोट्टरे— मनुष्यनिगे वर्णधर्मवू इदे, आश्रम धर्मवू इदे। वर्णधर्म बदलागदु। आश्रमधर्म बदलागुत्तदे। हेगेंदरे नानु ब्रह्मचारित्ववन्नु सार्थकगोळिसि गृहस्थनागुत्तेने। मुंदे वानप्रस्थ, संन्यासि आगुत्तेने। आश्रमधर्म हीगे बदलादरू वर्णधर्म बदलागदु। नन्न नैसर्गिक मर्यादे हेगे तोलगीतु? आ प्रयत्न मिथ्ये। निन्नोळगिन निन्नतनवन्नु बिडलु आगदु। ई कल्पनेय योजने वर्णधर्म। वर्णधर्मद कल्पने सवि। आदरे ई वर्णधर्म अष्टु दृढवे? कुरिगे कुरितन, हसुविगे हसुतन इद्दंते ब्राह्मणन ब्राह्मणत्व, क्षत्रियन क्षत्रियत्व इदेये? वर्णधर्म अष्टु गट्टियल्ल; ओप्पुत्तेने। ई मातन्नु स्वारस्यवागि अर्थ माडबेकु। सामाजिक व्यवस्थेगागि माडिद युक्ति वर्णधर्म एंदुकोंडरे अदरल्लि अपवाद सिद्ध।

अपवादवन्नु लेक्क हिडिदे नडेयबेकु । अदन्नु लेक्क हिडिदिदे गीते । ई एरडू बगेय धर्मवन्नु कंडुकोंडु अवांतर धर्म एंप्टे अंद, आकर्षक आगिद्दरू अदन्नु बिड्डु एंदिदे ।

105. फलत्यागद फलितार्थ

फलत्यागद कल्पनेयन्नु अरळिसुत्त बंदिदेवल्ल, अदरल्लि मुंदे हीगे बंतु अर्थ :

1. राजस तामस कर्मगळ सर्वस्वीत्याग ।
2. आ त्यागद फलत्याग । अदरल्ल अहंकार कूडदु ।
3. सात्विक कर्मवन्नु स्वरूपतः त्यागमाडदे फलतः त्यागमाडबेकु ।
4. फलत्यागपूर्वक माडबेकाद सात्विक कर्मवन्नु अदु सदोषवागिद्दरू माडबेकु ।
5. सतत फलत्यागपूर्वक सात्विक कर्मवन्नु माडुत्त चित्तशुद्धियादीतु । तीव्रदिंद सौम्य, सौम्यदिंद सूक्ष्म, सूक्ष्मदिंद शून्य । हीगे सर्व क्रियेयू सडलिविदीतु ।
6. क्रिये जारीतु, कर्म-लोकसंग्रह कर्म-नडदे इद्दीतु ।
7. ओघप्रासवाद सात्विक कर्मवन्ने माडबेकु । सहजप्रासवल्लदुदु एंप्टे सोगसादरू अदन्नु दूर इडबेकु । अदर मोह बेड ।
8. सहजप्रास स्वधर्मदल्ल एरडु बगे · बदलुवुदु, बदलागदुदु । वर्णधर्म बदलागदु । आश्रम धर्म बदलुत्तदे ।

बदलुव स्वधर्म बदलागुत्त इरबेकु। अदरिंद प्रकृति विशुद्धवागुत्तदे।

प्रकृति सदा हरियुत्तिरबेकु। होळे हरियदे मलवादरे दुर्गंध वरुत्तदे। आश्रम धर्मवू हीगेये। मनुष्य मोदमोदलु कुटुंबवन्नु स्वीकरिसुत्ताने। तन्न स्वंत विकासक्कागि कुटुंबद बंधनवन्नु तनगे तोडिसिकोळ्ळुत्ताने। अदरल्लि बहुविध अनुभव आगुत्तदे। आदरे कुटुंबदल्ले स्थिरवागि नेट्टुकोंडु कुळितरे विनाशवे। मोदलु धर्मवागिद्द कुटुंब जीवन आमेले अधर्मवादीतु। एकेंदरे, आ धर्म बंधनवायितु। बदलिसबेकाद धर्मवन्नु आसक्तिय देसेयिंद बिडदिद्दरे परिणाम भयानकवादीतु। ओळ्ळेय वस्तुविनल्लू आसक्ति बेड। आसक्तियिंद घोर अनर्थ। श्वाशकोशदोळक्के तप्पियादरू ओंदु क्षयक्रिमि होगलि, इडी बदुके बाडिहोगुत्तदे। सात्विक कर्मक्के मेल्लने आसक्तिय हुळु हिडिदरे स्वधर्म हळसुत्तदे। आ सात्विक स्वधर्मदल्लि राजस-तामसद वासने बंदीतु। कुटुंब बदलागुव धर्म। यथा समयदल्लि अदन्नु बिड-बेकु। राष्ट्रधर्मवू हागेये। राष्ट्रधर्मदल्लि आसक्ति हुट्टिदरे, नम्म राष्ट्रवन्नष्टु नोडिदरायितु एंदुकोंडरे, आ राष्ट्रभक्ति भयप्रद। अंथद-रल्लि आत्मविकास निंतीतु। चित्तदल्लि आसक्ति तुंबि भारवागि अधःपातवादीतु।

106. साधनेय पराकाष्ठेये सिद्धि

सारांशविदु : जीवनद फलित कैगे सिगबेकेंदिद्दरे फलत्यागद चिंतामणियन्नु कैगे तेगेदुको। अदु निनगे दारि तोरीतु। फलत्यागद

*

तत्व निन्न स्वंतद मितियन्नु हेळुत्तदे। ई अळतेगोलु वळियल्लिद्दरे याव कर्म माडबेकु, यावुदन्नु माडबारदु, यावुदन्नु यावाग बदलिसबेकु, ऎल्लवू तिळियुत्तदे। इरलि, विचारक्कागि नोडोण : कट्टकडेगे संपूर्ण क्रिये सडलि बीळुत्तदल्ल, आ स्थितियन्नादरू लक्ष्यदल्लिडबहुदो साधक ? क्रिये नडेयदे ज्ञानिय कैयिंद कर्म आगुत्तिद्दीतु। ई ज्ञानिय स्थितिय-कडे साधक नोडुत्तिरबेडवे ?

कूडदु। इल्लि फलत्यागद परीक्षेयागबेकादुदु। नमगे बेकादुदु नावु गुरियिडदेये नमगे सिगुत्तदे। अष्टु सुंदर नम्म जीवन! जीवनद सर्वश्रेष्ठ फलितवेंदरे मोक्ष। मोक्षवेंदरे अकर्मावस्थे। अदक्कू आसे बेड। अदु नमगे तिळियदंतेये बरुत्तदे। हठात्तागि ऎरडु गंटे ऐदु निमिषक्के सरियागि बरुवंथदल्ल संन्यास। अदु यांत्रिकवल्ल। यावाग निन्न बाळिनल्लि अदु मूडीतो, हेगे अरळीतो निनगे तिळियलागदु। निनगेके मोक्षद चिंते ? बिडु।

'ननगी भक्तिये साकु। मोक्ष, आ अंतिम फल, ननगे बेड' ऎन्नुत्ताने भक्त। मुक्ति ऒंदु बगेय भुक्तिये। मोक्षवेंदरे ऒंदु बगेय भोग। अदू ऒंदु फल। ई मोक्ष फलदमेलू फलत्यागद कत्तरियाडिसु। अदरिंद मोक्षवेनु तुंडागदु। कत्तरिये मुरिदीतु। फल मत्तष्टु निश्चयवादीतु। मोक्षद आसे बिट्टरे, आगले नमगे तिळियदंते मोक्षद कडे कालु होवितु। तन्मयतेयिंद साधने नडेसु। मोक्षद मातु मरेतेहोगलि। अदे निन्नन्नु हुडुकिकॊंडु बंदु इदिरिगे निल्ललि। साधनेयल्लिये साधक बेरेतु होगबेकु। 'मा ते संगोस्त्व-

कर्मणि'। अकर्मदशेय, मोक्षद आसक्ति बेड एंदु भगवंत मोदले हेळिदाने। मत्ते कोनेगे हेळिदे: 'अहं त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः'—मोक्ष कोडलु नानु समर्थ। निनगेके चिंते? नीनु साधनेय चिंते माडु। मोक्षवन्नु मरेतरे साधने उत्कृष्टवादीतु, मोक्षवे मोहिसि निन्न बळिगे बंदीतु। मोक्ष-निरपेक्ष वृत्तियिंद साधनेयल्लि तल्लीननादवन कुत्तिगेगे मोक्षलक्ष्मि माले हाकुत्ताळे।

साधने पराकाष्ठवादल्लि सिद्धि कैमुगिदु निंतिरुत्तदे। मनेगे होगबेकादवनु 'मने मने' एंदु जपिसुत्त कुळितल्ले कुळितिद्दरे, अडवियल्ले इरबेकादीतु। मनेय नेनपिट्टु दारियल्लि विश्रांति पडेदानु। कडेगे विश्रांति पडेयदे नडेदानु। नडेदरे मने बंदीतु। मोक्षद नेनपिनिंद नन्न उद्योगदल्लि, नन्न साधनेयल्लि शिथिलते बंदु मोक्ष दूरवादीतु। मोक्षवन्नु मरेतु सततसाधनेयन्नु प्रारंभिसुवुदे मोक्षवन्नु पडेव उपाय। अकर्म स्थिति, विश्रांतिगळ हव्यासवे बेड। साधनेयन्ने प्रीतिसु। तप्पदे मोक्ष दोरेतीतु। उत्तर उत्तर एंदु ओदरिदरे लेक्कद उत्तर बारदु। ननगे गोत्तिरुव रीतियल्लि ओंदोंदु हेज्जेयागि माडिदरे उत्तर बंदीतु। आ रीति एल्लि मुगिदरे अल्ले उत्तर। मुगियुव मोदले हेगे मुगिसबेकु? रीतिगे मोदले उत्तरवे? साधकावस्थेयल्ले सिद्धावस्थे हेगे बंदीतु? नीरोळगे उसिरु कट्टिदाग दडदल्लिरुव बाळेयहण्णन्नु नोडुत्तिद्दरे आदीते? आग ओंदोंदे कै बीसि मुंदे सागुवुदरल्ले सर्व लक्ष्यवू इरबेकु, सर्व शक्तियू विनियोगवागबेकु। साधनेयन्नु मुगिसु, समुद्रवन्नु दाटु। मोक्ष तानागिये बंदीतु।

107. सिद्धपुरुषन त्रिविध भूमिके

ज्ञानिय कट्टकडेय अवस्थेयल्लि अेल्ल क्रियेयू सडलि बीळुत्तदे, ज्ञानरूपवागुत्तदे। हागेंदरे ई अंतिमस्थितियल्लि क्रियेये इल्लवेंदल्ल। अवनिंद क्रिये आदीतु, आगदिद्दीतु। ई अंतिमदशे अत्यंत रमणीयवू उदात्तवू आगिदे। ई अवस्थेयल्लि एनेनु आगुत्तदेयो अदर चिंते अवनिगिल्ल। आगुवुदेल्ल शुभवे आदीतु। सरिये आदीतु। साधनेय पराकाष्ठदशेयल्लिदाने अवनु। अल्लि अेल्ल कर्मगळन्नु माडियू अवनु एनू माड। संहार माडियू संहारमाड। कल्याणवेसगियू कल्याणवेसग।

ई अंतिम मोक्षावस्थे अेंदरे साधकन साधनेय पराकाष्ठे। हागेंदरे साधकन साधनेय सहजावस्थे। नानु माडुत्तेने अेंब कल्पनेये इल्लिल्ल। ई देसेयन्नु साधकन साधनेय अ-नैतिकते अेंदेनु। सिद्धावस्थे नैतिकवल्ल। अेळेय मगु निज हेळुत्तदे। अदु नैतिकवल्ल। अदक्के सुळ्ळेंबुदे तिळियदु। सुळ्ळु तिळिदिद्दु निजवन्नु हेळिदरे नैतिक कर्मवादीतु। सिद्धावस्थेयल्लि असत्य वस्तुवे इरदु। केवल सत्य। अंते अल्लि नीतियिल्ल। निषिद्धवादुदु यावुदू अल्लि सुळिदाडदु। केळबारदुदु किवियोळगे होगुवुदे इल्ल। नोडबारदुदन्नु कण्णु नोडले नोडदु। एनु आगबेकागिदेयो अदे कैयिंद आगुत्तदे। अदन्नु माडबेकागुवुदिल्ल। यावुदन्नु बिडबेको अदन्नु बिडबेकागुवुदिल्ल। ताने बिट्टुहोगुत्तदे। हीगे इदु नीतिशून्य अवस्थे। ई साधनेय पराकाष्ठे, साधनेय सहजावस्थे अथवा अनैतिकते, अथवा अतिनैतिकते अेन्नि; ई अतिनैतिकते नीतिय परमोत्कर्ष। अतिनैतिकते अेंब शब्द

ननगे रुचिसितु । ई दशेयन्नु सात्विक साधनेय निःसत्वते अेन्नबहुदु ।

ई स्थितियन्नु वर्णिसुवुदु हेगे? ग्रहण हिडिव मोदलु अदर झळकु हिडिदंते देहपातवादमेले बरुव मोक्षद झळ देहपातक्के मोदले प्रारंभवागुत्तदे। देहस्थितियल्लिये भावि मोक्षस्थितिय अनुभव बरतोडगुत्तदे। इंथ स्थितियन्नु वर्णिसलु नालगे तोदलुत्तदे। इन्थवनु अेष्टु हिंसे माडिदरू अवनु हिंसे माडिदंतल्ल। अवन क्रियेगे ओरेगल्लावुदु, अळतेगोलेल्लि? अवनु एने माडलि अदेल्लवू सात्विककर्मवे आदीतु। अेल्ल क्रियेयू कळचिबिद्दरू अवनु सर्वविश्वद लोकसंग्रह माडुत्ताने। एनु भाषे बळसबेको अर्थवागदु।

ई अंतिम अवस्थेयल्लि मूरु भाव इरुत्तवे। ओदु वामदेवन स्थिति। अवर प्रसिद्ध उद्गारवे इदेयल्ल: 'ई विश्वदल्लि एनेनिदेयो अवेल्लवू नानु।' ज्ञानि निरहंकारि। अवन देहाभिमान कळेदिरुत्तदे। क्रियेयेल्लवू कळचिबीळुत्तदे। आग अवनिगोंदु भावावस्थे प्राप्तवागुत्तदे। आ अवस्थे ओंदे जन्मदल्लि लभिसदु। भावावस्थेयेंदरे क्रियावस्थेयल्ल। भावनेय उत्कटतेय अवस्थे। ई भावावस्थेयन्नु अल्प प्रमाणदल्लि नावेल्लरू अनुभविसुत्तेवे। मगुविन दोषदिंद तायि दोषियागुत्ताळे। सुखदिंद गुणियागुत्ताळे। मगुविन दुःखदिंद दुःखियागुत्ताळे। सुखदिंद सुखियागुत्ताळे। तायिय ई भावावस्थे मगुविन पूर्ति। मगुविन दोषवन्नु तानु स्वतः माडदिद्दरू अनुभविसुत्ताळे। ई भावनेय उत्कटतेयिंद ज्ञानि सर्वजगत्तिन दोषवन्नु तानु अनुभविसुत्ताने।

मूरु लोकद पापदिंद अवनु पापियागुत्ताने ; पुण्यदिंद पुण्यवंत-नागुत्ताने । इष्टादरू ई मूरु लोकद पुण्य पापगळु अवनन्नु स्पर्शिस-लारवु । रुद्रसूक्तदल्लि ऋषि हेळुत्तुदिल्लवे : "यवाश्च मे तिलाश्च मे गोधूमाश्च मे ।" ननगे जवेगोधि कोड्डु, एळ्ळु कोड्डु, गोधि कोड्डु अंदु बेड्डुत्ताने । आ ऋषिय होट्टेयादरू एष्टिरबहुदु ? अवनु बेडिदुदु गेणु होट्टेगागियल्ल । अवन आत्म विश्वाकार तळेदु ई मातु हेळुत्तिदे । इदन्नु नानु वैदिक विश्वात्मभाव एन्नुतेने । वेदगळल्लि ई भावनेय परमोत्कर्ष काणबरुत्तदे । गुजरातिनल्लि संत नरसी मेथा कीर्तनेमाडुवाग 'देवरे, नानेनु पाप माडिदे — कीर्तने माडुवाग निद्दे बरुत्तदे ?' अंदु केळिदाने । नरसी मेथागे निद्दे बरुत्तित्ते ? केळुववरिगे बरु-त्तित्तु । आदरे अवरोडने एकरूपवागि मेथा केळुत्ताने । इदु मेथाविन भावावस्थे । ज्ञानिय भावावस्थेये हीगे । इदरल्लि सर्व पाप-पुण्यवू अवन कैयिंदले आगुत्तिदेयेंदु निनगे कंडीतु । अवनू हागेये अंदानु । ऋषि हेळिदनल्ल – 'माडबारद केलसगळन्नु एष्टो माडिदेने, माडु-त्तिदेने, मुंदेयू माडियेनु ।' ई भावावस्थे प्राप्तवादरे आत्म हक्कियंते हारुत्तदे । अदु पार्थिवतेयन्नु दाटि अत्तकडे होगुत्तदे ।

ई भावावस्थेयिद्दंते ज्ञानिगे क्रियावस्थेयू ओंदु इदे । स्वभावतः ज्ञानि एनु माडियानु ? अवनु माडिदुदेल्ल सात्विकवे आगिद्दीतु । इन्नू नरदेहद एल्लेकट्टु इरुवुदरिंद अवन इडी देह, सर्वेंद्रियगळु सात्विकवादुदरिंद अवन सर्व क्रियेयू सात्विकवागिये इद्दावु । व्यवहारद दृष्टियिंद नोडिदरे अवन नडतेयल्लि सात्विकतेय पराकाष्ठे कंडुबंदीतु ।

आदरे विश्वात्म दृष्टियिंद नोडिदरे मूरु लोकद पाप पुण्यगळन्नु अवने माडुवंते। इष्टिद्दरू अवनु अलिप्त। एकेंदरे, ई अंठिवंद मैयन्नु अवनु सुलिदु बिसुटिदाने। क्षुद्र देहवन्नु बिसुटागले अवनु विश्वरूपि।

भावावस्थे क्रियावस्थेगळल्लदे मूरनेयदू ओंदु इदे ज्ञानिगे: ज्ञानावस्थे। इदरल्लि अवनु पापवन्नू सैरिस, पुण्यवन्नू सैरिस। अेल्ल-वन्नू गुडिगुडिसि बिसाडुत्ताने। मूरु लोकक्कू बेंकियिट्टु सुडल्लु अवनु सिद्ध। ओंदादरू केलसवन्नु तन्न मैमेले तेगेदुकोळ्ळलु अवनु सिद्ध-नल्ल। अदर स्पर्शवे अवनिगे सहिसदु। हीगे ई मूरु अवस्थे ज्ञानिय मोक्षदशेयल्लि साधनेय पराकाष्ठदशेयल्लि संभविसुत्तवे।

ई अक्रियावस्थेय अंतिमदशेयन्नु मैगोगिसिकोळ्ळुवुदु हेगे? नावु माडुव कर्मगळ कर्तृत्ववन्नु नावु ग्रहिसबारदु। हीगे अभ्यास-माडबेकु। नानु केवल निमित्तमात्र। कर्मद कर्तृत्व नन्नदल्ल अेंदु मनन-माडबेकु। ई अकर्तृत्व वादवन्नु नम्रतेयिंद स्वीकरिसबेकु। आदरे संपूर्ण कर्तृत्व होगुवुदिल्ल। मेल्लमेल्लने ई भावने विकासवादीतु। नानु केवल तुच्छ, अवन कैयोळगिन गोंबे, अवनु नन्नन्नु कुणिसुत्तिदाने अेंदु प्रारंभदल्लि अनिसलि। आमेले इदेल्लवन्नू माडि – इदेल्लवू ई देहद्दु, ननगे अदर स्पर्शवे इल्ल, ई अेल्ल क्रियेयू ई मृतदेहद्दु, नानु ई मृतदेहवल्ल, नानु शववल्ल शिव, हीगे भाविसुत्ता होगु। देहद लेप-दिंद लेशमात्रवू लिप्तनागबेड। देहद संबंधवे इल्लवेंबंतादरे ज्ञानावस्थे बंदीतु। आ अवस्थेयल्लि मेले हेळिद मूरु अवस्थे: क्रियावस्थे: अदरल्लि अत्यंत निर्मल, आदर्श क्रिये अवनिंद आदीतु; भावावस्थे:

अदरल्लि मूरु लोकद सर्व पाप पुण्यवू अवनदु। आदरे अवनिगदर स्पर्श लेशमात्रवू इल्ल; ज्ञानावस्थे: इदरल्लि तिलमात्रवू कर्म बळि सुळियबारदु। सर्व कर्मवू भस्मसात् आदीतु। ई मूरु अवस्थेगळ मूलक ज्ञानिय वर्णने माडबहुदु।

108. नीने....नीने....नीने!

इष्टु हेळि अर्जुननिगे भगवंत हेळिद: 'अर्जुन, नानु हेळिदुदन्नेल्ल सरियागि केळिदेया? ईग पूर्ण विचार माडि निनगे तिळिदहागे माडु।' भगवंत दोड्डस्तिकेयिंद अर्जुननिगे स्वातंत्र्य नीडिद। भगवद्गीतेय विशेष इदु। आदरे भगवंतनिगे मत्ते कळवळवायितु। नीडिद इच्छास्वातंत्र्यवन्नु मत्ते हिंतेगेदुकोंड। 'अर्जुन, निन्न साधने, निन्न इच्छेगळन्नु बिडु। ननगे शरणु बा, साकु' अंद। तनगे शरणु बारेंदु, कोट्ट इच्छास्वातंत्र्यवन्नु मरळि कित्तुकोंड। इदर अर्थ हीगे: 'निनगे स्वातंत्र्यद इच्छेये आगदिरलि। स्वंत इच्छेयन्नु नडेयगोडबेड। अवन इच्छे नडेयुवंते माडु।' स्वतंत्रते बेड अेनिसलि निनगे। नानिल्ल, इरुवुदेल्ल नीने अेंबंतागलि। कुरि बदुकिरुवाग 'मे मे' ना ना अेन्नुत्तदे। अदु सत्तु अदर नरवन्नु पिंजारन बिल्लिगे बिगिदाग कवि दादु हेळिदंते 'तुहि तुहि तुहि' नीने नीने नीने अेन्नुत्तदे। कट्टकडेगे अेल्लवू 'तुहि तुहि—नीने नीने!'

(18-6-32)

शुद्धि पत्र

पुट संख्ये	सालु	तप्पु	ओप्पु
34	20	हनिसिदरे	हनिसदे
35	8	बररेकु	बरबेकु
41	2	मडिदेवु	माडिदेवु
75	2	रातिगळन्नू	रीतिगळन्नु
85	4	हक्किकागि	हक्कियागि
86	3	शागि	शाति
86	7	गाळिगन्नु	गाळिगळन्नु
112	13	बिचर	विचार
133	19	ऋषिपत्नियवरिगे	ऋषिपत्नियरिगे
135	15	अदीतु	आदीतु
152	16	इत्तु	इल्ल
155	9	जेष्टु	ओष्टु
171	20	आधर	आधार
189	5	सगुण	सगुणर्दिद
193	20	सुखद	मुखद
211	9	नडेयलागदष्टु	तडेयलागदष्टु
221	8	नानु	तानु
230	12	दडि	दुडि
241	16	गुजु	गाजु